নিত নবল দিনেশ কুমার মিশ্র

নিত নৱল দিনেশ কুমাৰ মিশ্ৰ

গজেন্দ্র ঠাকুর

গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ

নিত নবল দিনেশ কুমার মিশ্র নিত নৱল দিনেশ কুমাৰ মিশ্ৰ

গজেন্দ্র ঠাকুর গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ

Pothi.com

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह-प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (विदेह www.videha.co.in)

पेटारसँ

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनः मानुषीमिह संस्कृताम्

© 2023, 2026 "Nita Naval DINESH KUMAR MISHRA)" by Gajendra Thakur (in Maithili) from Videha www.videha.co.in Archive.

©Preeti Thakur

ISBN: 978-93-5717-345-2

अनुक्रम

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र: पोथी प्रवेश **[पृष्ठ १-१६]**

बंदिनी महानंदा (१९९४) **[पृष्ठ १८-७९]**

बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी (२००४) (१९९४) **[पृष्ठ ८०-१०१]**

भुतही नदी और तकनीकी झाड़- फूक (२००५) **[पृष्ठ १०२-१२४]**

दुइ पाटन के बीच में- कोसी नदी की कहानी (२००६) **[पृष्ठ १२५-१६०]**

न घाट न घर Refugees of the Kosi Embankments (२००८) **[पृष्ठ १६१-१६४]**

बागमती की सद्गति (२०१०) **[पृष्ठ १६५-२०१]**

The Myth of Flood Control (२०१४) **[पृष्ठ २०२-२०५]**

पानी का शाप: बिहार में बाढ़-सुखाड़ (२०२६) **[पृष्ठ २०६–३०१]**

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र: पोथी निष्कर्ष **[पृष्ठ ३०२–३४३]**

सन्दर्भ सूची **[पृष्ठ ३४४–३६७]**

नित नवल दिनेश कुमार मिश्रः पोथी प्रवेश

दिनेश कुमार मिश्र, मिथिलाक बाढ़ि, धार आ ओइपर बनाओल छहर / बान्ह

सन्दर्भ: बंदिनी महानंदा (१९९४); बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी (२००४) बंदिनी महानंदा (१९९४); भुतही नदी और तकनीकी झाड़- फूक (२००५); दुइ पाटन के बीच में- कोसी नदी की कहानी (२००६); न घाट न घर Refugees of the Kosi Embankments (२००८); बागमती की सद्गति (२०१०); The Myth of Flood Control (२०१४); पानी का शाप: बिहार में बाढ़ि-सुखाड़ (२०२६)

लेखकक परिचय आ शोधक दार्शनिक पृष्ठभूमि

दिनेश कुमार मिश्रक व्यक्तित्व आ कृतित्व बिहारक नदी-विमर्शमे एकटा उपलब्धि अछि। हुनकर जन्म १९४६ मे उत्तर प्रदेशक आजमगढ़मे भेल छल, मुदा हुनकर कर्मभूमि बिहारक कोसी, कमला, बागमती आ गंडकक कछार रहल अछि। खड़गपुर आई.आई.टी. सँ सिविल इंजीनियरिंगमे स्नातक (१९६८) आ स्नातकोत्तर (१९७०) केनिहार मिश्रजीक दृष्टि शुद्ध तकनीकी होइतहुँ मानवीय संवेदना सँ ओतप्रोत अछि । २००६ मे ओ दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय सँ पी.एच.डी. (Ph.D.) क उपाधि प्राप्त कयलनि । हुनकर पी.एच.डी. शोध सेहो बाढ़ि आ जल प्रबंधनक ऐतिहासिक आ तकनीकी पक्ष पर आधारित छल।

हुनकर बाढ़ि-शोधक यात्रा १९८४ मे कोसी बान्हक सहरसा खण्ड टुटलाक बाद शुरू भेल छल। ओतय विस्थापित लोकक दुर्दशा देखि ओ निर्णय केलनि जे ओ बिहारक बाढ़ि आ सुखाड़क इतिहासक दस्तावेजीकरण करताह । मिश्रजीक मानब अछि जे छहर आ बान्ह बाढ़ि रोकबाक लेल पर्याप्त नहि अछि, वरन् ई कतेको बेर विभीषिका कऽ आर बढा दैत अछि । ओ 'बाढ़ि मुक्ति आन्दोलन' (BMA) क माध्यम सँ ७०० सँ बेसी ग्राम-समूहक संग काज कएने छथि, जकरा ओ 'बाढ़ि इतिहासकार'

कहैत छथि । मिश्रजीक मुख्य तर्क अछि जे बाढ़ि नियंत्रणक वर्तमान 'टॉप-हैवी' (ऊपर सँ थोपल) नीति विफल रहल अछि। ओ परम्परागत जल-प्रबन्धन प्रणाली आ लोकक सांस्कृतिक स्वामित्व कऽ पुनर्स्थापित करबाक वकालत करैत छथि ।

दिनेश कुमार मिश्रक परिचय एकटा आईआईटी खड़गपुर सँ प्रशिक्षित इंजीनियरक रूप में अछि, मुद्दा हिनक पहचान मिथिलाक धारक 'इतिहासकार' आ 'लोक-अभियंता'क रूप में बेसी दृढ़ अछि । हिनक शोधक यात्रा 1984 में सहरसाक नवहट्टा प्रखंडक हेमपुर गांव में कोसी बान्हक टूटला कें बाद शुरू भेल ।

ओहि समय सहरसा में कार्यरत रहला कें क्रम में मिश्र जी अनुभव कएलनि जे जे बाढ़ि नियंत्रणक उपाय (बान्ह) जनताक सुरक्षा लेल बनाओल गेल छल, ओहि सँ बाढ़िक विभीषिका कम भेला कें बदला बेसी भयावह भऽ गेल अछि । "बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी" हिनक ओहि वैचारिक परिवर्तनक निचोड़ अछि, जतय ओ तकनीकी अहंकार (Technical Hubris) कें बदला स्थानीय पारंपरिक ज्ञानक वकालत करैत छथि ।

दिनेश कुमार मिश्रक ई पुस्तक कोनो सरकारी रिपोर्ट नहि, वरन् मिथिलाक माटिक चीत्कार अछि। ओ पारंपरिक बाढ़ि प्रबंधन (जहिमे नदिक पानि कैँ पतर क' क' फैला देल जाइत छल) पर जोर देँत छथि । हुनक मानब छनि जे जँ इन्जीनियरी बालू हटाबक साती मात्र पानिक दिशा मोडब भेल, तँ ई "तकनीकी झाड़-फूक" सँ बेसी किछु नहि अछि । अंतिम न्याय त' नदी स्वयं क' क' रहत ।

उत्तर बिहारक भौगोलिक, सांस्कृतिक आ आर्थिक संरचना मे नदी सभक स्थान केन्द्रीय अछि। हिमालय सँ निकलनिहारि अनेक धारा सभ मिथिलाक मैदान कैँ उर्वरता आ विनाशक दुनू उपहार देँत अछि। ऐ परिप्रेक्ष्य मे "भूतही बलान" मात्र एकटा नदीक नाम नहि, वरन् ई एकटा पारिस्थितिकीय संकट आ सरकारी विफलताक जीवित दस्तावेज अछि। डॉ. दिनेश कुमार मिश्र, जे अपन संपूर्ण जीवन उत्तर बिहारक नदी सभक अध्ययन आ लोक-संवाद मे समर्पित कयलनि अछि, हुनक कृति "भूतही बलान: भूतही नदी आ तकनीकी झाड़-फूँक" (Bhutahi Balan: Story of a Ghost River and Engineering Witchcraft) ऐ क्षेत्रक जल-नीति पर एकटा गंभीर प्रहार अछि । ई प्रतिवेदन दिनेश कुमार

मिश्रक शोध, अनुभव आ मिथिलाक लोक-जीवनक अंतर्संबंधक आलोक मे भूतही बलानक ऐतिहासिक, भौगोलिक आ समाजशास्त्रीय पक्षक विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि।

डॉ. दिनेश कुमार मिश्रक व्यक्तित्व आ कृतित्व कैँ बुझनाय उत्तर बिहारक नदी विमर्श कैँ बुझबाक लेल अनिवार्य अछि। १९४८ मे उत्तर प्रदेशक एकटा गाम मे जन्मल डॉ. मिश्र अपन वृत्तिक शुरुआत एकटा अभियंताक रूप मे कयलनि, मुदा हुनक मन नदीक अछूत पहिलू सभ कैँ टटोलबा मे लागल रहलनि । आईआईटी खड़गपुर सँ १९६८ मे सिविल इंजीनियरिंग मे स्नातक कयला क बाद ओ अपन शोध कैँ केवल कंक्रीट आ लोहा धरि सीमित नहि राखलनि। ओ महसूस कयलनि जे आधुनिक इंजीनियरिंगक जे प्रतिमान उत्तर बिहार मे थोपल गेल अछि, ओ नदीक स्वभावक विरुद्ध अछि।

हुनकर बौद्धिक विकासक यात्रा मे कोलकाताक नेशनल लाइब्रेरी मे कयल गेल ४० वर्षक समाचार पत्रक शोध आ विधानसभाक बहस सभक अध्ययन निर्णायक रहलनि। ऐ सँ हुनकर पहिल पुस्तक "बाढ़ से ग्रस्त" (Those Afflicted by Flood) निकलल, जाहि सँ प्रेरित भऽ ओ अपन

पेशेवर करियर छोड़ि पूर्णकालिक नदी कार्यकर्ता आ शोधकर्ता बनि गेलाह। डॉ. मिश्र कैं "बिहारक नदी सभक चलैत-फिरैत विश्वकोश" कहल जाइत अछि, क्योंकि हुनक ज्ञान केवल किताबी नहि, वरन् गामक लोककथा, गीत, मिथक आ 'शायरी' मे रचल-बसल अछि । ओ एकटा बहुभाषी विद्वान छथि जे मैथिली, हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली, ओड़िया आ उर्दू मे समान प्रवाह सँ विमर्श कऽ सकैत छथि।

डॉ. मिश्रक सब सँ पैघ योगदान "बाढ़ि मुक्ति अभियान" (BMA) क स्थापना अछि, जे ७०० सँ बेसी गामक "बाढ़ि इतिहासकार" (Flood Historians) सभक एकटा नेटवर्क अछि । ई संगठन लोक कैं ई बुझाबैत अछि जे कोना बान्हक निर्माण सँ पहिने हुनक पुरखा सभ बाढ़िक संग समन्वय बना कऽ रहैत छलाह। हुनक शोध कार्य कैं अशोक फेलोशिप आ अनेक प्रतिष्ठित सम्मान देल अछि ।

डॉ. मिश्र द्वारा रचित साहित्य उत्तर बिहारक प्रत्येक पैघ नदीक 'जीवनी' कहल जा सकैत अछि। हुनक लेखन शैली मे तकनीकी सटीकता आ मानवीय संवेदना क अपूर्व संगम अछि।

.....

मिथिलाक धरती बाढ़िक विभीषिकासँ जुझैत रहल अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका क्षेत्र तँ बिन बाढ़िक, बरखाक समयमये डूमल रहैत अछि। मुदा ई स्थिति १९७८-७९ केर बादक छी। पहिने ओ क्षेत्र पूर्ण रूपसँ उपजाउ छल, मुदा भारतमे बान्हक अनियन्त्रित निर्माणक संग पानिक जमाव ओतऽ शुरू भऽ गेल। मुदा ओइ क्षेत्रक बाढ़िक कोनो समाचार कहियो नै अबैत अछि, कहियो अबितो रहय तँ मात्र ई दुष्प्रचार, जे ई सभटा पानि नेपालसँ छोड़ल गेल पानिक जमाव अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका लोक ऐ नव संकटसँ लड़बाक कला सीखि गेला। हमरा मोन अछि ओ दृश्य जखन कुशेश्वरस्थानसँ महिषी उग्रतारास्थान जेबाक लेल हमरा बाढ़िक समयमे एबा लेल कहल गेल छल कारण ओइ समयमे नाओसँ गेनाइ सरल अछि- ई कहल गेल। रुख समयमे खत्ता-चभच्चामे नाओ नै चलि पबैत अछि आ सड़कक हाल तँ पुछू जुनि। फसिलक स्वरूपमे परिवर्तन भेल, मत्स्य-पालन, जेना तेना कऽ कऽ ई क्षेत्र जबरदस्तीक एकटा जीवन-कला सिखलक। कौशिकी महारानीक २००८ ई.क प्रकोप ओइ दुष्प्रचारकेँ खतम कऽ सकल। पहिने हमरा सभ ई देखी जे कोशी आ गंडकपर जे दू टा बैराज नेपालमे अछि ओकर नियन्त्रण ककरा लग अछि?

ई नियन्त्रण अछि बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक लग आ एतऽ बिहार सरकारक अभियन्तागणक नियन्त्रण छन्हि। पानि छोड़बाक निर्णय बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक हाथमे अछि। नेपालक हाथमे पानि छोड़बाक अधिकार तखन ऐत जखन ओतुक्का आन धार पर बान्ह/ छहर बनत, मुदा से ५० सालसँ ऊपर भेलाक बादो दुनू देशक बीचमे कोनो सहमतिक अछैत सम्भव नै भऽ सकल। किए? कोशीपर भीमनगर बैरेज, कुशहा, नेपालमे अछि। १९५८ मे बनल ऐ छहरक जीवन ३० बरख निर्धारित छल, जे १९८८ मे खतम भऽ गेल। दुनू देशक बीचमे कोनो सहमति किए नै बनि पाओल? छहरक बीचमे जे रेत जमा भऽ जाइत अछि, तकरा सभ साल हटाओल जाइत अछि। कारण ई नै केलासँ ओकर बीचमे ऊंचाई बढ़ैत जाइए, तखन सभ साल बान्हक ऊँचाई बढ़ाबैए पड़त। जइ साल ई कार्य समयसँ नै शुरू होइए ओइ साल प्रलय अबैए। सएह भेल २००८ मे, फेर शुरू भेल बरखा, १८ अगस्तकेँ कोशी बान्हमे २ मीटर दरारि आबि गेल। १९८७ ई.क बाढ़ि हम अपन आँखिसँ देखने छी। झंझारपुर बान्ह लग पानि झझा देलक, ओवरफ्लो भऽ गेलै एक ठामसँ, आ आँखिक सोझाँ हम देखलौं जे केना तकर बाद १ मीटरक कटाव किलोमीटरमे बदलि जाइत अछि। २७-२८

अगस्त २००८ धरि भीमनगर बैरेजक ई कटाव २ किलोमीटर भऽ गेल छल। आ ई कारण भेल कोशीक अपन मुख्य धारसँ हटि कऽ एकटा नव धार पकड़बाक आ नेपालक मिथिलांचलक संग बिहारक मिथिलांचलकेँ तहस नहस करबाक। नासाक ८ अगस्त २००८ आ २४ अगस्त २००८ केर चित्र कौशिकीक नव आ पुरान धारक बीच २०० किलोमीटरक दूरी देखा रहल छल। भीमनगर बैरेज आब कोशीक एकटा सहायक धारक ऊपर बनल बैरेज बनि गेल रहय। जइ राज्यमे आपदा अबैत अछि, से केन्द्रसँ सहायताक आग्रह करैत अछि। केन्द्रीय मंत्रीक टीम ओइ राज्यक दौड़ा करैत अछि आ अपन रिपोर्ट दैत अछि जइपर केन्द्रीय मंत्रीक एकटा दोसर टीम निर्णय करैत अछि, आ ओ टीम निर्णय करैत अछि जे ई आपदा राष्ट्रीय आपदा अछि बा नै। बिहारक राजनीतिज्ञ अपन पचास सालक विफलता बिसरि जखन एक दोसराक ऊपर आक्षेपमे लागल छला, मनमोहन सिंह मंत्रीक प्रधानक रूपमे दौड़ा कऽ एकरा राष्ट्रीय आपदा घोषित केलन्हि। कारण ई लेवल-तीन केर आपदा छल आ ई सम्बन्धित राज्यक लेल असगरे- नहिये वित्तक लिहाजसँ आ नहिये राहतक व्यवस्थाक सक्षमताक हिसाबसँ- पार पायब संभव नै छल। तखन राष्ट्रीय आकस्मिक

आपदा कोषसँ सहायता देल गेल, किसानक ऋण-माफी सेहो भेल। कुशेश्वर स्थानक आपदा सभ-साल अबैए, से सभ ओकरा बिसरिये जकाँ गेल। दामोदर घाटीक आ मयूरक्षी परियोजना जकाँ कार्य कोशी, कमला, भुतही बलान, गंडक, बूढ़ी गंडक आ बागमतीपर किए सम्भव नै भेल? विश्वेश्वरैय्याक वृन्दावन डैम किए सफल अछि? नेपाल सरकारपर दोषारोपण कऽ हमरा सभ कहिया धरि जनताकेँ ठकैत रहब? एकर एकमात्र उपाय अछि बड़का यंत्रसँ कमला-बलान आदिक ऊपर जे माटिक बान्ह बान्हल गेल अछि तकरा तोड़ि कऽ हटाउ आ कच्चा नहरिक बदला पक्का नहरिक निर्माण करू। नेपाल सरकारसँ वार्ता कऽ त्वरित समाधन हुअय। आ जाधरि ई नै होइए तावत जे अल्पकालिक उपाय अछि से करब, जेना बरखा आबयसँ पहिने बान्हक बीचक रेतकेँ हटाउ, बरखा एबाक बाट तकबाक बदला किछु पहिनहि बान्हक मरम्मतिक कार्य करू, आ ऐ सभमे राजनीतिक महत्वाकांक्षाकेँ दूर राखू। कोशीकेँ पुरान पथपर अनबा हेतु कइएकटा बान्ह बनाबऽ पड़त आ ओ सभ एकर समाधान कहिओ नै बनि सकत। कमला धारक नहरिसँ भेल लाभ हानिसँ सीखू। एक तँ कच्ची नहरि आ तइपर मूलभूत डिजाइनक समस्या, एकटा उदाहरण पर्याप्त हएत जेना-तेना बनाओल परियोजना सभक। कमलाक

धारसँ निकालल पछबारी कातक मुख्य नहरि जयनगरसँ उमराँव- पूर्वसँ पछबारी दिशामे अछि। मुदा ओतऽ धरतीक ढलान उत्तरसँ दक्षिण दिशामे अछि। बरखाक समयमे एकर परिणाम की हएत आकि की होइत अछि? ई बान्ह बनि जाइत अछि आ एकर उत्तरमे पानि थकमका जाइत अछि। सभ साल ऐ नहर रूपी बान्हसँ पटौनी हुअय वा नै एकर उतरबरिया कातक फसिल निश्चित रूपे डुमबे टा करैत अछि। फलना बाबूक जमीन नहरिमे नै चलि जाय, से नहरिक दिशा बदलि देल जाइत अछि ! कमला नदीपर १९६० ई. मे जयनगरसँ झंझारपुर धरि छहरक निर्माण भेल आ ऐसँ सम्पूर्ण क्षेत्रक विनाशलीलाक प्रारम्भ सेहो भऽ गेल। झंझारपुरसँ आगाँक क्षेत्रक की हाल भेल से तँ कुशेश्वरक वर्णनसँ स्पष्ट अछि। मधेपुर, घनश्यामपुर, सिंघिया ऐ सभक खिस्सा कुशेश्वरसँ भिन्न नै अछि। कमला-बलानक दुनू छहरक बीच जेना-जेना रेत भरैत गेल, तइ कारणेँ ऐ बान्हक निर्माणक बीस सालक भीतर सभ किछु तहस-नहस भऽ गेल। कमला धार, जे बलानमे पिपराघाट लग १९५४ मे- मिलि गेली, हिमालयसँ बहि कऽ कोनो पँघ लक्कड़क अवरोधक कारण। आब हाल ई अछि जे दस घण्टामे पानिक जलस्तर ऐ धारमे २ मीटरसँ बेशी बढ़ि जाइत अछि। १९६५

ई.सँ बान्ह/ छहरक बीचमे रेत एतेक भरि गेल जे एकर ऊँचाइ बढ़ेबाक आवश्यकता भऽ गेल आ ई माँग शुरू भऽ गेल जे बान्ह/ छहरकेँ तोड़ि देल जाय! कोशीक पानि माउन्ट एवेरेस्ट, कंचनजंघा आ गौरी-शंकर शिखर आ मकालू पर्वतश्रृंखलासँ अबैत अछि। नेपालमे सप्तकोशीमे, जइमे इन्द्रावती, सुनकोसी (भोट कोसी), तांबा कोसी, लिक्षु कोसी, दूध कोसी, अरुण कोसी आ तामर कोसी सम्मिलित अछि। ऐमे इन्द्रावती, सुनकोसी, तांबा कोसी, लिक्षु कोसी आ दूध कोसी मिलि कऽ सुनकोसीक निर्माण करैत अछि आ ई मोटा-मोटी पच्छिमसँ पूर्व दिशामे बहैत अछि, एकर शाखा सभ मोटा-मोटी उत्तरसँ दक्षिण दिशामे बहैत अछि। ई पाँचू धार गौरी शंकर शिखर आ मकालू पर्वतश्रृंखलाक पानि अनैत अछि। अरुणकोसी माउन्ट एवेरेस्ट (सगरमाथा) क्षेत्रसँ पानि ग्रहण करैत अछि। ई धार मोटा-मोटी उत्तर-दक्षिण दिशामे बहैत अछि। तामर कोसी मोटा-मोटी पूबसँ पच्छिम दिशामे बहैत अछि आ अपन पानि कंचनजंघा पर्वत श्रृंखलासँ पबैत अछि। आब ई तीनू शाखा सुनकोसी, अरुणकोसी आ तामरकोसी धनकुट्टा जिल्लाक त्रिवेणी स्थानपर मिलि सप्तकोसी बनि जाइत छथि। एतऽसँ दस किलोमीटर बाद चतरा स्थान अबैए जतऽ महाकोसी, सप्तकोसी बा कोसी मैदानी धरातलपर

अबैत छथि। आब उत्तर दक्षिणमे चलैत प्रायः पचास किलोमीटर नेपालमे रहला उत्तर कोसी हनुमाननगर-भीमनगर लग भारतमे प्रवेश करैत छथि आ कनेक दक्षिण-पच्छिम रुखि केलाक बाद दक्षिण-पूर्व आ पच्छिम-पूर्व दिशा लैत अछि आ भारतमे लगभग एक सय तीस किमी. चललाक बाद कुरसेला लग गंगामे मिलि जाइ छथि। कोसीमे बागमती आ कमलाक धार सेहो सहरसा-दरभंगा- पूर्णिया जिलाक संगमपर मिलि जाइत अछि। कोसीपर पहिल बान्ह बारहम शताब्दीमे लक्ष्मण द्वितीय द्वारा बनाओल वीर-बाँध छल जकर अवशेष भीमनगरक दक्षिणमे अखनो अछि। भीमनगर लग बैराजक निर्माणक संगे पूर्वी कोसी बान्ह सेहो बनि गेल आ पूर्वी कोसी नहरि सेहो। कुँअर सेन आयोग १९६६ ई. मे कोसी नियन्त्रणक लेल भीमनगरसँ तेइस किमी. नीचाँ डगमारा बैराजक योजनाक प्रस्ताव देलक जे वाद-विवाद आ राजनीतिमे ओझरा गेल। ऐ बैराजसँ दूटा फायदा छल। एक तँ भीमनगर बैरेजक जीवन-कालावधि समाप्त भेलापर ई बैरेज काज अबितय, दोसर ऐसँ उत्तर-प्रदेशसँ असम धरि जल परिवहन विकसित भऽ जाइत जइसँ उत्तर बिहारकेँ बड़ फायदा होइतय। मुदा ऐ बैरेज निर्माण लेल पाइ आबंटन केन्द्रीय सिंचाई मंत्री डॉ के.एल.राव नें

देलखिन्ह। पश्चिमी कोसी नहरि एकर विकल्प रूपमे जेना तेना मन्थर गति सँ शुरू भेल मुदा अखनो धरि ओइमे काज भइये रहल अछि। कोसी लेल किछु नै भऽ सकल। विचार आयल तँ योजना अस्वीकृत भऽ गेल। जतेक दिनमे कार्य पूरा हेबाक छल ततेक दिन विवाद होइत रहल, डगमारा बैराजक योजनाक बदलामे सस्ता योजनाकेँ स्वीकृति भेटल मुदा सेहो पूर्ण हेबाक बाटे तकैत रहल! एनामे विश्वेश्वरैय्या पड़ैत छथि मोन। हैदराबादसँ बिरासी माइल दूर मूसी आ ईसी धारपर बान्ह बनाओल गेल आ नगरसँ ६.५ माइलक दूरीपर मूसी धारक उपधारा बनाओल गेल। संगहि धारक दुनू दिस नगरमे बान्ह बनाओल गेल। कृष्णराज सागर बान्ह, हुनकर प्रस्तावित १३० फुट ऊँच बनेबाक योजना मैसूर राज्य द्वारा अंग्रेजकेँ पठाओल गेल तँ वायसराय हार्डिंज ओकरा घटा कए ८० फीट कऽ देलन्हि। विश्वेश्वरैय्या निचुलका भागक चौड़ाइ बढ़ा कऽ ई कमी पूरा कऽ लेलन्हि। बीचेमे बाढ़ि आबि गेल तँ अतिरिक्त मजदूर लगा कऽ आ मलेरियाग्रस्त आ आन रोगग्रस्त मजदूरक इलाजले डॉक्टर बहाली कऽ, रातिमे वाशिंगटन लैम्प लगा कऽ आ व्यक्तिगत निगरानी द्वारा समयक क्षतिपूर्ति केलन्हि। देशभक्त तेहन छला जे सीमेन्ट आयात नै केलन्हि वरन् बालु, कैल्सियम, पाथर आ पाकल

ईटाक बुकनी मिला कऽ निर्मित सुरखीसँ ऐ बान्हक निर्माण केलन्हि। बान्ह निर्माणसँ पहिनहिये द्विस्तरीय नहरिक निर्माण कऽ लेल गेल। प्रधानमंत्री आपदा कोष आ मुख्यमंत्री आपदा कोषक खगता नैं हुअय से जरूरी अछि, संगहि सरकारपर दबाब बनाउ जे स्कूल कॉलेजमे गर्मी तातिलक बदलामे बाढ़िक समयमे छुट्टी दिअय। सी.बी एस.ई आ आइ.सी.एस.ई. तँ छोड़ू बिहार बोर्ड धरि ई नैं कऽ सकल अछि। भारतमे डगमारा बैराजक योजनाक प्रारम्भ कयल जाय, कारण भीमनगर बैरेज अपन जीवन-कालावधि पूर्ण कऽ लेने अछि। ऐमे फण्ड रेलवे आ सड़क दुनू मंत्रालयसँ लेल जाय कारण ऐपर रेल आ सड़क सेहो बनि सकैए आ से बनबाके चाही। बैरेज बनबाक कालवधियेमे पक्की नहरि धरातलक स्लोपक अनुसारे बनाओल जाय। कच्ची बान्ह सभकेँ तोड़ि कऽ हटा देल जाय आ पक्की बान्हकेँ मोटोरेबल बनाओल जाय, बान्हक दुनू कात पर्याप्त गाछ-वृक्ष लगाओल जाय। बिहारमे सड़क परियोजना जेना स्वप्नक सत्य हुअब सन देखा रहल अछि, तहिना सभ विघ्न-बाधा हटा कऽ, युद्ध-स्तरपर ऐ सभपर काज शुरू कएल जाय। १२म शताब्दीमे शुरू कएल बान्ह जखन पूर्ण हएत तखने धारसभ मनुक्खक सेविका बनि सकत।

आब प्रस्तुत अछि दिनेश कुमार मिश्र जीक रिसर्चक सारांश मैथिलीमे, बेरा-बेरी ...।

बंदिनी महानंदा (१९९४)

बंदिनी महानंदा (१९९४)

जखन कखनो भारतक गौरवशाली अतीतक चर्चा होइत अछि तँ पहिने बिहारक नाम लेल जाइए । जखन देव-दानव मिलि कऽ सागर मथैत छला, तखन सागर मथबामे मन्दार पहाड़क उपयोग होइ छल । ई स्थान वर्तमान भागलपुर जिला मे पड़ैए, भऽ सकैए समुद्रक सीमा ओइ समय एतऽ तक छल । ऐ क्षेत्रक कथा राजा जनकक समयसँ सुनल जाइत अछि । बिहार प्राचीन काल सँ याज्ञवलक्य, गौतम, च्यवन, श्रृंग, विश्वामित्र, अष्टावक्र, कात्यायन, पतंजलि, वर्ष, उपवर्ष, पाणिनी, अश्वघोष, वात्स्यायन, आर्यभट्ट आ वराहमिहिर सन विद्वान आ कारीगर पर गर्व करैत रहल अछि । मिथिला प्राचीन कालमे संस्कृति, शिक्षा, कला आ साहित्यक एकटा पैघ केंद्र छल जे देशक विभिन्न क्षेत्रक विद्वानकेँ आकर्षित करै छल । भगवान महावीर ऐ धरती सँ समस्त संसारकेँ प्रेम, करुणा, सौहार्द आ सहिष्णुताक उपदेश देलनि । एतहिये राजकुमार सिद्धार्थ भगवान बुद्ध बनला, जिनकर वचनामृत सम्पूर्ण विश्वमे भेल । वाल्मीकि रामायणमे भगवान् राम अपन भाइ लक्ष्मण, भरत आ शत्रुघ्न संग विवाहक उद्देश्य सँ जनकपुर गेला। ऐ यात्रामे ओ बक्सर

लग तारकाकेँ मारि सिद्धाश्रम, अहिल्या-आश्रम, गौतम आश्रम आ वैशाली होइत जनकपुर गेला । महाभारतक काल जरासंधक राजधानी वर्तमानमे राजगृह आ कर्णक अंग देशक राजधानी चम्पनागरी (भागलपुर) छल । पाण्डवक निर्वासन आ गुप्त निवासक बहुत समय पूर्णियाक जंगलमे बीतल । भीम कहियो मोदागिरी (वर्तमान मुंगेर) पर विजय प्राप्त केने छला आ खड़गपुर हवेलीक समीप अवस्थित भीम बांध भीम सँ संबंधित मानल जाइए । सोनपुर (छपरा) लग हरिहर क्षेत्रक संबंधमे कहल जाइए जे भगवान विष्णु एक बेर पशुपति नंदीक नेतृत्वमे एतऽ बहुत रास गाय अनने छला । जइ लेल ऐ स्थानक नाम हरिहर क्षेत्र राखल गेल । ऐ स्थान पर गज आ ग्राहक बीच झगड़ा भेल, भगवान विष्णुकेँ स्वयं खुल्ले पएर, बिना गरुड़क सवारीक गजक रक्षा लेल आबय पड़लनि। ऐतिहासिक कालमे बिहारक वर्णन संभवतः मगधक बिम्बसार (कॉमन एरा पूर्व छअम शताब्दी) सँ शुरू होइए आ मानल जाइए जे भगवान वर्धमान महावीर आ भगवान बुद्धक उदय ऐ कालमे भेल। ऐ कालक आसपास वैशालीमे लिच्छवी राज्य अपन सिद्धि प्राप्त कऽ रहल छल । नन्द वंशक पतनक संग मगधमे चंद्रगुप्त मौर्यक साम्राज्यक स्थापना ३२१ कॉमन एरा.पू. भेल। चन्द्र

गुप्त मौर्यक उदयमे चाणक्य (कौटिल्य) क भूमिका महत्वपूर्ण छल। चाणक्य स्वयं कोन स्थानक निवासी छल तइ मे किछु मतभेद अछि । किछु लोक हुनका तक्षशिलाक निवासी मानैं छथि जखनिकि दोसर मान्यताक अनुसार चाणक्य वर्तमान पश्चिम चंपारणक निवासी छला । मौर्य वंशक एकटा आर महत्वपूर्ण नाम सम्राट अशोक अछि जे २७२-२३२ कॉमन एरा पू. कलिंग विजयक बाद युद्ध आ बर्बरतासँ दुखी भऽ गेल आ ओ अपन शेष जीवन बौद्ध धर्मक प्रचारमे बिता देलक। मौर्यवंशक अंतिम सम्राट बृहद्रथक वध कऽ पुष्यमित्र १८७ कॉमन एरा पू. आ तकर बाद यूनानी, शक, कुषाण आदि सन् ३२० धरि मगध पर शासन केलनि, जखन धरि चन्द्रगुप्त पाटलिपुत्रमे गुप्त साम्राज्यकेँ सुदृढ़ नैं कऽ लेलनि। गुप्त वंशक राजा चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य आदि एक बेर फेर मगधकेँ अपन पुरान वैभव वापस दियेलनि । मुदा पाँचम शताब्दीक अन्तमे हूण सभक आक्रमणसँ एक बेर फेर मगधक समृद्धि अवरुद्ध भेल आ हूण लोकनि सातम शताब्दीक मध्य धरि एतऽ ओतऽ रहला, जखन पाटलिपुत्रपर हर्षवर्धन सन् ६४१ मे कब्जा कऽ लेलनि। मुदा ई स्थायी नैं भऽ सकल । आठम शताब्दी धरि ई शासनमे रहल आ गुप्त वंशक बाद बारहम शताब्दीक आरम्भ धरि पाल वंशक शासन

पाटलिपुत्रपर बनल रहल। इन्द्रद्युम्न ऐ वंशक अंतिम राजा छल । बख्तियार खिलजी अपन समयमे मगधपर हमला केने छल। बिहारक कोनो चर्चा नालंदा आ विक्रमशिला विश्वविद्यालयक चर्चा केने बिना पूरा नै भऽ सकैए। सन् ४०५-४११ क बीच भारतमे रहयबला चीनी यात्री फा-हियान अपन लेखनीमे नालंदा बौद्ध विहारक वर्णन करै छथि मुदा ओ विश्वविद्यालयक विषयमे चुप छथि । लेकिन हुएन-त्सांग (भारतमे निवास सन् ६३०-६४३) नालंदाक शैक्षणिक वैभवक प्रशंसा निश्चित रूप सँ केने छथि। देशक विभिन्न शैक्षणिक वैभवसँ ऐ विश्वविद्यालयक बहुत प्रशंसा भेल अछि। ऐ विश्वविद्यालयमे देश-विदेशक विभिन्न कोन-कोनसँ करीब दस हजार विद्यार्थी ओतहिये रहै छला आ शिक्षा प्राप्त करै छला। ओतऽ व्याकरण, विधि, साहित्य, दर्शन आदि अनेक विषयक पढ़ाइ होइ छल । विश्वविद्यालयमे प्रवेश लेल कोनो विद्यार्थीकेँ दरबज्जेपर परीक्षा देमऽ पड़ै छलै आ संतुष्टिक बादे विद्यार्थीक प्रवेश होइ छलै। ई विश्वविद्यालय गुप्त वंशक राजा सभ द्वारा पाँचम शताब्दीमे स्थापित कयल गेल छल आ एकरा राजश्रयक अधीन राखल गेल छल । किंवदंती अछि जे नालंदा विश्वविद्यालयक निर्माण सम्राट अशोक द्वारा कएल गेल, मुदा तकर कोनो प्रमाण नै अछि।

विक्रमशिला विश्वविद्यालयक स्थापना पाल वंशक राजा सभ द्वारा आठम शताब्दीमे वर्तमान भागलपुरसँ लगभग ४० किलोमीटर दक्षिण-पूर्वमे पाथरघाट पर्वतमे भेल। ऐ विश्वविद्यालयक मुख्य आचार्य आतिश श्रीज्ञान दीपंकर बहुत प्रसिद्ध भेला जे एगारहम शताब्दीमे तिब्बतक राजा द्वारा धर्म प्रचार लेल तिब्बत बजाओल गेल छला। ऐ विश्वविद्यालयमे १०८ टा आचार्य काज करै छला आ आठ हजार लोक एक संग बैसि कऽ एकर हॉलमे धार्मिक चर्चा सुनि सकै छला। एतऽ वेद, वेदांत, सांख्ययोग, मीमांसा, बौद्ध दर्शन आदि विषयक पढ़ाइ होइ छल । मुदा सन् १२०६ मे जखन तिब्बती भिक्षु-यात्री धर्मस्वामी ऐ क्षेत्रमे आयल छला तखन हुनका ऐ विश्वविद्यालयक खंडहर मात्र देखबामे एलन्हि। ऐ दुनू विश्वविद्यालयक अलाबे ओदांतपुरी विहार (वर्तमान बिहार शरीफ) नालंदा लग छल। ई विहार नवम शताब्दीमे पाल वंशक राजा लोकनि द्वारा स्थापित कएल गेल, मुदा ई कहियो नालंदा वा विक्रमशिलासँ प्रतिस्पर्धा नै कऽ सकल। तहिना आठम शताब्दीमे महिषी (वर्तमान सहरसा) मे आदिशंकराचार्य आ मंडन मिश्रक बीच बहस भेल छल। जकर मध्यस्थता मंडन मिश्रक विदुषी पत्नी भारती केने छली। मंडन मिश्र ऐ बहसमे हारल छला, मुदा भारती स्वयं शंकराचार्य सँ बहस कऽ

हुनका अतिरिक्त अध्ययन लेल समय मांगय लेल बाध्य कऽ देलखिन्ह। ओना विवाद अछि जे ई महिषी वएह महिष्मती अछि जतय शंकराचार्य आ मंडन मिश्रक शास्त्रार्थ भेल छल बा नै। विद्वान परम्परामे मिथिलाक भानुदत्त मिश्र, रत्नेश्वर, ज्योतिश्वर, भागदत्त, पृथविधर आचार्य, गंगेश उपाध्याय, जगधर, विद्यापति, शंकर मिश्र, वाचस्पति मिश्र आ प्रभाकर मिश्र आदि प्रमुख छथि। विद्यापति मिथिलाक घरे-घर बसि गेल छथि। ओ सम्पूर्ण हिन्दी आ बंगला साहित्यकेँ दिशा देबाक काज सेहो कयलनि अछि। मिथिलाक विद्वान महिला कोनो अर्थमे पुरुषसँ पाछू नै रहल छथि। ऋषि मैत्रेयी आ गार्गीक अलाबे १५ म शताब्दीमे लछिमा देवी, लखिया देवी, विश्वास देवी आ चंद्रकला देवी आदि साहित्य आ दर्शनक क्षेत्रमे अभूतपूर्व काज केलनि। बारहम शताब्दीक अंतमे अफगान आ तुर्कक हमला बिहारपर शुरू भऽ गेल। बख्तियार खिलजी पाल वंशक राजा लोकनिसँ हुनकर क्षेत्र छीन लेलनि आ ऐ सँ प्रशासनिक अस्थिरताक काल शुरू भेल । शासन दिल्लीक सुल्तानक, कखनो आगराक, कखनो जौनपुर बा गौर (बंगाल) क हाथमे रहल। मुदा पूरा बिहारपर हुनका सभक हाथ नै लागि सकल आ अलग-अलग भागमे हुनकर शासन जारी रहल। ऐ क्रममे

कुतुबुद्दीन ऐबक, सुल्तान घियासुद्दीन, फिरोज शाह, सिकंदर लोधी धरि बहुत रास सम्राट आबि गेला। शेरशाह (सन १५४०-१५४५) एकमात्र शासक छल जे अपन साम्राज्यकेँ व्यवस्थित रूपसँ स्थापित करबाक प्रयास केलक। शेरशाह पटनाकेँ अपन पुरान वैभवमे वापस आनऽ चाहैं छल आ ऐ दिशामे काज करऽ लागल। बख्तियार खिलजीक समयसँ चलि रहल राजधानी बिहार शरीफकेँ पटना अनलक आ नव किला बनौलक। ओ अपन राज्यक सीमाक विस्तार जोधपुर, ग्वालियर, मालवा आ रणथम्भौर धरि केलक आ एकटा सुशासन प्रणालीक पुनर्स्थापना केलक। बंगालसँ पंजाब धरि सड़क बनेबाक श्रेय शेरशाहकेँ छैं। मुदा मुगलक बढ़ैत सत्ता शेरशाहक उत्तराधिकारी नैं सम्हारि सकल आ अकबरक समयमे बिहार मुगलक हाथमे चलि गेल। बिहारक राजा/जागीरदार लोकनि एहन बाहरी शक्तिकेँ सामान्य जकाँ स्वीकार नैं केलनि। औरंगजेबक पोता अजीम-उशानक शासन कालमे अजीमाबादक महिमा (ई शहर अजीम-उशान द्वारा बनाओल गेल छल आ वर्तमान पटना शहरक इलाका कहल जाइत अछि) घुरल आ पटना आ बंगालक व्यापार बढ़ल। मुर्शिद कुली खान १७०४ मे बंगालक शासक बनल आ १७०७ मे औरंगजेबक मृत्युक बाद अजीमाबाद ओकर नियंत्रणमे आबि गेलैं।

१७४० मे अलीवर्दी खान मुर्शिदाबादमे शासन सम्हारलक आ ऐ क्रममे शासनक बागडोर जैरुद्दीन अहमद आ सिराजुद्दौलाक हाथमे चलि गेलै, जे अंग्रेज द्वारा मारल गेल। तकर बाद मीर जाफर आ मीर कासिम अली शासक बनि गेल। ओहो सभ समय नै रहल आ अंग्रेज सन् १७६५ मे अपन साम्राज्यक जड़ि मजगूत कऽ लेलक। बिहारमे ने अफगान, तुर्क आ ने मुगल शासक आसानीसँ रहला, आ ने अंग्रेजकेँ रहय देलनि। सन् १८५७ मे जगदीशपुरक बाबू कुंवर सिंह आ बाबू अमर सिंह अंग्रेजक विरोध केलनि। ऐ क्रममे बाबू कुंवर सिंहकेँ एक बेर आजमगढ़ भागय पड़लनि, मुदा ओ बहादुरीसँ वापस आबि गेला आ अप्रैल सन् १८५८ मे गुलामीक बदला मृत्युकेँ स्वीकार केलनि। बादमे बाबू अमर सिंह सेहो सएह केलनि। दोसर दिस संथाल परगनाक सिद्धू-कान्हू, चांद आ भैरब भाइ १८५५-५७ क बीचमे दक्षिण बिहारमे अंग्रेज शासनक खिलाफ विद्रोहक झंडा फहरा देलखिन, फेर बिरसा भगवान १८९५-२००० क बीच छोटनागपुरक जंगलमे अशांतिक आगि जराबैत रहल। हिनके सभक संग तिलका मांझीक नाम सेहो बहुत श्रद्धापूर्वक लेल जाइत अछि। सन् १९०८ मे खुदीराम बोस आ प्रफुल्ल चाकी बंगालक दुर्नाम कलेक्टर किंग्सफोर्ड पर मुजफ्फरपुरमे बम

फेंकलथि। कलेक्टर बचि गेल मुद्दा प्रफुल्ला चाकी पकड़ाइसँ पहिने आत्महत्या कऽ लेलनि आ किशोर खुदी राम बोसकेँ फाँसीपर लटका देल गेल। अप्रैल १९१७ मे चंपारणक किसान राजकुमार शुक्लक आग्रहपर महात्मा गांधी चंपारण आबि पहिल बेर गोराक अत्याचारक खिलाफ आवाज उठौलनि। तकर बाद स्वतंत्रता आन्दोलनमे बिहारमे बहुत रास नामी नेता जेना सर्व श्री ब्रज किशोर प्रसाद, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, श्री कृष्ण सिंह, अनुग्रह नारायण सिंह, वैद्यनाथ झा, जयप्रकाश नारायण आ बाबू जगजीवन राम आदिक श्रृंखला अबैत अछि। बहुत रास विद्वान/स्वतंत्रता सेनानी बिहारकेँ अपन कार्यस्थल बनौलनि, जइमे आचार्य कृपालानी, महापंडित राहुल सांकृत्ययन, श्री काशी प्रसाद जायसवाल आ स्वामी सहजानंद सरस्वतीक नाम उल्लेख योग्य अछि। जतऽ बिहारमे विदेशी गुलामीसँ मुक्ति पाबय लेल बहुत आन्दोलन भेल छल, साहित्यक रसदार धारा बहेनिहार कृतवीर सेहो समय-समय पर ऐ धरतीपर जन्म लइ छलाह। राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह, आचार्य शिवपूजन सहाय, आचार्य नलिन विलोचन शर्मा, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, श्री फणीश्वर नाथ 'रेणु', राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर', नागार्जुन आ शाद अजीमाबादीक रचनामे देशक माटिक गंध आ चिंतन भेटत।

बिहार (पटना) श्री गुरु गोविंद सिंह जी क जन्मभूमि अछि । अंग्रेजक आगमनक बादसँ बिहारमे कलकत्तासँ प्रशासनिक शासन होइत छल । सन् १८५७ क विद्रोहक समयसँ लोकमे बिहारकेँ अलग प्रांतक रूपमे देखबाक इच्छा छल। श्री सच्चिदानंद सिन्हा, बाबू शालीग्राम सिंह आ बाबू विशेश्वर सिंहक नेतृत्वमे आन्दोलनक फलस्वरूप अप्रैल १९१२ मे बिहार आ उड़ीसा अलग राज्य बनल । उड़ीसा सेहो अप्रैल १९३६ मे बिहारसँ अलग भऽ गेल। पचासक दशकमे राज्य पुनर्गठन आयोगक सिफारिशक अनुसार बिहारक वर्तमान भौगोलिक रूप सोझाँ आयल अछि। पूर्वमे पश्चिम बंगाल, पश्चिममे उत्तर प्रदेश, दक्षिणमे मध्य प्रदेश आ उड़ीसा आ उत्तरमे नेपालसँ घेरल ई राज्य पश्चिमसँ पूर्व दिस बहैत गंगा नदीसँ विभाजित अछि।

भौगोलिक रूपेँ बिहार तीन भागमे विभाजित अछि।

पहिल अछि उत्तर बिहारक गंगा क्षेत्र। बिहारक बीस टा जिला बिहारक ऐ मैदानी क्षेत्रमे अबैत अछि, जे नेपालक तराई आ गंडकक उत्तरी तटक बीच स्थित अछि। एकरा अलाबे भागलपुर जिलाक नवगछिया उपमंडल उत्तर बिहारमे पड़ै छै। ई पूरा इलाका उत्तर बिहारक नामसँ प्रसिद्ध अछि। मैदान

आ नदीसँ भरल हेबाक कारणे उत्तर बिहार कृषिक दृष्टिकोणसँ बहुत समृद्ध रहल अछि।

मध्य बिहार (आब दक्षिण बिहार)- बिहारमे गंडकक दक्षिण तटक मैदान मध्य बिहार अछि । दुर्गावती, कर्मनासा, सोन, पुनपुन, फल्गु आदि धार सँ आच्छादित ऐ क्षेत्रक जमीन उत्तर बिहार जकाँ उपजाऊ अछि । कैमूर श्रृंखला पाथर सन बिनु गाछ-बृच्छक पहाड़ी ऐ क्षेत्रमे छै। मध्य बिहारक अर्थव्यवस्था खेतीपर आधारित अछि। छोटानागपुर अंचल (आब झारखण्ड)- बिहारक गंडक घाटीक दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र पठार आ जंगलसँ घेरल अछि आ भारतक पूरा खनिज संपदाक एक तिहाइ सँ बेसी ऐ जंगल, पहाड़ आ जमीनक नीचाँ दबल अछि । बाराकर, दामोदर, सुवर्णरेखा, किउल, कोयल, औरंगा, अमनत, कन्हर, अजय आ मयूराक्षी आदि धारक ई क्षेत्र, छोटानागपुर आ संथाल परगना, उद्योगक दृष्टिकोणसँ बहुत समृद्ध अछि। कोयला, लोहा, मैंगनीज, अभ्रक, स्टीटाइट, चूना-पत्थर, आग्नेय माँटि, चीनी माँटिक बरतन, कैनाइट, तांबा, बॉक्साइट, एस्बेस्टस, डोलोमाइट, क्वाट्र्ज, यूरेनियम आदि ऐ क्षेत्रमे भेटैत अछि। यएह कारण अछि जे ऐ इलाकामे कइएकटा पैघ उद्योग अछि। जमशेदपुरमे टाटा ग्रुपक टिस्को आ टेल्को, बोकारोमे स्टील प्लांट, रांचीमे हेवी इंजीनियरिंग

कॉरपोरेशन, मुरी (रांची) मे एल्युमिनियम प्लांट, पूर्वी सिंहभूममे हिंदुस्तान कॉपर कॉरपोरेशन, सिन्दरीमे केमिकल फर्टिलाइजर प्लांट, धनबाद-झरिया कोल माइन्स, झिंकपानी जपला, खेलारी आ जमशेदपुरमे सीमेण्ट फैक्ट्री सभ ऐ इलाकामे स्थापित अछि । एतेक नीक उपजाऊ जमीन आ विस्तृत जल संसाधन आ अतुलनीय खनिज संपदाक मालिक रहलाक बादो बिहार राज्य देशक अन्य राज्यक तुलनामे विकासक सब स्थापित पैरामीटरमे पिछड़ल अछि।

बिहार-पिछड़ल वर्तमानः एतेक प्राकृतिक संसाधन रहलाक बादो जँ बिहार गरीब अछि तँ एकरा लेल केकरा दोषी ठहराओल जायत? सदीसँ परतंत्र रहलासँ उत्पन्न भेल कुंठा या प्रशासनिक, राजनीतिक आ सामाजिक कुप्रबंधनक कारण। अर्थव्यवस्था मूल रूपसँ खेतीपर आधारित अछि, एकटा गप निश्चित रूपसँ बुझल जाइत अछि जे जँ खेती कोनो तरहे सुव्यवस्थित कएल जाय तखने बिहारक लोक जमीनसँ जुड़ल रहि सकता। समस्या अछि जमीनक मालिकाना हक। ऐ ठाम ८४.६ प्रतिशत जोतेदार लग जमीनक मात्र ३७.७ प्रतिशत अछि। ऐमे सँ औसत होल्डिंग क्षेत्र २ हेक्टेयरसँ बेसी नै अछि। दोसर दिस १५.४ प्रतिशत लोक लग ६३.३ प्रतिशत जमीन अछि। एकर ई

अर्थ छैं जे जँ खेती-बाड़ीमे कनियो-मनियो गड़बड़ी हेतैं तँ बहुत गोटेक रोजी-रोटीक नुकसान हेतैं। बिहारक खेती बरखापर निर्भर अछि बा भगवान पर। बिहार लगभग सभ साल सूखा बा बाढ़िक शिकार होइत अछि। कखनो काल ई दुनू एक संग आबि जाइत अछि। कखनो एक इलाकामे रौंदी आ दोसरमे बाढ़ि आ कखनो पहिने रौंदी आ फेर ओही ठाम बाढ़ि बा पहिने बाढ़ि आ फेर रौंदी। ऐ दुनू समस्याक सभ रूप घातक अछि। बिहारक भौगोलिक संरचनाक चारू कात धार आ दक्षिण बिहारक पठार क्षेत्रमे सूखाक कारण उत्तरमे बाढ़िक संभावना अछि। मध्य बिहारमे हालात बदलैत रहैत अछि। पटना, आरा, रोहतास, भोजपुर, भबुआ आदि जिलामे सोन नहरक कारण किछु खेतीक प्रबंधन होइत अछि, मुदा ऐ जिलामे सेहो प्रायः बाढ़ि अबैत अछि। मध्य बिहार, गया, जहानाबाद, नालंदा, नवादा, गया आ औरंगाबादक बाकी जिला बेसी काल सूखाक शिकार होइत अछि।

बाढ़ि आ बिहारः हम अपन अध्ययन बिहारमे बाढ़ि धरि सीमित राखऽ चाहैं छी। राष्ट्रीय बाढ़ि आयोग (१९८०) क रिपोर्टक अनुसार देशमे बाढ़िसँ हुअयबला नुकसानमे २२.८ प्रतिशत बिहारक हिस्सा अछि। देशमे बाढ़िसँ प्रभावित कुल

क्षेत्रक मात्र १६.५५ प्रतिशत बिहारमे पड़ैत अछि। मतलब जे बिहारक अपेक्षाकृत कम इलाकामे बेसी नुकसान होइए। राष्ट्रीय बाढ़ि आयोग (१९८०) क रिपोर्टक प्रकाशनक बाद १९८४, १९८७ आ १९९३ मे बिहारमे पँघ बाढ़ि आयल अछि, जइमे १९८७ क बाढ़ि विनाशकारी मानल गेल अछि। ऐ बाढ़िसँ पूरा देशमे बाढ़िक संदर्भमे बिहारक दर्जा कनी बढ़ि गेल। एकटा रिपोर्टक अनुसार भारतक सभसँ बेसी बाढ़ि प्रभावित राज्य बिहार अछि। देशक कुल ४०० लाख हेक्टेयर बाढ़ि प्रभावित क्षेत्रमे सँ ६४.६१ लाख हेक्टेयर बिहारमे अछि। जे देशक कुल बाढ़ि प्रभावित क्षेत्रक १६ प्रतिशत अछि। ई बिहारक भौगोलिक क्षेत्रफलक ३७ प्रतिशत अछि जे १७३.५० लाख हेक्टेयर अछि। जनसंख्याक हिसाबसँ कुल बाढ़ि प्रभावित आबादीक ५६.५ प्रतिशत असगर बिहार राज्यमे अछि। ई तथ्य राष्ट्रीय बाढ़ि आयोग द्वारा सेहो स्वीकार कयल गेल अछि । उत्तर बिहारक कुल क्षेत्रफल ५८.५१ लाख हेक्टेयर अछि। ऐ भाग मे ४४.४७ लाख हेक्टेयर क्षेत्र बाढ़ि प्रभावित अछि। ऐ तरहेँ उत्तर बिहारक करीब ७६ प्रतिशत इलाका बाढ़ि प्रभावित अछि।

जँ हम जीवनक गुणवत्ताक माप लेल मात्र साक्षरताकेँ पैरामीटर मानब तँ उत्तर बिहारक

हालत पूरा बिहारक संदर्भ मे सेहो सभसँ दयनीय अछि। ऐ ठाम साक्षरताक प्रतिशत बिहारसँ कम अछि। तहिना बिजलीक प्रति व्यक्ति खपतक एकटा आर उदाहरण लऽ सकै छी- १९७८-७९, १९८०-८१ आ १९८१-८२ मे देशमे बिजलीक प्रति व्यक्ति खपत क्रमशः १५०.७३ किलोवाट, १५५.६२ किलोवाट आ १४३.४१ किलोवाट छलै। दोसर दिस ऐ कालावधिमे बिहारक प्रति व्यक्ति खपत क्रमशः ८७.१५ किलोवाट, ८२.५८ किलोवाट आ ८१.१३ किलोवाट रहल। जँ उत्तर बिहारकेँ अलगसँ देखल जाय तँ ऐ कालावधिमे ऐठाम प्रति व्यक्ति बिजलीक खपत क्रमशः २६.६० किलोवाट, १४८२ किलोवाट आ १३.४३ किलोवाट छल, माने राष्ट्रीय औसतक दसम हिस्सा सँ कम उत्तर बिहारमे उपलब्ध अछि। एकर अलाबे आइ-काल्हि बिहारक मोटामोटी ९ लाख हेक्टेयर जमीन पानीक कटाइसँ ग्रस्त छै आ ई सभटा इलाका उत्तर बिहारमे छै, जइ लेल सभ साल ऐक्षेत्रमे बाढ़ि आ एतुक्का जमीनक बनावट जिम्मेदार छै। अत्यधिक जल कटाइसँ कृषि उत्पादन आ कृषिसँ जुड़ल रोजगार दूनूपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ल छै आ आर्थिक संकट बढ़ल छै।

घाघरा, गंडक, बुढ़ी गंडक, बागमती, अधवारा समूह, कमला, कोसी, महानन्दा मुख्य धार सभ

अछि । ई सभ धार अपन मार्ग बदलबाक लेल प्रसिद्ध रहल अछि, जइमे कोसीक धारा सभसँ बेसी चलायमान अछि । ऐ समस्त क्षेत्रक पानिक निकासीक एकमात्र तरीका गंगाक माध्यमसँ अछि आ ई धार पूरा प्रांतक लेल जीवन रेखाक काज करैत अछि ।

गंगा: दक्षिण बिहारक सुवर्णरेखा घाटीकेँ छोड़ि बिहारक शेष पानिक निकासी गंगाक माध्यमसँ होइत अछि आ तइ लेल गंगा बहुत महत्वपूर्ण भऽ जाइ छथि। गंगा लेल बिहार सेहो कम महत्वपूर्ण नै अछि। गंगाक एकटा नाम जाह्नवी अछि। आधुनिक भागलपुरक सुल्तानगंज लग गंगाक धारामे एकटा पहाड़ीपर भगवान शंकरक मंदिर अछि। कहल जाइए जे जलू ऋषिक एतय आश्रम छल। भगीरथ जखन गंगाकेँ अपन पूर्वजक उद्धार लेल कपिल मुनिक आश्रम धरि जेबाक लेल मना लेलखिन तँ गंगा हुनकर पाछु-पाछू चललीह आ जे किछु हुनकर रस्तामे आबि जाइ छल तइपर अपन छाप छोड़ि देलखिन। मुदा आब प्रतियोगिता जट्स ऋषिक संग छल जिनकर आश्रम गंगा बहाबयबाली छली। गंडकक प्रवाह देखि मुनि क्रोधित भऽ गंगाकेँ पीबि गेला। बेचारा भगीरथ कोनो तरहेँ ऋषिकेँ गंगा केँ मुक्त करबाक लेल मना लेलनि, तखन ओ गंगा केँ पेट सँ निकालि

लेलनि। एत्तैसँ गंगाक नाम जाह्नवी पड़ल।

गंगा धार उत्तर प्रदेशक उत्तर काशी जिलाक ७,०१६ मीटरक ऊंचाइपर गंगोत्री ग्लेशियरसँ उत्पन्न होइत अछि । मूलमे ऐ धारकेँ भागीरथी कहल जाइ छै, जे देव प्रयाग लग अलकनंदासँ संगमक बाद गंगा नाम लैत अछि आ लगभग २५० किलोमीटर नीचाँ बहलाक बाद ऋषिकेश लग मैदानमे उतरि जाइत अछि। एकर बाद ई धार वाराणसीसँ हरिद्वार, कानपुर, वाराणसी होइत करीब १५५ किलोमीटरक दूरीपर बिहारमे प्रवेश करैत अछि। उत्तर प्रदेशमे ऐ धारक कुल लम्बाई लगभग १४५० कि.मी. अछि जइमे गंगोत्रीसँ देव प्रयाग धरि भागीरथीक लम्बाइ शामिल अछि । बिहारमे ऐ धारक लम्बाइ लगभग ४३८ किमी अछि, जइमे ११० किमी उत्तर प्रदेश आ बिहारक सीमा बनबैत ई बहैत छथि।

राजमहल लग बिहारसँ निकललाक बाद गंगा फरक्कासँ ४० किलोमीटर पूर्वमे दू भाग मे बँटैत अछि आ ऐ दुनू धाराक नाम अलग भऽ जाइत अछि। बाम धार, जे पूर्व दिस जाइत अछि, ओकरा पद्मा कहल जाइत अछि आ भागीरथी नामक दहिना धार दक्षिण दिस बहैत अछि आ मुर्शिदाबाद, बर्द्धमान, चौबीस परगना, कलकत्ता सँ होइत अनेक धारामे शाखाबद्ध होइत सागर द्वीप लग

बंगालक खाड़ीमे मिलैत अछि। पश्चिम बंगालमे गंगाक कुल लम्बाइ ५२० कि.मी. छै।

जतऽ एतेक पैंघ आ एतेक धार अछि ओतऽ बाढ़ि कोनो पैंघ बात नै। असलमे ऐ क्षेत्रक संरचना एहन अछि जे बाढ़ि आ धारक मार्ग बदलब एकटा स्वाभाविक प्रक्रिया छिऐ ।

उत्तर बिहारक पश्चिम चंपारणक सोमेश्वर पहाड़ीक क्षेत्रमे जमीन आ धारक ढलान कम हेबाक कारण बरसातक पानि आसानीसँ नै निकलैत अछि आ पैंघ क्षेत्रमे पसरैत अछि। जखन गंगाक स्तर बेसी होइ छै तखन ओकर सहायक धारक पानि सेहो ठमकि जाइ छै। पानिक प्रसारक कारण एक दिस खेतमे नव माटि जमा भऽ जाइ छै आ जमीनक उर्वरता फेर ताजा भऽ जाइ छै। कखनो काल जँ भयंकर बाढ़ि आबि जाय तँ फसलक संग-संग बहुत रास जान-मालक नुकसान सेहो होइ छै।

उत्तर बिहारमे बाढ़िक ऐ समस्याकेँ बुझबा लेल गंगा घाटीक निर्माणक प्रक्रियाकेँ बुझब आ संगे ई बुझब जे बर्खा आ पानिक अलग-अलग स्थिति, जकरा जलविज्ञान चक्र कहल जाइए, जरूरी अछि। तखन ई बुझि सकब जे धार केना अपन धारा बदलैत अछि आ तखन बाढ़िक रूप स्पष्ट हएत।

गंगा घाटीक निर्माण: *मोटामोटी ३३,५०० लाख बर्ख पहिने अपन पृथ्वी सूर्यसँ आगिक गोलाक रूपमे अलग भऽ गेल छल। तखन एकर ऊपरी सतहपर बड़कल चट्टानक पड़त रहै छलै। समयक संग भारी चट्टान तखन धरती। मुदा हल्लुक चट्टान सभ ऊपरे रहि गेल। भूकंपक प्रभाव ऐ बड़कल चट्टान आ तइसँ निकलल गैसक प्रभावसँ वायुमंडलकक निर्माणमे हुअय लगलै। आस्ते-आस्ते जखन पृथ्वी आरो ठंढ़ा भेल तँ वायुमंडलमे भापक रूपमे वर्तमान पानि ठंडा भऽ गेल, बर्खा-बुन्नीमे बदलि कऽ वापस जमीनपर खसि पड़ल आ लाख बर्ख धरि ऐ तरहक घटनाक कारण समुद्रक निर्माण भऽ गेल। ऐ तरहें पृथ्वीक सतहपर तापमान कम भेल मुदा जमीनक भीतरक गर्मी आ उथल-पुथल जारी रहल आ आइयो जारी अछि। आइ अपन धरतीक पपड़ी) कतेको पैंघ मजबूत टुकड़ामे बँटल अछि आ ऐपर बहुतो देश आ महाद्वीप बसल अछि । मुदा मोटामोटी ३० करोड़ बर्ख पूर्व धरि पृथ्वीक सतह एहन टुकड़ामे नै बँटल छल। ताबत धरि सभ द्वीप वा महाद्वीप एक्के भूखण्डमे विद्यमान छल। मुदा पछिला २० करोड़ बर्खमे धरतीक सतहमे खाली दराड़े नै भेल छै, वरन् ओइ कारणसँ विभाजित टुकड़ामे गति सेहो हुअय लागल छै, जकरा प्लेट कहल जाइ छै। ऐ प्लेट सभक पसरलासँ आइक दुनियाँक रूप निकलल अछि। ई*

प्रक्रिया अखनो रुकल नै अछि। आइयो ई प्लेट सभ एक दोसरासँ रगड़ा लैत रहैए। एक भाग दोसरपर चढ़ैए। एतेक रास बात हमरा सभक धरतीक नीचाँ प्रति क्षण भऽ रहल अछि, जे कखनो काल भूकम्पक रूपमे अबैए। एकटा अनुमानक अनुसार दुनियामे सालमे लगभग १०,००० छोट-पैघ भूकंप दर्ज होइए, मुदा ओइमे एहन भूकंपक संख्या दससँ बेसी नै अछि जइसँ जान-मालक नुकसान होइत अछि। २०म शताब्दीक प्रारंभमे अमेरिकी वैज्ञानिक टेलर आ जर्मन वैज्ञानिक अल्फ्रेड पृथ्वीक विकास आ महाद्वीपक वर्तमान रूपक अध्ययन केलन्हि। पृथ्वीक विकासक जे चित्र ऐ दूनूक शोधसँ निकलै छै, ओइसँ पता चलै छै जे एक समयमे दक्षिण अमेरिकाक पूर्वी सीमा आ अफ्रीकाक पश्चिमी सीमा एक सन छलै। तहिना उत्तर-पश्चिम अफ्रीकाक सीमा उत्तरी अमेरिकाक सीमाक संग मेल खाइ छल। आइक ऑस्ट्रेलिया कहियो अंटार्कटिकाक हिस्सा छल। आइक भारतक विन्ध्य आ राजमहल पर्वत श्रृंखलाक नीचाँक भाग कहियो दक्षिण ध्रुवक बीचोबीच द्वीप जकाँ छल। भूवैज्ञानिक लोकनि ऐ जमीनक टुकड़ाकेँ गोंडवाना भूमि कहै छथि। समयक संग गोंडवानाक भूमि पूर्वोत्तर दिशामे एशिया लग आबय लागल । एशिया आ गोंडवाना भूमिक बीच

टेथिज सागर छल। मुदा करीब ५.३ करोड़ साल पहिने गोंडवाना भूमि आ एशियाक मुख्य भूमि एक दोसरासँ जुड़ि गेल छल। टेथिस सागर पहिने छोट भऽ गेल, मुदा बादमे एशियाक मुख्य भूमिपर लगातार बर्खा आ ओकर संग आयल बालु आ गाद ऐ समुद्रकेँ पूर्ण रूपसँ भरि देलक। आइक गंगा घाटी एशियाक मुख्य भूमि आ गोंडवाना भूमिक बीचक भरल समुद्रे अछि। ऐ समस्त कथाक एकटा आर पक्ष अछि। वैज्ञानिक लोकनिक मानबछै जे जखन एशिया आ गोंडवाना केर भूमि एक संग ऐलै तखन आइक छोटानागपुर-संथाल परगनाक राजमहल श्रृंखला आ पूर्वोत्तर राज्य क गारो श्रृंखला सभसँ पहिने एक-दोसरासँ टकरा गेलै। ऐ संयोगक कारण पानिक प्रवाहक लेल पूब दिसक बाट बन्न भऽ गेल छल। आब एशियाक भूमिक दक्षिण वा गोंडवाना भूमिक उत्तरमे जे किछु पानि बरसै छल, से सभटा पश्चिम दिस बहैत समुद्र धरि पहुँचि जाइ छल। माने ओइ समयमे गंगा वास्तवमे उल्टा बहै छल, जखन कि ब्रह्मपुत्र घाटीक पानि सेहो अरब सागरमे बहैत छल । मुदा आस्ते-आस्ते पूरा गोंडवाना भूमि एशियासँ जुड़ि गेल, ओकर पश्चिम-उत्तर कात एशिया दिस बेसी मजबूतीसँ बढ़ल आ गारो आ राजमहल पहाड़ी फेरसँ एक दोसरसँ अलग भऽ गेल। ऐ तरहें जलक अधिकांश

जल निकासी पूर्व दिस शुरू भेल आ गंगाक जन्म भेल जे हिमालयसँ बंगालक खाड़ी धरि जाइत अछि । गोंडवाना भूमिक उत्तरी सीमापर जे पहाड़ वा चट्टान अछि, जकरा राजमहल श्रृंखला आ विन्ध्य पर्वत श्रृंखला कहल जाइत अछि, बहुत पुरान छल, मुदा एशियाक भूमि मात्र नव काँच माटि छल। एहन भुरभुर माटिपर जखन गोंडवाना जमीनक दबाव आयल तखन ओ पहाड़मे बदलि गेल, मुदा ई पहाड़ पाथर नै अछि, काँच माटिसँ बनल अछि, जकरा चट्टान बनबामे लाख बर्ख लागत। आइक नेपाल आ भूटानक पहाड़ अखनो नव अछि आ ऐ मे सेहो एहने थाल-कादोक अछि। एहन स्थितिमे जखन ऐ पहाड़पर पानिक संग बर्खा होइत अछि तँ ओइमे सँ निकलैत धारमे मात्रामे माटि आ बालु आबि जाइत अछि। कइएक सय सालसँ उत्तरमे पहाड़सँ नीचाँ बहैत माटि आ बालु गंगा घाटी आ ओकर मैदानक निर्माण केलक। पृथ्वीक विभिन्न प्लेटकसँ टूटा बात स्पष्ट अछि । एकटा ई जे आइक भारतीय भूमिक दबाव उत्तर दिस एशियाक मुख्य भूमिपर अछि आ दोसर बात जे भारतक लगभग पूरा उत्तरी भागमे दू प्लेटक जंक्शन जोन अछि । प्लेटक रगड़ाक कारण ऐ क्षेत्रमे भयंकर भूकंप आबै छै। पृथ्वीक द्रव्यमान विस्थापन बहुत सुस्त प्रक्रिया छै, जकर अनुभव

सय-पचास वर्षमे नैं कयल जा सकैत अछि। एहन परिवर्तन हजार वर्षमे अनुभव कयल जा सकैत अछि। गंगा घाटीक निर्माण सेहो एहने घटना थिक। हजार वर्षक वर्षा आ परिणामस्वरूप गादक बालु ऐ घाटीक निर्माणमे योगदान देलक अछि।

जल-चक्रः बर्खाक अपन सिद्धांत होइ छैं। सूर्यक रोशनीक कारण समुद्रक पानि वाष्पित भऽ आकाश दिस बढ़ि जाइ छैं। ऊपर पहुँचलापर कम तापमानक कारण ई भाप ठंडा भऽ जाइ छैं आ मेघक रूप लऽ हवाक प्रभावक कारण जमीन दिस बढ़ि जाइ छैं। ई जल मेघमे बरखाक बुन्न, ओला वा बर्फक रूपमे संग्रहित होइत अछि आ अनुकूल परिस्थितिमे जमीनपर खसि पड़ैत अछि आ जीवक जीवनक आधार बनि जाइत अछि। ओस वा कुहेस सेहो ऐ पानिक एकटा आर रूप अछि। जमीनपर खसैत पानिक किछु हिस्सा नाली आ धार होइत वापस समुद्र तक पहुँचैत अछि। किछु पानि गाछक श्वसन सन गतिविधिक माध्यमसँ वापस वायुमंडलमे पहुँचि जाइ छैं आ किछु पानि जमीनक भीतर जा कऽ भूमिगत जल स्तरकेँ समृद्ध करैं छैं। असलमे वएह पानिक धार जमीनक नीचाँ विद्यमान अछि जेना जमीनक ऊपर धार आदिक रूपमे देखैं छी । जमीनक नीचाँक पानि सेहो सतही पानि जकाँ समुद्रसँ अपन संपर्क बनौने रहैत अछि।

ऐ तरहें समुद्रसँ समुद्रमे पानिक चक्र पूरा भऽ जाइत अछि । ई पूरा प्रक्रिया जल चक्र कहाइ छै, जइमे प्रकृति समुद्रक नमकीन पानिकेँ उपयोगी मीठ पानिमे बदलि दै छै। पृथ्वीपर जीवनक कल्पना बिना मीठ पानिक नै कयल जा सकैत अछि। समुद्र सँ समुद्र धरि पानिक ई निरंतर यात्रा कहियो नै रुकैत अछि ।

धारक मार्ग परिवर्तन: *पहाड़ी इलाकामे जमीनक ढलान एतेक ऊँच होइ छै जे पानि नै रुकै छै, मुदा धारक पहाड़सँ मैदानमे उतरैत देरी जमीनक ढलान बहुत कम भऽ जाइ छै, जकर कारण पानिक गति काफी कम भऽ जाइ छै। पहाड़सँ उतरैत धारक पानि मात्र पानि नै, काफी मात्रामे गाछ, चट्टान, पाथर, बालु आ माटि सेहो लऽ जाइत अछि। जमीनक ढलान कम भेलापर पाथर आदि बेसी दूर धरि नै जाइत अछि। मुदा माटि/बालु धारक पानिक संग चलैत रहैत अछि। जमीनक ढलान आ पानिक वेग कम हेबाक कारणेँ ऐ माटि/बालुकेँ धारक तलहटीमे बैसबाक मौका भेटै छै। एकर अलाबे जखन धार किनार तोड़ि बहै छै तँ पानिक संग आनल गेल बालू आ माटि पूरा क्षेत्रमे पसरि जाइ छै आ जमा भऽ जाइ छै। धार ऐ तरहेँ जमीनक निर्माण करैत अछि। धारक गतिमे कमी ओइ स्थानपर देखल जाइत अछि जतऽ ई*

पहाड़सँ मैदानमे उतरैत अछि, मुदा जतऽ ई धार बाढ़िक समय पैघ धारसँ मिलैत अछि, छोट धारक गति प्रायः ठहरावमे बदलि जाइत अछि, कारण बड़का धारमे जलस्तरक अनुसार छोट धारक पानि बहैत अछि। समुद्रक कातमे समुद्रमे बढ़ैत ज्वारमे आ ओतय समुद्रसँ मिलय बला धारक मुहानापर सेहो लगभग एहने स्थिति उत्पन्न होइ छै। गति रुकलाक कारण ऐ दुनू ठाम माटि/बालुक जमाव तेज भऽ जाइत अछि जकर कारण नव भूमि/ डेल्टा बनैत अछि। अमेरिकाक मिसिसिपी धारक मुहानापर ६.५ किमी चाकर पट्टीक निर्माण सय सालक भीतर पूर्ण भऽ जाइ छै। चीनक यांगत्से-कियांग धार ऐतिहासिक कालसँ ४८ किमी चाकर डेल्टाक निर्माण केने अछि, चीनक शोक ह्वांग हो धार ५,५०० कॉमन एरा पूर्वसँ लगभग ५०० किमी चाकर डेल्टाक निर्माण केने छै। तहिना गंगा धार सेहो समुद्रसँ पहिने करीब २५० किलोमीटर इलाकापर डेल्टा बनेने अछि। यूरोपक अधिकांश देशक पैघ हिस्सामे लगभग साल भरि बरसात होइ छै। हमर देशमे बरसातक मौसम होइ छै आ कुल वार्षिक वर्षाक लगभग ८७ प्रतिशत जूनक मध्यसँ अक्टूबरक मध्य होइ छै। बर्खा आ बाढ़िक अंत भेलापर किछु बालु/माटि ओइ इलाकामे जमा करय भऽ जाइ छै। बाढ़िक कारण मोट बालु/माटिक परत जमा भऽ जाइत अछि, किछु

ठाम पातर भऽ जाइत अछि, कटावक कारण खधाइ बनैत अछि आ किछु ठाम पानि जमा भऽ जाइत अछि। आगामी मौसममे जखन बाढ़िक पानि फेर बढ़ैत अछि तँ पिछला सालसँ जमा भेल माटि काटि कऽ नव बाट बनि जाइत अछि। कखनो काल ई नव मार्ग एतेक पैघ आ प्रभावी होइत अछि जे ऐ नव मार्गपर धार स्वयं फाटि जाइत अछि । जइ धारक पानिमे बालू/माटिक मात्रा अधिक होइ छै, ओकर कछारमे बालू/माटिक जमाव बेशी हेतै आ एहन धारमे बदलावक गुंजाइश बेशी हेतै। यएह कारण अछि जे गंगाक दहिना कातमे मिलैबला धारमे परिवर्तनक संभावना गंगाक बाम कातमे मिलैबला धारक तुलनामे कम अछि, कारण दहिना कातमे मिलैबला धार पठारसँ अबैत अछि आ बामबला धार हिमालयक काँच कच्चा आ भंगुर पहाड़सँ अपना संग बहुत रास माटि/बालु लऽ कऽ अबैत अछि। अधिक गाढ़बला धारक मार्ग बदलनाइ ओतबे स्वाभाविक आ प्राकृतिक घटना छै जेना पृथ्वीक विभिन्न प्लेटक गति, वर्षा आ धार द्वारा डेल्टाक निर्माण। ऐ तरहें बाढ़ि, कटाव, जल-जमाव, धारक मार्ग बदलब सन प्रश्न गंगाक बाम (उत्तरी) भागमे बेसी गंभीर अछि। ई सवाल ओइ ठाम आर गंभीर अछि जतऽ जमीनक ढलान

लगभग समतल अछि। एहन स्थल पूर्वी उत्तर प्रदेश, उत्तर बिहारक मैदान आ उत्तर बंगालमे गंगा घाटीमे भेटैत अछि। लेकिन एकर मतलब एकदम नैं छैं जे बाढ़िक मामिलामे गंगाक दहिन किनारमे पूर्ण शांति छैं। ओतऽ कमसँ कम मैदानमे समस्या ओतबे छैं जतेक गंगाक उत्तरी तटपर। बिहारक भोजपुर, रोहतास, पटना, मुंगेर, भागलपुर आ साहेब गंज जिलामे बाढ़िसँ उत्पन्न मुद्दा तकर प्रमाण अछि। ऐ घाटीक दक्षिणमे विन्ध्य आ सतपुरा पर्वत श्रृंखला अछि, जे गोंडवाना भूमिक हिस्सा अछि। ई पहाड़ी हिमालयक पहाड़सँ बहुत पुरान अछि आ मजगूत पाथर बनि गेल अछि। से शिवालिक आ हिमालयक तुलनामे ऐ पहाड़ीमे माटिक कटाव कम होइ छैं। मुदा क्षेत्रफलक हिसाबसँ गंगाक उतरबाड़ी इलाका बाढ़िसँ बेसी तबाह अछि।

बाढ़ि आ ओकर ऐतिहासिक संदर्भः गंगा बेसिनक निर्माणक प्रक्रिया समुद्रसँ समुद्रमे पानिक यात्रा आ नदीक मार्ग बदलबाक कारणकेँ बुझलाक बाद एकटा बात स्पष्ट रूपसँ सोझाँ अबैए जे पृथ्वीक विस्थापनकेँ रोकबाक कोनो आशा नैं अछि। बरखा होइत रहत आ जखन ई पानि माटिपर खसत तखन कटाव हएत, नदी अपन रस्ता बदलत आ बाढ़ि अबैत रहत। मनुष्य

अपन बौद्धिक कौशलसँ माटीक कटाव, नदीक मार्ग परिवर्तन आ बाढ़िसँ कनी बदलाव आनि सकैए। ओकर हैसियत अखन धरि ऐसँ नै अछि। एतऽ एकटा बात ध्यान देबऽ योग्य अछि जे उत्तर बिहार बा गंगा घाटीक पूरा मैदान एकटा उपजाऊ क्षेत्र अछि, जकर उपजाऊ शक्ति बाढ़िक समय नदीक पानिक संग आयल गादक कारण निश्चित रूपसँ बढ़ल अछि। प्राचीन कालसँ कृषि समृद्ध क्षेत्र रहबाक कारण ऐ क्षेत्रमे विभिन्न सभ्यताक विकास भेल। प्रकृति मुदा भिक्षा नै बाँटैत अछि। जँ गुलाब अछि तँ संग-संग काँट सेहो। जतऽ-जतऽ बरखाक रूपमे मीठ पानिक समृद्ध स्रोत अछि, नदीक जाल किछु दूर धरि पसरल अछि, ओतऽ बाढ़ि, कटाव आ नदीक मार्ग परिवर्तन बेसी सुनबामे अबैत अछि। नदी एकटा पैघ क्षेत्रमे थाल/बालू पसारि कऽ ओकरा समुद्रमे पहुँचेबाक एकटा सशक्त साधन अछि, जे बाढ़िक समय अपन उत्पत्तिसँ समुद्र तक पहुँचैत अछि। असलमे ऐ तरहक जमीनक निर्माण नदीक स्वाभाविक गुण अछि। गंगा घाटीक ई क्षेत्र एक समयमे समुद्रक बालु आ नमकीन पानिक क्षेत्र रहल हएत। मुदा बरखाक कारण उत्तरमे हिमालयक काँच माटि नीचाँ बहय लागल जइ कारण जमीन उपजाऊ होबऽ लागल। हम जइ ठामक गप्प कऽ रहल छी

ओकर भूमि दुनियाँक सभसँ उपजाऊ जमीनमे गानल जाइत अछि आ ऐ नदीकेँ जल संसाधनकएकमात्र स्रोत मानल जाइत अछि। भौतिकवादी मान्यताक अलाबे हमरा सभक लेल नदीक महत्व एकटा जीवनदायी शक्ति सन रहल अछि। भारतक संस्कृतिक आधार नदी रहल अछि। एतेक सभ्यता ऐ नदी सभक कातमे अनादि कालसँ विकसित भेल अछि आ समयक संग प्रकृतिक कोखमे लीन भऽ गेल अछि, मुदा ऐ नदी सभक संग हमर सभक संबंध सदिखन शुद्ध आ प्रेम मातृशक्ति आ ओकर उपासक सन रहल अछि। जतऽ महर्षि वेद व्यास महाभारतमे नदी सभक प्रति अपन श्रद्धा व्यक्त केने छथि ओ 'विश्वस्य मातरः' अर्थात लोकमाता कहै छथि। कौटिल्य सन विद्वान एहन स्थानकेँ निवासक लेल वर्जित मानने छथि, जतऽ कोनो सुन्दर नदी निरंतर नै बहैत अछि। ओ नदीक महत्वकेँ रेखांकित केलनि 'न तत्र दिवसम् वसेत'- एहन स्थानपर एक्को दिन लेल नै रहबाक चाही। अपन सभक शुभ संस्कारमे भारतीय लोकनि देवता आ पूर्वजक संग-संग नदीक आह्वान करब कहियो नै बिसरै छथि। गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु आ कावेरीक स्मरणक बिना हमर सबहक कोनो शुभ कर्म पूर्ण नै होइत अछि। पवित्रताक उदाहरण देबऽ लेल नर्मदाकेँ मोन पाड़ै छी आ

गंगाक संतान कहल जायमे गर्वित होइ छी। 'मृत्युपर गंगा प्राप्त करबाक' इच्छा कबीर सन साधकमे मात्र ऐ लेल नैं भेल जे ओ अपन जीवनक अधिकांश समय गंगा तटपर बितेने छला। कोनो नदीकेँ भावसँ गंगा कहबाक परंपरा अखनो हमरा लोकनिक मोनमे जीवित अछि। भगवान श्रीकृष्णक चर्चा 'कालिन्दि कूल कदम्ब की डारन' केने बिना अपूर्ण रहि जाइए, तँ कतेक बेर वाल्मीकि भगवान रामकेँ सरयूक सोझाँ प्रणाम करैत देखलनि। क्षिप्रा कालिदासक लेखनकेँ लालित्य देलनि। तीर्थक अवधारणा (तीर्थक शाब्दिक अर्थ नदीक कात थिक) नदीक महिमाक मान्यताकेँ अभिव्यक्ति देलक अछि। एहन विशेष अवसरपर नदीमे स्नान करबाक हमरा लोकनिक अलग परंपरा अछि। गंगा दशहरा, माघ पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा, संक्रांति आदि बहुत रास एहन अवसर अछि जखन हमरा लोकनिक पूर्वज लोकनि लोककेँ नदीक समीप अनबाक व्यवस्था केने छला। नदीक शुद्धताक निर्वाहक लेल उत्सर्जन आदिक विरुद्ध शास्त्रमे सख्त दिशा निर्देश छल। बिहारक छठि पर्व सूर्य पूजाक संग-संग नदीक प्रति हमर सबहक श्रद्धाक उत्कृष्ट उदाहरण अछि। हमर ई समृद्ध धरोहरक एगो छोट कड़ी अछि उत्तर बिहार, किशनगंज, पूर्णिया आ

कटिहार क पूर्वी जिलासँ बहयवाली महानंदा नदी। महाभारतमे कौशिकी (कोसी) नदीक समीप बहैत टूटा नदी नन्द आ ऊपरी नन्दक उल्लेख अछि, जतऽ पाण्डव लोकनि निर्वासन कालमे ऐल छला। मानल जाइए जे महाभारत कालक ऊपरी नन्द वर्तमानक महानन्दा अछि। महानन्दाक सहायक नदी कंकाईक वर्णन सेहो महाभारतमे ऐल अछि जतऽ एकरा कंकानन्द कहल गेल अछि। सभ साल कटिहार जिलाक दुर्गापुर आ कल्याणीमे माघ पूर्णिमाक दिन मेला लगा कऽ महानन्दाक प्रति श्रद्धा व्यक्त कएल जाइत अछि। ऐ दिन ऐ इलाकामे काढ़ा गोला लग गंगाक कातमे मेला सेहो लगैत अछि ।

महानन्दा नदी: महानन्दा उत्तर बिहारक एकटा मुख्य नदी अछि। ऐ नदीक उद्गम पश्चिम बंगालक दार्जिलिंग जिलाक करसेओंगसँ ६ किमी उत्तरमे हिमालयक चिमले अछि, जतऽ सँ ई २०६२ मी. ऊँचसँ गंगा ल्ल ३७६ किमी.क यात्रा प्रारम्भ करैत अछि। कनकाईक संगमक बाद महानन्दा बागझोर लग बड़ही-गुवाहाटी राष्ट्रीय राजमार्ग ३१ (राष्ट्रीय राजमार्ग ३१) पार कऽ बागडोब पहुंचैए जतऽ ओकर धारा दू भागमे बँटैत अछि। बगडोबमे लगभग सीधा दक्षिण दिस बहयबला धाराकेँ झौआ शाखा कहल जाइ छै आ महानंदाक

अधिकांश जल प्रवाह आइ-काल्हि ऐ धारासँ गुजरैत अछि। झौंआ शाखा स्वयं आगू बढ़ैत पनार नदीक दहिना कात एकरा संग मिलैत अछि। ई शाखा आगू झौंआक पास कटिहार-बरसोई रेल लाइन आ लाभा लग कटिहार-मालदा रेल लाइनकेँ पार करैत अछि। महानन्दाक झौंआ शाखाक एकटा आर सहायक नदी घासिया एकरा लाभाक नीचाँ जोड़ैत अछि। एतऽसँ महानन्दाक झौंआ शाखा पश्चिम बंगालक मालदा जिलामे प्रवेश करैत सुरमरा लग गंगा नदीमे मिलैत अछि। बगडोबमे महानन्दाक एगो आर शाखा जे दक्षिण-पूर्व दिशामे बहै छै, बरसोई लग कटिहार-बरसोई रेल लाइन पार करैए। बरसोईक नीचाँ ई धार सेहो दू भागमे बँटैत अछि। ऐमे सँ पूर्व दिस बहयबला धारा बेसी सक्रिय अछि, पश्चिम दिस बहय बला धारा उनटा-पुनटा भऽ गेल अछि आ ऐ मे गाद-बालूक जमाव अछि। ई धारा पुनः सुबरनापुर लग मुख्य धारामे जुड़ैए। आब ई संयुक्त धारा बांग्लादेशक गोदागिरी घाट लग गंगा संग मिलैत अछि। महानन्दाक कुल जलग्रहण क्षेत्र २४,७५३ वर्ग किलोमीटर छै, जइमेसँ ५२९३ वर्ग किलोमीटर नेपालमे, ६६७७ वर्ग किलोमीटर पश्चिम बंगाल मे, ७९५७ वर्ग किलोमीटर बिहारमे आ बाकी बांग्लादेशमे पड़ै छै। डेंगरा घाटक उत्तरमे ऐ नदीक

तलहटीक ढलान अपेक्षाकृत अधिक छैं, जे धनगरा घाटक नीचाँ आस्ते-आस्ते कम होइत जाइ छैं, जइ कारण नदीक प्रवाह क्षमता धीरे-धीरे कम होइत जाइ छैं, आ नदीक उपयोग अक्सर एकर किनारपर उमड़ि जाइ छैं। निचला भागमे झौंआ शाखाक बेड स्लोप ०.०९९ मीटर प्रति किलोमीटर अछि जखन कि बरसोई शाखाक बेड स्लोप ०.१४६ मीटर प्रति किलोमीटर अछि। साठिक दशक आ आगूक सरकारी रिपोर्टक अनुसार ऐ ढलानक अभावक परिणामस्वरूप महानन्दाक निचला भागमे करीब एक सप्ताह जल-भराब रहै छल, जकर परिणामस्वरूप तत्कालीन पूर्णिया (नवगठित कटिहार) क दक्षिणी भागक विनाश भेल। ऐ सभ रिपोर्टक अनुसार कटिहारक ऐ दुर्दशामे महानंदे नैं वरन् कारी कोसी आ गंगा नदीक सेहो काफी योगदान छल। महानन्दाक सहायक नदीक विशेषता रहल अछि जे ओकर कोर्स बदलैत रहैत अछि, संगहि ओकर नाम सेहो ओहिना बदलैत रहैत अछि। जेना पनार नदीक अनेक नाम अछि जेना पनार, परमान, परमौंन, कडवा, रीगा, कंकर, फुलहर बा गंगाजुरी। जेना-जेना जगह बदलैत अछि, नदीक नाम सेहो बदलैत रहैत अछि। तहिना बकरा नदीक नाम अलग-अलग स्थान पर बकरा, कटुआ धार वा देवनी भऽ जाइत अछि। एकर जलग्रहण क्षेत्रमे

कनकाईक बहुत रास नव-पुरान धारा छिड़िआयल अछि। मेची, दाउक, रमजान, कुलिक, सुधानी आ नगर नदीक स्थिति सेहो लगभग एहने अछि। ऐ नदी सभक धार बँटैत रहैत अछि, ऐ मे बहैत पानिक मात्रामे परिवर्तन होइत रहैत अछि आ तहिना एकर महत्व सेहो बढ़ैत बा घटैत रहैत अछि। ऐ क्षेत्रक सर्वेक्षण पहिल बेर १७७९ मे ब्रिटिश शासनक स्थापनाक बाद जेम्स रेनेल नामक सैन्य अभियंता द्वारा कएल गेल छल। ओइ समयक महानन्दाक प्रवाह मार्गक आधिकारिक वर्णन रेनेलक नक्शासँ भेटैत अछि। तकर बाद डॉ. फ्रांसिस बुकानन हैमिल्टन (१८०९-१०), रॉबर्ट मॉन्टगोमरी मार्टिन (१८३८), आ डॉ. डब्ल्यू.डब्ल्यू.हंटर (१८७७) सेहो ऐ नदीक क्रमक विवरण देने छथि। महानन्दाक विषयमे ई कहल जाइ छै जे ई आर्य प्रभावक अंतिम पूर्वी छोड़ तँ छहिये, ऐ क्षेत्रक इतिहास पश्चिमसँ आबैबला आक्रमणकारी आ मूल निवासीक बीचक संघर्षक सेहो रहल छै। इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इन्डिया (भारतीय शाही) राजपत्रक अनुसार 'महानन्दा पश्चिमक हिन्दी भाषी क्षेत्र आ पूर्वक बंगाली भाषी क्षेत्रक बीचक सीमाक काज करै छै। जनसंख्याक आंकड़ाक अनुसार हिन्दी भाषी आबादी ९४.६ प्रतिशत जखन कि मात्र ५ प्रतिशत बंगाली भाषी

छै। मुदा डॉ. ग्रियर्सनक अनुमान छलन्हि जे लगभग एक तिहाइ लोक बांग्ला बजैबला हेतै आ ई बात सही लगैत अछि। महानन्दा सीमा रेखाक रूपमे सेहो काज करैत अछि। पूर्णिया जिलामे पूबमे दू तिहाइ आबादी मुसलमान छल, जखन कि पश्चिममे एक तिहाइसँ कम। मुदा महानन्दाक बिना कोसीक वर्णनक अपूर्ण रहत। कोसी नेपाल आ बिहारक एकटा बहुत महत्वपूर्ण नदी अछि, जे ५४०० मीटरक ऊँचाइपर हिमालय पर्वतक मुख्य श्रृंखलासँ निकलैत अछि, तिब्बत, नेपाल आ उत्तर बिहार होइत लगभग ७२५ किमी यात्रा केलाक बाद ई कुर्सेला (कटिहार) लग गंगामे मिलैत अछि। बिहारमे ऐ नदीक लम्बाइ २५४ किमी अछि जखन कि मैदानमे ऐ नदीक कुल लंबाई ३०७ किमी अछि। तीन धारा अर्थात सूर्य कोसी, तामा कोसी आ अरुण कोसीक संगमसँ बनल कोसी नदीक कुल जलग्रहण क्षेत्र ५८,५९४ वर्ग किलोमीटर छै जइमे ५,७०४ वर्ग किलोमीटर ग्लेशियर छै। पौराणिक लेख, किंवदंती, लोककथा आ लोकगीतक अलाबे कोसीक विषयमे लिखित जानकारी अंग्रेज लोकनि द्वारा तैयार कएल गेल छल। हुनकर सबक यात्रा-वृत्तांत आ सर्वेक्षण रिपोर्टमे ऐ नदी सभक विषयमे बहुत चर्चा भेल, ओना हुनकर मुख्य उद्देश्य छल ऐ क्षेत्रक प्राकृतिक संसाधनक दोहन कऽ राजस्व वसूली कएल जाय।

फ्रांसिस बुकानन (१९०९-१०) आ रॉबर्ट मॉन्टगोमरी मार्टिन (१८३८) क यात्रा-वृत्तांत आ हंटरक "स्टैटिस्टिकल अकाउन्ट्स ऑफ बंगाल" (१८७७) मे ऐ नदीक विषयमे बहुत लिखल गेल छै। ऐ रिकॉर्डसँ पता चलै छै जे कोसी बहुत दिनसँ चैनल बदलै लेल बदनाम अछि, जकर कारण छै एकर अधिक गाद। १७३६ सँ १९५५ क बीच उपलब्ध अभिलेखसँ अनुमान अछि जे ऐ कालखंडमे ई नदी पूर्णियासँ पूर्व बहैत छल, से आब ११० किमी पश्चिम दिस शिफ्ट भऽ गेल अछि आ सुपौल, मधुबनी, सहरसा, खगड़िया जिलासँ गुजरैत अछि आ गंगासँ मिलैत अछि। स्थानीय लोकक कहब छनि जे कोसी कहियो मालदा (पश्चिम बंगाल) होइत बहैत छल आ बुकानन हैमिल्टनक अनुसार ई नदी मालदासँ पूब सेहो बहल हएत। बुकानन लिखै छथि- "कोसीक कातमे रहनिहार स्थानीय विद्वान बा पंडित लोकनि एते धरि कहै छथि जे प्राचीन कालमे कोसी दक्षिण पूर्व दिशामे ताजपुर धरि बहै छल। जकर बाद ई पूब दिस बहै छल आ अंततः ब्रह्मपुत्रसँ मिलै छल आ एकर गंगासँ कोनो संबंध नै छल। हमरा नै बुझल अछि जे ऐ कथनक आधार की अछि, लोककथा बा किंवदंती। जँ ई किंवदंती अछि तँ ई कनी बेसी विश्वास करय योग्य भऽ जाइत अछि, मुदा ई हएब

एकदम संभव बुझाइत अछि। संभव अछि जे मालदाक पूर्व आ उत्तरमे अवस्थित पैंघ-पैंघ सरोवर कहियो कोसी आ महानन्दाक अवशेष छल। ... उपरोक्त परिवर्तनमे कोसीमे कमसँ कम कंपनीक सीमामे कोनो नदी बाम कात नै मिलैत अछि, मुदा ऐसँ कइएकटा धार जन्मैत अछि। उत्तरक पहाड़सँ आबयबला बहुत रास नदी आब महानंदासँ मिलैत अछि आ ई एकदम संभव अछि जे ई नदी पहिने कोसीसँ मिलैत छल जखन कि एकर धार पूर्वोत्तर दिस छल....।" हंटर (१८७७) मुदा बुकाननक विचारसँ सहमत नै छला आ कहलनि जे "डॉ. बुकानन हैमिल्टनक ई सुझाव जे कोसी ब्रह्मपुत्रसँ मिलै हेतै, हुनकर बाकी सिद्धांतक तुलनामे कनी कम संभावित लगैत अछि। लगैत अछि जे पूर्वमे ब्रह्मपुत्रक मार्ग मेमन सिंहक पूब छल। कोसी अपन पूब दिसक मार्गपर, पहिने करतुआ सँ मिलत, जे स्वयं एकटा नदी अछि, जे आत्रेयी आ तीस्ताक पानिसँ पुष्ट अछि। हम अपन पोथी अकाउन्ट ऑफ डिस्ट्रिक्ट बोगरा (खण्ड VIII पृ० १३९, १४२, १६२) मे हिन्दू कालक प्रारम्भसँ ऐ नदीक आकार आ महत्वक आधारपर महत्वकेँ रेखांकित केने छी आ कहने छी जे ई नदी स्पष्ट रूपसँ मानव प्रजातिक सीमा रेखाक काज करैत अछि जे आइयो देखबामे अबैत अछि। जँ ई मानी जे पहिने करतुआमे कोसी आ महानन्दाक भेंट

होइ छल तखन पूर्व कालमे करतुआक पैघ आकारक कारण बुझि सकैं छी आ तखन राजशाही जिलाक बरिन्द्रक जंगल आ मेमन सिंहक मधुपुरक बीचक रेतक मैदानक कारणा स्हो बुझि सकैं छी। ऐ शताब्दीक प्रारंभमे जइ क्षेत्रमे ब्रह्मपुत्र बहैं छल ओकर तर्क सेहो स्पष्ट भऽ जायत। असलमे पूर्णिया आ दरभंगाक बीच एक इंच जमीन एहन नैं अछि जतऽ कोसीक धार कहियो नैं बहल हुअय। एकर विभिन्न धाराक अनेक नाम छैं- सौंरा, बरंडी, करिकोसी, मराकोसी, तिलावे धार, हैयाधर, बोचाहा धार, मझरी धार, धेमुरा धार, मिर्चैया धार, लगुनिया धार आदि-आदि। जइ धारमे कोसीक मुख्य धार बहैं छल से कोसी बनि गेल। ऐ तरहें कोसी आ महानन्दाक बीचक क्षेत्र सदिखन बाढ़ि आ जल कटावक क्षेत्र रहल अछि, जकर बहुत श्रेय कोसीकैं जाइ छैं। मुदा जतऽ धरि बाढ़िक प्रश्नक गप्प अछि, महानन्दाक शोर कोसीक शोरमे कखनो-काल सुनबामे अबैत अछि।" घनघोर जंगल, दुर्गम सड़क आ कम दूरीपर नदीक उपस्थिति- संभवतः ऐ सभ कारणसँ पाण्डव लोकनि अपन निर्वासन लेल ऐ क्षेत्रकैं चुनने हेता जे पौराणिक कथामे बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। कहल जाइत अछि जे महाभारत कालमे ई क्षेत्र कर्णक अधीन छल।

कुर्सेला, जतऽ कोसी गंगासँ मिलैत अछि, कौरव राज्यमे पड़ल आ तखन कुरुशिलाक नामसँ जानल जाइ छल। एक समय मनिहारी (कटिहार) क मूल नाम मणिहारन छल जतऽ भगवान श्री कृष्णक औंठीक रत्न हेरा गेल छल। सिमल जंगल जतऽ अर्जुन अज्ञात निवासमे अपन हथियार नुका देने छला ओ वर्तमान सेमापुर अछि जे कटिहार-बरौनी सड़कपर एकटा रेलवे स्टेशन अछि। तहिना किशनगंज जिलाक ठाकुर गंज शहरक विषयमे एकटा किंवदंती अछि जे ई राजा विराटक राज्यक हिस्सा छल आ एत्तै भीम अपन निर्वासनमे भनसिया(ठाकुर) क रूपमे बितेने छला। ऐ टोलमे भटधला आ सगधला नामक दू टा पोखरि अछि, जइमे भीम चाउर आ साग राखैत छला। ठाकुरगंजसँ कनेक दूर ओ स्थान अछि जतऽ भीम कीचककेँ मारि देने छला। ऐ जिलासँ बाहर निकलयबलाक तुलनामे बाहर जेबाक परंपरा उल्लेखनीय अछि। पूर्णियाक लोक खेतमे मेहनतिसँ बचै छथि आ रोजी-रोटीक तलाशमे जिलासँ बाहर जेनाइ नीक नै लगै छनि। क्षेत्रफलकेँ देखैत जनसंख्या कम अछि, जमीन आसानीसँ उपलब्ध अछि आ श्रम कम। ई किछु एहन बात अछि जे पूर्णेयाक लोककेँ बाहर निकलैसँ रोकैत अछि। एत संख्यामे लोक खेतीक मौसममे अस्थायी रूपसँ बाहरसँ आबै छथि। ई

बात १९६३ मे कहल गेल। ट्रेनक छतपर बैसलासँ एहन दुर्घटना होइत अछि जइमे लोकक मृत्यु भऽ जाइत अछि आ ऐ तरहक घटनामे कोसी, महानन्दा दोआबक लोकक मृत्यु भेल अछि। भवन ढहलासँ सेहो मरला आ खाड़कुसक हाथसँ सेहो। १९६३ सँ १९९३ क बीच किछु एहन निश्चित रूपसँ भेल जे पूर्णियाक खेतमे मेहनतिसँ बचयबला लोक आ रोजी-रोटीक तलाशमे जिलासँ बाहर जेनाइ पसिन नै करय बला लोक जानक कीमत चुका बाहर जा कऽ दोसराक खेतमे मेहनत करबा लेल मजबूर भेला। जखन कि कहियो स्थिति एहन छल जे कटाइक समय आ जखन असमक चाहक बगानमे मजदूरक जरूरत पड़ैत छल तँ कटिहार आ ओइसँ आगू जायबला ट्रेनमे उत्तर प्रदेश आ बिहारक अलग-अलग हिस्साक मजदूरक भीड़ रहै छल..। असलमे जँ एहन मजदूर कटनीक समय पूर्णिया नै जाइत तखन फसल खास कऽ जूटक कटाइ एकदम संभव नै होइतै। समृद्धिसँ दुर्दशा दिसक ई यात्रा पिछला तीस वर्षमे भेल। पछिला चारि दशकमे विकासक प्रभाव ऐ तरहेँ स्पष्ट रूपसँ देखबामे आबि रहल अछि। कोसी-महानन्दा दोआबक ई क्षेत्र अचानक मजदूरक मामलामे सरप्लस केना भऽ गेल? एकर एगो कारण छै जे ऐ क्षेत्रमे बाढ़िक कारणसँ बेशी जमीन बहुत दिन

धरि पानीमे डूमल रहैं छैं आ खेती-बारी संभव नैं छैं। ओना ऐ सभ लेल खाली बाढ़ि एकमात्र कारण नैं अछि, कारण आइ जँ उत्तर बिहारमे बाढ़ि आबि गेल अछि तँ दक्षिण बिहारमे रौंदी अछि, मुदा ओतुक्का लोककेँ विकासक लगभग ओहिना खराप परिणाम भेटैत रहल अछि जतेक उत्तर बिहारक लोककेँ। ओतऽ बाढ़ि नैं अछि, तैयो ई किए भऽ रहल अछि? ओतऽ सेहो बच्चा सभ स्कूल नैं जाइत अछि, ओतऽ सेहो लोक मजदूरीक खोजमे निकलैत अछि।' मुदा संगे हमरा सभ लेल ई पचायब मुश्किल अछि जे ई सभटा जनसंख्या बढ़लाक कारण अछि। कृषि एहन क्षेत्र अछि जइमे रोजगारक अधिकतम संभावना अछि। तैं जँ कोनो तरहेँ खेती-बाड़ी ठीक भऽ जाय तँ कतेको लोक जमीनसँ जुड़ि जायत आ ट्रेनक छतपर भीड़ कनेक कम भऽ जायत। महानन्दा नैं, मुदा कोसीक बाढ़िपर चर्चा पछिला शताब्दीक उत्तरार्धसँ चलि रहल अछि। भारतक अन्य भागमे कोसीक उदाहरण बाढ़ि आनैबला नदीक देल जाइत अछि आ ई नदी कोनो बाढ़िक चर्चाक केंद्रमे बनल रहैत अछि। स्वतंत्रताक बाद ऐ नदीपर नियंत्रण करबाक प्रयास भेल, आ ऐ संग लगभग पूरा गंगा आ ब्रह्मपुत्र घाटीमे नदीपर नियंत्रण करबाक प्रयास भेल आ ऐ क्रममे महानन्दाक सेहो आबि गेल।

उत्तर बिहारक भौगोलिक स्थिति एहन अछि कि ई क्षेत्र कतेको पैंघ नदि सभ (जेना— कोशी, गंडक, बागमती, महानंदा) कें "खेलक मैदान" थिक। भारतक कुल बाढ़ि प्रभावित क्षेत्रक लगभग १६% हिस्सा अकेले बिहारमे अछि।

बान्ह : रक्षक कि भक्षक? सरकार बाढ़ि रोकय लेल नदीक कात-कात 'बान्ह' (माटिक ऊँच देबाल) बनेलक। मुदा ई समाधान सँ बेसी समस्या बनि गेल अछि: जलजमाव: बान्हक कारण बाहरक बरसाती पानि नदीमे नय जा पबैत अछि, जाहि सँ खेत-पथारमे महीनों पानि लगल रहैत अछि। बान्हक टूटब: १८ अगस्त २००८ कें कोशीक बान्ह (कुसाहा) टूटला सँ भयंकर तबाही भेल छल। जखन ई टूटैत अछि तँ पानिक वेग सामान्य सँ कयो गुना बेसी होइत अछि। नदीक पेटीक उठब: बान्हक भीतर नदी अपन गाद जमा करैत अछि, जाहि सँ नदीक सतह ऊँच भइ जाइत अछि।

महानन्दा-कथा: लेखक महानन्दा नदीक भौगोलिक स्वरूप, ओकर उत्पत्ति आ मिथिला/सीमांचल क्षेत्रमे ओकर ऐतिहासिक महत्वक वर्णन केने छथि।

नदीक उदगम आ प्रवाह: *महानन्दा नदी दार्जीलिंगक हिमालय पहाड़ सँ लगभग २१०० मीटरक ऊँचाई सँ निकलैत अछि। ई नदी दार्जीलिंग (पश्चिम बंगाल) सँ होइत बिहारक* ***किशनगंज, पूर्णिया आ कटिहार*** *जिलामे बहैत अछि आ अंतमे गंगा नदीमे मिलि जाइत अछि।*

सहायक नदी सभक जाल: *महानन्दाक विशेषता एकर सहायक नदी सभ अछि। ऐ मे मेची, कनकई, नागर, टांगन आ पुनर्भवा प्रमुख अछि।*

ई नदी सभ नेपाल आ सिक्किम सँ भारी मात्रा मे पानि आ 'सिल्ट' (गाद) लऽ कऽ आबैत अछि, जाहि सँ महानन्दाक बाढ़ि बेसी भयानक भऽ जाइत अछि।

नदीक 'बन्दिनी' स्वरूप: *नदी कें बान्ह (Embankments) सँ बांधि कऽ 'बन्दिनी' बना देल गेल।*

महानन्दाक स्वभाव चंचल अछि आ ई सदिखन अपन रस्ता बदलैत रहल अछि, मुदा आधुनिक इंजीनियरिंग एकरा एकटा निश्चित रस्ता मे बांधबाक चेष्टा केलक।

खेती आ संस्कृति पर प्रभाव: *महानन्दा क्षेत्रक लोकक जीवन आ संस्कृति सम्पूर्ण रूपेँ ऐ नदी पर*

आश्रित अछि। जतय ई नदी उपजाऊ माटि आनैत छल, ओतय बान्ह बनला क बाद सँ 'जल-जमाव' क समस्या बढ़ि गेल अछि।

लेखकक अनुसार, महानन्दा केवल एकटा जलधारा नै, वरन् ओहि क्षेत्रक आर्थिक रीढ़ अछि।

प्रशासनिक उपेक्षाक शुरुआत: कोसी आ बागमतीक तुलना मे महानन्दा क्षेत्रक बाढ़ि कें प्रशासन सदिखन 'नजरअंदाज' केलक, जबकि ऐ ठामक तबाही कोनो कम नै छल।

बाढ़ि नियंत्रणक पारम्परिक पद्धति: महानन्दा क्षेत्रक लोक पहिले बाढ़िक संग जीबय मे अभ्यस्त छलाह। ओ सभ अपन घर ऊँच चबूतरा पर बनबैत छलाह आ बाढ़िक पानीक संग आबय बला उपजाऊ माटिक उपयोग खेती लेल करैत छलाह।

बान्हक विचार आ ब्रिटिश काल: अंग्रेज शासक सभ अपन व्यापारिक आ प्रशासनिक सुबिधा (रेलवे आ सड़क) कें बचाबय लेल बान्ह बनेबाक विचार केलनि। मुदा, महानन्दाक भौगोलिक स्थिति आ सहायक नदी सभक जाल देखि कऽ अंग्रेज इंजीनियर सेहो शुरू मे बान्ह बनेबा सँ डरैत छलाह। १८९७ क 'कलकत्ता सम्मेलन' कें संदर्भ दैत लेखक कहैत छथि जे ओहि समय बान्हक

बदला जल-निकासी (Drainage) पर बेसी जोर देल गेल छल।

कोसीक 'मॉडल' क प्रभाव: आजादीक बाद जखन कोसी नदी पर बान्हक काम शुरू भेल, तँ ओकर प्रभाव महानन्दा पर सेहो पड़ल। राजनैतिक दबाव आ 'त्वरित राहत' क नाम पर महानन्दा पर सेहो बान्ह बनेबाक माँग तेज भऽ गेल।

महानन्दा बान्ह योजना (१९६०-७० क दशक): १९६० क दशकक अंत आ ७० क शुरुआत मे महानन्दा बान्ह योजनाक खाका तैयार कएल गेल। एकर अंतर्गत किशनगंज सँ लऽ कऽ मालदा (पश्चिम बंगाल) धरि नदीकेँ बांधबाक लक्ष्य राखल गेल।

तकनीकी दुबिधा: इंजीनियर सभक बीच ऐ बात पर मतभेद छल जे एतेक चंचल नदी, जे अपन धारा सदिखन बदलैत रहैत अछि, ओकरा बान्ह मे बांधब कतेक सफल रहत।

प्रशासनिक आ राजनैतिक निर्णय: लेखकक अनुसार, महानन्दा पर बान्ह बनेबाक निर्णय तकनीकी सँ बेसी 'राजनैतिक' छल। सरकार जनता केँ ई देखयबाक कोशिश केलक जे ओ बाढ़ि सँ सुरक्षा लेल पैघ कदम उठा रहल अछि,

जबकि एकर दूरगामी परिणाम (जैसे- सिल्ट जमा होना) कें नजरअंदाज कऽ देल गेल।

परियोजनाक परिकल्पना: १९६० क दशकक अंतमे महानन्दा परियोजनाक अंतिम रूप देल गेल। एकर मुख्य उद्देश्य पूर्णिया, कटिहार आ मालदा जिलाक ७.२२ लाख एकड़ जमीनकें बाढ़ि सँ सुरक्षा देब छल। योजनामे नदीक दुनू कात बान्ह बनेबाक आ कतेको सहायक नदी सभकें मुख्य धारा सँ जोड़बाक लक्ष्य राखल गेल।

सहायक नदी सभक समस्या: महानन्दाक सब सँ पैघ चुनौती एकर सहायक नदी (जेना- मेची, कनकई, बकरा) सभ अछि। ई नदी सभ एतेक चंचल अछि जे कखनो अपन रस्ता बदलि कऽ बान्हकें बेकार कऽ सकैत अछि।

जल-निकासी (Drainage) क उपेक्षा: बान्ह बनला सँ आसपासक छोट-छोट नदी आ वर्षाक पानीक महानन्दा मे मिलब बंद भऽ गेल। एकर परिणाम ई भेल जे बान्हक बाहरक इलाका मे 'जल-जमाव' (Water-logging) एकटा स्थाई समस्या बनि गेल।

हजारो एकड़ उपजाऊ जमीन दलदल मे बदलि गेल, जाहि सँ किसानक आर्थिक स्थिति आर खराब भऽ गेल।

विस्थापन आ पुनर्वास: कोसी आ बागमतीक जेकाँ महानन्दा मे सेहो बान्हक बीच मे फँसल गामक लोकक स्थिति नारकीय भऽ गेल।

सरकारक पुनर्वास नीति मात्र कागज पर सीमित रहल। लोक अपन पुरान जमीन सँ बेदखल भऽ गेलाह आ नया ठाम हुनका बुनियादी सुबिधा सेहो नै मिलल।

तकनीकी खामी आ भ्रष्टाचार: लेखकक अनुसार, बान्हक रस्ता (Alignment) तय करय मे स्थानीय भूगोल सँ बेसी राजनैतिक स्वार्थ कें देखल गेल।

निर्माण कार्य मे भ्रष्टाचारक कारणे बान्हक मजबूती पर सदिखन प्रश्नचिन्ह लागल रहल, जाहि सँ हर साल मरम्मतीक नाम पर करोड़ों टाका खर्च कएल जाइत अछि।

बान्हक अस्थिरता: लेखकक अनुसार, बान्ह बना कऽ नदी कें बांधि तँ देल गेल, मुदा ई कोनो स्थाई सुरक्षा नै दऽ सकल। महानन्दा आ ओकर

सहायक नदी सभक स्वभाव एतेक उग्र अछि जे ओ कखनो आ कतहु बान्ह कें तोडि सकैत अछि।

प्रमुख दरारिक घटना: १९७० आ ८० क दशक मे भेल कतेको पैघ दरारिक जिक्र अछि। जखन बान्ह टूटैत अछि, तँ पानि एहन वेग सँ गाम मे घुसैत अछि जे लोक कें संभलबाक मौका सेहो नैं मिलैत अछि।

१९८७ क प्रलयंकारी बाढ़ि: ऐ साल महानन्दा क्षेत्र मे भीषण तबाही भेल छल। बान्ह कतेको ठाम सँ छिन्न-भिन्न भऽ गेल छल आ कटिहार-पूर्णियाक कतेको इलाका जल-समाधि ले लेने छल।

'चूहा आ सियार' क तर्क: कोसी आ बागमतीक जेकाँ, महानन्दा मे सेहो जखन बान्ह टूटैत छल, तँ सरकारी अधिकारी एकर दोष 'चूहाक बिल' या 'सियारक मांद' पर थोपि दइत छलाह। लेखक ऐ तर्कक कड़ा आलोचना करैत एकरा प्रशासनिक लापरवाही छुपाबय बला बहाना मानैत छथि।

मरम्मती मे भ्रष्टाचार: बान्हक मरम्मती (Maintenance) क नाम पर हर साल करोड़ों टाका खर्च होइत अछि। मुदा ई काम अक्सर बाढ़ि सँ ठीक पहिने 'हड़बड़ी' मे कएल जाइत अछि, जाहि मे घटिया सामग्रीक प्रयोग होइत अछि। ई

भ्रष्टाचार दरारि पड़बाक एकटा मुख्य कारण अछि।

जन-जीवन पर प्रभावः जखन बान्ह टूटैत अछि, तँ केवल घर-मकान नै खतम होइत, वरन् खेत मे बालू भरि जाइत अछि। किसानक जमा-पूँजी बहि जाइत अछि आ ओ सभ 'सहायता' लेल सरकारक बाट जोहैत छथि।

बान्हक आयु आ सुरक्षाक भ्रमः लेखकक अनुसार, बान्हक एकटा निश्चित आयु होइत अछि। महानन्दा मे जतेक 'सिल्ट' (गाद) जमा भऽ रहल अछि, ओकरा देखैत बान्हक ऊँचाई बढ़ाबय क सेहो एकटा सीमा अछि।

आब ई दीवार सभ सुरक्षाक बदला खतराक कारण बेसी बनि रहल अछि, कियाक तँ नदीक पेटी (River bed) आसपासक गाम सँ ऊँच भऽ गेल अछि।

जल-निकासी (Drainage) क प्राथमिकताः 'बाढ़ि नियंत्रण' सँ बेसी 'जल-निकासी' पर ध्यान देबय चाही। बान्हक कारणे जे पानी फँसि जाइत अछि, ओकरा निकालय लेल बेसी सँ बेसी पुल आ 'स्लूस गेट' क आवश्यकता अछि।

प्राकृतिक नाला आ पुरानी धारा सभकेँ पुनर्जीवित करब अनिवार्य अछि ताकि वर्षाक पानी आसानी सँ निकलि सकय।

स्थानीय समाजक भागीदारी: सरकारक पैंघ-पैंघ योजना मे स्थानीय लोकक कोनो राय नैं लेल जाइत अछि। लेखकक माननाय अछि जे जतेक काल धरि जनताक 'पारम्परिक ज्ञान' केँ इंजीनियरिंग मे शामिल नैं कएल जतय, ततेक काल धरि कोनो योजना सफल नैं रहत।

खेतीक स्वरूप मे बदलाव: महानन्दा क्षेत्रक किसानकेँ 'बाढ़िक संग जीबय' (Living with floods) क कला सीखय पड़त। एहन फसलक चुनाव करय पड़त जे पानि मे सेहो सुरक्षित रहि सकय या बाढ़ि सँ पहिने/बाद तैयार भऽ जाय।

प्रशासनिक ईमानदारीक आवश्यकता: मरम्मती आ राहतक नाम पर होय बला भ्रष्टाचार केँ रोकब बड़ जरूरी अछि। जँ तकनीकी आ प्रशासनिक स्तर पर पारदर्शिता नैं आएत, तँ महानन्दा सदिखन 'बन्दिनी' आ क्षेत्रक लोक 'पीड़ित' रहि जेताह।

'हित' क परिभाषा आ वास्तविकता: सरकारक दाबा छल जे बान्ह सँ किसानक हित भऽ रहल अछि, मुदा लेखकक अनुसार एकर सब सँ बेसी

फायदा **इंजीनियर, ठेकेदार, आ राजनेता** कें मिलल।

महानन्दा बान्ह एकटा 'कमाईक जरिया' बनि गेल, जतय मरम्मती आ निर्माणक नाम पर हर साल करोड़ों टाका खर्च कएल जाइत अछि।

किसानक नुकसानः बान्हक कारणे हजारो किसान अपन उपजाऊ जमीन सँ हाथ धो लेलनि। जकर खेत 'भीतर' (नदी कात) पड़ि गेल ओकर खेती अनिश्चित भऽ गेल, आ जकर 'बाहर' पड़ल ओतय 'जल-जमाव' सँ फसल बरबाद भऽ गेल।

सामाजिक असमानताः बान्ह समाज कें दू भाग मे बांटि देलक— एक ओ जे बान्हक सुरक्षा मे छथि (कथित रूप सँ) आ दोसर ओ जे बान्हक कारणे डूबि रहल छथि। ऐ सँ गामक आपसी सौहार्द सेहो प्रभावित भेल।

सरकारी मशीनरी आ संवेदनहीनताः अध्याय मे बताओल गेल अछि जे कोना सरकारी योजना मे 'मानवीय संवेदना' सँ बेसी 'आँकड़ा' कें महत्व देल जाइत अछि। राहत सामग्री बाँटब सेहो एकटा भ्रष्टाचारक खेल बनि गेल अछि।

महानन्दा नदी हिमालयक महालधिरम पहाड़ सँ निकलैत बिहारक किशनगंज, पूर्णिया आ कटिहार

जिला होइत पश्चिम बंगाल आ बांग्लादेश धरि जाइत अछि। दिनेश कुमार मिश्र, जे स्वयं एकटा प्रखर जल-विशेषज्ञ आ इंजीनियर छथि, ऐ पोथीक माध्यम सँ ई देखबयबाक प्रयास केलनि अछि जे कोना एकटा स्वतंत्र आ चंचल नदी कें 'विकास' क नाम पर बांधि देल गेल आ ओकर 'बन्दिनी' स्वरूप कोना विनाशक कारक बनि गेल।

पोथीक नाम 'बन्दिनी' मात्र एकटा शब्द नहि, वरन् ओइ करोड़ों लोकक नियतिक प्रतीक अछि जे बान्हक घेरामे फंसि कऽ रहि गेल छथि।

लेखक महानन्दाक इतिहास सँ पोथीक शुरुआत करैत छथि। महानन्दा अपन रस्ता बदलबाक लेल जानल जाइत अछि। पहिने ई नदी लोकक लेल वरदान छल। एकर बाढ़ि अपन संग 'पाँक' (fertility) लऽ कऽ अबैत छल, जाहि सँ जुट (Jute) आ धानक खेती लहलहाइत छल। लेखक बताने छथि जे पहिने लोक 'बाढ़ि सँ लड़ब' नहि, वरन् 'बाढ़ि क संग रहब' जनैत छलाह।

१९६० क दशकमे महानन्दा पर बान्ह बनायबक योजना बनल। सरकारक तर्क छल जे बान्ह बनला सँ क्षेत्र कें बाढ़ि सँ मुक्ति भेटत आ कृषि उत्पादन बढ़यता। पोथीमे लेखक विस्तार सँ ओइ सरकारी फाइलोक विश्लेषण करैत छथि, जतय ई योजना

तैयार कएल गेल छल। ओ देखबैत छथि जे कोना स्थानीय लोकक राय कें दरकिनार कऽ कऽ केवल कंक्रीट आ माटिक संरचना पर जोर देल गेल।

पोथीक एकटा पैंघ हिस्सा १९८७ क प्रलयंकारी बाढ़ि पर केंद्रित अछि। लेखक सांख्यिकीय आँकड़ा आ प्रत्यक्षदर्शीक अनुभव सँ सिद्ध करैत छथि जे बान्ह बनला क बाद बाढ़ि कम नहि भेल, वरन् ओकर तीव्रता आ विनाशक शक्ति बढ़ि गेल। बान्हक कारण नदीक पेटी मे 'गाद' (Sedimentation) जमा भऽ गेल, जाहि सँ नदीक स्तर ऊपर उठि गेल। जखन बान्ह टूटि गेल, त' पानि एहन वेग सँ एलै जे हजारों लोकक जान-मालक क्षति भेल।

बान्हक एकटा पैंघ दुष्परिणाम 'जल-जमाव' थिक। बान्हक बाहरक पानि नदीमे नहि जा सकैत अछि, जाहि सँ कतेको महीना धरि खेत पानिमे डूबल रहैत अछि। एकरा लेखक 'स्थायी बाढ़ि' कहैत छथि। एकर कारण: मलेरिया आ कालाजार जेकाँ बीमारी पसरल। लोकक पलायन (Migration) बढ़ल। जमीनक दाम खसि गेल आ लोक कर्जक जालमे फंसि गेला।

दिनेश कुमार मिश्रक सब सँ पैंघ प्रहार आधुनिक इंजीनियरिंगक ओइ सोच पर अछि जे नदी कें

एकटा 'पाइप' बुझैत अछि। ओ लिखैत छथि जे नदी मात्र पानि नहि, वरन् पानि, माटि आ वनस्पतिक एकटा जीवित तंत्र थिक। बान्ह बना कऽ हम ओकर प्राकृतिक निकास कें बन्द कऽ दैत छी। लेखकक तर्क अछि जे महानन्दाक भूगोल पहाड़ी अछि, जतय पानि तेजी सँ अबैत अछि; एहनमे बान्ह ओकरा रोकबाक लेल नाकाफी अछि।

लेखक निडर भऽ कऽ 'बाढ़ि अर्थव्यवस्था' (Flood Economy) कें उजागर करैत छथि। ओकर अनुसार: **ठेकेदारी प्रथा:** बान्ह बनायब आ ओकर मरम्मत करब ठेकेदार, इंजीनियर आ नेताक लेल एकटा 'दुधारू गाई' अछि। **राहतक राजनीति:** बाढ़ि एला पर जे राहत बान्टल जाइत अछि, ओकर एकटा पैंघ हिस्सा भ्रष्टाचारक भेंट चढ़ि जाइत अछि।

मिश्र जी कहैत छथि जे जँ बाढ़ि समाप्त भऽ जायत, त' कतेको लोकक दुकान बन्द भऽ जयतनि, ताहि लेल व्यवस्था बाढ़ि कें 'स्थायी' बना कऽ रखय चाहैत अछि।

लेखकक सब सँ पैंघ दुख ई अछि जे नदीक संग रहय वाला ग्रामीणक अनुभव कें अनपढ़ बुझि कऽ ठुकरा देल गेल। पोथीमे ओ कतेको एहन

किसानक इंटरव्यू देने छथि जे सरकारी इंजीनियर सँ बेसी सटीक भविष्यवाणी कऽ सकैत छलाह। लेखकक दृष्टिमे ई 'बौद्धिक औपनिवेशिकता' अछि।

'बन्दिनी महानन्दा' मे विस्थापित लोकक दर्दक चित्रण बहुत मार्मिक अछि। जे लोक बान्हक बीचमे रहि गेलाह, हुनका लेल न त' पक्का सड़क अछि, न स्कूल। ओ 'नो मैन्स लैंड' मे रहय लेल मजबूर छथि। लेखक प्रश्न करैत छथि जे की ई 'विकास' क नाम पर कएल गेल 'मानवाधिकारक उल्लंघन' नहि अछि?

मिश्र जी मात्र समस्या नहि गिनावैत छथि, ओ समाधानक रस्ता सेहो देखबैत छथि: **बान्हक समीक्षा:** जतय बान्ह विनाशक कारण बनल अछि, ओकरा हटाबय या ओकरामे 'स्लुइस गेट' (Sluice Gates) लगायबक आवश्यकता अछि। **प्राकृतिक निकासक बहाली:** नदीक पुरान रस्ता आ चौर (Wetlands) कें पुनर्जीवित कएल जाय ताकि बाढ़िक पानि पसरि कऽ शांत भऽ जाय। **विकेंद्रित जल प्रबंधन:** बड़का बांधक बदला स्थानीय पोखर आ आहर-पाइन पर ध्यान देल जाय।

महानन्दा परियोजनाक इतिहास, ओकर कार्यान्वयन आ ओकर दूरगामी परिणामक विस्तृत

चर्चा कयल गेल अछि । लेखकक अनुसार, महानन्दा पर बान्ह बनेबाक निर्णय कोनो वैज्ञानिक शोध सँ बेसी राजनीतिक आ मजबूरीक परिणाम छल ।

आजादी सँ पहिने धरि महानन्दाक बाढ़िक कोनो विशेष चर्चा नहि छल । मुदा, पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा अपन क्षेत्र में 'मलियोर बाँध' बनेबाक बाद, बिहारक क्षेत्र में बाढ़िक विभीषिका बढ़ि गेल । ऐ मजबूरी आ कोसी परियोजनाक 'तथाकथित' सफलता सँ उत्साहित भ' क' बिहार सरकार 1972 में महानन्दा पर बान्ह बनेबाक काम शुरू कयलक ।

शुरू में ई योजना मात्र 1.22 करोड़ रुपयक छल, मुदा 1993 धरि ऐ पर 52.47 करोड़ सँ बेसी खर्च भ' गेल । बान्हक लम्बाई सेहो 208 किमी सँ बढ़ि क' 336 किमी भ' गेल । ऐ में महानन्दाक साथ-साथ कारी कोसी, बरण्डी आ गंगाक बान्ह सेहो शामिल कयल गेल अछि ।

सरकारी दाबाक विपरीत, बान्ह बनेबाक बाद बाढ़िक प्रकोप कम होयबाक बदला आउ उग्र भ' गेल अछि । लेखकक अनुसार, ई एकटा "बिना नफ़ा-नुकसानक चिन्तन" वाला परियोजना छल । बान्हक कारण वर्षाक पानी बीच में फँसि जाइत

अछि आ जल-निकासीक कोनो व्यवस्था नहि अछि । 1975 सँ ल' क' 1991 धरि कतेको बेर बान्ह टूटबाक घटना भेल अछि, जाहि सँ जान-मालक भारी क्षति भेल ।

बान्हक बीच फँसल लोकक पुनर्वास लेल सरकार "ऐकिक नियम" (Unitary method) के आधार पर सर्वे कयलक, जे सरासर गलत छल । लोकक घर उजड़ि गेल मुदा हुनका उचित मुआवजा आ नया जमीन नहि भेटल । सिकटिया आ सोलकन्धा सन गामक लोक आइयो नारकीय जीवन जिय' लेल मजबूर छथि ।

इन्जीनियर लोकनि नदीक स्वभाव आ सिल्ट (गाद) जमा होयबाक प्रक्रिया कैं नजरअंदाज कयलनि । सिल्ट जमा होयबा सँ नदीक तल ऊपर उठि रहल अछि, जाहि सँ बान्हक सुरक्षा सदैव खतरा में रहैत अछि । लेखक ऐ गुणक कैं एकटा तकनीकी "छलावा" मानैत छथि । हुनकर तर्क अछि जे योजनाक मंजूरी लेल जानि-बूझि क' फायदा कैं बेसी आ लागत कैं कम क' क' देखाओल जाइत अछि । वास्तविकता ई अछि जे योजनाक बाद बाढ़ि सँ प्रभावित क्षेत्र आ जनसंख्या दुनू में वृद्धि भेल अछि ।

पोथी में देखाओल गेल अछि जे कोना नेता आ इन्जीनियर मिलि क' आम जनता कैं भ्रमित कयलनि । बाढ़ि नियंत्रणक नाम पर प्रत्येक वर्ष करोड़ों रुपयक 'मरम्मत' आ 'रिलीफ' (राहत) कैं लेखक 'चौथी फसल' के संज्ञा दयैत छथि, जाहि में भ्रष्टाचार व्याप्त अछि ।

बान्हक कारण लोकक पारंपरिक खेती (धान-जूट) नष्ट भ' गेल अछि । लोक महाजनक चंगुल में फँसि रहल छथि आ रोजगार लेल पलायन (दिल्ली, पंजाब, असम) करय लेल मजबूर छथि । 'अभिशप्त सिकटिया' केर उदाहरण सँ लेखक लोकक दरिद्रता आ असहायता कैं मार्मिक ढंग सँ चित्रित कयने छथि ।

दिनेश मिश्रक ई पोथी महानन्दा परियोजना कैं एकटा 'मृत्यु-बन्ध' केर रूप में प्रस्तुत करैत अछि । ओकर आलोचनाक मूल बिन्दु ई अछि जे प्रकृति सँ लड़बाक बदला ओकर साथ सामंजस्य राखब बेसी जरूरी अछि, जे ऐ परियोजना में नहि कयल गेल ।

'बन्दिनी महानन्दा' मात्र एकटा तकनीकी पोथी नहि अछि, ई मिथिला आ सीमांचलक भूगोलक एकटा 'शोकगीत' अछि। दिनेश कुमार मिश्रक ई कृति हमरा सभकें चेतावनी दैत अछि जे जँ हम

आब सेहो प्रकृति सँ प्रेम करब नहि सिखब, त' महानन्दा जेकाँ कतेको धारक 'सद्गति' भयावह होइत चलि जयत।

ऐ पोथीक विषयवस्तु मिथिला क्षेत्रक मूल समस्या सँ जुड़ल अछि। यद्यपि ई पोथी मूलतः हिन्दीमे अछि, मुदा एकर आत्मा मैथिली अछि। ई पोथी हमरा सभकेँ अपन माटि, पानि आ मानुसक अधिकार लेल लड़बाक प्रेरणा दैत अछि।

'बन्दिनी महानन्दा' विकासक ओइ मॉडल केँ नंगा करैत अछि जे गरीबक जानक कीमत पर खड़ा अछि। ई प्रत्येक ओइ व्यक्ति लेल अनिवार्य अछि जे उत्तर बिहारक बाढ़ि, गरीबी आ विस्थापनक असली कारण केँ बुझय चाहैत अछि।

उत्तर बिहारक नदि सभ केवल भौगोलिक जलधारा नहि थिक, वरन् ई क्षेत्रक सामाजिक संरचना, आर्थिक नियति आओर साहित्यिक चेतनाक आधारशिला रहल अछि। ऐ परिप्रेक्ष्य मे डॉ. दिनेश कुमार मिश्रक कार्य, विशेष रूप सँ हुनकर कृति 'बन्दिनी महानन्दा', एकटा एहेन संधिकालक रचना थिक जे इंजीनियरिंगक तकनीकी कठोरता आओर लोक-इतिहासक तरलताक बीच एकटा सेतु निर्माण करैत अछि । वर्ष ।१९५ मे समता प्रकाशन, पटना द्वारा प्रकाशित

ई पोथी महानन्दा नदीक पारिस्थितिक आओर मानवीय संकट सभक एकटा एहेन दस्तावेजीकरण थिक, जे न केवल जल-प्रबंधनक नीतिक उपर सवाल ठाढ़ कयलक, वरन् मैथिली साहित्य आओर बौद्धिक विमर्श मे एकटा अभूतपूर्व विवादकेँ सेहो जन्म देलक । दिनेश कुमार मिश्र, जे स्वयं मिथिलाक मूल निवासी नहि छथि, मुदा मिथिलाक नदि सभ—कोसी, कमला, बागमती आओर महानन्दा—क 'ऐतिहासिक जीवनचरित्र' लिखि क' ऐ क्षेत्रक प्रति जे ऋण अर्पित कयलनि अछि, ओकरा मैथिलीक 'समानान्तर धारा' क विद्वान सभ अत्यंत कृतज्ञताक संग स्वीकार करैत छथि ।

'बन्दिनी महानन्दा' सँ मुक्तिक दिस

दिनेश कुमार मिश्रक 'बन्दिनी महानन्दा' केवल एकटा नदीक वृत्तांत नहि थिक, वरन् ई विकासक ओहि आधुनिक मॉडलक विफलताक आख्यान थिक जाहिमे प्रकृति केँ एकटा वस्तु क रूप मे देखल गेल। हुनकर शोध ई स्पष्ट क' देलक अछि जे जखन तक हम 'नदि सभक संग जयबाक' अपन पारंपरिक कला केँ पुनर्जीवित नहि करब, तब तक बिहारक नदि सभ 'बन्दिनी' रहत आओर हुनकर तटवर्ती समुदाय गरीबी मे फँसल रहत ।

मैथिली साहित्य मे हुनकर कार्यक इर्द-गिर्द बुनल गेल विवाद ई दर्शबैत अछि जे सत्य आओर शोध अक्सर सत्ता संरचना लेल असहज होइत अछि। 'बन्दिनी महानन्दा' मौन तोड़बाक एकटा सशक्त प्रयास थिक, जे आबय वाली पीढ़ी कैँ नदि सभक प्रति एकटा संवेदनशील आओर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनायबाक प्रेरणा दैत रहत ।

बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी
(२००४)

दिनेश कुमार मिश्रक पोथी 'द कमला रिवर एंड पीपल ऑन कोलिजन कोर्स' (The Kamla River and People On Collision Course)

कमला नदीक पौराणिक, भौगोलिक आ सांस्कृतिक परिचय दैत अछि आ मिथिलाक खेती मे एकर अद्वितीय योगदानक चर्चा करैत अछि।

मिथिलाक 'सोना' उपजबय बला नदी: कमला नदीकें मिथिला क्षेत्रक एकटा अत्यंत उपकारी नदी मानल जाइत अछि। कोसीक तुलना मे कमला अपन संग एहन पोषक तत्व (Nutrients) अनैत अछि जे खेती लेल वरदान अछि।

स्थानीय मान्यता अछि जे कमला बेसिनक जमीन 'सोना' उपजैत अछि। जँ नदीक पानि सही समय पर खेत मे पहुँचि जाय, तँ एक कट्ठा जमीन मे ८० किलो धरि धानक पैदावार आराम सँ भऽ सकैत अछि।

भौगोलिक मार्ग आ उद्गम: *कमला नदी नेपालक 'महाभारत' पर्वतमाला सँ निकलैत अछि आ धनुषा जिला (नेपाल) सँ होइत बिहारक* ***मधुबनी*** *जिलाक* ***जयनगर*** *सँ भारत मे प्रवेश करैत अछि।*

मिथिला मे ई नदी मुख्य रूप सँ मधुबनी आ दरभंगा जिला मे बहैत अछि आ अंत मे कोसी नदीक धारा मे समाहित भऽ जाइत अछि।

पौराणिक आ सांस्कृतिक उपेक्षा: *आश्चर्यजनक बात ई अछि जे एतेक जीवनदायिनी नदी भेला क बादो, कमलाक उल्लेख पौराणिक ग्रंथ सभ मे कोसी या गंगा जेकाँ बेसी नै मिलैत अछि।*

मुदा स्थानीय लोकक आस्था मे कमला 'मैया' (माता) के रूप मे पूजित अछि। 'कमला पूजा' मिथिलाक लोक-संस्कृति क एकटा अभिन्न अंग अछि।

सहायक नदी आ 'धौरी' क प्रभाव: *कमला अपन रस्ता मे कतेको छोट-छोट पहाड़ी नदी (जेना- सोनी, बलान, धौरी) कें अपन संग समेटैत अछि। 'धौरी' नदीक संगम कमला कें बेसी चंचल आ विनाशकारी बना दइत अछि, खास कऽ बरसात क समय मे।*

नदीक चंचलता (River Shifting): कमला अपन रस्ता बदलबाक लेल जानल जाइत अछि। १८वीं शताब्दी सँ आब धरि ई नदी कतेको बेर अपन मुख्य धारा बदलि चुकल अछि।

जखन नदी अपन रस्ता बदलैत अछि, तँ पुरान रस्ता 'मृत प्राय' भऽ जाइत अछि आ नया क्षेत्र मे तबाही आ उर्वरता दुनू संगहि लऽ कऽ आबैत अछि।

पारम्परिक सिंचाई प्रणाली: कमला क्षेत्रक लोक सदिखन सँ 'पैन' आ 'आहर' क माध्यम सँ पानि खेत धरि पहुँचाबय मे दक्ष छलाह। पानि कें रोकबाक लेल बाँस आ माटिक 'अस्थाई घेरा' (Checks) बनाओल जाइत छल।

ई प्रणाली पूर्णतः सामुदायिक सहयोग पर आधारित छल, जाहि मे गामक सब लोक मिलि कऽ श्रमदान करैत छलाह।

जयनगर बराजक परिकल्पना: सरकारी स्तर पर कमलाक पानि कें व्यवस्थित करबाक लेल जयनगर (मधुबनी) मे एकटा बराज बनेबाक योजना बनाओल गेल। एकर मुख्य उद्देश्य छल— पानि कें एकटा निश्चित रस्ता (Canal) सँ खेत धरि पहुँचाएब।

मुद्दा, लेखकक अनुसार, बराज बनला सँ नदीक प्राकृतिक वेग आ ओकर संग आबय बला उपजाऊ 'गाद' (Nutrients) क रस्ता मे बाधा उत्पन्न भऽ गेल।

नहर (Canal) आ जल-निकासी: अध्याय मे नहर प्रणालीक विफलता पर प्रकाश डालल गेल अछि। नहर तँ बनाओल गेल, मुद्दा ओकर सफाई आ मरम्मतीक अभाव मे पानि अंतिम छोर (Tail end) क किसान धरि नैं पहुँचि सकल।

एकर उल्टा प्रभाव ई भेल जे नहरक ऊँच बान्हक कारणे क्षेत्रक 'प्राकृतिक जल निकासी' (Natural Drainage) बाधित भऽ गेल, जाहि सँ 'जल-जमाव' (Water-logging) क समस्या पैदा भऽ गेल।

राजनैतिक आ प्रशासनिक हस्तक्षेप: लेखक कहैत छथि जे सिंचाई योजना सभ मे स्थानीय किसानक आवश्यकता सँ बेसी 'ठेकेदारी' आ 'इंजीनियरिंग अहंकार' हावी रहल। पानि बाँटब एकटा राजनैतिक मुद्दा बनि गेल, जाहि मे पहुँच बला लोक कें फायदा मिलल आ गरीब किसान वंचित रहि गेलाह।

बान्हक परिकल्पना (१९५० क दशक): कोसी नदी पर बान्ह बनला क बाद, कमला क्षेत्र मे सेहो बाढ़ि सुरक्षा लेल बान्हक माँग तेज भऽ गेल। १९५४-५५ क भीषण बाढ़ि क बाद सरकार कमला नदी कें दुनू कात माटिक ऊँच दीवार (Embankments) सँ बांधबाक निर्णय लेलक।

प्रथम चरण मे जयनगर सँ झंझारपुर धरि बान्ह बनाओल गेल ताकि पानि गाम मे न पफैल कऽ सीधा नदीक रस्ता सँ निकलि जाय।

बान्हक भीतरक त्रासदी: बान्ह बनला सँ ओहि दुनू दीवारक बीच मे कतेको गाम फँसि गेल। ऐ लोकक लेल 'बाढ़ि' एकटा स्थाई त्रासदी बनि गेल।

जखन नदी मे पानि आबैत अछि, तँ ऐ गामक लोक अपन घर-दुआरि छोड़ि कऽ बान्हक ऊँच स्थान पर शरण लेइत छथि। हुनक खेती आ मवेशी सदिखन दाँव पर रहैत अछि।

जल-निकासी (Drainage) मे बाधा: सब सँ पैघ तकनीकी विफलता 'जल-निकासी' कें बताओल गेल अछि। कमलाक सहायक नदी सभ आ वर्षाक पानि जे पहिले सहज रूप सँ मुख्य धारा मे मिलि जाइत छल, बान्हक कारणे ओ रस्ता बंद भऽ गेल।

एकर परिणाम ई भेल जे बान्हक 'बाहर' क इलाका मे सेहो 'कृत्रिम बाढ़ि' आ जल-जमावक समस्या पैदा भऽ गेल, जे हफ्तों धरि खतम नै होइत अछि।

बान्हक टूटनाइ आ मरम्मती: *लेखकक अनुसार, बान्ह कोनो स्थाई सुरक्षा नै अछि। कमला अपन चंचलताक कारणे अक्सर बान्ह कें तोड़ि दइत अछि।*

जखन बान्ह टूटैत अछि, तँ पानि एहन वेग सँ निकलैत अछि जे आसपासक गाम कें तहस-नहस कऽ दइत अछि। मरम्मतीक नाम पर हर साल करोड़ों टाका खर्च कएल जाइत अछि, मुदा सुरक्षाक गारंटी कहियो नै रहैत अछि।

सामाजिक संघर्ष: *बान्हक कारणे 'भीतर' आ 'बाहर' क लोकक बीच एकटा नया सामाजिक संघर्ष पैदा भऽ गेल अछि। भीतरक लोक अपन सुरक्षा लेल बान्ह काटय चाहैत छथि, जबकि बाहरक लोक ओकरा बचाबय लेल पहरा दैत छथि।*

कमला पर बान्हक प्रयोग एकटा ***'अधूरा आ दोषपूर्ण'*** *समाधान साबित भेल। ई बाढ़ि कें रोकबाक बदला ओकरा एकटा 'स्थाई संकट' मे बदलि देलक। लेखकक अनुसार, नदीक अधिकार कें छीनब ही ऐ समस्याक जड़ि अछि।*

सीमावर्ती समस्या आ पानि पर हकः *कमला नदी नेपाल सँ भारत आबैत अछि, जाहि कारणे पानि कें लऽ कऽ दुनू देशक सीमावर्ती गामक लोकक बीच अक्सर तनाव रहैत अछि।*

नेपालक किसान अपन सिंचाई लेल पानि रोकय चाहैत छथि, जकर सीधा असर बिहारक मधुबनी जिलाक किसानक खेती पर पड़ैत अछि।

जयनगर बराज आ ओकर विफलताः *जयनगर मे बनल बराजक कार्यप्रणाली पर प्रश्न उठौल गेल अछि। लेखकक अनुसार, ई बराज न तँ बाढ़ि रोकय मे सक्षम भेल आ न तँ सिंचाई लेल पर्याप्त पानि दऽ सकल।*

बराजक गेट मे 'गाद' (सिल्ट) भरला सँ ओकर संचालन कठिन भऽ जाइत अछि, जाहि सँ पानि रस्ता बदलि कऽ गाम मे घुसैत अछि।

बाढ़िक राजनीतिः *लेखक कहैत छथि जे कमला क्षेत्र मे बाढ़ि एकटा 'राजनैतिक औजार' बनि गेल अछि। नेता सभ बाढ़िक समय मे राहत बाँटबा मे तँ सक्रिय होइत छथि, मुदा जल-निकासी (Drainage) क स्थाई समाधान लेल कोनो ठोस नीति नैं बनबैत छथि।*

'बान्ह विरोधी आन्दोलन' कें राजनैतिक दल अपन सुबिधा अनुसार प्रयोग करैत छथि, मुदा किसानक समस्या ज्यों का त्यों बनल रहैत अछि।

सरकारी योजना मे जनताक उपेक्षाः सिंचाई आ बाढ़ि नियंत्रणक पैंघ-पैंघ फाइल पटना आ दिल्ली मे बनैत अछि, मुदा ओहि मे कमला कात रहय बला लोकक 'पारम्परिक समझ' (Traditional Knowledge) कें कोनो स्थान नैं देल जाइत अछि।

कमला नदीक समस्या मात्र 'प्राकृतिक' नैं वरन् 'प्रशासनिक आ राजनैतिक' अछि। पानि कें लऽ कऽ भेल आपसी खींचतान आ बिना सोनल-बुझल तकनीकी प्रयोग कमला क्षेत्रक किसानक लेल 'संघर्षक बाट' आर कठिन बना देने अछि।

बान्हक विफलताक स्वीकारोक्तिः लेखकक अनुसार, पछिला ५० सालक अनुभव ई देखबैत अछि जे कमला पर बनाओल गेल बान्ह 'बाढ़ि नियंत्रण' मे सम्पूर्ण रूपैं विफल रहल अछि।

बान्हक कारणे नदीक पेटी (River bed) ऊँच भऽ गेल अछि, जाहि सँ बान्ह टूटबाक खतरा सदिखन बनल रहैत अछि। आब ई संरचना सुरक्षाक बदला 'खतरा' क प्रतीक बनि गेल अछि।

'बाढ़ि' सँ 'जल-जमाव' धरि: *अध्याय मे ई रेखांकित कएल गेल अछि जे कमलाक समस्या आब मात्र 'बाढ़ि' नैं अछि, वरन् 'जल-जमाव' (Water-logging) अछि।*

बान्हक कारणे वर्षाक पानि कें निकलबाक रस्ता नैं मिलैत अछि, जाहि सँ लाखो एकड़ जमीन खेती लेल बेकार भऽ रहल अछि।

स्थानीय आ पारम्परिक समाधान: *लेखक 'पैंघ बराज' या 'पैंघ बान्ह' क बदला स्थानीय समाधानक वकालत करैत छथि।*

'पैंन' आ 'आहर' *कें पुनर्जीवित करब आवश्यक अछि ताकि नदीक पानि प्राकृतिक रूप सँ खेत मे जा सकय आ गाद (सिल्ट) खेतक उर्वरता बढ़ाबय।*

नदीक अधिकार आ लोकक भागीदारी: *'सद्भति' तखनहि संभव अछि जखन हम नदीक स्वाभाविक बहाव मे बाधा नैं डालब।*

कोनो भी नया योजना मे स्थानीय किसानक राय आ हुनक 'पारम्परिक समझ' (Traditional Knowledge) कें शामिल करब अनिवार्य अछि।

पुनर्वास आ न्याय: *बान्हक भीतर फँसल लोकक लेल मात्र 'राहत' कोनो समाधान नै अछि। हुनक सुरक्षित पुनर्वास आ आजीविकाक स्थाई प्रबंध सरकारक प्राथमिकता होबय चाही।*

कमला कें 'बन्धन' सँ मुक्त करब मिथिलाक हित मे अछि। नदीक संग सामंजस्य (Living with the river) भविष्यक एकमात्र सुरक्षित बाट अछि।

कमला नदीक परिचय आ लोक-आस्था: *कमला नदी मिथिला क्षेत्रक एकटा अत्यंत उपजाऊ आ पवित्र नदी मानल जाइत अछि । कोशीक तुलनामे एकर पानिमे पोषक तत्व बेसी होइत अछि, जाहि सँ खेती 'सोना' जकाँ उबजैत अछि । कमला कें लोक-कथा सभमे 'ब्रह्मचारी कन्या' मानल गेल अछि आ मछुआरा (मल्लाह) समुदाय द्वारा एकर पूजा कयल जाइत अछि ।*

भौगोलिक चंचलता: *कमला अपन मार्ग बदलबा लेल जानल जाइत अछि। इतिहासमे एकर मुख्य चारिटा मार्ग— 'बछराजा', 'पतघाट', 'सकरी' आ 'जीबछ' कमला— कें उल्लेख भेटैत अछि । वर्तमानमे ई 'कमला-बलान' कें रूपमे प्रवाहित भ' रहल अछि ।*

बान्हक निर्माण (Flood Protection Scheme): स्वतंत्र भारतमे १९५४ कें बाढ़ि नीति बनला कें बाद कमला नदीक दुनू कात बान्ह बनेबाक काम १९५६ सँ शुरू भेल। ई बान्ह जयनगर सँ झंझारपुर होइत कोठराम धरि बनाओल गेल अछि।

सिंचाईक इतिहास: पोथीमे आर.एस. किंग (R.S. King) कें उल्लेख अछि जे १९वीं सदीक अंतमे स्थानीय पईन (Pyne) आ आहरक मदद सँ बहुत कम खर्चमे सफल सिंचाई प्रणाली विकसित केने छलाह। मुदा आधुनिक सिंचाई योजना सभ (जेना जयनगर वियर आ पश्चिमी कोशी नहर) महग आ कम प्रभावशाली साबित भेल अछि।

इंजीनियरिंगक विफलता: लेखकक तर्क छनि कि बान्ह नदीक गाद (Silt) कें ओहिमे कैद कय दैत अछि, जाहि सँ नदीक पेटी ऊँच भ' जाइत अछि। जखन बान्हक भीतर नदीक जलस्तर बाहरक जमीन सँ ऊँच भ' जाइत अछि, तँ बान्हक 'टूटब' (Breach) निश्चित भ' जाइत अछि, जे भयंकर तबाही अनैत अछि।

मानव-निर्मित त्रासदी: पोथीमे १०२ एहन गामक सूची देल गेल अछि जे बान्हक भीतर 'कैद' भ' गेल छथि। ऐ ४.३० लाख आबादी लेल बाढ़ि कोनो आपदा नय, वरन् एकटा स्थायी नरक बनि

गेल अछि । हुनक पुनर्वास मात्र कागज पर भेल अछि ।

जल-जमाव (Waterlogging): बान्हक कारण बाहरक बरसाती पानि नदीमे नय जा पबैत अछि, जाहि सँ 'सुरक्षित' क्षेत्रमे सेहो महीनों धरि जल-जमाव रहैत अछि । झंझारपुरक दक्षिणमे ई समस्या एतेक गम्भीर अछि कि लोक अपन जमीन पर खेती नय कय पाबि रहल छथि ।

राजनैतिक आ तकनीकी स्वार्थ: लेखक बान्ह कें एकटा 'ट्रैप' (Trap) मानैत छथि जे ठेकेदार, इंजीनियर आ नेता सभक लेल कमाईक जरिया बनि गेल अछि । जखन कि 'बाढ़िक साथ रहब' (Living with floods) जकाँ पारंपरिक ज्ञान कें आधुनिक विकासमे कोनो जगह नय देल गेल ।

नेपाल-भारत संबंध: पोथीमे 'चीसापानी बांध' (Chisapani Dam) कें एकटा मृगतृष्णा बताओल गेल अछि । लेखकक अनुसार, जखन धरि कमला नदीक गाद प्रबंधनक गप्प नय हेतय, तखन धरि कोनो बांध या बान्ह सफल नय भ' सकैत अछि।

दिनेश कुमार मिश्रक ई पोथी स्पष्ट करैत अछि कि कमला नदी कें 'कैद' करबाक कोशिश मिथिलाक लेल अभिशाप बनि गेल अछि ।

आवश्यकता अछि कि हम नदीक प्राकृतिक मार्गक सम्मान करी आ स्थानीय जनता कें निर्णय प्रक्रियामे शामिल करी ।

मिथिलाक सांस्कृतिक आ भौगोलिक चेतनाक केंद्र में प्रवाहित कमला नदी केवल एकटा जलधारा मात्र नहि अछि, वरन् ई ऐ क्षेत्रक आर्थिक आधार आ सामाजिक संरचनाक नियामक सेहो अछि। दिनेश कुमार मिश्रक कालजयी शोध ग्रंथ "बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी" (The Kamla River and People On Collision Course) ऐ नदीक ऐतिहासिक प्रवाह, आधुनिक इंजीनियरिंगक हस्तक्षेप आ ओहि सँ उत्पन्न भयावह विसंगतिक एकटा विस्तृत दस्तावेज प्रस्तुत करैत अछि । ई प्रतिवेदन दिनेश कुमार मिश्रक तीन दशक सँ बेसीक शोध, क्षेत्रीय भ्रमण, आ तकनीकी विष्लेषणक आधार पर कमला नदीक वर्तमान संकट आ भविष्यक चुनौतीक विवेचना करैत अछि।

नेपालक महाभारत श्रेणी सँ उद्गमित भऽ हिमालयक पादप्रदेश कें पार करैत जखन कमला नदी बिहारक मधुबनी जिलाक जयनगर में प्रवेश करैत अछि, तखन एकर स्वरूप एकटा चंचल कन्याक समान होइत अछि, जाहि कारण स्थानीय

लोक एकरा "अविवाहित" वा "कुमारी" नदीक संज्ञा दैत छथि । ऐ चंचलताक वैज्ञानिक कारण एकर तीव्र ढाल आ अत्यधिक गाद (Silt) वहन करय कें क्षमता अछि।

जलग्रहण क्षेत्र आ प्रवाहक सांख्यिकीय विवरण: कमला नदीक कुल लंबाई आ एकर जलग्रहण क्षेत्रक वितरण नेपाल आ भारतक बीच विभाजित अछि, जकर विवरण नीचां देल गेल तालिका में स्पष्ट कएल गेल अछि:

भौगोलिक पैरामीटर	**विवरण / सांख्यिकी**
नदीक उद्गम स्थल	चुरिया श्रेणी, सिंधुली गढ़ी (नेपाल)
कुल लंबाई	328 किलोमीटर
नेपाल में प्रवाह लंबाई	208 किलोमीटर
भारत (बिहार) में प्रवाह लंबाई	120 किलोमीटर

कुल जलग्रहण क्षेत्र	7,232 वर्ग किलोमीटर
बिहार में जलग्रहण क्षेत्र	5,488 वर्ग किलोमीटर
नेपाल में जलग्रहण क्षेत्र	2,744 वर्ग किलोमीटर
औसत वार्षिक वर्षा	1,260 मिलीमीटर
मुख्य सहायक नदी	सोनी, बलान, त्रिशुला, मँनावती, धौरी

नदीक स्वभावक सब सँ बड़ विशेषता एकर मार्ग परिवर्तन अछि। ऐतिहासिक प्रमाणक अनुसार, 1954 सँ पूर्व कमला नदीक मुख्य धारा 'बछराजा' छल, मुदा एकटा भीषण बाढ़िक उपरांत ई अपन मार्ग बदलि कऽ बलान नदी सँ मिलि गेल, जाहि सँ आब एकरा संयुक्त रूप सँ 'कमला-बलान' कहल जाइत अछि।

1954 में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत बाढ़ि नियंत्रण नीतिक तहत कमला-बलान कें बान्हक भीतर बांधल गेल। मुख्य उद्देश्य छल जे नदीक पानिकें

एकटा निश्चित मार्ग में प्रवाहित कऽ आसपासक कृषि योग्य जमि कें बाढ़ि सँ सुरक्षित कएल जाय। मुदा, दिनेश कुमार मिश्रक विष्लेषण ई सिद्ध करैत अछि जे ई नीति कमला नदीक हाइड्रोलॉजिकल चरित्रक पूर्णतः विरुद्ध छल ।

गादक जमाव आ नदी तलक उर्ध्वगामी स्तर: कमला एकटा अत्यधिक गाद वहन करय बला नदी अछि। बान्हक कारण गाद आसपासक मैदान में पसरय कें बदला नदीक पातर रास्ता में जमा होबय लागल । एकर परिणामस्वरूप नदीक तल (River Bed) आसपासक जमीन सँ ऊपर उठि गेल अछि। आंकड़ा सिद्ध करैत अछि जे कम पानि भेला कें बावजूद बाढ़िक स्तर बढ़ि रहल अछि, कियाक तँ नदीक 'क्रॉस-सेक्शनल एरिया' गादक कारण कम भऽ गेल अछि। ई स्थिति कें समीकरण कें चुनौती दैत अछि, जतय क्षेत्रफल कम भेला सँ वेग आ स्तर दूनू बढ़ि जाइत अछि, जाहि सँ बान्हक टूटय कें खतरा बढ़ि जाइत अछि ।

बान्हक निर्माण मिथिलाक ग्रामीण अर्थव्यवस्था कें मर्माहत कएलक अछि। मिश्र जी अपन पुस्तक में विस्तार सँ वर्णन करैत छथि जे कोना बाढ़ि

नियंत्रणक नाम पर लोकक जीविकोपार्जन सँ खिलवाड़ कएल गेल अछि ।

कृषि आ पारंपरिक सिंचन प्रणालीक विध्वंस: बान्ह सँ पूर्व, मिथिलाक किसान 'अहर-पइन' आ 'चौर'क माध्यम सँ साल में तीनटा फसल लैत छलाह । बाढ़िक पानि अपन साथ उपजाऊ गाद (Natural Fertilizer) लऽ कऽ अबैत छल। बान्हक निर्माणक बाद:

धानक फसलक बर्बादी: बान्हक भीतर रहनिहार लोकक फसल प्रतिवर्ष बाढ़ि में डुबि जाइत अछि।

सिंचनक अभाव: बान्हक बाहर रहनिहार लोक कें पुरान सोती (Paleochannels) सँ पानि भेटब बंद भऽ गेल अछि, कियाक तँ नदीक मुख्य धारा सँ एकर जुड़ाव कटि गेल अछि ।

पशुपालनक ह्रास: चौर आ पोखरि सभक सुकि गेला सँ भैंसि पालन कठिन भऽ गेल अछि। मधुबनी आ दरभंगाक किसान आब पशुपालन सँ विमुख भऽ पलायन करय लेल विवश छथि ।

पलायन आ सामाजिक विस्थापन: बान्हक भीतर रहनिहार लगभग 10 लाख लोक कें "बाढ़ि शरणार्थी कहल जा सकैत अछि। ओहि लोकनि

कें न तँ स्थायी आवासक सुविधा अछि आ नहि सुरक्षाक गारंटी। जखन बान्ह टूटैत अछि, तँ फ्लैश फ्लड (Flash Flood) कें कारण जान-मालक अपार क्षति होइत अछि । ऐ अनिश्चितताक कारण मिथिलाक प्रतिभा आ श्रमशक्ति दिल्ली, पंजाब आ गुजरात पलायन कऽ रहल अछि ।

पुस्तकक शीर्षक में "बगावत" शब्दक प्रयोग बहुआयामी अछि। दिनेश कुमार मिश्रक अनुसार, ई बगावत केवल नदीक अपन बान्ह तोड़य कें प्रवृत्ति मात्र नहि अछि, वरन् ई एकटा विफल नीतिक विरुद्ध प्रकृति आ मनुष्यक संयुक्त प्रतिरोध अछि ।

नदीक बगावत: जखन नदी कें ओकर प्राकृतिक विस्तार सँ रोकल जाइत अछि, तखन ओ बान्ह तोड़ि कऽ अपन पुरान मार्ग (Paleochannels) कें खोजैत अछि। ई हाइड्रोलॉजिकल मजबूरी अछि ।

लोकक बगावत: जखन बान्हक भीतर पानि बढ़ैत अछि आ प्रशासन कोनो सहायता नहि करैत अछि, तखन लोक विवश भऽ कऽ अपनहि हाथ सँ बान्ह काटि दैत छथि ताकि अपन जीवन बचा सकय। प्रशासन एकरा "असामाजिक तत्वक कृत्य" कहैत

अछि, मुदा मिश्र जी एकरा जीवन रक्षाक अंतिम प्रयास मानैत छथि ।

नीतिगत बगावत: ई पुस्तक आधुनिक सिविल इंजीनियरिंगक ओहि मान्यताओं सँ विद्रोह करैत अछि जे मानैत अछि जे नदी कें "पालतू" (Tamed) कएल जा सकैत अछि ।

मिश्र जी अपन शोध में एकटा रचनात्मक समाधान प्रस्तुत करैत छथि। ओ कहैत छथि जे कमला नदीक पाँचटा प्रमुख पुरान धारा सभ अछि—जिवाच कमला, सकरी कमला, पैंटघाट कमला, बछराजा धार आ वर्तमान कमला-बलान ऐ सभक कुल लंबाई लगभग 800 किलोमीटर अछि।

जँ सरकार बान्हक ऊंचाई बढ़ाबय में करोड़ों टका खर्च करय कें बदला ऐ पुरान धारा सभक जुड़ाव मुख्य नदी सँ पुनः बहाल कऽ दियैक, तँ बाढ़िक संकट स्वतः समाप्त भऽ सकैत अछि । ई धारा सभ बाढ़िक अतिरिक्त पानिकें सोखि लेत आ रबीक फसल लेल सिंचनक साधन सेहो बनत। ई 'नदी जोड़ो' नहि वरन् 'नदी कें अपन परिवार सँ मिलाबय' कें प्रक्रिया अछि ।

बाढ़िक मारि सभ सँ बेसी मुसहर, मल्लाह आ भूमिहीन श्रमिक वर्ग पर पड़ैत अछि । बान्हक भीतर फँसल ऐ लोकनि कें जातिगत भेदभावक सामना सेहो करय पड़ैत अछि। बाढ़ि राहत शिविर में सेहो संसाधनक वितरण में ऐ समुदाय कें उपेक्षित राखल जाइत अछि ।

दिनेश कुमार मिश्रक अनुसार, बाढ़ि नियंत्रणक नाम पर जे ठेकेदारी प्रथा विकसित भेल अछि, ओहि सँ मात्र राजनेता आ इंजीनियर लाभांवित भेल छथि, जखन कि गरीब जनताक स्थिति वर्ष दर वर्ष बदतर होइत गेल अछि ।

संकट सँ निपटय लेल आब "ग्रीन बेल्ट" आ "कम्युनिटी बेस्ड अडैप्टेशन"क बात कएल जा रहल अछि, मुदा जखन धरि बान्हक बुनियादी विफलता कें स्वीकार नहि कएल जाएत, कोनो स्थायी समाधान संभव नहि अछि ।

"बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी" केवल एकटा तकनीकी रिपोर्ट नहि अछि, ई मिथिलाक जीवन-दर्शन अछि। दिनेश कुमार मिश्रक शोधक निष्कर्ष अछि जे नदीक साथ "युद्ध" कें बदला "सह-अस्तित्व" कें मार्ग अपनाबय पड़त

। बाढ़ि कें आपदा मानय कें बदला एकरा जल संसाधनक रूप में देखय कें आवश्यकता अछि।

मिथिलाक भविष्य ऐ बात पर निर्भर करैत अछि जे ओ अपन धारक पारंपरिक ज्ञान कें पुनर्जीवित करैत अछि वा आधुनिक इंजीनियरिंगक ओहि जाल में फँसल रहैत अछि जे अंततः विनाशक मार्ग अछि । दिनेश कुमार मिश्रक ई कृति आगामी पीढ़ी लेल एकटा चेतावनीपूर्ण मशाल अछि।

भुतही नदी और तकनीकी झाड़- फूक (२००५)

भुतही बलान

भौगोलिक स्थिति: भुतिही बलान बिहारक मधुबनी जिलाक एकटा छोटी नदी अछि, जे कमला आ कोसी नदीक बेसिनक बीच मे स्थित अछि।

ई उत्तर बिहारक पैंघ नदीक तुलना मे बहुत छोटी अछि, मुदा एकर मारक शक्ति एकर आकार सँ कतेको गुना बेसी अछि।

'भूतहा' स्वभाव आ अनिश्चित रस्ता: नदीक नाम 'भुतिही' एकर अनिश्चित व्यवहारक कारणे राखल गेल अछि। पछिला समय धरि एकर कोनो निश्चित रस्ता (Bed) नैं छल।

स्थानीय लोकक अनुसार, ई नदी बरसात मे अचानक प्रकट होइत अछि, लोकक घर मे पानि घुसैत अछि, आवागमन ठप्प कऽ दइत अछि आ लोक किछु समझि पाबैत ताहि सँ पहिने गायब भऽ जाइत अछि।

गायब भेला क बाद ई नदी अपन पाँछा बालूक मोटा परत (Thick sand) छोड़ि जाइत अछि, जाहि सँ खेतीक जमीन बरबाद भऽ जाइत अछि।

जल-निकासीक समस्या: *चूँकि एकर कोनो निश्चित धारा नैं छल, एकर पानि कतेको छोट-छोट सोता मे बँडि कऽ पफैल जाइत छल।*

१९वीं शताब्दी मे जखन जयनगर सँ नरहिया धरि 'जिला बोर्ड सड़क' बनल, तँ ओकर पुल सभ भुतिही बलानक पानि निकालय मे असमर्थ छल, जाहि सँ बाढ़िक तबाही आर बढ़ि गेल।

खेती आ अर्थव्यवस्था पर प्रभाव: *भुतिही बलानक बाढ़ि सँ धानक फसल सम्पूर्ण रूपेँ नष्ट भऽ जाइत अछि। बालू भरला क कारणे जमीन बांझ भऽ जाइत अछि, जाहि सँ स्थानीय किसानक आर्थिक स्थिति जर्जर भऽ गेल अछि।*

मिथक आ किंवदंती: *लोककथा मे कहल गेल अछि जे जखन कोसी आ कमला अपन रस्ता बदललक, तँ भुतिही बलान ओहि बीचक खाली स्थान मे अपन साम्राज्य बना लेलक। एकरा एकटा 'भटकैत आत्मा' जेकाँ मानल जाइत अछि जे कखनो शांत नैं रहैत अछि।*

बान्ह निर्माणक शुरुआत: *भुतिही बलानक विनाशलीला सँ त्रस्त जनताक दबाव मे सरकार १९६० क दशकमे एकरा नियंत्रित करबाक योजना बनौलक।*

एकर अंतर्गत नदीक दुनू कात बान्ह (Embankments) बनाओल गेल ताकि पानि गाम मे न पफैल कऽ एकटा निश्चित रस्ता सँ कोसी मे चलि जाय।

गाद (सिल्ट) क गम्भीर समस्याः अध्याय मे 'इंजीनियरिंग विफलता' क सब सँ पैघ कारण 'सिल्ट' कें बताओल गेल अछि। भुतिही बलान अपन संग एतेक बालू आनैत अछि जे बान्हक बीचक रस्ता तुरंत भरि जाइत अछि।

जखन नदीक पेटी बालू सँ भरि जाइत अछि, तँ पानि बान्ह कें तोडि कऽ बाहर निकलैत अछि। इंजीनियर सभक लेल ई एकटा 'झाड़-फूँक' (Witchcraft) सन भऽ गेल अछि जतय समस्याक जड़ि कें बुझबाक बदला मात्र अस्थाई मरम्मत कएल जाइत अछि।

रेलवे आ सड़कक बाधाः उत्तर पूर्व रेलवेक लाइन भुतिही बलानक रस्ता मे एकटा पैघ बाधा अछि। रेलवेक पुल (Bridge Nos. 33- 40) क क्षमता नदीक भारी डिस्चार्ज आ बालू कें झेलबाक लेल पर्याप्त नैं अछि।

एकर कारणे पानि पाँछा दिस 'बैकवाटर' मारैत अछि, जाहि सँ नया-नया इलाका मे बाढ़ि आबि जाइत अछि।

विस्थापन आ पुनर्वास: बान्हक निर्माण सँ जे लोक 'भीतर' फँसि गेलाह, हुनका लेल कोनो ठोस पुनर्वास नीति नै छल। लोक अपनहि जमीन पर असुरक्षित भऽ गेलाह।

सरकार बाढ़ि प्रबंधन कें मात्र 'राहत वितरण' धरि सीमित राखलक, जबकि स्थाई समाधान लेल बालू कें रस्ता देब (Routing the sand) आवश्यक छल।

बालूक साम्राज्य: भुतिही बलानक विशेषता ई अछि जे ई पानि सँ बेसी बालू आनैत अछि। ई बालू नदीक पेटी (River bed) मे एतेक जल्दी जमा होइत अछि जे बान्हक ऊँचाई कम पड़ि जाइत अछि।

जखन नदी अपन बालू सँ अपनहि रस्ता भरि लेइत अछि, तँ पानि नया क्षेत्र मे घुसबाक रस्ता खोजैत अछि, जाहि सँ बान्ह टूटबाक खतरा सदिखन बनल रहैत अछि।

'इंजीनियरिंग विचक्राफ्ट' (तकनीकी झाड़-फूँक)ः *इंजीनियर सभ नदीक पानि कें तँ नियंत्रित करय चाहैत छथि, मुदा ओ 'बालू' (Sand) कें रस्ता देबय मे विफल छथि।*

बालू कें सही प्रबंधन (Routing the sand) केने बिना बान्ह बनेबाक प्रक्रिया कें लेखक 'झाड़-फूँक' कहैत छथि, जाहि मे समस्याक जड़ि कें इलाज करबाक बदला मात्र बाहरी लक्षण कें ठीक करबाक कोशिश कएल जाइत अछि।

रेलवेक भूमिका आ तकनीकी अड़चनः *भुतिही बलान क्षेत्र मे रेलवेक जे पुल सभ (Bridge nos. 33- 40) अछि, ओ बालू सँ भरल जा रहल अछि। रेलवे प्रशासन आ जल संसाधन विभागक बीच तालमेलक कमीक कारणे नदीक पानि पाँछा दिस मारैत अछि।*

ऐ सँ रेल सेवा सेहो बाधित होइत अछि आ आसपासक गाम मे जल-जमावक स्थाई समस्या बनि गेल अछि।

पुनर्वासक अभावः *विस्थापित लोकक व्यथा बताओल गेल अछि। बान्हक भीतर फँसल लोकक लेल 'आपदा प्रबंधन' मात्र राहत सामग्री बाँटब धरि सीमित अछि। हुनक भविष्यक सुरक्षा आ*

जमीनक उर्वरता कें बचेबाक लेल कोनो ठोस नीति नैं अछि।

लेखकक अनुसार, भुतिही बलान कें नियंत्रित करब असंभव अछि जतेक काल धरि हम पानि क बदला बालू कें रस्ता (Routing the sand) नैं देब। अन्तिम फैसला नदी करत, आ ओहि 'फैसला' सँ बचबाक लेल हमरा 'प्रकृति' सँ लड़बाक बदला ओकर स्वभाव कें बुझय पड़त। संक्षेपमे, तेसर अध्याय ई चेतावनी दैत अछि जे भुतिही बलानक समस्या मात्र 'बाढ़ि' नैं वरन् 'बालू' अछि। जँ तकनीकी दृष्टिकोण मे बदलाव नैं आएत, तँ ई 'भूतहा नदी' अपन विनाशक खेल जारी रखत।

इंजीनियरिंग विफलताक सबकः लेखकक अनुसार, भुतिही बलान पर कएल गेल 'बान्ह' क प्रयोग विफल साबित भेल अछि। एकर मुख्य कारण ई छल जे पानि सँ बेसी बालू (सिल्ट) कें रस्ता देबय मे इंजीनियर सभ असफल रहलाह।

जतेक काल धरि 'बालू कें रस्ता' (Routing the sand) नैं देल जतय, ततेक काल धरि कोनो भी बान्ह नदीक मारक शक्ति कें नैं रोकि सकत।

रेलवे आ प्रशासनिक सामंजस्यः रेलवे पुल (Bridge Nos. 133-140) क क्षमता बढ़यबाक

लेल रेलवे आ जल संसाधन विभागक बीच तालमेल बड़ जरूरी अछि। जँ पानि आ बालू बिना कोनो बाधाक पाछाँ सँ निकलि जतय, तँ आसपासक गाम मे तबाही कम भऽ सकैत अछि।

आपदा प्रबंधन सँ आगू: वर्तमान मे सरकार मात्र 'राहत वितरण' (Relief distribution) कें ही समाधान मानि लेलक अछि। लेखकक तर्क अछि जे ई मात्र एकटा 'मलहम' अछि, इलाज नैं।

स्थाई समाधान लेल **'विस्थापन आ पुनर्वास'** (Rehabilitation) क एकटा स्पष्ट नीति होबय चाही, जतय बान्हक बीच मे फँसल लोककें सुरक्षित स्थान आ आजीविकाक साधन मिलय।

'भूत' कें वश मे करब बनाम सामंजस्य: भुतिही बलान कें 'वश' मे करबाक चेष्टा कें लेखक 'झाड़-फूँक' (Witchcraft) कहने छथि। ओ कहैत छथि जे प्रकृति सँ लड़बाक बदला हमरा ओकर स्वभाव कें बुझि कऽ अपन जीवनशैली (जेना- घरक बनावट, खेतीक तरीका) मे बदलाव आनय पड़त।

लेखक कहैत छथि जे अन्तिम फैसला नदी करत। जँ हम तकनीकी अहंकार मे रहब, तँ विनाश निश्चित अछि। समाधान तखनहि सम्भव अछि जखन हम नदीक चंचलता कें स्वीकार कऽ कऽ

ओकर संग सामंजस्य बैठयबाक चेष्टा करब। संक्षेपमे, चारिम अध्याय भुतिही बलान कें एकटा 'सचेतक' क रूप मे देखबैत अछि, जे हमरा अपन जल-प्रबंधनक नीत मे आमूलचूल बदलाव करय लेल विवश करैत अछि।

दिनेश कुमार मिश्र अपन ऐ पुस्तकमे मधुबनी जिलाक एकटा छोट मुदा अत्यंत विनाशी नदि **भुतही बलान**क कथा कहैत छथि । ई नदि कमला आ कोसीक बीच बहैत अछि । एकरा "भुतही" ऐ लेल कहल जाइत अछि कारण एकर कोनो निश्चित धारा नहि अछि; वर्षा कालमे अचानक अइत अछि, गाम-घर उजाड़ि दैत अछि आ फेर बालू छोडि क' गायब भ' जाइत अछि ।

लेखकक मुख्य प्रहार सरकारी इन्जीनियरीक तौर-तरीका पर अछि, जाहिमे नदिक प्राकृतिक स्वभावकेँ बुझने बिना ओकरा बान्हब (Embankment) एकमात्र समाधान मानल जाइत अछि ।

१९७० क दशकमे सरकार मात्र पश्चिमी भागमे बान्ह बनौलक । एकर परिणाम ई भेल जे पश्चिमी भागक नेता लोकनि (जेना फूलपरासक कतेको कद्दावर नेता) अपन क्षेत्र त' बचा लेलनि, मुदा

पूर्वी भागक ५४ टा गामक लेल ई नदि काल बनि गेल ।

प्राकृतिक संतुलनक विनाशः पहिले नदिक पानिक संग उपजाऊ माटि (गाद) अइत छल, मुदा बान्हक कारणे एखन मात्र बालूक जमाव (Sand-casting) होइत अछि, जाहि सँ खेती पूर्णतः बर्बाद भ' गेल अछि ।

पुस्तक ई देखबैत अछि जे कोना एकटा गलत तकनीकी निर्णय समाजकेँ दू भागमे बांटि दैत अछि।

जे लोक बान्हक भीतर छथि, ओ पूर्वी बान्हक निर्माणक विरोध करैत छथि कारण ओकरा डर छैक जे पूर्वी बान्ह बनला सँ नदिक दबाव ओकर दिस बढ़ि जतैक ।

१९९६ मे जखन पूर्वी बान्हक काज शुरू भेल, त' दू पक्षक लोक आपसमे लड़ि गेलाह, जाहिमे मृत्यु तक भ' गेल ।

लेखकक तर्क छनि जे इन्जीनियर लोकनि नदिक "पानी" त' देखैत छथि मुदा ओकर "बालू आ गाद" केँ नजरअंदाज क' दैत छथि । जखन नदिक बालू बान्हक बीच जमा होइत अछि, त' नदिक पेट ऊँच

भ' जाइत अछि आ बान्ह टूबब निश्चित भ' जाइत अछि ।

जे गाम बान्हक बीच फँसि जाइत छथि, ओकर पुर्नवास (Rehabilitation) कागजी अछि । कोसी पीड़ित विकास प्राधिकार सन संस्था मृतप्राय अछि।

लेखक स्पष्ट कहैत छथि जे बान्हक निर्माण जनहित सँ बेसी ठेकेदार, इन्जीनियर आ राजनीतिज्ञक 'गठबंधन'क पोषण करैत अछि ।

भूतही बलान: भौगोलिक विशेषता आ 'भूतही' स्वभावक रहस्य: भूतही बलान कोसी नदी प्रणालीक एकटा अत्यंत विशिष्ट आ लघु धारा अछि, जे अपन आकारक तुलना मे कहीं बेसी तबाही अनबाक लेल जानल जाइत अछि । मधुबनी जिलाक फूलपरास आ घोघरडीहा क्षेत्र मे प्रवाहित ई नदी अपन 'भूतही' नाम कैं सार्थक करैत अछि। स्थानीय ग्रामीणक अनुसार, ई नदी कोनो 'भूत' जकाँ व्यवहार करैत अछि—जे वर्षा ऋतु मे अचानक प्रकट होइत अछि, गामक गाम कैं जलमग्न कऽ दैत अछि, आ किछुवे समय मे गायब भऽ जाइत अछि, पाछाँ केवल बालूक मोट परत छोड़ि जाइत अछि ।

नदीक आकारिकी (Morphology) आ गतिकी: भूतही बलानक हाइड्रोलॉजिकल चरित्र उत्तर बिहारक अन्य नदी सभ सँ भिन्न अछि। एकर किछु मुख्य विशेषता सभ निम्नलिखित अछि:

अत्यधिक गाद (High Silt Load): हिमालयक शिवालिक श्रेणी सँ निकलला क कारणेँ ई नदी अपन संग बालूक बहुत पैंघ मात्रा अनैत अछि। जखन पानि पसरैत अछि, तँ बालू खेत मे जमा भऽ जाइत अछि, जाहि सँ उर्वर भूमि बंजर भऽ जाइत अछि । २. **अनिश्चित प्रवाह मार्ग (Channel Instability):** भूतही बलानक कोनो स्थायी 'बेड' (Bed) नहि अछि। ई सर्पाकार गति (Meandering) मे बहैत अछि आ प्रतिवर्ष अपन रस्ता बदलैत रहैत अछि । ३. **पश्चिमी बान्ह सँ अवरोध:** कोसीक पश्चिमी बान्हक निर्माणक बाद भूतही बलानक प्राकृतिक निकास रुकि गेल। ई नदी अब कोसीक बान्हक समानांतर बहबाक लेल मजबूर अछि, जाहि सँ जलजमावक गंभीर स्थिति उत्पन्न भऽ गेल अछि ।

भौगोलिक सूचकांकक दृष्टि सँ कोसी आ ओकर सहायक नदी सभक विश्लेषण कयल जाय तँ हुनक विनाशात्मक क्षमता स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

हाइड्रोलॉजिकल अध्ययन मे प्रयुक्त किछु सूत्र निम्नलिखित छथि :

विच्छेदन सूचकांक (Dissection Index): ई नदीक ठाढ़ कटाव कैँ देखबैत अछि।

कठोरता सूचकांक (Ruggedness Index): भूतही बलानक क्षेत्र मे ई सूचकांक बहुत अधिक अछि, जे एकर युवा आ आक्रामक स्वभाव कैँ दर्शाबैत अछि ।

डॉ. दिनेश कुमार मिश्रक ई पुस्तक २००४ मे प्रकाशित भेल छल। ऐ मे लेखक 'तकनीकी झाड़-फूँक' (Engineering Witchcraft) शब्दक प्रयोग तंज कऽ रूप मे कयलनि अछि, जे सरकारी अभियंता सभक ओहि मानसिकता पर प्रहार अछि जे ई बुझैत छथि जे ओ बान्हक 'झाड़-फूँक' सँ नदी जकाँ प्राकृतिक शक्ति कैँ वश मे कऽ सकैत छथि ।

भूतही बलान नदी: नदीक ऐतिहासिक परिचय आ मिथिलाक संस्कृति मे एकर स्थान। **बदलैत रस्ता:** कोना ई नदी समयक संग अपन मार्ग परिवर्तित कयलक अछि। **बान्हक विवशता:** ओ परिस्थितिक वर्णन जाहि मे सरकार बान्ह

निर्माणक निर्णय लेलक। **शुरुआती प्रयास:** १९६० क दशक मे बान्हक लेल कयल गेल पहल। **निर्माणोत्तर परिदृश्य:** बान्ह बनला क बाद उत्पन्न नवीन समस्या सभ। **धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे:** बान्हक पक्ष आ विपक्ष मे गामक लोकक बीच क द्वंद्व। **बान्ह- अज्ञानता या षड्यंत्र?:** तकनीकी विफलताक समाजशास्त्रीय विश्लेषण। **न्यायालयक हस्तक्षेप:** बान्हक विस्तार पर अदालती कार्यवाही। **अंतिम न्याय नदी करत:** लेखकक अटूट विश्वास जे प्रकृति ही अंतिम निर्णायक अछि। **पारंपरिक पद्धतिक प्रासंगिकता:** बाढ़िक संग समन्वय बना कऽ रहबाक पुरान रस्ता। **विस्थापितक पुनर्वास:** बान्हक बीच मे फँसल लोकक व्यथा। **सावधानीक आवश्यकता:** भविष्यक लेल चेतावनी। एकटा नवीन जल-दृष्टिक वकालत।

'तकनीकी झाड़-फूँक' क अवधारणा: लेखकक मुख्य तर्क ई अछि जे अभियंता सभ नदीक बालू कैँ नियंत्रित करबाक बदला केवल पानि कैँ नियंत्रित करबाक चेष्टा कयलनि । "The engineers instead of routing the river's sand routed the water," ओ लिखैत छथि । परिणाम स्वरूप नदीक तल मे बालू जमबा

सँ नदीक सतह ऊँच भऽ गेल आ बान्हक प्रभाव निष्प्रभावी भऽ गेल। ई ओहि झाड़-फूँक जकाँ अछि जे बीमारी कैँ बुझने बिना केवल ऊपरी उपचार करैत अछि।

बान्हक राजनीति आ सामाजिक विखंडन: भूतही बलान पर बान्हक निर्माणक इतिहास आपातकाल (1975-77) सँ जुड़ल अछि। डॉ. मिश्रक अनुसार, जखन देश मे नागरिक अधिकार दबा देल गेल छल, ओहि समय पश्चिमी बान्हक निर्माण भेल, क्योंकि ओहि समय कोनो मुखर विरोध संभव नहि छल ।

गामक बीच मे शत्रुता: बान्हक निर्माण सँ गामक लोक दू भाग मे बँटि गेलाह। ओ लोक जे बान्हक 'संरक्षित' क्षेत्र मे छलाह, आ ओ लोक जे बान्हक कारणेँ 'डूब' क्षेत्र मे आबि गेलाह । ई स्थिति एकहि गामक विभिन्न टोलक बीच मे शत्रुता पैदा कऽ देलक। फूलपरास प्रखंडक अनेक गाम मे देखल गेल जे बान्हक विस्तारक समर्थन करनिहार आ विरोध करनिहार लोक एक-दोसरक खूनक प्यासा बनि गेलाह।

प्रभावित गाम	स्थिति/व्यथा
घोघरडीहा	बान्हक भीतर आ बाहरक राजनीति मे पिसल गाम
फूलपरास	नदीक मार्ग बदलला सँ सरकारी कार्यालय सभक विस्थापन
रामनगर-सुरियाही	बान्हक विस्तारक मुखर विरोध करनिहार पंचायत
घोघपुर	कोसी आ बलानक संगम पर 'जल-कैदी' बना देल गेल गाम
ब्रह्मपुर/बाथनाहा	बान्हक भीतर फँसल आ बालू सँ नष्ट भेल खेत

राजनीतिक हित आ राहत उद्योग: बिहार मे बाढ़ि एकटा पैघ 'रिलीफ इंडस्ट्री' (Relief Industry) बनि गेल अछि । डॉ. मिश्र स्पष्ट करैत छथि जे जखन धरि बाढ़ि रहत, तखन धरि राहतक नाम पर भ्रष्टाचारक रस्ता खुलल रहत। बान्ह टूटनाइ

अभियंता आ ठेकेदारक लेल 'सोनाक अंडा' दैवाला मुर्गी जकाँ अछि, क्योंकि मरम्मतीक नाम पर करोड़ों टकाक हेराफेरी होइत अछि ।

मिथिलाक लोक-संस्कृति मे नदीक शब्दावली: दिनेश कुमार मिश्रक लेखनक एकटा विशिष्ट पक्ष ई अछि जे ओ नदी कैँ केवल हाइड्रोलॉजिकल डेटा सँ नहि, वरन् मैथिली भाषाक शब्दावली सँ परिभाषित करैत छथि। अंग्रेजी मे केवल 'Flood' शब्द अछि, मुदा मैथिली मे बाढ़िक विभिन्न अवस्थाक लेल सटीक शब्द अछि ।

बाढ़िक तीव्रताक पदानुक्रम: मैथिली लोक-जीवन मे बाढ़ि कैँ निम्नलिखित पाँच श्रेणी मे बँटल गेल अछि:

बाढ़ि (Badh): सामान्य जलस्तर मे वृद्धि जे खेतक उर्वरता बढ़ाबैत अछि।

बोह (Boha): पानि जखन बहैत (Flow) आबय आ गामक रस्ता कैँ प्रभावित करय।

सह (Sah): ओ बाढ़ि जे किछु समय धरि ठहैत अछि आ लोक कैँ ओहि मे रहबाक आदत भऽ जाइत अछि।

हुम्मा (Humma): भीषण बाढ़ि जे २५ वर्ष मे एक बेर आबय आ खिरकी धरि पानि आबि जाय।

प्रलय (Pralay): महाविनाश, जे जीवन मे एक बेर देखल जाइत अछि।

बलान नदीक संदर्भ मे एकटा प्रसिद्ध मैथिली कहावत अछि: "एबो बलान तँ बढ़बो दालान, जेबो बलान तँ घटबो दालान" । ई कहावत ई देखबैत अछि जे कोना ग्रामीण लोक बाढ़िक संग अपन आर्थिक समृद्धिक संबंध बुझैत छलाह। पानि जखन खेत मे पसरैत छल, तँ ओ अपन संग 'सिल्ट' अनैत छल जे प्राकृतिक खादक काम करैत छल। मुदा बान्हक निर्माण सँ ई चक्र रुकि गेल, आ आब बाढ़ि केवल तबाही अनैत अछि ।

तकनीकी विफलता आ पर्यावरणक संकट: डॉ. मिश्रक अनुसार, उत्तर बिहारक ९,४१० वर्ग किलोमीटर क्षेत्र 'वॉटरलॉगिंग' (Waterlogging) क शिकार अछि । ई स्थिति बान्हक कारणेँ पैदा भेल अछि क्योंकि वर्षाक पानि क निकास रुकि गेल अछि।

गाद आ नदीक सतहक ऊपर उठब: हिमालयी नदी सभक विडम्बना ई अछि जे ओ संसार मे सब सँ बेसी गाद ढोइत अछि। कोसी आ बलान

मे गाढ़क मात्रा गंगाक तुलना मे कहीं बेसी अछि। जखन ऐ नदी सभ कैं टूटा दिवार (बान्ह) क बीच मे बान्हल जाइत अछि, तँ गाद नदीक तल मे जमऽ लगैत अछि। धीरे-धीरे नदीक तल आसपासक जमीन सँ ऊपर उठि जाइत अछि ।

डॉ. मिश्रक विश्लेषण कैं हाइड्रोलॉजिकल पैरामीटर्स सँ ई बुझल जा सकैत अछि:

Dissection Index: उच्च मान (लगभग) उत्तर बिहारक नदी सभक तीव्र कटाव क्षमता कैं देखबैत अछि ।

Siltation Velocity: जखन पानि बान्हक बीच मे स्थिर होइत अछि, तँ बालू जमबाक गति बढ़ि जाइत अछि।

परिणाम ई भेल अछि जे जखन बान्ह टूटैत अछि, तँ पानि बहुत ऊँचाई सँ गाम मे प्रवेश करैत अछि, जाहि सँ तबाही क तीव्रता बहुत बेसी होइत अछि। १९८७ क बाढ़ि उत्तर बिहारक इतिहासक सब सँ भीषण बाढ़ि छल, जाहि मे बान्हक विफलता ही मुख्य कारण छल ।

वेटलैंड्स (Wetlands) क विनाश: मधुबनी जिला मे चौर आ पोखरि क पैंघ परंपरा रहल अछि। ई

प्राकृतिक जल संचयन क्षेत्र (Natural Sponges) छलाह जे बाढ़िक अतिरिक्त पानि कैँ सोखि लैत छलाह । मुदा आधुनिक कृषि आ शहरीकरणक कारणेँ ई वेटलैंड्स नष्ट भऽ गेल अछि। मधुबनी मे १९७५ सँ २०२२ क बीच वेटलैंड्स मे भारी कमी देखल गेल अछि, जाहि सँ बाढ़िक खतरा आर बढ़ि गेल अछि ।

बाढ़िक राजनीति आ भ्रष्टाचारक अंतहीन खेल: डॉ. मिश्रक पुस्तक "भूतही बलान" मे राजनीतिक नेतृत्वक विफलता पर सेहो प्रकाश डालल गेल अछि। ओ ललित नारायण मिश्र सँ लऽ कऽ कर्पूरी ठाकुर आ जगन्नाथ मिश्र धरि कऽ कार्यकालक विश्लेषण कयने छथि।

'नागमणि रिपोर्ट' क दमन: डॉ. मिश्र उल्लेख करैत छथि जे कर्पूरी ठाकुरक सरकारक समय 'नागमणि कमिटी' क गठन भेल छल जे भूतही बलानक समस्याक अध्ययन कयलक। ऐ रिपोर्ट मे बान्हक रस्ता बदलबाक सुझाव देल गेल छल, मुदा सरकार गिरला क बाद ई रिपोर्ट दबा देल गेल । ई देखबैत अछि जे कोना तकनीकी समाधान सभ कैँ राजनीतिक हितक लेल नजरअंदाज कयल जाइत अछि।

भ्रष्टाचारक 'गँठजोड़': बान्ह मरम्मतीक नाम पर प्रतिवर्ष करोड़ों टका खर्च होइत अछि। जखन कोनो बान्ह टूटैत अछि, तँ ओकरा 'दैवीय प्रकोप' कहि कऽ अभियंता आ नेता बचि जाइत छथि । डॉ. मिश्र तंज कऽ लिखैत छथि जे अभियंता सभ कैँ नदीक व्यवहारक कोनो परवाह नहि छनि, हुनक ध्यान केवल कंक्रीट आ बालूक बोरा पर रहैत छनि।

मानवीय संवेदनाक 'लेदर कॉइन': डॉ. मिश्रक विशेषता छनि जे ओ अपन संपूर्ण जीवन नदीक लेल समर्पित कऽ देलनि। ओ अविवाहित छथि आ अपन संपूर्ण संपत्ति आ समय नदीक अध्ययन मे लगा देने छथि । ओ कहैत छथि जे हुनक आत्मकथाक नाम "द लेदर कॉइन" (The Leather Coin) हयत, जे मिथिलाक ओहि संघर्षक प्रतीक अछि जाहि मे मूल्यवान चीज क कोनो मोल नहि रहि गेल अछि ।

हुनक कार्य "बाढ़ि मुक्ति अभियान" नहि केवल एकटा संगठन अछि, वरन् ई एकटा सामाजिक आंदोलन अछि जे लोक कैँ हुनक पुरान पहचान (Pre-embankment Identity) सँ जोड़ैत अछि । ओ ग्रामीण लोक कैँ 'लायमेन' (Laymen) मानबाक बदला हुनक 'स्थानीय ज्ञान'

(Traditional Knowledge) कैं आधुनिक इंजीनियरिंग सँ ऊँच मानैत छथि ।

डॉ. दिनेश कुमार मिश्रक "भूतही बलान" हमरा सभ कैं ई चेतावनी दैत अछि जे जँ हम प्रकृति कैं नियंत्रित करबाक चेष्टा मे ओकर गला घोंटब, तँ प्रकृति अपन रस्ता स्वयं बना लेत। भूतही बलानक 'भूत' असल मे ओहि तकनीकी अहंकारक उपज अछि जे नदी कैं केवल एकटा पाइप बुझैत अछि।

बान्हक विखंडन (De-commissioning of Embankments): जतय संभव होय, बान्ह कैं हटा कऽ नदी कैं अपन प्राकृतिक प्रवाह मार्ग (Floodplain) मे विस्तारक रस्ता देल जाय । **बाढ़िक संग जीबय क संस्कृति:** सरकारी नीति मे बाढ़िक 'नियंत्रण' क बदला 'प्रबंधन' पर जोर देल जाय ।

लोक-ज्ञान क एकीकरण: कोनो सेहो जल योजना मे स्थानीय बाढ़ि इतिहासकारों आ ग्रामीण बुजुर्गक सलाह कैं अनिवार्य कयल जाय ।

वेटलैंड्स क पुनरुद्धार: चौर आ पोखरि कैं पुनः जीवित कयल जाय ताकि ओ बाढ़िक समय 'एक्स्ट्रा' पानि कैं सोखि सकय । ५. **पारदर्शी शासन:** बान्ह मरम्मती मे होय वाला भ्रष्टाचार कैं

रोकबाक लेल 'सोशल ऑडिट' क व्यवस्था कयल जाय ।

भूतही बलानक कहानी मिथिलाक प्रत्येक नदीक व्यथा अछि। डॉ. दिनेश कुमार मिश्रक ई कृति हमरा अपन जड़ि सँ जुड़बाक आ प्रकृति क संग सामंजस्य बना कऽ रहबाक प्रेरणा दैत अछि। जँ हम आइ नहि चेतय, तँ भविष्य मे हमर गाम आ संस्कृति केवल समाचार पत्रक 'बाढ़ि राहत' क सुर्खियों मे सिमटि कऽ रहि जाएत। नदी कैँ मुक्ति हमर मुक्ति अछि।

दुइ पाटन के बीच में- कोसी नदी की कहानी
(२००६)

बाढ़ि नियंत्रणक विफलता आ नीतिगत विडम्बना

आँकड़ाक विरोधाभास: लेखक दिनेश कुमार मिश्र बताओने छथि जे १९५४ मे बिहार मे बान्हक कुल लम्बाई मात्र १६० किलोमीटर छल आ बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र २५ लाख हेक्टेयर छल।

२००२ धरि बान्हक लम्बाई बढ़ि कऽ ३,४३० किलोमीटर भऽ गेल, मुदा आश्चर्यजनक रूप सँ बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र सेहो बढ़ि कऽ ६८.८ लाख हेक्टेयर भऽ गेल। ई आँकड़ा सिद्ध करैत अछि जे बान्ह बाढ़ि रोकय मे विफल रहल अछि।

ब्रिटिश बनाम आधुनिक नीति: अंग्रेज शासक सभक माननाय छल जे उत्तर बिहारक हिमालयी नदी सभ मे 'सिल्ट' (गाद) बहुत बेसी होइत अछि, तें एकरा बांधब खतरनाक भऽ सकैत अछि। ओ 'जल-निकासी' (Drainage) पर बेसी जोर दइत छलाह।

मुदा आजादीक बाद, तकनीकी आ प्रशासनिक बहस कें दरकिनार कऽ कऽ पैंघ पैमाने पर बान्ह बनेबाक 'साहसिक' मुदा गलत फैसला लेल गेल।

तकनीकी आ प्रशासनिक विफलता: *लेखकक अनुसार, 'बाढ़ि नियंत्रण' आब मात्र ३ महीना (बरसात) क गप्प बनि कऽ रहि गेल अछि। राजनीतिज्ञ सभक कोशिश रहैत अछि जे बहस मात्र 'राहत' (पॉलीथीन, राशन, दियासलाई) धरि सीमित रहय।*

तकनीकी समुदाय (इंजीनियर्स) अपन जिम्मेदारी सँ बचबाक कोशिश करैत छथि आ जखन बान्ह टूटैत अछि, तँ ओकरा 'दैवीय आपदा' मानि कऽ फाइल बंद कऽ देल जाइत अछि।

प्रकृति सँ छेड़छाड़: *लेख मे स्पष्ट कएल गेल अछि जे नदीक सामने 'अकड़ि' कऽ खड़ा भेला सँ कोनो फायदा नै अछि। प्रकृति कें वश मे करबाक अहंकार ही तबाहीक कारण अछि।*

केवल 'बाढ़ि नियंत्रण' कें 'बाढ़ि प्रबंधन' कहि देला सँ समस्या हल नै भऽ जायत, जतेक काल धरि हम नदीक स्वाभाविक बहाव कें सम्मान नै करब।

जतेक काल धरि बाढ़िक बहस नमक आ मोमबत्ती सँ बाहर निकलि कऽ मूल नीति (Policy) पर नै आएत, ततेक काल धरि स्थिति 'यथावत' रहत। लोक ऐ त्रासदी कें एकटा 'दुःस्वप्न' बुझि कऽ भूलि जाइत छथि, जाहि कारणे प्रशासन कें अपन गलती

सुधारबाक कोनो दबाव नैं महसूस होइत अछि। 'बान्ह आधारित विकास' एकटा पैंघ विफलता अछि आ नदीक संग 'साहचर्य' (Living with the river) हेबाक चाही।

दुइ पाटन के बीच में

पौराणिक कथा: कोसीकें पुराणमे 'कौशिकी' कहल गेल अछि। ई ऋषि विश्वामित्रक दीदी सत्यवतीक रूप मानल जाइत अछि, जे अपन महाप्रयाणक बाद नदीक रूप लेलनि । वाल्मीकि रामायण आ महाभारतमे सेहो एकर महिमाक वर्णन अछि, जाहिमे एकरा 'शक्तिरूपा' आ 'पुण्यमयी' कहल गेल अछि ।

मृत्यु साधना: महाभारतक एकटा कथाक अनुसार, सृष्टिमे जखन मृत्युकेँ उत्पत्ति भेल तँ ओ संहारक काज सँ बचबाक लेल ऐ कौशिकी नदीक तट पर घोर तपस्या केने छलीह ।

नदीक उद्गम: कोसी हिमालय सँ लगभग ७००० मीटरक ऊँचाई सँ निकलैत अछि। एकर मुख्य जलग्रहण क्षेत्र नेपाल आ तिब्बतमे अछि ।

सप्तकोसी: नेपालमे एकरा सात टा नदीक (इन्द्रावती, सुनकोसी, तांबा कोसी, लिक्षु कोसी,

दूध कोसी, अरुण कोसी आ तामर कोसी) मिलन सँ बनबाक कारण 'सप्तकोसी' कहल जाइत अछि ।

बिहारमे प्रवेश: ई नेपालक हनुमान नगरक लग सँ भारतीय क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि आ सुपौल, सहरसा, मधेपुरा सँ होइत कटिहारक कुरसेलामे गंगा सँ मिलि जाइत अछि ।

धारा परिवर्तन: कोसी अपन धारा बदलबाक लेल प्रसिद्ध अछि। ई पछिला २५० सालमे अपन पूर्व सँ पश्चिम दिस लगभग १५० किलोमीटर खिसकि गेल अछि ।

गाद (सिल्ट) क समस्या: हिमालय सँ आबय बला भारी मात्रा मे बालू आ गाद नदीक पेटीकें ऊँच कऽ दइत अछि, जाहि सँ नदी अपन पुरान रस्ता छोड़ि नया रस्ता बना लेइत अछि ।

पुरान धारा: कोसीक कतेको पुरान धारा (छाड़न धारा) अछि जेना- परमान, भैंसना, कजरी, दुलारदेई, कमला कोसी, आ धौंस कोसी ।

बिहारक शोक: कोसीक बाढ़ि सँ भारी तबाही होइत अछि। ई उपजाऊ खेतकें बालू सँ भरि दइत अछि आ उर्वरक शक्ति नष्ट कऽ दइत अछि ।

सामाजिक प्रभावः लोकक जीवनमे कोसी एकटा 'स्थाई आतंक'क रूपमे अछि। कोसीक बाढ़ि सँ बीमारी (मलेरिया, हैजा), बेरोजगारी, आ पलायन आम बात भऽ गेल अछि ।

मिथक आ विश्वासः लोककथा मे कोसीकें एकटा 'कुआंरी आ चंचल कन्या' मानल गेल अछि, जे ककरो बंधन मे नै रहय चाहैत अछि ।

पारम्परिक ज्ञानः शुरूमे लोक अपन घर आ गामक रक्षाक लेल छोट-छोट 'रिंग बाँध' (घेरा बान्ह) बनबैत छलाह, जाहि सँ बाढ़िक पानी बेसी क्षेत्रमे पफैल कऽ खेतीकें ताजी माटि आ उर्वरक दइत छल ।

बान्हक शुरुआतः अंग्रेज शासक सभ अपन व्यापारिक आ प्रशासनिक सुबिधा (जेना रेल आ सड़क) कें बचाबय लेल नदीक दुनू कात ऊँच बान्ह बनयबाक शुरुआत केलनि ।

अंग्रेज अधिकारी सभ देखलनि जे बान्ह बनला सँ नदीक पेटीमे गाद (सिल्ट) जमा भऽ जाइत अछि, जाहि सँ नदीक जलस्तर ऊँच भऽ जाइत अछि आ बान्ह टूटबाक खतरा बढ़ि जाइत अछि।

१८९७ क 'कोलकाता बाढ़ि सम्मेलन' मे कोसीकेँ नियंत्रित करब एकटा टेढ़ी खीर मानल गेल आ विशेषज्ञ सभ कोसी पर बान्ह बनेबाक विरोध केने छलाह ।

१९३७ मे पटनामे भेल बाढ़ि सम्मेलनमे कोसी पर नेपालक 'बराहक्षेत्र' मे एकटा **हाई डैम** (ऊँच बान्ह) बनेबाक प्रस्ताव कएल गेल छल, जाहि सँ बाढ़ि नियंत्रण आ बिजली उत्पादन दुनू भऽ सकय।

आजादीक बाद, १९४७ मे सी.एच. भाभा बराहक्षेत्र योजनाक विस्तृत खाका प्रस्तुत केलनि, मुदा बेसी खर्च आ तकनीकी कठिनाइक कारण ई योजना टलत रहल ।

१९५३ क कोसी योजना आ बान्हक निर्णयः अंतमे, बराहक्षेत्र आ बेलका जलाशय योजनाक बदला सरकार १९५३ मे **बीरपुरमे बराज** आ नदीक दुनू कात **बान्ह** बनेबाक निर्णय लेलक।

ई फैसला मुख्य रूप सँ **राजनैतिक** छल, कियाक तँ सरकार लग हाई डैम बनेबाक पैसा नै छल आ ओ जनता केँ तुरन्त राहत देबय चाहैत छलीह ।

विशेषज्ञक चेतावनीः सर क्लॉड इंगलिस जेकाँ विशेषज्ञ सभ चेतावनी देने छलाह जे बिना सिल्ट

नियंत्रणक बान्ह बनायब भविष्यमे खतरनाक साबित भऽ सकैत अछि ।

चीनी यात्रा आ भ्रामक रिपोर्टः कँवर सेन आ डॉ. के.एल. राव चीनक ह्वांग-हो (पीली नदी) कें देखय गेल छलाह। ओतय सँ आबि कऽ ओ सभ कोसी पर बान्ह बनेबाक वकालत केलनि, मुदा ओ ई नै कहलनि जे चीनमे सेहो बान्ह कतेको बेर टूटि चुकल छल आ ओतय भारी तबाही भेल छल ।

इंजीनियरक बदलैत भूमिकाः १९३० क दशक धरि जे इंजीनियर बान्हक विरोध करैत छलाह, ओहे १९५० क दशक धरि राजनैतिक दबाव मे बान्हक समर्थन करय लगलाह ।

कोसी योजनाक उद्घाटनः कोसी योजनाक शिलान्यास १४ जनवरी १९५५ कें भेल छल। ऐ योजनाक मुख्य उद्देश्य छल— हनुमान नगर (नेपाल) मे बराजक निर्माण, नदीक दुनू कात बान्ह (Embankments) बनेबाक आ सिंचाईक लेल नहरक निर्माण।

जन-सहयोग आ 'श्रमदान' क प्रयोगः ऐ योजनाक सब सँ पैघ विशेषता छल **'जन-सहयोग'**। तत्कालीन सरकार आ भारत सेवक

समाजक आह्वान पर हजारो-लाखक संख्या मे आम लोक, छात्र आ स्वयंसेवक अपन हाथ सँ माटि काटि कऽ बान्ह बनेबाक काज मे जुटल छलाह।

एकरा एकटा 'राष्ट्रीय यज्ञ'क रूप देल गेल छल, जाहि सँ लोक कैँ लागय जे ओ सभ अपन रक्षा स्वयं कऽ रहल छथि।

निर्माण कार्यक विस्तारः नदीक पूर्वी भाग मे १२५ किलोमीटर आ पश्चिमी भाग मे १२ किलोमीटर लम्ब बान्ह बनेबाक लक्ष्य राखल गेल छल।

१९६३ धरि मुख्य बराज आ बान्हक निर्माण पूरा भऽ गेल। ऐ सं सहरसा, सुपौल आ मधेपुराक इलाका मे बाढ़ि सँ सुरक्षाक उम्मीद जागल।

विस्थापनक त्रासदीः बान्हक बीच मे फँसल गाम। बान्ह बनला सँ ३०० सँ बेसी गाम आ लगभग २-३ लाख लोक नदीक धारा आ बान्हक बीच मे फँसि गेलाह।

सरकार हुनका सभक लेल पुनर्वास (Rehabilitation) क वादा केने छल, मुदा ओ योजना कखनो सम्पूर्ण रूपैँ सफल नैं भेल। ऐ लोकक लेल 'आजाद भारत' मे सेहो नरकीय स्थिति बनि गेल।

तकनीकी आ आर्थिक पक्ष: *ऐ योजना पर करोड़ों टाका खर्च कएल गेल। बीरपुर मे एकटा टाउनशिप बनाओल गेल आ कोसी प्रोजेक्ट कें बिहारक सब सँ पैघ इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट मानल गेल।*

प्रारम्भिक उत्साह आ बादक निराशा: *शुरू मे तँ लागल जे कोसी कें नियंत्रित कऽ लेल गेल अछि, मुदा जहिना-जहिना समय बीतल, बान्हक अंदर गाद (सिल्ट) जमा होबय लागल आ नदीक जलस्तर बढ़बाक कारणे बान्ह टूटबाक खतरा सेहो बढ़ि गेल।*

बान्हक टूटनाइ—एक शाश्वत सत्य: *लेखकक अनुसार, बान्हक टूटनाइ मृत्यु सन एकटा शाश्वत सत्य अछि जाहि कें टाकल तँ जा सकैत अछि मुदा रोकल नैं । कोसी सन उच्छृंखल नदीमे ई खतरा आब सेहो बनल रहैत अछि ।*

प्रमुख दरारि आ तबाहीक घटना: डलवा कटाव (१९६३): *कोसी बान्हमे दरारिक पहिल पैघ घटना नेपालक डलवामे भेल । बराज बनला क तुरंत बाद भेल ऐ घटना सँ इंजीनियर सभक क्षमता पर प्रश्न चिन्ह लागि गेल ।*

जमालपुर जल-समाधि (१९६८): *५-६ अक्टूबर १९६८ मे बेमौसमक भारी बरखाक कारण कोसीमे ९.१३ लाख क्यूसेक पानी आबि गेल । पश्चिमी बान्ह जमालपुरक लग ५ ठाम सँ टूटि गेल, जाहि सँ १५० सँ बेसी गाम डूबि गेल आ भारी जान-मालक क्षति भेल ।*

भटनियाँ अप्रोच बांध (१९७१): *सुपौलक बसन्तपुर प्रखण्डमे ग्रामीणक जिद पर बनल अप्रोच बांध १९७१ क बाढ़िमे कटि गेल, जाहि सँ कतेको गाम खाली कऽ पड़ल ।*

अन्य प्रमुख घटना: *१९८० मे बहुअरवा कटाव, १९८४ मे नवहट्टा दरारि आ १९९१ मे नेपालक जोगिनियाँमे बान्हक कटाव भेल ।*

प्रशासनक संवेदनहीनता आ 'चूहा-सियार' क तर्क: *१९६८ क जमालपुर दरारिक बाद सरकारी जाँचमे ई कहल गेल जे 'लोमड़ीक मांद' आ 'चूहाक बिल' क कारणे बान्ह टूटल । एकरा लऽ कऽ लोक संसदमे सेहो विक्षोभ प्रकट केलनि जे सरकार अपन लापरवाही कें जीव-जन्तु पर थोपि रहल अछि ।*

विस्थापनक अंतहीन पीड़ा: *जखन-जखन बान्ह टूटैत अछि, बान्हक बाहरक "सुरक्षित" क्षेत्रक*

लोक सेहो बेघर भऽ जाइत छथि । बान्हक भीतर रहय बला लोक तँ पहिले सँ नारकीय जीवन जी रहल छथि, मुदा दरारि पड़ला पर बाहरक लोकक स्थिति सेहो तहिना भऽ जाइत अछि ।

नहरक परिकल्पना आ उद्देश्य: कोसी योजनाक अंतर्गत पूर्वी कोसी मुख्य नहर बनाओल गेल छल, जाहि सँ पूर्णिया, सहरसा आ कटिहारक १८ लाख एकड़ सँ बेसी जमीनक सिंचाईक लक्ष्य राखल गेल छल।

सरकारक वादा छल जे ऐ सँ क्षेत्रमे 'हरियर क्रान्ति' आएत आ अनाजक उत्पादन कतेको गुना बढ़ि जतय।

गाद (सिल्ट) क समस्या: नहर बनला क बाद सब सँ पैघ समस्या ई भेल जे कोसीक पानि मे भारी मात्रा मे बालू आ गाद (सिल्ट) छल। ई गाद नहरक पेटी मे जमा होबय लागल।

गादक कारणे नहरक क्षमता कम भऽ गेल। जतय १८ लाख एकड़क लक्ष्य छल, ओतय मात्र २-३ लाख एकड़ मे सेहो पानि पहुँचाएब मुश्किल भऽ गेल।

जल-जमाव (Water-logging) क त्रासदी: *नहर आ बान्हक निर्माण सँ जल निकासीक प्राकृतिक रस्ता बंद भऽ गेल। परिणाम ई भेल जे जतय सिंचाईक लेल पानि चाही छल ओतय पानि नैं पहुँचल, मुदा नीचाँ बला इलाका मे बारहमास 'जल-जमाव' भऽ गेल।*

लाखो एकड़ उपजाऊ जमीन दलदल मे बदलि गेल, जाहि सँ किसानक स्थिति आर खराब भऽ गेल।

खेती पर विपरीत प्रभाव: *नहरक पानि सँ जतय खेती होबय लागल, ओतय शुरू मे तँ फायदा भेल, मुदा बाद मे जमीन मे 'रेह' (क्षारीयता) बढ़ि गेल।*

कोसीक बालू जखन नहरक माध्यम सँ खेत मे पहुँचल, तँ ओ खेतक उर्वरता कें नष्ट कऽ देलक।

भ्रष्टाचार आ सरकारी उदासीनता: *नहरक सफाई आ रख-रखाव मे भारी भ्रष्टाचार भेल। हर साल करोड़ों टाका 'सिल्ट सफाई' क नाम पर खर्च कएल गेल, मुदा जमीन पर कोनो पैंघ सुधार नैं देखल गेल।*

पश्चिमी कोसी नहर: नहरक पृष्ठभूमि आ देरी: १९५३ क योजनामे अभाव: *शुरू मे १९५३ क मुख्य*

कोसी योजनामे पश्चिमी कोसी नहरक कोनो जिक्र नैं छल । बाद मे एकरा जोड़ल गेल।

नेपालक सहमति: नहरक एकटा पैंघ हिस्सा नेपालक क्षेत्र सँ होइत गुजरैत अछि, जाहि कारणे एकर निर्माणक लेल नेपाल सरकारक मंजूरी आ रजामन्दी बड़ अनिवार्य छल ।

शिलान्यास: १९५७ मे पहिल बेर एकर शिलान्यास भेल, मुदा राजनैतिक आ तकनीकी अड़चनक कारणे काज दशक धरि टलत रहल ।

डगमारा बराजक प्रस्ताव: नेपाल सँ मंजूरी मिलय मे देरी भेल तँ भारत अपन जमीन पर (डगमारा मे) एकटा अलग बराज बनेबाक प्रस्ताव केलक, मुदा बाद मे एकरा खारिज कऽ देल गेल आ पुरान योजना (हनुमाननगर बराज सँ नहर निकालब) पर ही काज शुरू भेल ।

पर्यावरणीय आ सामाजिक प्रभाव: जमीन अधिग्रहण: नहरक निर्माण सँ हजारो किसानक उपजाऊ जमीन अधिग्रहण कएल गेल, जाहि सँ छोट किसान भूमिहीन भऽ गेलाह ।

जल-जमाव: पूर्वी नहरक जेकाँ पश्चिमी नहर सँ सेहो ओहि इलाका मे जल-जमावक गम्भीर

समस्या पैदा भऽ गेल अछि । नहरक कारणे पानीक प्राकृतिक बहाव बंद भऽ गेल अछि।

विपरीत परिस्थिति: १९८७ क बाढ़ि मे पश्चिमी कोसी नहर तहस-नहस भऽ गेल छल, जाहि सँ उत्तर सँ आबय बला पानि फँसि गेल आ बीचक गाम सभ मे भारी तबाही भेल ।

वर्तमान स्थिति आ लक्ष्य सँ दूरी: नहर अपन सिंचाईक कथित लक्ष्य सँ बहुत पाँछा अछि। वर्तमान मे ई मात्र ७ प्रतिशत लक्ष्य ही पूरा कऽ सकल अछि ।

नहरक रस्ता मे रेलवे लाइन, सड़क आ सहायक नदीक कारणे तकनीकी पेचीदगी बढ़ि गेल अछि, जाहि सँ किसानक खेती आ सुबिधा मे सुधारक बदला बाधा बेसी पहुँचि रहल अछि ।

बान्हक भीतरक नरक: ३८० गामक त्रासदी: जखन कोसीक दुनू कात बान्ह बनाओल गेल, तँ ओहि दुनू बान्हक बीचक चौड़ाई ५ सँ १६ किलोमीटर धरि अछि। ऐ बीचमे ३८० सँ बेसी गाम आ लगभग ८-१० लाखक आबादी (१९५० क दशकक अनुसार) फँसि गेल।

ऐ लोकक लेल बाढ़ि कोनो सालाना घटना नै, वरन् एकटा "स्थाई जेल" जेकाँ भऽ गेल अछि।

पुनर्वासक वादा आ धोखा: *सरकार बान्ह बनेबाक समय वादा केने छल जे बान्हक भीतर रहय बला लोककेँ बाहर सुरक्षित स्थान पर बसाओल जतय (पुनर्वास)।*

मुदा वास्तविकता ई अछि जे पुनर्वासक योजना कखनो सम्पूर्ण रूपेँ लागू नेँ भेल। कतेको गामक लोककेँ तँ जमीन तक नेँ मिलल, आ जतय मिलल ओतय बुनियादी सुविधा (पानि, सड़क, स्कूल) क घोर अभाव छल।

शिक्षा, स्वास्थ्य आ आवागमनक समस्या: *बान्हक भीतर रहय बला लोकक लेल 'विकास' एकटा बेमानी शब्द अछि। बरसातक ४-५ महीना ई लोक दुनिया सँ कटि जाइत छथि।*

बीमार पड़ला पर अस्पताल पहुँचाबय लेल कोनो साधन नेँ रहैत अछि। स्कूलक भवन या तँ बाढ़ि मे बहल जाइत अछि या ओतय शिक्षक नेँ पहुँचि पाबैत छथि।

'होम' आ 'बाहर' क संघर्ष: *ऐ गामक लोकक स्थिति "दुइ पाटन के बीच मेँ" (बान्ह आ नदीक बीच) पिसैत गेहूँक दाना जेकाँ अछि। जखन बाढ़ि आबैत अछि, तँ ओ सभ बान्ह पर शरण लेइत*

छथि, जतय प्रशासन आ बान्हक बाहरक लोकक संग हुनक संघर्ष होइत अछि।

प्रशासनिक उपेक्षा: अध्याय मे कहल गेल अछि जे सरकारी तंत्र मानि लेलक अछि जे ऐ लोकक नियति 'डूबब' ही अछि। कोसी प्रोजेक्टक करोड़ों टाका खर्च होइत अछि, मुदा ऐ लोकक सुरक्षा लेल कोनो ठोस नीति नैं अछि।

बान्ह: एकटा विफल विकल्प: बान्हक आयु आ गाद (सिल्ट) क समस्या: बान्हक सब सँ पैघ कमजोरी 'सिल्ट' (गाद) अछि। कोसी भारी मात्रा मे बालू आ माटि आनैत अछि। बान्हक भीतर पानि बंद भेला सँ ई गाद नदीक पेटी मे जमा होबय लागल, जाहि सँ नदीक सतह (River bed) आसपासक जमीन सँ ऊँच भऽ गेल।

जखन नदीक पेटी ऊँच भऽ जाइत अछि, तँ बान्हक सुरक्षा कम भऽ जाइत अछि आ ओकरा आर ऊँच करब मजबूरी भऽ जाइत अछि, जे एकटा कहियो न खतम होबय बला प्रक्रिया अछि।

जल-निकासी (Drainage) मे बाधा: बान्ह एकटा दीवारक काज करैत अछि। ई न केवल कोसीक पानिकेँ बाहर जेबा सँ रोकैत अछि, वरन्

बाहरक वर्षाक पानि आ सहायक नदीक पानिकेँ सेहो कोसी मे मिलय सँ रोकैत अछि।

एकर परिणाम 'जल-जमाव' (Water-logging) अछि, जाहि सँ बान्हक बाहरक इलाका सेहो दलदल मे बदलि गेल अछि आ खेती चौपट भऽ गेल अछि।

बाढ़िक क्षेत्र मे वृद्धिः सरकारी आँकड़ा देखबैत अछि जे १९५४ मे (बान्ह बनबा सँ पहिने) बिहार मे बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र २५ लाख हेक्टेयर छल, जे बान्हक जाल बिछला क बाद २००४ धरि बढ़ि कऽ ६८ लाख हेक्टेयर भऽ गेल। यानी, 'बाढ़ि नियंत्रण' सँ बाढ़िक क्षेत्र कम होबाक बदला आर बढ़ि गेल।

रखरखाव आ भ्रष्टाचारः बान्हक रखरखाव मे हर साल करोड़ों टाका खर्च होइत अछि। इंजीनियर आ ठेकेदारक लेल ई एकटा 'कमाईक जरिया' बनि गेल अछि। अक्सर बाढ़िक समय 'इमरजेंसी' क नाम पर पैघ राशि गबन कऽ लेल जाइत अछि।

लोकक प्रतिरोधः अध्याय मे कतेको एहन घटनाक जिक्र अछि जतय बाढ़िक समय पीड़ित लोक अपन गामकेँ बचाबय लेल बान्ह काटबाक प्रयास केलनि। बान्हक कारणे एक इलाकाक

लोकक दोसर इलाकाक लोक संग 'पानीक युद्ध' (Water conflict) शुरू भऽ गेल।

बान्ह आ छहरक सीमाः लेखकक स्पष्ट माननाइ अछि जे बान्ह आ पैघ छहर (Dams) बाढ़िक समस्याक स्थाई समाधान नैं अछि। जखन कियो नदीकें बांधबाक चेष्टा करैत अछि, तँ नदी आर बेसी शक्ति आ वेग सँ प्रहार करैत अछि।

भारतक गुजरात आ महाराष्ट्रक उदाहरण दैत लेखक कहैत छथि जे जतय सब सँ बेसी छहर अछि, ओतय सेहो भीषण बाढ़ि अबैत अछि।

'हाई डैम' (ऊँच छहर) क मृगतृष्णाः नेपालक बराहक्षेत्रमे 'हाई डैम' बनेबाक जे चर्चा चलि रहल अछि, लेखक ओकरा प्रति शंकित छथि। हुनक कहनाइ अछि जे ऐ सँ मारक शक्ति आर बढ़ि सकैत अछि आ सिल्ट (गाद) क समस्या ज्यों का त्यों बनल रहत।

छहर निर्माणक क्षेत्र मे लागल स्वार्थी तत्व आ संस्था सभ ऐ योजनाक वकालत करैत रहत, मुदा समाजकें एकर भारी कीमत चुकाबय पड़त।

पारम्परिक ज्ञानक महत्वः कोसी क्षेत्रक लोक लग बाढ़ि सँ लड़बाक आ ओकर संग जीबय बला बहुत रास **'पारम्परिक ज्ञान'** उपलब्ध अछि

(जेना- घरक बनावट, खेतीक खास तरीका, नाव क प्रयोग)।

आधुनिक विज्ञान कें ऐ परम्परा कें नजरअंदाज नैं कऽ कऽ ओकर संग मिलि कऽ काज करय पड़त।

समाधानक दिशाः बाढ़ि क्षेत्रक समस्या सूखा क्षेत्र सँ अलग होइत अछि। एतय कोनो एक गामक लेल अलग योजना नैं बनाओल जा सकैत अछि, वरन् **'गामक समूह'** (Cluster of villages) क आधार पर क्षेत्रीय स्तर पर सोचय पड़त।

जल-निकासी (Drainage) कें दुरुस्त करब, गामक चबूतरा कें ऊँच करब आ स्वच्छ पानि/स्वास्थ्यक सुबिधा पहुँचाएब प्राथमिकता होबय चाही।

लेखक कहैत छथि जे विकासक कोनो बना-बनायल फॉर्मूला कोसी पर लागू नैं भऽ सकैत अछि। खुले मन सँ पारम्परिक ज्ञान आ आधुनिक तकनीकक मेल सँ नया मॉडल विकसित करय पड़त। ई काज जतेक जल्दी होएत, मिथिलाक लेल ओतेक नीक रहत।

कोशीक ऐतिहासिक आ भौगोलिक परिचयः कोशीक पौराणिक महत्व अछि, जतय एकरा

ऋचीक ऋषिक पत्नी सत्यवती या विश्वामित्रक बहिन 'कौशिकी' मानल जाइत अछि । भौगोलिक दृष्टि सँ, कोशी अपन चंचलता आ धारा बदलबाक स्वभाव लेल 'बिहारक शोक' कहल जाइत अछि । कोशी पिछला २५० सालमे अपन मुख्य धारा सँ लगभग १२० किमी पश्चिम खिसकि गेल अछि, जाहि सँ मिथिलाक एकटा पैंघ भाग तबाह भेल अछि

बान्हक राजनीति आ इंजीनियरिंग विफलताः मिश्र जी विस्तार सँ वर्णन करैत छथि कि कोना १९५० कें दशकमे कोशी पर बान्ह बनाबय लेल राजनैतिक निर्णय लेल गेल । सरकार पहिने 'बराहक्षेत्र' मे ऊँच बांध बनेबाक गप्प केलक, मुदा अन्ततः 'सस्ता' विकल्पक रूपमे बान्हक चुनाव कयलक । इंजीनियर सभ ह्वांग-हो (चीन) आ मिसीसिपी (अमेरिका) कें उदाहरण दैत बान्हक वकालत कयलनि, जखन कि ओहि देश सभमे ई तकनीक पहिनहिं विफल भ' चुकल छल ।

'दुइ पाटन के बीच' - जनताक त्रासदीः पोथीक ई शीर्षक ओहि ३०४ गाम आ लगभग १० लाख लोकक लेल अछि जे कोशीक पूर्वी आ पश्चिमी बान्हक बीच 'कैद' भ' गेल छथि । ऐ लोक सभक लेल बाढ़ि कोनो मौसमी घटना नय, वरन् एकटा स्थायी अभिशाप बनि गेल अछि । बान्हक भीतर

नदीक पेटी ऊँच भ' रहल अछि, जाहि सँ बाढ़िक विभीषिका हर साल बढ़ि रहल अछि ।

नहर आ जल-निकासीक समस्या: पूर्वी आ पश्चिमी कोशी नहर जे 'सिंचाई' लेल बनाओल गेल छल, ओ जल-निकासीक प्राकृतिक मार्ग कें अवरुद्ध कय देलक । ऐ सँ कयो हजार हेक्टेयर जमीन हमेशा लेल दलदल (waterlogging) बनि गेल ।

अमानवीय इंजीनियरिंग (Inhuman Engineering): दिनेश मिश्र अपन पोथीमे तर्क दैत छथि कि कोशी परियोजना 'मानव-निर्मित' आपदा थिक । इंजीनियर सभ कोशीक गाद (Silt) कें सही आकलन नय कयलनि । बान्हक भीतर जखन गाद जमइत अछि, तँ नदी अपन सतह सँ ऊँच भ' जाइत अछि आ एहनमे बान्हक टूटब निश्चित भ' जाइत अछि । लेखकक अनुसार, ई कोनो समाधान नय, वरन् समस्याकें भविष्य लेल आगू बढ़ा देब थिक ।

राजनैतिक स्वार्थ बनाम लोककल्याण: मिश्र जी साफ करैत छथि कि बान्हक निर्णय 'तकनीकी' नय, वरन् 'राजनैतिक' छल । नेता सभ जनता कें ई कहि कय बहला देलनि कि बान्ह सँ बाढ़ि समाप्त भ' जायत, मुदा ओ पुनर्वास आ

विस्थापनक गम्भीर समस्या कें अनदेखी कयलनि । पूना प्रयोगशालाक शोध रिर्पोट कें राजनैतिक दबाव मे मैनिपुलेट कयल गेल छल ।

विस्थापनक अंतहीन चक्र (The Cycle of Displacement): आलोचनाक एकटा पैंघ बिन्दु ई अछि कि सरकार ओहि लोक सभ कें बिर्सि गेल जे बान्हक भीतर रहि रहल छथि । हुनक लेल 'पुनर्वास' मात्र कागज पर छल । कतेको बेर तँ लोक स्वयं त्रस्त भ' कय बान्ह काटि दैत छथि ताकि जलजमाव सँ मुक्ति भेटय ।

विकल्पक अभाव आ भ्रष्टाचार: पोथीमे ई आलोचना सेहो अछि कि 'बाढ़ि नियंत्रण' आ 'राहत' के नाम पर बिहारमे एकटा पैंघ भ्रष्टाचारक सिंडिकेट (इंजीनियर-ठेकेदार-नेता) चलि रहल अछि । जे पैसा बान्हक मरम्मत मे हर साल खर्च होइत अछि, ओ कोनो पैंघ बुनियादी ढाँचा बनेबा मे लगि सकैत छल । लेखक 'बाढ़िक साथ रहब' (Living with Floods) आ स्थानीय ज्ञानक उपयोग करबाक सलाह दैत छथि, जेकरा आधुनिक व्यवस्था पूर्णतः उपेक्षित कय देने अछि ।

'दुइ पाटन के बीच में' मात्र एकटा पोथी नइ, वरन् मिथिलाक लोकक प्रति भेल ऐतिहासिक

अन्याय कें उजागर करय वाला एकटा चीख थिक । दिनेश मिश्र स्पष्ट करैत छथि कि जखन धरि हम प्रकृति (कोशी) सँ लड़बाक कोशिश करब आ ओकरा 'कैद' करब, तखन धरि हम विनाश सँ नय बचि सकब ।

ई पोथी देखाबैत अछि कि कोना ३४३० किमी सँ बेसी बान्ह बनेला कें बावजूद बिहारक बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र बढ़ि गेल । 'बराहक्षेत्र' बांधक लालच देखा कय जनताकें बान्हक भीतर फँसा देल गेल, जकर सजा आइ धरि मिथिलाक लोक भुगति रहल छथि ।

कोसी बेसिनक भू-वैज्ञानिक आ सामाजिक विमर्श: उत्तर बिहारक जल-वैज्ञानिक संरचना आ ओतय के सामाजिक-आर्थिक जीवन मे कोसी नदीक स्थान अत्यंत केंद्रीय आ विवादास्पद रहल अछि। ई संदर्भ मे डॉ. दिनेश कुमार मिश्र द्वारा रचित पोथी 'दुइ पाटन के बीच में: कोसी नदी की कहानी' एक एहन मौलिक कृति अछि जे न केवल नदीक तकनीकी पक्षक विश्लेषण करैत अछि, वरन् ओहि क्षेत्रक सांस्कृतिक आ मानवीय त्रासदी कँ सेहो स्वर दैत अछि । पीपुल्स साइंस इंस्टीट्यूट (PSI) क फेलो डॉ. दिनेश कुमार मिश्र द्वारा लिखल ई पोथीक विमोचन 15 मई 2007 कँ

पटना मे बिहार विधान परिषदक अध्यक्ष प्रो. अरुण कुमार द्वारा कएल गेल छल । ई पोथी कोसी बेसिन मे आबय बला वार्षिक बाढ़िक तकनीकी आ सामाजिक आयाम पर एक जन-केंद्रित दृष्टिकोण प्रस्तुत करबाक प्रयास करैत अछि, जकर मुख्य उद्देश्य राजनेता, नौकरशाह, तकनीकविद आ प्रभावित जनताक बीच एक सार्थक संवाद शुरू करब अछि ।

कोसी नदीक भू-वैज्ञानिक विशिष्टता आ ऐतिहासिक संदर्भ

कोसी नदी, जकरा अक्सर 'बिहारक शोक' कहल जाइत अछि, अपन अनूठा भू-आकृतिक विशेषताक कारणेँ दुनियाक सबसे चुनौतीपूर्ण नदी मे सँ एक मानल जाइत अछि। ई नदी भारी मात्रामे गाद (सिल्ट) लऽ कऽ चलबाक लेल जानल जाइत अछि, जकर परिणामस्वरूप एकर धार मे अत्यंत तीव्र गति सँ परिवर्तन होइत अछि । शोध सँ पता चलैत अछि जे कोसी जेहि मार्ग सँ गुजरैत अछि, ओतय औसतन 1456 मिलीमीटर वर्षा होइत अछि, जे एकर प्रवाह आ गाद प्रबंधन केँ अद्भुत अधिक जटिल बना दैत अछि । ऐतिहासिक रूप सँ, कोसीक प्रवाह एक विस्तृत पंखाक आकारक मैदान मे पसरल छल, जतय ई प्राकृतिक रूप सँ अपन ऊर्जाक विसर्जन करैत

छल आ कृषिक लेल उपजाऊ माटिक प्रसार करैत छल।

डॉ. दिनेश कुमार मिश्र ई नदीक ऐतिहासिक चरित्र कैँ बुझबाक लेल पुराण रिकॉर्डक सहारा लेने छथि। पोथी मे उल्लेख अछि जे 12म शताब्दी मे राजा लक्ष्मण द्वितीय कोसी पर एकटा बांध बनबने छलाह, जकरा 'बीर बांध' कहल जाइत छल, आ एकरा लेल हुनका जनता द्वारा 'बीर' क उपाधि देल गेल छल। ई प्राचीन बान्हक अवशेष आइयो कोसी क्षेत्र मे देखल जा सकैत अछि, जे ई दर्शबैत अछि जे नदी कैँ नियंत्रित करबाक मानवीय प्रयास सदियों पुराण अछि। ओहिना, 1354 मे फिरोज शाह तुगलकक सेनाक बंगाल सँ दिल्ली वापस होयबाक समय कोसीक भयावहताक वर्णन भेटैत अछि, जखन सेना कैँ नदी पार करबाक लेल हाथिक कतार आ रस्सक सहारा लेबय पड़ल छल, कारण पानिक गति एतेक तीव्र छल जे भारी पत्थर सेहो तिनका जकाँ बहल जा रहल छल।

कोसी बेसिनक जल-विज्ञान आ अवसादनक समस्या

कोसीक सबसे पैघ समस्या ओकर अत्यधिक तलछट भार अछि। जखन नदी पहाड़ सँ निकल कऽ मैदानी इलाका मे प्रवेश करैत अछि, तऽ एकर

ढाल कम भऽ जाइत अछि, जाहि सँ एकर वहन क्षमता घटि जाइत अछि आ गाद नदीक तल मे जमा होबय लागैत अछि। ई गादक जमावक कारणेँ नदी अपन रस्ता बदलैत रहैत अछि। आधुनिक तटबंधीय नीति ई प्राकृतिक प्रक्रिया मे बाधा उत्पन्न कएने अछि।

कोसी बेसिनक प्रमुख जल-वैज्ञानिक आंकड़ा	**विवरण**
औसत वार्षिक वर्षा	1456 मिमी
पूर्वी बान्हक लंबाई	125 किमी (बीरपुर सँ कोपड़िया)
पश्चिमी बान्हक लंबाई	126 किमी (नेपालक भारदह सँ सहरसाक घोंघेपुर)
बान्हक बीच फंसल गामक संख्या	380 गाम

बान्हक भीतरक जनसंख्या (2001 जनगणना)	१.४४ लाख
मुख्य भू-वैज्ञानिक चुनौती	अत्यधिक सिल्ट भार आ मार्ग परिवर्तन

दिनेश कुमार मिश्रः एक अभियंता सँ बाढ़ि इतिहासकार धरि क सफरः

डॉ. दिनेश कुमार मिश्रक व्यक्तित्व आ हुनकर काज भारतीय नदी प्रबंधनक क्षेत्र मे एकटा नव प्रतिमान कैं जन्म दैत अछि। आईआईटी खड़गपुर सँ स्नातक आ दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय सँ डॉक्टरेट क उपाधि प्राप्त करय बला मिश्र मूलतः एकटा संरचनात्मक अभियंता छथि, मुदा 1984 सँ ओ अपन जीवन उत्तर बिहारक नदी, बाढ़ि आ सिंचाईक अध्ययन मे समर्पित कऽ देलनि अछि। मिश्रक मुख्य योगदान 'बाढ़ि मुक्ति अभियान' (BMA) क माध्यम सँ रहल अछि, जे 700 सँ अधिक ग्रामीण समूहक एकटा नेटवर्क अछि । ई अभियान समुदाय कैं बाढ़िक संग जिएबाक पारंपरिक आ विकेंद्रीकृत तरीका कैं मोन पाड़बय आ नदी पर हुनकर सांस्कृतिक स्वामित्व कैं पुनः स्थापित करबाक लेल सशक्त बनाबैत अछि ।

मिश्रक तर्क अछि जे बान्ह आ पैंघ बांध पर आधारित वर्तमान बाढ़ि नियंत्रण नीति एकटा 'सिल्ट-लडेन टाइम बम' (गाद सँ भरल समय बम) जकाँ अछि, जे अंततः विनाशकारी साबित होइत अछि ।

ज्ञानक राजनीति आ पारंपरिक दृष्टिकोण: डॉ. मिश्रक शोधक एकटा महत्वपूर्ण हिस्सा 'ज्ञानक राजनीति' पर केंद्रित अछि। ओ बाढ़ि नियंत्रणक दू मुख्य दृष्टिकोणक बीचक अंतर कैं स्पष्ट करैत छथि: आधुनिक हाइड्रोलॉजिकल दृष्टिकोण आ पारंपरिक दृष्टिकोण । आधुनिक दृष्टिकोण नदी कैं केवल एकटा जलमार्ग आ संसाधनक रूप मे देखैत अछि जकरा बांध आ बान्हक माध्यम सँ 'पोषित' कएल जा सकैत अछि । एकर विपरीत, पारंपरिक दृष्टिकोण बाढ़ि कैं जीवन-चक्रक एक हिस्साक रूप मे देखैत अछि आ ओहि अनुरूप प्रतिक्रिया दैत अछि ।

मैथिली संस्कृति आ उत्तर बिहारक ग्रामीण समाज मे नदी कैं 'माय' क रूप मे देखल जाइत अछि, जे न केवल पानि दैत अछि वरन् संस्कृति आ सामूहिक जीवन कैं सेहो आकार दैत अछि । डॉ.

मिश्र बताबैत छथि जे औपनिवेशिक मानसिकता इंजीनियरिंग विज्ञानक माध्यम सँ समुदाय कैं हुनकर नदी सँ अलग कऽ देलक आ लाभक लेल प्रकृति क संग एकटा नियंत्रक आ प्रबंधक क रिश्ता स्थापित कएलक । हुनकर पोथी 'दुइ पाटन के बीच में' ई अलगाव क कहानी कैं बड़ मार्मिक ढंग सँ बयां करैत अछि।

कोसी परियोजना आ बान्हक दुष्चक्र: कोसी परियोजनाक शुरुआत 1954 मे कएल गेल छल, जकर मुख्य उद्देश्य क्षेत्र कैं विनाशकारी बाढ़ि सँ बचाएब आ सिंचाईक सुविधा प्रदान करब छल। ई परियोजनाक तहत कोसीक पूर्वी आ पश्चिमी किनारा पर विशाल बान्हक निर्माण कएल गेल, जे 1959 धरि लगभग पूरा भऽ गेल छल। हालांकि, ई बान्हक निर्माण सँ एकटा नव समस्या जन्म लेलक—380 गामक लगभग 10 लाख लोक ई दूटा देबालक बीच मे हमेशा लेल फँसि गेलाह।

बान्हक भीतरक त्रासदी: 'दुइ पाटन के बीच में' क शीर्षकहि ओहि लोकक स्थिति कैं दर्शाबैत अछि जे पूर्वी आ पश्चिमी बान्हक बीचक चक्की मे पिसा रहल छथि। डॉ. मिश्र लिखैत छथि जे ई गाम 5 जिलाक 13 ब्लॉक मे पसरल अछि । बान्हक भीतर रहय बला लोकक लेल बाढ़ि एकटा वार्षिक

सजा जकाँ अछि। जखन बाढ़ि आबैत अछि, तऽ ओ न केवल हुनकर घर कैं डुबा दैत अछि, वरन् खेतक आकार कैं सेहो बदलि दैत अछि । किसान कैं अपन जमीन पर वापस एला क बाद बालू आ सिल्टक परत कैं साफ करबाक लेल भारी श्रम आ पूंजी लगाबय पड़ैत अछि, जाहि सँ हुनकर आर्थिक स्थिति निरंतर जर्जर होइत जा रहल अछि ।

कोसी क्षेत्र मे ऐतिहासिक मृत्यु दर (1923-1946)	**मौतक संख्या**
मलेरिया	5,10,000
कालाजार	2,10,000
हैजा	60,000
चेचक	3,000
कुल मौत	**7,83,000**

ई आंकड़ा दर्शाबैत अछि जे बान्हक निर्माण सँ पहिने सेहो ई क्षेत्र स्वास्थ्य चुनौती सँ जूझि रहल छल, मुदा बान्ह जलभरावक समस्या कैं अझु

गंभीर बना देलक, जाहि सँ बीमारीक खतरा कम होबय क बदला मे बढ़ि गेल।

सामाजिक प्रभाव आ विस्थापनक चुनौती: बान्हक निर्माण भूगोल कैँ तऽ बदलकहि, संगहि समाज कैँ सेहो तीन श्रेणी मे विभाजित कऽ देलक: बान्हक भीतर फँसल लोक, बान्हक ठीक बाहर रहय बला लोक, आ ओ जे बाढ़िक प्रभाव सँ सम्पूर्ण रूपेँ सुरक्षित मानल जाइत छलाह । डॉ. मिश्रक शोध स्पष्ट करैत अछि जे बान्ह उत्तर बिहार मे 'क्षेत्रीय पर्यावरणीय अन्याय' कैँ जन्म देने अछि, जतय बाढ़िक जोखिम आ ओकर बोझ समाजक सबसे कमजोर वर्ग, विशेष रूप सँ मुसहर आ मल्लाह समुदाय पर असंगत रूप सँ देल गेल अछि।

कृषि आ आजीविकाक संकट: कोसी परियोजना क बाद कृषि गतिविधि मे व्यापक बदलाव आयल अछि। सिल्टक जमावक कारणेँ भूमिक उत्पादकता प्रभावित भेल अछि आ सिंचाई नहरक नेटवर्क सेहो अक्सर गादक समस्या सँ जूझैत रहैत अछि। बान्हक भीतर फँसल किसान अपनहि जमीन पर शरणार्थी जकाँ रहबा लेल मजबूर छथि। एकटा ग्रामीणक शब्द मे, "हम 70 साल सँ आजीवन कारावासक सजा काटि रहल छी" । ई हताशाक

कारणेँ युवकक पँघ मात्रामे पलायन भेल अछि, जाहि सँ गाम मे केवल बुजुर्ग आ बच्चा बाचल छथि।

लिंग आ समुदाय आधारित संवेदनशीलता: बाढ़िक प्रभाव लिंगक आधार पर सेहो अलग-अलग होइत अछि। डॉ. मिश्र आ आन शोधकर्ता बताबैत छथि जे बाढ़िक समय महिला सबसे अधिक प्रभावित होइत छथि कारण हुनका पर परिवारक देखरेख, भोजनक जुगाड़ आ स्वास्थ्य संबंधी चुनौतीक सामना करबाक जिम्मेदारी होइत छनि । मुसहर समुदाय जकाँ कात-करोटक बस्ती मे शिक्षा आ सुरक्षित पेयजलक कमी बाढ़िक समय हुनकर स्थिति कैं अझु दयनीय बना दैत अछि।

मैथिली साहित्य आ सांस्कृतिक पहचान मे कोसी: *डॉ. दिनेश कुमार मिश्र यद्यपि अपन कतेको रचना हिंदी आ अंग्रेजी मे लिखने छथि, मुदा हुनकर संवेदना सम्पूर्ण रूपेँ सँ मिथिला आ मैथिली भाषा सँ जुड़ल अछि। 'दुइ पाटन के बीच मैं' क सार मैथिली समाजक ओहि पीड़ा कैं व्यक्त करब अछि जे कोसीक कारणेँ उत्पन्न भेल अछि। मिश्र कैं मिथिलाक सब नदीक 'जीवनी' लिखबाक श्रेय देल जाइत अछि, जाहि मे कमला, बागमती, महानंदा आ भूति बलान शामिल अछि।*

विदेह आ मैथिली बौद्धिक विमर्श: मैथिली साहित्य मे कोसीक कहानी केवल एकटा भौगोलिक आपदा नहि अछि, वरन् ई पहचान आ अस्तित्वक प्रश्न अछि। 'विदेह' जकाँ साहित्यिक पत्रिका आ अभिलेखागार मे मिश्रक काज कैँ प्रमुखता सँ स्थान देल गेल अछि, जे ई दर्शाबैत अछि जे हुनकर शोध अकादमिक जगतक संगहि लोक साहित्यक सेहो हिस्सा बनि चुकल अछि। हुनकर कृति कैँ अक्सर ओहि नौकरशाह आ राजनेताक विरुद्ध एकटा सशक्त हस्तक्षेप क रूप मे देखल जाइत अछि जे कोसीक समस्या कैँ केवल एकटा तकनीकी समस्या मानैत छथि।बाढ़ि नियंत्रणक तकनीकी विफलता आ 2008 क त्रासदी

अगस्त 2008 मे नेपालक कुसहा मे कोसी बान्हक टुटब आधुनिक बाढ़ि नियंत्रण इंजीनियरिंगक विफलताक सबसे पैघ उदाहरण मानल जाइत अछि। डॉ. मिश्र कतेको साल सँ चेतावनी दऽ रहल छलाह जे गादक कारणेँ कोसीक तल निरंतर ऊँच भऽ रहल अछि आ बान्ह एकरा बेसी समय धरि नहि रोकि पाओत। 2008 क घटना ई सिद्ध कऽ देलक जे प्रस्तावित कोसी हाई डैम जकाँ पैघ ढाँचा सेहो गादक समस्याक कारणेँ दीर्घकालिक समाधान नहि भऽ सकैत अछि।

विकल्पक तलाश: 'बाढ़िक संग जिएब': डॉ. मिश्र केवल आलोचना नहि करैत छथि, वरन् समाधान सेहो प्रस्तुत करैत छथि। ओ पारंपरिक ज्ञान आ स्थानीय पद्धतिक पुनरुद्धार क वकालत करैत छथि। हुनका द्वारा सुझाओल गेल किछु उपाय मे शामिल अछि:

घट आ चाचरक पुनरुद्धार: *छोट मौसमी बान्ह आ नहरक उपयोग कऽ कऽ अतिरिक्त पानि कैं सुरक्षित रूप सँ निकालब ।*

अनुकूलित कृषि: *बाढ़ि क बाद खेत मे जमा गाद कैं उर्वरक क रूप मे उपयोग करब आ एहन फसलक चुनाव करब जे जलभराव कैं सहि सकय ।*

सामुदायिक नेतृत्व: *बाढ़ि प्रबंधनक जिम्मेदारी केंद्रीय नौकरशाही क बदला मे स्थानीय ग्राम सभा आ समुदाय कैं देल जाएब चाही।*

निष्कर्ष आ भविष्यक बाट: *दिनेश कुमार मिश्रक पोथी 'दुइ पाटन के बीच में' केवल कोसीक कहानी नहि अछि, वरन् ई आधुनिक विकास मॉडलक परिणामक एकटा गंभीर विश्लेषण अछि। ई पोथी हमरा सिखाबैत अछि जे प्रकृतिक संग संघर्ष क बदला मे ओकर संग समन्वय ही स्थायी विकासक*

एकमात्र बाट अछि। कोसी बेसिनक लाखो लोकक लेल 'दुइ पाटन' क ई चक्की तखनहि रुक सकैत अछि जखन नीति निर्माता आ इंजीनियर नदीक स्वायत्तताक सम्मान करब सिखता आ प्रभावित समुदाय कैँ निर्णय लेबाक प्रक्रिया मे भागीदार बनता ।

कोसीक भविष्य बान्ह कैँ ऊँच करबा मे नहि, वरन् ओहि लाखो लोक कैँ न्याय देबा मे अछि जे पिछला सात दशक सँ ई ढाँचाक भीतर अपन पहचान आ आजीविका खोय रहल छथि। डॉ. मिश्रक काज ई दिशा मे एकटा मशाल जकाँ अछि, जे हमरा नदी आ ओकर लोकक बीचक ओहि अटूट संबंधक मोन पाड़बय अछि जकरा तकनीक आ राजनीति बिसरा देने अछि ।

न घाट न घर Refugees of the Kosi Embankments (२००८)

"Refugees of the Kosi Embankments" "न घाट न घर"

कोसीक त्रासदी आ विस्थापन: कोसी नदी पर बनाओल गेल बान्हक कारणे "बान्हक भीतर" फँसि गेल ३८० गामक लगभग ८ लाख लोकक अमानवीय स्थिति आ हुनक अंतहीन संघर्षक दस्तावेज अछि।

कोसी नदी आ बान्हक निर्माण (१९५५): कोसी अपन चंचलता आ रस्ता बदलबाक लेल जानल जाइत अछि। १९५३ क भीषण बाढ़ि क बाद, सरकार एकरा नियंत्रित करबाक लेल बान्ह (Embankments) बनेबाक निर्णय लेलक।

जखन बान्ह बनल, तँ ई मानल गेल छल जे ऐ सँ बाहरक इलाका सुरक्षित भऽ जतय, मुदा बान्हक "भीतर" फँसि गेल लोकक भविष्य पर कोनो गम्भीर विचार नै कएल गेल छल।

बान्हक भीतरक दुनिया: कोसीक दुनू बान्हक बीचक क्षेत्र मे रहय बला लोकक लेल बाढ़ि कोनो "प्राकृतिक आपदा" नै वरन् एकटा "सालाना घटना" (Annual feature) बनि गेल अछि।

हर साल बरसात मे हुनक घर, खेत आ मवेशी कोसीक पानि मे डूबि जाइत अछि। ओ सभ अपनहि देश मे "शरणार्थी" जेकाँ जीवन जिएय लेल मजबूर छथि।

पुनर्वासिक विफलता: १९५३ क मूल योजना मे ऐ लोकक पुनर्वास (Rehabilitation) क कोनो चर्चा नैं छल। १९५६ मे जखन काम शुरू भेल, तखन ऐ पर गप्प भेल।

सरकार पुनर्वासिक लेल जमीन आ घरक वादा तँ केलक, मुदा हकीकत मे कतेको लोककें जमीन नैं मिलल, आ जतय मिलल ओतय पानि, सड़क आ स्वास्थ्यक कोनो सुबिधा नैं छल। ऐ कारणे बहुत रास लोक वापस बान्हक भीतर "मौत" संग जिअय लेल चलि गेलाह।

अधिकारक हनन आ उपेक्षा: लेखक दिनेश कुमार मिश्र कहैत छथि जे ऐ लोक कें "विकासक बलिदानी" कहल गेल, मुदा समाज आ सरकार हुनका सँ मुँह मोड़ि लेलक।

बान्हक भीतर शिक्षा, अस्पताल आ रोजगारक स्थिति एकदम शून्य अछि। हुनक आर्थिक रीढ़ (खेती) चौपट भऽ गेल अछि।

समाधानक बाट: पुस्तिका मे ई प्रश्न उठौल गेल अछि जे की बान्ह वास्तव मे बाढ़ि रोकलक? हकीकत ई अछि जे बान्हक बाहर सेहो पानि जमा होइत अछि (Water-logging) आ भीतरक लोक तँ सम्पूर्ण रूपेँ तबाह छथि।

लेखक "बाढ़ि मुक्ति अभियान" क माध्यम सँ एकटा खुला बहस आ लोकक अधिकारक वापसीक माँग करैत छथि।

निष्कर्ष: ई पुस्तिका कोसी क्षेत्रक ओहि "अदृश्य आबादी" क व्यथा अछि जेकरा आधुनिक इंजीनियरिंग आ गलत सरकारी नीतिक कारणे अपनहि माटि पर बेघर भऽ कऽ रहय पड़ि रहल अछि। ई "विकासक ओहि मॉडल" पर पैघ प्रश्नचिन्ह अछि जे कतेको लोककेँ बर्बाद कऽ कऽ किछु लोकक सुरक्षाक दाबा करैत अछि।

बागमती की सद्गति (२०१०)

बागमती की सद्गति!

बागमती कथा: बागमतीक पौराणिक एवं सांस्कृतिक महत्व: उद्गम: बागमती नदीक उद्गम नेपालमे काठमांडू सँ १६ किमी उत्तर-पूर्वमे शिवपुरी पर्वतमाला सँ लगभग २८०० मीटरक उँचाइ पर होइत अछि।

पौराणिक कथा: स्कंदपुराणक अनुसार, ऐ नदीक उत्पत्ति भगवान शिवक अट्टहास सँ भेल छल। एकरा 'वाग्वती' (वाणीक नदी) सेहो कहल जाइत अछि, जे कालान्तरमे 'बागमती' बनि गेल।

पापमुक्ति केर केन्द्र: बागमती आ विष्णुमतीक संगम कैँ अत्यंत पवित्र मानल गेल अछि। मान्यता अछि जे एतय गोकर्णेश्वर तीर्थ पर रावण महादेव केर आराधना केने छल। वराहपुराण एकरा गंगा (भागीरथी) सँ सेहो सय गुणा अधिक पवित्र मानैत अछि।

उर्वरताक प्रतीक: एक पौराणिक कथाक अनुसार, बागमतीक जलमे एतेक उर्वरक शक्ति अछि जे ऐमे स्नान कएला क बाद एकटा ब्राह्मणक लाठी सेहो अंकुरित भ' गेल छल।

बागमतीक भौगोलिक मार्ग (बिहारमे): बागमती बिहारक सीतामढ़ी जिलाक ढेंग (शोरवतिया गाम) सँ भारतमे प्रवेश करैत अछि।

बिहारमे एकर कुल लम्बाई ३९४ किलोमीटर अछि आ ई अंततः खगड़ियाक लग कोसी नदीमे मिल जाइत अछि।

लेखक एकरा तीन खंडमे बाँटने छथि: उत्तर बागमती (ढेंग सँ खोरीपाकर), मध्य बागमती (खोरीपाकर सँ कनौजर घाट) आ दक्षिण-पूर्व बागमती (हायाघाट सँ कोसी संगम धरि)।

बदलैत धारा (River Shifting): बागमती अपन चंचलता आ मार्ग बदलबाक लेल जानल जाइत अछि। जेम्स रेनेल (१७८०) आ विलियम हंटर (१८७७) क सर्वेक्षणक अनुसार, एकर प्रवाह मार्गमे ऐतिहासिक बदलाव भेल अछि।

सिल्ट (गाद) क समस्या: नदी अपन संग भारी मात्रामे बालू आ माटि आनैत अछि। ढेंग आ हायाघाट क बीच हर साल लगभग बीस लाख टन गाद जमा होइत अछि, जे नदीक सतह कैँ उँच क' दैत अछि आ एकरा मार्ग बदलबा लेल मजबूर करैत अछि।

सहायक नदी आ अधवारा समूह: बागमतीक मुख्य

सहायक नदी लालबकेया अछि, जे खोरीपाकरमे ऐमे मिलैत अछि।

लखनदेई: सीतामढ़ी शहरक बीच सँ बहय वाली ई नदी सांस्कृतिक रूप सँ महत्वपूर्ण अछि, किएक तँ एकरा जानकी (सीता) क जन्मस्थली सँ जोड़ल जाइत अछि।

अधवारा समूह: ई छोट-छोट नदियक (झीम, खिरोई, रातो, धौंस आदि) एकटा जाल अछि, जे अंततः हायाघाट क लग बागमतीमे समाहित भ' जाइत अछि।

बाढ़िक पारंपरिक दृष्टिकोण: मिथिलाक संस्कृतिमे बाढ़ि कैँ हरदम 'विपदा' नहि मानल जाइत छल। लोक एकरा 'बोह' (सामान्य बाढ़ि), 'हुम्मा' आ 'साह' (भीषण बाढ़ि) क रूपमे वर्गीकृत करैत छलाह।

बाढ़ि अपन संग नव उपजाऊ माटि आनैत छल, जाहि सँ रबीक फसल बिना खादक ही 'बम्पर' होइत छल। लेखकक अनुसार, अंग्रेज सभ व्यापारिक लाभक लेल बांध (बान्ह) क निर्माण शुरू कएलनि, जे बाढ़िक प्राकृतिक चक्र कैँ 'त्रासदी' मे बदलि देलक।

बाढ़ि रोकबाक कथाः ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यः बागमती एकटा चंचल नदी अछि जे सदिखन अपन रस्ता बदलैत रहल अछि। १८वीं आ १९वीं शताब्दीक अंग्रेज अधिकारी सभक रिपोर्टक हवाला दैत लेखक कहैत छथि जे बागमतीक बाढ़ि कखनो-कखनो वरदान छल, कियाक तँ ई 'गाद' (सिल्ट) क माध्यम सँ खेतकें उपजाऊ बनबैत छल।

रेलवे आ सड़कक निर्माण सँ उपजल समस्याः १९वीं शताब्दीक अंतमे जखन बिहारमे रेलवे लाइनक विस्तार भेल, तँ ई नदीक प्राकृतिक बहाव मे बाधा बनल। रेलवेक ऊँच बान्ह आ कम पुलक कारणे पानि जमय लागल, जाहि सँ बाढ़िक स्वरूप आर भयानक भऽ गेल।

बान्ह बनाम गाद (The Embankment Debate): अंग्रेज इंजीनियर सभक बीच पैघ बहस छल जे बान्ह बनाओल जाय कि नैं। १८९७ क 'कलकत्ता सम्मेलन' मे ई तय भेल छल जे बान्ह बनला सँ नदीक पेटी ऊँच भऽ जाइत अछि आ भविष्यमे ई आर पैघ खतरा बनि जाइत अछि।

मुदा, व्यापारिक स्वार्थ आ प्रशासनिक सुरक्षा लेल धीरे-धीरे बान्हक वकालत शुरू भऽ गेल।

आजादीक बादक कोसी मॉडलक नकल: *आजादीक बाद जखन कोसी पर बान्ह बनल, तँ बागमती पर सेहो ओहिना योजना बनेबाक दबाव बढ़ल। १९५० क दशकमे बागमती पर बान्हक काज टुकड़ा-टुकड़ा मे शुरू भेल।*

तकनीकी विफलता आ बदलैत योजना: *बागमतीक लेल कतेको योजना बनल आ बिगड़ल। कहियो कहल गेल जे एकरा 'अधवारा' नदी सभ सँ अलग कऽ देल जाय, तँ कहियो 'बराज' बनेबाक गप्प भेल। मुदा कोनो ठोस मास्टर प्लान तैयार नैं भऽ सकल।*

१९७० क दशकमे बागमती नियंत्रणक लेल पैंघ पैंघ बजट पास भेल, मुदा ई 'भ्रष्टाचार' आ 'गलत इंजीनियरिंग'क भेंट चढ़ि गेल।

बागमती परियोजना - एकटा समीक्षा: *१९५३-५४ मे कोसीक विनाशलीला देखला क बाद सरकारक ध्यान बागमती दिस गेल। शुरू मे बागमती पर मात्र 'छोट-छोट' योजनाक बात भेल छल, मुदा बाद मे एकरा एकटा 'विशाल प्रोजेक्ट' बना देल गेल।*

योजनाक मुख्य उद्देश्य छल— सीतामढी, मुजफ्फरपुर, शिवहर आ दरभंगा जिलाकें बाढ़ि सँ सुरक्षा देब आ सिंचाईक सुबिधा पहुँचाएब।

बान्हक निर्माण (Embankment Construction): बागमती पर बान्हक निर्माण कतेको चरण मे भेल। ढेंग सँ लऽ कऽ खोरीपाकर धरि आ फेर नीचाँक इलाका मे बान्ह बनाओल गेल।

तकनीकी चूक: लेखकक अनुसार, बान्हक रस्ता तय करय मे स्थानीय भूगोलक उपेक्षा कएल गेल। नदीक चंचल स्वभावक बदला इंजीनियरिंग कें बेसी प्राथमिकता देल गेल।

लालबकेया आ बागमतीक संगम: बागमती मे ओकर सहायक नदी 'लालबकेया' जतय मिलैत अछि, ओतय बान्हक डिजाइन मे पैंघ गड़बड़ी भेल। ऐ कारणे ओहि इलाका मे बाढ़िक खतरा कम होबाक बदला आर बढ़ि गेल।

अधवारा समूहक उपेक्षा: बागमतीक संग-संग अधवारा समूहक कतेको छोट-छोट नदी (जेना- लखनदेई, रातो, खिरोई) बहैत अछि। सरकारी योजना मे ऐ नदी सभक आपसी तालमेल कें

नजरअंदाज कऽ देल गेल, जाहि सँ पानि निकासीक प्राकृतिक रस्ता बंद भऽ गेल।

विस्थापन आ पुनर्वासक समस्या: कोसीक जेकाँ बागमती मे सेहो बान्हक बीच मे कतेको गाम फँसि गेल। लोकक जमीन अधिग्रहण तँ कएल गेल, मुदा हुनका सभक पुनर्वास (Rehabilitation) लेल कोनो ठोस नीति नै अपनाओल गेल। लोक अपनहि जमीन पर 'अवैध' भऽ कऽ रहय लेल मजबूर भऽ गेलाह।

भ्रष्टाचार आ ठेकेदारी प्रथा: अध्याय मे ई स्पष्ट कएल गेल अछि जे बागमती परियोजना 'भ्रष्टाचार' क एकटा पैघ अड्डा बनि गेल। बान्हक मरम्मती आ निर्माण मे करोड़ों टाका खर्च कएल गेल, मुदा हर साल बाढ़िक समय बान्हक टूटना जारी रहल।

बागमतीक बान्ह - एकटा सपना: बागमती परियोजनाक विस्तार: १९७० मे बागमती नियंत्रणक लेल एकटा पैघ मास्टर प्लान तैयार कएल गेल। एकर अंतर्गत ढेंग सँ लऽ कऽ हायाघाट धरि नदीक दुनू कात ऊँच बान्ह बनेबाक लक्ष्य छल।

सरकारक दावा छल जे ऐ सँ मुजफ्फरपुर आ सीतामढ़ी जिलाक लाखो एकड़ जमीन बाढ़ि सँ सुरक्षित भऽ जतय।

अपूर्ण निर्माण आ 'गैप्स' (Gaps): बान्हक निर्माण कखनो एक साथ आ व्यवस्थित नैं भेल। बीच-बीच मे कतेको किलोमीटर धरि बान्ह 'छूटल' (Gaps) रहि गेल।

ऐ 'गैप्स' क कारणे जखन बाढ़ि आबैत छल, तँ पानि ओहि रस्ता सँ एहन वेग सँ बाहर निकलैत छल जे आसपासक गामकें सम्पूर्ण रूपेँ तहस-नहस कऽ दइत छल।

स्थानीय जनताक प्रतिरोध: बान्हक निर्माण सँ जिनक खेत आ घर 'भीतर' (नदी कात) पड़ि रहल छल, ओ सभ एकर कड़ा विरोध केलनि। कतेको ठाम तँ पुलिस आ जनताक बीच हिंसक झड़प सेहो भेल।

लोकक तर्क छल जे बान्ह सँ हुनकर जीवन आर बेसी असुरक्षित भऽ गेल अछि, कियाक तँ आब बाढ़िक पानि बेसी समय धरि हुनक गाम मे जमा रहैत अछि।

'रिटायर्ड' आ 'सरप्लस' बान्ह: इंजीनियरिंग मे भेल गलती कें सुधारेबाक लेल प्रशासन पुरान

बान्हक पाँछा एकटा दोसर 'रिटायर्ड बान्ह' बनयबाक रस्ता अपनालक। एकरा सँ जमीनक बर्बादी आर बढ़ि गेल आ किसानक स्थिति आर खराब भऽ गेल।

भ्रष्टाचारक 'बाढ़ि': लेखकक अनुसार, बागमती बान्हक निर्माण आ मरम्मती इंजीनियर आ ठेकेदारक लेल 'सोनाक अंडा दै बला मुर्गी' बनि गेल। हर साल बाढ़ि मे बान्हक कमजोर हिस्सा कटि जाइत छल आ ओकर नाम पर करोड़ों टाका कें बंदरबाँट कएल जाइत छल।

नहर आ सिंचाई - एकटा मृगतृष्णा: बागमती बराज आ नहरक सपना: बागमती योजनाक एकटा पैघ हिस्सा 'सिंचाई' छल। एकर लेल सीतामढ़ी जिलाक **ढेंग** मे एकटा बराज बनेबाक आ ओहि सँ पूर्वी आ पश्चिमी नहर निकालबाक योजना बनाओल गेल छल।

सरकारक दावा छल जे ऐ सँ सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर आ शिवहर जिलाक लाखो हेक्टेयर जमीन कैं बारहमास पानि मिलत आ उपज बढ़ि जतय।

गाद (सिल्ट) क गम्भीर समस्या: कोसीक जेकाँ बागमती मे सेहो 'सिल्ट' (बालू आ माटि) क मात्रा

बहुत बेसी अछि। जखन नहर मे पानि छोड़ल गेल, तँ बालू नहरक पेटी मे जमा होबय लागल।

नहरक गहराई कम भेला सँ पानि खेत धरि पहुँचब मुश्किल भऽ गेल। आब स्थिति ई अछि जे नहर मे पानि तँ अछि, मुदा ओ किसानक कोनो कामक नैं अछि।

जल-जमाव (Water-logging) आ दलदलः नहरक जाल बिछला सँ क्षेत्रक 'प्राकृतिक जल निकासी' (Natural Drainage) सम्पूर्ण रूपेँ चौपट भऽ गेल। बरखाक पानि जे पहिले नदी मे चलि जाइत छल, ओ आब नहरक बान्हक कारणे खेत मे फँसि जाइत अछि।

हजारो एकड़ उपजाऊ जमीन 'चौर' आ दलदल मे बदलि गेल, जाहि मे खेती करब असंभव भऽ गेल अछि।

'रेह' (Salinity) क समस्याः लगातार जल-जमावक कारणे जमीनक ऊपरी सतह पर 'रेह' (क्षारीयता) जमा होबय लागल, जाहि सँ उपजाऊ जमीन बंजर होबय लागल। जतय पहिले 'सोना' उपजैत छल, ओतय आब घास उगब सेहो मुश्किल भऽ गेल अछि।

प्रशासनिक भ्रष्टाचार आ उपेक्षा: *नहरक सफाई आ गेटक मरम्मतीक नाम पर हर साल करोड़ों टाका खर्च कएल जाइत अछि, मुदा जमीन पर स्थिति बदतर अछि। कतेको ठाम तँ नहरक ढाँचा टूटल-फूटल अछि आ पानि गामक गाम कें डुबा दइत अछि।*

बान्हक भीतरक दुनिया: बान्हक बीचक 'कैदी' आबादी: *बागमतीक दुनू कात बान्ह बनला सँ ओहि दुनू बान्हक बीचमे कतेको गाम फँसि गेल। लेखकक अनुसार, ऐ लोकक लेल बाढ़ि कोनो प्राकृतिक आपदा नैं, वरन् एकटा 'स्थाई कैद' भऽ गेल अछि।*

जखन नदी मे पानि आबैत अछि, तँ ऐ गामक लोक अपन घर-दुआरि छोड़ि कऽ बान्ह पर शरण लेइत छथि।

विस्थापन आ पुनर्वासक धोखा: *सरकार वादा केने छल जे बान्हक भीतरक लोककें बाहर सुरक्षित स्थान पर बसाओल जतय आ मुआवजा देल जतय।*

वास्तविकता ई अछि जे पुनर्वास (Rehabilitation) कें नाम पर भ्रष्टाचार भेल। कतेको लोककें तँ जमीन तक नैं मिलल, आ जतय

मिलल ओतय बुनियादी सुबिधा जेना पानि, सड़क, आ स्कूलक घोर अभाव छल।

शिक्षा आ स्वास्थ्यक बदहाली: बान्हक भीतरक गाम मे स्कूलक भवन या तँ बाढ़ि मे बहि जाइत अछि या ओतय शिक्षक नैं पहुँचैत छथि।

बीमार पड़ला पर अस्पताल पहुँचाबय लेल मात्र 'नाव' एकमात्र सहारा रहैत अछि। कतेको बेर अस्पताल पहुँचबा सँ पहिने रोगीक जान चलि जाइत अछि।

सामाजिक आ आर्थिक बहिष्कार: बान्हक भीतरक लोककें प्रशासन 'उपेक्षित' मानि लेलक अछि। हुनक खेती पूर्णतः अनिश्चित अछि।

बान्हक बाहरक लोक आ भीतरक लोकक बीच अक्सर संघर्ष होइत अछि, कियाक तँ बाहरक लोककें डर रहैत अछि जे भीतरक लोक अपन सुरक्षा लेल बान्ह न काटि दय।

प्रशासनिक संवेदनहीनता: सरकारी अधिकारी मात्र बाढ़िक समय मे 'राहत' दऽ कऽ अपन कर्तव्य इति मानि लेइत छथि। गामक स्थाई विकास लेल कोनो ठोस नीति नैं अछि।

बाढ़ि, राजनीति आ प्रशासन: बाढ़ि आ चुनावक नाता: *लेखकक अनुसार, उत्तर बिहारमे बाढ़ि एकटा 'राजनैतिक अवसर' बनि गेल अछि। नेता सभ बाढ़िक समय मे हवाई सर्वे करैत छथि आ पैंघ-पैंघ वादा करैत छथि, मुदा बाढ़ि खतम भेला क बाद सब किछु बिसरि जाइत छथि।*

बाढ़िक 'राहत' बाँटब वोट बैंक बनयबाक एकटा जरिया बनि गेल अछि।

राहतक अर्थशास्त्र (Economy of Relief): *'राहत' कें एकटा पैंघ उद्योग (Industry) क रूप मे देखायल गेल अछि। जखन बाढ़ि आबैत अछि, तँ अनाज, चूड़ा-गुड़, आ प्लास्टिक सीट (Polythene) क नाम पर करोड़ों टाका सरकारी खजाना सँ निकलैत अछि जकर एकटा पैंघ हिस्सा ठेकेदार, बिचौलिया आ भ्रष्ट अधिकारीक पॉकेट मे जाइत अछि। जनता धरि मात्र 'टोकन' मात्र पहुँचैत अछि।*

प्रशासनिक लापरवाही: *बाढ़ि सँ पहिने 'बाढ़ि पूर्व तैयारी' (Pre-flood preparedness) मात्र कागज पर होइत अछि। बान्हक मरम्मती मे घटिया सामग्रीक प्रयोग कएल जाइत अछि, जाहि सँ पहिल बाढ़ि मे बान्ह टूटि जाइत अछि।*

जखन बान्ह टूटैत अछि, तँ प्रशासन एकरा 'दैवीय आपदा' कहि कऽ अपन जिम्मेदारी सँ बचि जाइत अछि।

सरकारी आँकड़ाक खेल: सरकारी आँकड़ा मे नुकसान कें कम कऽ कऽ देखायल जाइत अछि ताकि मुआवजा कम देबय पड़य। दोसर दिस, राहत सामग्रीक खर्च कें बढ़ा-चढ़ा कऽ देखायल जाइत अछि।

जनताक 'आश्रित' बनायब: लेखकक तर्क अछि जे सरकार लोककें आत्मनिर्भर बनेबाक (जेना- ड्रेनेज ठीक करब, खेतीक नव तकनीक) बदला 'राहत' पर आश्रित बना देने अछि। ऐ सँ लोकक स्वाभिमान खतम भऽ रहल अछि आ ओ सभ हर साल सरकारी मददक बाट जोहैत छथि।

बान्ह आ लोकक प्रतिरोध: बान्हक खिलाफ जन-आक्रोश: जखन लोक देखलनि जे बान्ह बनला सँ हुनक खेत आ गाम आर बेसी डूबय लागल अछि, तँ ओ सभ संगठित भऽ कऽ एकर विरोध शुरू केलनि।

बागमतीक कतेको क्षेत्रमे लोक 'बान्ह विरोधी संघर्ष समिति' बनौलनि। हुनक कहनाइ छल जे बान्ह

नदीकें नैं, वरन् लोकक 'विकास' कें बांधि देने अछि।

बान्ह काटबाक घटना: एहन कतेको घटना अछि जतय बाढ़िक समय मे जखन गाम डूबय लागल, तँ लोक विवश भऽ कऽ अपन रक्षा लेल बान्ह कें काटि देलनि।

ई 'कानूनी' रूप सँ अपराध मानल गेल, मुदा लोकक लेल ई अपन अस्तित्व बचेबाक संघर्ष छल। ऐ सँ प्रशासन आ जनताक बीच अविश्वासक खाई आर चौड़ी भऽ गेल।

'मुजफ्फरपुर सँ सीतामढ़ी' धरि आन्दोलन: १९७० आ ८० क दशक मे बागमती क्षेत्र मे पैंघ-पैंघ जन-सभा भेल। लोक माँग केलनि जे बान्हक पाँछा फँसल पानीक निकासी लेल बेसी 'स्लूस गेट' (Sluice Gates) आ पुल बनाओल जाय।

राजनैतिक उपेक्षा आ दमन: सरकार आ प्रशासन लोकक गप्प सुनबाक बदला आन्दोलन कें 'कानून-व्यवस्था' क समस्या मानि कऽ दबाबय क प्रयास केलक।

नेता सभ वोट लेबा काल लोकक संग खड़ा होइत छलाह, मुदा नीति बनयबा काल ओ सभ इंजीनियर आ ठेकेदारक पक्ष लेइत छलाह।

तकनीकी विकल्पक माँग: लोक आ स्थानीय कार्यकर्ता सभ 'बौआरी बाँध' (Ring Bunds) आ प्राकृतिक जल-निकासी कें बहाल करबाक माँग केलनि। ओ सभ 'पैंघ बान्ह' क बदला 'छोट-छोट' आ स्थानीय समाधानक वकालत केलनि।

नदीक सद्गति कतय? बागमतीक वर्तमान स्थिति: लेखक कहैत छथि जे बागमती आब एकटा स्वतंत्र नदी नैं रहि गेल अछि। एकरा बान्ह आ बराजक माध्यम सँ 'कैद' कऽ देल गेल अछि। जतय पहिले बाढ़िक पानि खेतकें उपजाऊ बनबैत छल, ओतय आब बान्हक कारणे 'जल-जमाव' आ 'बालू' (सिल्ट) क समस्या घर कऽ लेने अछि।

'हाई डैम' क मृगतृष्णा: नेपालक 'तराई' क्षेत्र मे पैंघ छहर (High Dam) बनेबाक जे गप्प चलि रहल अछि, लेखक ओकरा प्रति सावधान करैत छथि। हुनक तर्क अछि जे हिमालयक भू-गर्भीय स्थिति (Earthquake zone) आ भारी सिल्ट (Siltation) क कारणे पैंघ छहर सुरक्षित नैं अछि।

ई छहर बाढ़ि रोकबाक बदला भविष्यमे आर पैघ तबाहीक कारण बनि सकैत अछि।

स्थानीय ज्ञान आ तकनीकक सामंजस्यः 'पारम्परिक जल प्रबंधन' पर जोर देल गेल अछि। मिथिलाक लोक सदिखन सँ 'चौर', 'पोखरि' आ 'पैन' क माध्यम सँ पानीक प्रबंधन करैत छलाह।

आधुनिक इंजीनियरिंग कें ऐ पारम्परिक ज्ञान सँ सीखय पड़त। नदीकें बांधबाक बदला ओकर 'प्राकृतिक बहाव' (Free flow) कें बहाल करब आवश्यक अछि।

विकासक नव मॉडलः लेखकक अनुसार, 'सद्गति' तखनहि संभव अछि जखन हम नदीक अधिकार कें बुझब।

बान्हक बीच मे फँसल लोकक पुनर्वास, जल-निकासी (Drainage) मे सुधार, आ बाढ़ि सँ लड़बाक बदला ओकर संग 'जीबय' (Living with floods) क कला विकसित करय पड़त।

अन्तिम आह्वानः लेखक कहैत छथि जे बागमतीक मुक्ति तखनहि संभव अछि जखन सरकार, इंजीनियर आ जनता मिलि कऽ नदीक प्राकृतिक

स्वभावक सम्मान करब। जँ हम नदीकेँ मारब तँ नदी सेहो हमर सभ्यता केँ मारि देत।

उत्तर बिहारक भौगोलिक आर सांस्कृतिक संरचना मे धारक स्थान सर्वोपरि अछि। ऐ क्षेत्रक जीवन, कृषि, उत्सव आर त्रासदी—सभ किछु नदीक चरूकात घुमैत अछि। दिनेश कुमार मिश्रक पोथी 'बागमती की सद्गति!' मात्र एकटा नदीक इतिहास नहि, वरन् आधुनिक विकासक ओइ क्रूर मॉडलक दस्तावेज थिक जे जनमानसक पारंपरिक ज्ञान केँ छोड़ि 'तकनीकी समाधान' क नाम पर विनाशक बीया बाउग केने अछि। ई पोथी बागमती नदीक पौराणिक पवित्रता सँ लऽ कऽ ओकर वर्तमान 'सद्गति' (जे व्यंग्यात्मक अछि) धरिक यात्रा केँ विस्तार सँ देखबैत अछि।

पोथीक प्रारंभ मे लेखक बागमतीक ओइ स्वरूपक वर्णन करैत छथि जे लोकमानस मे रचल-बसल अछि। नेपालक काठमांडू घाटी सँ निकलैत ई नदी पशुपतिनाथक चरण पखारैत बिहारक मैदान मे प्रवेश करैत अछि। मिथिलाक संस्कृति मे बागमती केँ गंगा सँ कम महत्व नहि देल गेल अछि। लेखक बताने छथि जे पहिने बागमती एकटा 'मुक्त' नदी छल, जकर अपन कोनो स्थायी रस्ता नहि छल। ओ कहियो 'अधवारा' समूहक धारक संग बहैत

छल त' कहियो अपन धारा बदलैत नया चौर (मैदान) बनबैत छल।

पोथीक एकटा पैंघ हिस्सा बागमती पर बनाओल गेल बान्हक इतिहास पर केंद्रित अछि। लेखकक अनुसार, बान्हक विचार अंग्रेजक समय मे शुरू भेल छल, मुदा ओ लोकनि सेहो बिहारक जमीन कें देखैत एकरा खतरनाक मानैत छल। आजादीक बाद, भारत सरकार द्वारा 'बाढ़ि नियंत्रण' क नाम पर नदीक दुनू कात सीमेंट आर माटिक देबाल (बान्ह) खड़ा कऽ देल गेल। लेखक तर्क दैत छथि जे: बान्ह बनला सँ नदीक चौड़ाई सीमित भऽ गेल। नदी द्वारा आनल गेल 'गाद' जे पहिने खेत मे पसरि कऽ ओकरा उर्वर बनबैत छल, आब नदीक पेटी मे जमा होबय लागल। परिणामस्वरूप नदीक सतह जमीन सँ ऊपर उठि गेल, जाहि सँ बाढ़िक खतरा पहिने सँ कय गुना बढ़ि गेल।

पोथी मे बान्हक बीच मे फंसल गाम सभक स्थिति कें लेखक 'जिंदा नर्क' क संज्ञा दैत छथि। बागमती परियोजनाक अंतर्गत कतेको एहन गाँव अछि जे बान्हक घेरा मे आबि गेल अछि। बरसात मे जखन नदी मे उफान अबैत अछि, त' ई लोकनि दुनिया सँ कटि जाइत छथि। न शिक्षा, न स्वास्थ्य, आर

न सुरक्षा। लेखक प्रश्न करैत छथि जे की ई लोकनि भारतक नागरिक नहि छथि?

मिश्र जी एकटा इंजीनियरक नजरि सँ बागमती परियोजनाक तकनीकी खामी कें उजागर करैत छथि। ओ लिखैत छथि जे कोना गम्हरिया बराज आर अन्य नहर प्रणाली मात्र ठेकेदार आर नेताक पेट भरबाक साधन बनि गेल अछि। सरकारी रिपोर्ट मे जे एकड़ जमीन सिंचित देखायल जाइत अछि, धरातल पर ओतय सिर्फ जल-जमाव आर दलदल अछि।

लेखकक ई आलोचना अत्यंत मार्मिक अछि जे हमरा सभक लेल 'विकास' क मतलब मात्र कंक्रीट अछि। बागमतीक संदर्भ मे विकासक अर्थ छल नदी कें बांधब। मुदा लेखक सांख्यिकीय आँकड़ा सँ सिद्ध करैत छथि जे १९५४ मे बिहार मे जतेक बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र छल, बान्ह बनलाक बाद ओ क्षेत्रफल कय गुना बढ़ि गेल अछि। ई 'आधुनिक इंजीनियरिंग' क विफलताक सब सँ पैघ प्रमाण अछि।

दिनेश कुमार मिश्रक ई पोथी मिथिलाक पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणाली (आहर-पाइन, पोखर) कें पुनर्जीवित करबाक वकालत करैत अछि। लेखकक अनुसार, ऐ क्षेत्रक पूर्वज जानैत छलाह जे बाढ़ि

सँ कोना लड़ल जाइत अछि। ओ लोकनि बाढ़िक स्वागत करैत छलाह कारण ओ नवीन माटि लऽ कऽ अबैत छल। मुदा 'आधुनिक विकास' बाढ़ि कें 'दुश्मन' मानि लेलक आर ओकरा रोकबाक प्रयास मे विनाश कें आमंत्रित कऽ देलक।

पोथी सिर्फ नदीक गप्प नहि करैत अछि, वरन् ओइ समाजक गप्प करैत अछि जे अपन जमीन सँ बेदखल भऽ गेल अछि। विस्थापनक पीड़ा आर पुनर्वास मे भेल धांधलीक कतेको दास्तान एतय संकलित अछि। लेखकक दृष्टि मे, बान्ह ने मात्र भूगोल कें बदललक, वरन् समाजक आपसी भाईचारा आर रिति-रिवाज कें सेहो नष्ट कऽ देलक।

लेखकक शैली व्यंग्यात्मक आर तथ्यात्मक अछि। ओ विभागक फाइलों मे दब गेल सच कें बाहर अनैत छथि। सरकारी तंत्र कोना 'राहत' क नाम पर करोड़ों टकाक बंदरबाँट करैत अछि आर कोना बाढ़ि एकटा 'सालाना उत्सव' बनि गेल अछि जतय नेता सँ लऽ कऽ अभियंता धरि मालामाल होइत छथि, एकर निडर चित्रण ऐ पोथी मे अछि। बागमती नदीक प्रवाह आ ओकरा पर बनल बान्हक प्रसंगमे 'लाल छड़ी' ओहि **खतराक निशान** कैं चिन्हित करैत अछि, जकरा पार

कयलाक बाद प्रशासन आ इंजीनियर बाढ़िक घोषणा करैत छथि। मुदा पुस्तकमे ई मात्र एकटा तकनीकी औजार नहि, वरन् सत्ता आ तंत्रक ओहि **विखंडन** क प्रतीक अछि जे नदीक नैसर्गिक सत्यकेँ अपन 'लाल छड़ी' सँ नियंत्रित करबाक कोशिश करैत अछि। ई छड़ी तय करैत अछि जे ककरा 'बाढ़ि' कहल जाय आ ककरा 'सामान्य'। मुदा, नदीक लेल कोनो छड़ीक मोल नहि अछि। जखन छड़ी खतराक निशान देखाबैत अछि, तखन राहत आ बचाव कार्यक 'नाम' पर भ्रष्टाचारक एकटा नया खेल शुरू होइत अछि। एतय 'सुरक्षा' शब्द अपन अर्थ बदल कऽ 'शोषण' मे परिवर्तित भऽ जाइत अछि।

'बागमती की सद्गति!' मात्र एकटा क्षेत्र विशेषक कथा नहि अछि, वरन् ई दुनिया भरक ओइ पारिस्थितिक तंत्र केँ बुझय केँ नजरिया दैत अछि जे धारक संग छेड़छाड़ कऽ रहल अछि।

नदी केँ ओकर रस्ता दैत, ओकरा मुक्त बहय देल जाय। बाढ़ि नियंत्रणक बदला 'बाढ़ि प्रबंधन' पर ध्यान देल जाय। स्थानीय लोकक ज्ञान केँ तकनीकी निर्णय मे शामिल कएल जाय।

दिनेश कुमार मिश्रक ई कृति बागमती क्षेत्रक लोकक लेल 'बाइबल' सँ कम नहि अछि। ई पोथी

हमरा सभकेँ चेतावनी दैत अछि जे जँ हम आब सेहो नहि चेतयब, त' 'सद्गति' शब्द मात्र व्यंग्य नहि रहत, वरन् एकटा भयावह सत्य बनि कऽ हमरा सभक सोझाँ ठाढ़ रहत।

मिथिलाक लोकक लेल ई पोथी मात्र सूचनाक स्रोत नहि, वरन् अपन माटि आर पानि केँ बचयबाक एकटा आह्वान अछि। लेखकक शोध, क्षेत्र भ्रमण आर तकनीकी विश्लेषण एकरा एकटा 'क्लासिक' दस्तावेज बनबैत अछि।

बागमतीक सद्गतिः दिनेश कुमार मिश्रक जल-दर्शन आ मिथिलाक नदी-प्रबंधनक एकटा समाजशास्त्रीय आ तकनीकी महागाथा

मिथिलाक सांस्कृतिक आ भौगोलिक चेतनाक केंद्र मे सदिखन सं नदि सभक प्रधानता रहल अछि। ऐ क्षेत्रक जीवन, कृषि, आ दर्शन धारक धार सं निर्धारित होइत अछि। मुदा आधुनिक काल मे विकासक जे ढाँचा अपनाओल गेल, ओ नदि सभक स्वाभाविक गति केँ अवरुद्ध कऽ ओकरा त्रासदी मे बदलि देलक। दिनेश कुमार मिश्रक कालजयी कृति 'बागमती की सद्गति' केवल एकटा नदीक कथा नहि अछि, वरन् ई आधुनिक भारतक जल-प्रबंधन नीति, विशेष रूप सं उत्तर बिहारक संदर्भ मे, एकटा गम्भीर आलोचनात्मक

दस्तावेज अछि । ऐ रिपोर्टक माध्यम सं बागमतीक भौगोलिक यात्रा, बान्हक तकनीकी विफलता, विस्थापनक मानवीय त्रासदी, आ स्थानीय लोक-ज्ञानक उपेक्षाक विस्तृत विश्लेषण कयल गेल अछि।

दिनेश कुमार मिश्रक व्यक्तित्व ओहि पारंपरिक अभियंता सं सर्वथा भिन्न अछि जे केवल कंक्रीट आ लोहाक संरचना मे समाधान खोजैत अछि। हिनक शैक्षणिक पृष्ठभूमि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), खड़गपुर जकां प्रतिष्ठित संस्थान सं अछि, जतय सं ओ 1968 मे सिविल इंजीनियरिंग आ 1970 मे स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग मे उच्च शिक्षा प्राप्त कयलन्हि । मुदा 1984 सं ओ अपन तकनीकी ज्ञानक उपयोग नदि सभक पारंपरिक आ स्वाभाविक व्यवहार कैँ समझय मे कयलन्हि। हिनक शोधक आधार केवल प्रयोगशाला नहि, वरन् उत्तर बिहारक ओ चौर, मन, आ बान्हक घेरा मे फँसल गाम सभ अछि जतय ओ निरंतर भ्रमण कयलन्हि । मिश्र जीक वैचारिक यात्रा "बाढ़ि सं सुरक्षा" सं शुरू भऽ कऽ "बाढ़ि क संग जीवन" (Living with Floods) धरि पहुँचैत अछि । ओ ई रेखांकित करैत छथि जे कोना भारतक बाढ़ि नियंत्रण नीति मात्र बान्हक निर्माण धरि सीमित रहि गेल अछि, जाहि सं

पर्यावरण कैं गम्भीर क्षति पहुँचल अछि। हिनक अनुसार, ऐ संरचना सभक रखरखाव एकटा "संवेदनहीन नौकरशाही" (Indifferent Technocracy) क हाथ मे अछि जे ई बुझय मे असमर्थ अछि जे बाढ़ि नियंत्रण मे कयल गेल निवेश लाभक बदला मे नुकसान बेसी कऽ रहल अछि ।

बागमतीक भौगोलिक स्वरूप आ जल-प्रवाह तंत्र

बागमती नदीक उद्गम नेपालक काठमांडू उपत्यकाक उत्तर मे स्थित शिवपुरी श्रेणीक बागद्वार सं होइत अछि । ई नदी न केवल एकटा जलधारा अछि, वरन् काठमांडू सं लऽ कऽ खगड़िया धरि एकटा विशाल सभ्यताक आधार अछि। भारत मे ई बिहारक सीतामढ़ी जिलाक ढेंग सं प्रवेश करैत अछि। लगभग 400 किलोमीटरक अपन यात्रा मे ई बिहारक कतेको जिला सभक भाग्यक फैसला करैत अछि।

बागमती-अधवारा समूहक नदी तंत्रक जटिलता आ ओकर विस्तार कैं निम्नलिखित आँकड़ा सं समझल जा सकैत अछि:

बागमती-अधवारा समूहक विशेषता	आँकड़ा
कुल जलग्रहण क्षेत्र (Basin Area)	14,384 वर्ग किमी
बिहार मे जलग्रहण क्षेत्र	6,500 वर्ग किमी
मुख्य नदीक लंबाई (बिहार मे)	394 किमी
औसत वार्षिक वर्षा	1255 मिमी
सिंचित क्षेत्र (बिहार मे)	5,362 वर्ग किमी
प्रमुख सहायक नदि सभ	लालबकैया, लखनदेई, पुरानी कमला, अधवारा समूह

बागमतीक चंचलता प्रसिद्ध अछि। ई अपन मार्ग बदलबाक लेल जानल जाइत अछि। 1993 मे नेपाल मे भेल भीषण वर्षा (24 घंटा मे 540 मिमी) ऐ नदीक रौद्र रूपक ऐतिहासिक गवाह अछि, जाहि मे बागमती बैराज आ कतेको पुल ध्वस्त भऽ गेल छल । मुदा दिनेश कुमार मिश्रक

तर्क अछि जे नदीक ऐ स्वभाव कैं "विपदा" मानब आधुनिक तकनीकी भूल अछि। धारक ई "बेग" आ ओकर गाद (Silt) ही ऐ क्षेत्रक उर्वरताक स्रोत रहल अछि ।

बान्हक 'मायाजाल' आ इंजीनियरिंगक विफलताः "बागमती की सद्गति" मे मिश्र जी बान्हक निर्माण कैं एकटा एहन "मायाजाल" क रूप मे चित्रित करैत छथि जे शुरू मे सुरक्षाक भ्रम दैत अछि, मुदा अंततः विनाशक कारण बनैत अछि । 1954 क राष्ट्रीय बाढ़ि नीति क बाद, नदि सभ कैं "जैकेटिंग" (Jacketing) करबाक, अर्थात दुनू कात सं बान्ह सं घेड़बक प्रक्रिया शुरू भेल। बागमती पर लगभग 450 किलोमीटर लंबा बान्ह बनाओल गेल अछि ।

बान्हक विफलताक तकनीकी कारण सभ अत्यंत स्पष्ट अछि। जखन नदी कैं दू टा दीवारक बीच कैद कऽ देल जाइत अछि, तखन ओकर स्वाभाविक वेग तऽ बढ़ि जाइत अछि, मुदा ओ अपन संग लाबय वाला गाद कें मैदान मे नहि फैला सकैत अछि। परिणामस्वरूप, गाद नदीक पेटी (Riverbed) मे जमा होबय लागैत अछि, जाहि सं नदीक तल ऊँच भऽ जाइत अछि । कोसी नदीक तल पछिला 50 साल मे 250 इंच

ऊपर उठि गेल अछि, आ बागमती मे सेहो ऐना भऽ रहल अछि । जखन नदीक तल ऊँच भऽ जाइत अछि, तखन सामान्य वर्षा मे सेहो बान्ह टूटि जाइत अछि। बागमतीक बान्ह एखन धरि 54 बेर टूटि चुकल अछि ।

ई विरोधाभास अछि जे ज्यों-ज्यों "बाढ़ि नियंत्रण" पर खर्च बढ़ल, त्यों-त्यों बाढ़ि सँ ग्रसित क्षेत्रक विस्तार सेहो होइत गेल। मिश्र जी एकरा "इंजीनियरिंग विचक्राफ्ट" (Engineering Witchcraft) कहैत छथि, जतय समाधान स्वयं समस्या बनि जाइत अछि ।

विस्थापनक मानवीय त्रासदी: मासाहा आलम आ पुनर्वासक सच;"पुनर्वास" (Rehabilitation) क असलियत अछि। बान्हक निर्माण सं केवल नदी कैद नहि होइत अछि, वरन् हजारो परिवार अपन जमीन आ पहचान सं बेदखल भऽ जाइत छथि । मिश्र जी "मासाहा आलम" गामक उदाहरण दैत छथि जे सीतामढ़ी जिलाक बैरगनिया प्रखंड मे अछि। 1971-72 मे जखन बागमतीक दाहिना बान्ह बनय लागल, तखन ई गाम बान्ह आ नदीक बीच मे "फँसि" (Trapped) गेल ।

मासाहा आलम गामक त्रासदी निम्नलिखित तालिका सं स्पष्ट होइत अछि:

विवरण	सांख्यिकीय तथ्य (मासाहा आलम)
कुल परिवार (1971 जनगणना)	420
पुनर्वसित परिवार (2011 धरि)	104
बेघर परिवार (40 साल सं सड़क पर)	316
मुख्य कारण	भ्रष्टाचार (10% रिश्वतक मांग), जमीनक कमी, सरकारी उपेक्षा

ऐ गामक लोक 40 साल सं सड़क पर, बान्ह पर, या रेलवे लाइनक कात मे रहय लेल मजबूर छथि। ओकरा सभ कें "अतिक्रमणकारी" मानि कऽ पुलिस द्वारा भगाओल जाइत अछि । मिश्र जी प्रश्न उठाबैत छथि जे की ई लोक भारतक नागरिक छथि? स्थानीय मुखिया तऽ एतय धरि कहलन्हि जे यदि सरकार हमरा सभक नागरिकता खतम कऽ रहल अछि, तऽ हमरा सभ कें नेपाल जा कऽ बसबाक आदेश दऽ देल जाय । ई त्रासदी केवल एकटा गामक नहि, वरन् बान्हक घेरा मे फँसल सैकड़ो गामक अछि।

पारिस्थितिकीय विनाश आ कृषि पर प्रभाव: *बागमतीक बान्ह न केवल मानुस कें, वरन् जमीनक स्वास्थ्य कें सेहो बिगाड़ि देलक अछि। पहिने बागमतीक बाढ़ि अपन संग उपजाऊ माटि (Alluvium) लैत छल, जाहि सं बिना कोनो खादक नीक खेती होइत छल । मुदा बान्ह बनला क बाद, ई चक्र टूटि गेल अछि।*

जलभराव (Water-logging): *बान्हक कारण सहायक धारक पानी आ वर्षाक जल मुख्य नदी मे नहि जा सकैत अछि। ई पानी बान्हक बाहरक गाम सभ मे सालो भरि जमा रहैत अछि, जाहि सं खेती असंभव भऽ जाइत अछि ।*

सिल्ट बनाम बालू: *जखन बान्ह सुरक्षित रहैत अछि, तखन खेत मे गाद नहि पहुँचैत अछि, जाहि सं जमीन बंजर भऽ जाइत अछि। मुदा जखन बान्ह टूटैत अछि, तखन पानीक तीव्र वेग खेत मे बालू (Sand) क मोटी परत बिछाय दैत अछि, जाहि सं फसल नष्ट भऽ जाइत अछि ।*

मत्स्य पालन आ जैव विविधता: *बागमतीक बाढ़ि अपन संग मछलियक अंडा लैत छल जे क्षेत्रक पोखर आ चौर सभ मे भरि जाइत छल। ई मछलियाँ मच्छरक लार्वा कें खा कऽ बेमारी सं*

सेहो बचाबैत छल। बान्ह ऐ प्राकृतिक नियंत्रण कें खतम कऽ देलक अछि ।

मिश्र जीक अनुसार, "बेनिफिट-कॉस्ट रेशियो" (Benefit-Cost Ratio) निकालैत काल इंजीनियर अक्सर ऐ सामाजिक आ पर्यावरणीय लागत कें गणना नहि करैत छथि ।

मिथिलाक जल-संस्कृति आ शब्दावलीक विस्मृतिः दिनेश कुमार मिश्र केवल एकटा इंजीनियर नहि, वरन् एकटा "लोक-इतिहासकार" सेहो छथि। ओ अपन पुस्तक मे मैथिली आ अन्य स्थानीय बोली सभक ओहि शब्दावली कें सहेजलन्हि अछि जे बाढ़ि कें प्रति लोकक नजरिया कें स्पष्ट करैत अछि । आधुनिक शिक्षा आ 'डिजास्टर' (Disaster) शब्दक प्रचार सं ई समृद्ध शब्दावली विस्मृत भऽ रहल अछि।

मैथिली/स्थानीय शब्द	भावार्थ आ श्रेणी
बोह (Boh)	उत्सव जकां बाढ़ि, जे खेत मे धीरे-धीरे गाद फैला दैत छल।

हुम्मा (Huma)	बाढ़िक ओहि स्तर जाहि मे किछु असुविधा तऽ होइत अछि, मुदा ई जानलेवा नहि छल।
सह (Sah)	जखन बाढ़ि सं जानवर सभ कें खतरा होबय लागय। ई सौ साल मे एक-दू बेर आबय वाला स्थिति छल।
प्रलय (Pralay)	अत्यंत विनाशकारी बाढ़ि।
छप-छप पानी	टखना धरि पानी, जे नीक फसलक संकेत मानल जाइत छल।
चौर आ मन (Mann)	प्राकृतिक जल संचयन क्षेत्र, जे बाढ़िक अतिरिक्त पानी कें सोखि लैत छल।

मिथिला मे एकटा प्रसिद्ध कहावत अछि - "पग पग पोखर, माछ मखान" । ई कहावत मिथिलाक उन्नत जल-प्रबंधनक प्रतीक अछि। मुदा बान्हक निर्माण आ शहरीकरण ऐ पोखर आ चौर सभ कें खतम कऽ देलक अछि, जाहि सं बाढ़ि अब एकटा अनियंत्रित त्रासदी बनि गेल अछि। "तैरने वाला समाज अब डूब रहा है" - अनुपम मिश्रक ई उक्ति दिनेश कुमार मिश्रक दर्शन मे सेहो प्रतिबिम्बित होइत अछि ।

राजनीति, ठेकेदारी आ 'बाढ़ि नियंत्रण'क अर्थशास्त्र: *बागमती की सद्गति मे मिश्र जी एकटा गम्भीर आरोप लगाबैत छथि जे 'बाढ़ि नियंत्रण' अब एकटा "उद्योग" बनि गेल अछि । जखन बान्ह टूटैत अछि, तखन ओकर मरम्मतक नाम पर करोडो टाका खर्च कयल जाइत अछि। ऐ मे राजनेता, इंजीनियर, आ ठेकेदारक एकटा शक्तिशाली गठजोड़ अछि जाहि मे बाढ़िक स्थायी समाधान मे ककरो रुचि नहि अछि।*

मिश्र जीक अनुसार, यदि हम वास्तव मे बाढ़ि सं बचय चाहैत छी, तऽ हमरा "नियंत्रण" (Control) क बदला मे "प्रबंधन" (Management) पर ध्यान देबय पड़त । ओ बान्हक बदला मे छोटे-छोटे बांध, ड्रेनेज चैनल्स, आ लोकक सहभागिता पर जोर दैत छथि। बागमती परियोजनाक तेसर चरणक कड़ा विरोध ऐ लेल भऽ रहल अछि क्योंकि लोक अब ई समझि गेल छथि जे बान्ह ओकरा सुरक्षा नहि, वरन् सालो भरिक नरक दऽ रहल अछि ।

'सद्गति' शीर्षकक व्यंग्य आ दार्शनिक अर्थ: *पुस्तकक शीर्षक "बागमती की सद्गति" अपने आप मे एकटा पैघ व्यंग्य अछि। भारतीय परंपरा मे 'सद्गति'क अर्थ होइत अछि - मोक्ष, या मृत्यु*

क बाद नीक स्थिति । बागमती जे मिथिलाक लेल गंगा जकां पवित्र आ जीवनदायिनी छल, आधुनिक इंजीनियरिंग ओकर 'सदगति' (अंत) कऽ देलक अछि।

मिश्र जी लिखैत छथि जे नदि सभ 'परोपकाराय वहन्ति नद्यः' (नदि सभ परोपकार लेल बहैत अछि)। मुदा हम ओकरा बान्हक जेल मे कैद कऽ देलहुँ। नदी जे स्वच्छन्द बहैत छल, ओ अब एकटा 'बीमार' जलधारा बनि कऽ रहि गेल अछि। बागमतीक ऐ दुर्दशा लेल केवल प्रकृति नहि, वरन् हमर "तकनीकी अहंकार" जिम्मेदार अछि ।

वैकल्पिक समाधानः बाढ़ि मुक्ति अभियानक दृष्टिकोणः दिनेश कुमार मिश्र केवल आलोचना नहि करैत छथि, वरन् ओ 'बाढ़ि मुक्ति अभियान' (Barh Mukti Abhiyan) क माध्यम सं एकटा वैकल्पिक रस्ता सेहो देखबैत छथि । हिनक मुख्य सुझाव सभ निम्नलिखित अछिः

पारंपरिक ज्ञानक सम्मानः बाढ़ि क संग रहबाक जे कला मिथिलाक लोक मे सदिय सं छल, ओकरा पुनर्जीवित कयल जाय ।

बान्ह सं मुक्तिः जतय संभव हो, बान्ह कैँ खतम कयल जाय या ओकरा स्थानीय ड्रेनेज सं जोड़ल जाय ।

विकेंद्रीकृत प्रबंधनः जल प्रबंधनक निर्णय स्थानीय पंचायत आ गामक लोकक सलाह सं होबय चाही, न कि पटना या दिल्ली मे बैठल इंजीनियर द्वारा ।

चौरक पुनरुद्धारः प्राकृतिक चौर (Depressions) सभ कें अतिक्रमण मुक्त कयल जाय ताकि ओ बाढ़िक समय बफर (Buffer) क काम कऽ सकय।

मिश्र जीक ई दर्शन 'प्रकृति सं संघर्ष' क बदला मे 'प्रकृति सं सामंजस्य' पर आधारित अछि। ओ कहैत छथि जे धारक व्यवहार कैँ समझब ही सच्चा विज्ञान अछि।

"बागमती की सदगति" एकटा एहन आरसी (Mirror) अछि जाहि मे हम अपन विकासक विकृत चेहरा देखि सकैत छी। बागमतीक कथा केवल एकटा नदीक कथा नहि, वरन् ई विकासक ओहि अंधी दौड़ क कथा अछि जाहि मे हम अपन आधार ही खतम कऽ रहल छी। दिनेश कुमार मिश्रक ई शोध रिपोर्ट हमरा सभ कें विवश करैत

अछि जे हम सोचय कि की हम आने वाला पीढ़ी कें केवल बान्ह आ बंजर जमीन दऽ कऽ जाबय चाहैत छी?

बागमतीक उद्धार संभव अछि जखन हम ओकरा ओकर स्वाभाविक रस्ता दऽ देब। बान्हक घेरा सं निकलि कऽ जखन बागमती अपन गाद सं मिथिलाक खेत कें सींचत, तबहि ओकर असली 'सदगति' (नीक गति) हेतय । ई पुस्तक हमरा सभ कें "तैरने वाला समाज" मे बदलबय क प्रेरणा दैत अछि, न कि बाढ़ि सं डरा कऽ भागय वाला समाज मे । दिनेश कुमार मिश्रक ई महान कृति मिथिलाक जल-चेतनाक एकटा अनमोल धरोहर अछि।

The Myth of Flood Control (२०१४)

"The Myth of Flood Control" (बाढ़ि नियंत्रणक भ्रम)

बाढ़िक समस्या मे वृद्धि: लेखक कहैत छथि जे दुनिया भरि मे, खास कऽ दक्षिण-पूर्व एशिया मे, बाढ़ि सँ होमय बला नुकसान कम भेबाक बदला बढ़ि रहल अछि। १९७८ मे भारत आ १९८१ मे चीन मे आएल भीषण बाढ़ि एकर प्रमाण अछि। पैंघ-पैंघ बांध आ बान्ह बनला क बादो तबाहीक आँकड़ा कम नै भऽ रहल अछि।

बान्ह (Embankments) क विफलता: बाढ़ि रोकय लेल बान्ह सब सँ पुरान आ लोकप्रिय तरीका अछि, मुदा ई अक्सर विफल साबित होइत अछि।

नदीक पेटीक ऊँच होबब: बान्हक कारणे नदीक 'सिल्ट' (गाद) बाहर नै पफैल कऽ नदीक भीतर जमा होइत रहैत अछि, जाहि सँ नदीक पेटा आसपासक जमीन सँ ऊँच भऽ जाइत अछि।

खतरनाक दशा: जखन एहन स्थिति मे बान्ह टूटैत अछि, तँ पानि एहन वेग सँ निकलैत अछि जे सामान्य बाढ़ि सँ कतेको गुना बेसी तबाही मचबैत अछि।

बांध (Dams) आ बाढ़ि: बांध कें बाढ़ि नियंत्रणक सब सँ पैघ हथियार मानल जाइत अछि, मुदा लेखकक अनुसार ई एकटा भ्रम अछि:

क्षमताक कमी: जखन लगातार बेसी वर्षा होइत अछि, तँ बांधक 'रिजर्वायर' भरि जाइत अछि। एहन मे बांध कें सुरक्षित रखय लेल अचानक पानि छोड़य पड़ैत अछि, जे नीचाँक इलाका मे 'मानव-निर्मित बाढ़ि' (Man-made floods) आनैत अछि।

गाद जमा होबब: बांध मे गाद जमा भेला सँ ओकर पानि रोकबाक क्षमता हर साल कम होइत जाइत अछि।

वन-विनाश (Deforestation) क भूमिका: पहाड़ी क्षेत्र मे गाछक कटान सँ माटि ढीला भऽ जाइत अछि। वर्षाक पानि कें सोखय बला कोनो प्राकृतिक तंत्र नै बचला सँ पानि तेजी सँ नदी मे पहुँचैत अछि आ अपन संग भारी मात्रा मे माटि

आ बालू लऽ कऽ आबैत अछि, जे बाढ़िक मुख्य कारण बनैत अछि।

गलत विकास नीतिः लेखक तर्क दैत छथि जे हम 'नदीक रस्ता' (Floodplains) मे घर आ कारखाना बना कऽ बाढ़ि कें खुद निमंत्रण दैत छी। जखन हम प्रकृति सँ छेड़छाड़ करैत छी, तँ तकनीकी समाधान मात्र समस्या कें एक ठाम सँ दोसर ठाम हस्तांतरित करैत अछि।

ई लेख ई सिद्ध करैत अछि जे "बाढ़ि नियंत्रण" (Flood Control) शब्द गलत अछि। हम प्रकृति कें सम्पूर्ण रूपेँ नियंत्रित नैं कऽ सकैत छी। समाधान मात्र सीमेंटक ढाँचा बनेबा मे नैं, वरन् वन-संरक्षण, सही भूमि उपयोग आ नदीक स्वाभाविक स्वभाव कें बुझबा मे अछि।

संक्षेप मे, ई लेख तकनीकी अहंकार कें छोड़ि कऽ प्रकृति क संग सामंजस्य बैठयबाक वकालत करैत अछि।

दिनेश कुमार मिश्रक लिखल पुस्तक-
पानी का शापः बिहार में बाढ़ि-सुखाड़
(२०२६)

दिनेश कुमार मिश्रक लिखल पुस्तक- पानी का शापः बिहार में बाढ़ि-सुखाड़

प्रस्तावना (Foreword - उषाकिरण खान द्वारा लिखल):

अध्ययनक व्यापकताः उषाकिरण खान लिखने छथि जे दिनेश मिश्र द्वारा आजादीक बाद बिहारक बाढ़ि आ सुखाड़क स्थिति पर कएल गेल ई अध्ययन सर्वांगीण अछि ।

जमीनी सचाईः लेखक मात्र सरकारी आँकड़ा नैं, वरन् भुक्तभोगी सभक साक्षात्कार लऽ कऽ समस्याक कारण आ निवारण खोजबाक प्रयास कयने छथि ।

नदीक प्रति दृष्टिकोणः पोथीमे ई स्पष्ट कएल गेल अछि जे विज्ञानक प्रगति के बावजूद नदियाँ सभ्यता नष्ट करैत अछि, मुदा फेर सेहो हमरा सभकेँ नदियाँ चाही ।

चेतावनीः ई पोथी एक दिस स्वार्थमे लिप्त रहनिहार लोककेँ सन्देश दैत अछि तऽ दोसर दिस सरकारकेँ चेतावनी सेहो दैत अछि ।

.....

अपनी बात (Author's Note - दिनेश कुमार मिश्र द्वारा लिखल):

लेखकक पृष्ठभूमि: लेखक अपन परिचय एकटा सिविल इंजीनियरक रूपमे दैत छथि, जिनका शुरूमे लोकक दुःख-दर्द सँ बेसी मतलब निर्माण कार्यक समय आ बजट सँ छल।

प्रेरणाक स्रोत: १९८४ मे सहरसा जिलाक नवहट्टामे कोसी बान्ह टूटला पर जखन ओ राहत कार्यमे शामिल भेलाह, तखन हुनका पीड़ितक दर्द आ आक्रोश सँ लिखनेक प्रेरणा भेटलनि।

दस्तावेजक अभाव: सरकारी विभाग सभमे १९७५ क बाढ़िक कारण पुरान दस्तावेज नष्ट भऽ गेल छल, ऐ लेल लेखक अपन अध्ययनक आधार सिन्हा लाइब्रेरी (पटना) आ नेशनल लाइब्रेरी (कोलकाता) मे उपलब्ध पुराना समाचार पत्र आ विधानसभाक बहसकेँ बनौलनि।

मुख्य निष्कर्ष: लेखकक माननाय अछि जे १९४७ सँ १९५६ क बीच सरकार बाढ़िक समाधान लेल बड़का-बड़का छहरक योजना तऽ बनौलक, मुदा

धरातल पर लोकक समस्या (अनाज आ जीविका) ज्यों क त्यों बनल रहल ।

भविष्यक संकल्पः लेखकक इच्छा अछि जे ओ ऐ दस्तावेजकेँ २०११ धरि पूरा करैत कोसी बान्हक २००८ क त्रासदी धरि क कथा समेटथि ।

.....

ऐतिहासिक दस्तावेजः ई पोथी १९४७ सँ १९५६ क बीच बिहारमे आएल बाढ़ि, सुखाड़ आ सरकारी नीतिक एकटा प्रामाणिक दस्तावेज अछि।

लेखकक उद्देश्यः लेखक दिनेश कुमार मिश्र (जे स्वयं एकटा सिविल इंजीनियर छथि) कऽ मुख्य उद्देश्य ई देखायल अछि जे कोना बड़का-बड़का इंजीनियरिंग परियोजना (जेना कोसी बान्ह) बनला कऽ बादो बाढ़िक समस्या कम होमय कऽ बदला आर बढ़ि गेल।

१९५६ कऽ बादक स्थितिः लेखक अपन बातमे उल्लेख कयने छथि जे ओ २०११ धरि कऽ विवरण लिखय चाहैत छथि ताकि २००८ कऽ कुसहा (कोसी) त्रासदी कऽ सेहो ओहिमे समेटल जा सकय।

राहत बनाम जीविका: *सम्पूर्ण पोथीक सार ई अछि जे बाढ़ि पीड़ित लोक कऽ मात्र तात्कालिक 'राहत' (रिलीफ) कऽ जरूरत नै अछि, वरन् हुन्का अपन जमीन आ जीविकाक स्थायी सुरक्षा चाही।*

ऐ पोथीक १० वर्ष डायरी-अध्याय (१९४७-५६) कऽ बाद ***परिशिष्ट*** *(Appendix) देल गेल अछि जाहिमे तकनीकी शब्द सभक व्याख्या कयल गेल अछि।*

आजादीक बादक संघर्ष (१९४७-१९५६): *ई अध्याय आजादीक शुरुआती दशकमे बिहारमे बाढ़ि आ सुखाड़क ऐतिहासिक दस्तावेज प्रस्तुत करैत अछि । लेखक देखौने छथि जे कोना १९४७ सँ १९५६ क बीच बिहारक लोक प्रकृति आ शासन व्यवस्थाक बीच फँसल छलाह ।*

कोसी परियोजनाक सुस्त रफ़्तार: *१९४७ मे निर्मलीमे कोसी सम्मेलन भेल छल जाहिमे बराहक्षेत्र (नेपाल) मे ८०० फीट ऊँच छहर बनाबय क योजना छल । मुदा, १९५६ धरि ई योजना मात्र सर्वेक्षण आ चर्चा धरि सीमित रहल, जाहिसँ कोसी क्षेत्रक लोकमे भारी निराशा छल ।*

बान्ह निर्माण आ ओकर परिणाम: *१९५४ क भीषण बाढ़िक बाद कोसी बान्हक निर्माण तेजी सँ*

शुरू भेल । मुदा, एकर एकटा नकारात्मक पक्ष ई भेल जे बान्हक भीतर फँसल लाखो लोक विस्थापित भऽ गेलाह आ हुनक घर-खेत नदीमे विलीन भऽ गेल ।

बाढ़ि आ सुखाड़क चक्रः ई दशक बिहार लेल बड्ड कठिन छल। १९४८ मे आजाद भारतक पहिल पैघ बाढ़ि आयल, जखन कि १९५० सँ १९५२ धरि भीषण सुखाड़क स्थिति रहल । १९५३-५४ मे फेर बाढ़िक प्रकोप देखल गेल ।

शासन व्यवस्था आ राहतः लेखक समाचार पत्र सभक माध्यम सँ देखौंने छथि जे कोना सरकारी राहत 'रिलीफ' मात्र तात्कालिक मरहम छल मुदा समस्याक स्थायी समाधान (जीविकाक साधन) नैं भेटि पाबि रहल छल ।

बुजुर्ग लोकक साक्षात्कारः शिवनाथ मंडल, रामदेव दास शर्मा जकाँ बुजुर्ग लोकक साक्षात्कार शामिल अछि, जे ओहि समयक वास्तविक त्रासदी आ गाम सभक विस्थापनक कथा कहैत छथि ।

दस्तावेजक पूर्णताः लेखकक अनुसार, ओ १९४७ सँ १९५६ धरि कऽ प्रथम खण्ड तैयार कयने छथि जाहिमे सरकारक नीति, लोकक आन्दोलन आ प्राकृतिक आपदाक अन्तरसम्बन्ध कऽ देखायल

गेल अछि ।

"1947: मेरे घर बाढ़ि नहीं आई, तुम्हारे घर आई परेशानी तो हुई ही न": आजादी आ विरासतमे भेटल समस्या: भारतक आजादी (१५ अगस्त १९४७) क समय बिहारक लोकमे भारी उत्साह छल, मुदा देशक विभाजन आ साम्प्रदायिक दंगाक कारण ई समय बहुत पीड़ादायक सेहो छल । आजादीक समय बिहारक अर्थव्यवस्था स्थिर छल मुदा जनसंख्या लगातार बढ़ि रहल छल ।

खाद्यान्न संकट आ अकालक डर: १९४१ क जनगणना क अनुसार बिहारक ८६ प्रतिशत आबादी गाममे रहैत छल आ खाद्यान्नक भारी कमी छल । १९४३ सँ १९४७ क बीच हैजाक प्रकोप आ आसमान छुबैत अनाजक दाम (चाउरक दाम ५-९ टाका सँ बढ़ि कऽ २३ टाका भऽ गेल छल) सरकारक लेल पैघ चुनौती छल ।

बाढ़ि आ सुखाड़क ऐतिहासिक संदर्भ: लेखक १९४७ क स्थिति बताबैं सँ पहिने इतिहासक चर्चा कयने छथि। १९म शताब्दीमे बिहारमे तीन बेर भीषण अकाल (१८६५-६६, १८७३-७४, आ १८९६-९७) पड़ल छल । ओहिना १९४६ मे गयामे फल्गु नदीक अचानक आयल बाढ़ि सँ तीर्थयात्री आ स्थानीय लोकक भारी क्षति भेल छल ।

१९४७ क बाढ़ि आ सरकारी प्रयास: १९४७ मे दरभंगा, मुजफ्फरपुर, गया आ सहरसा जिलामे बाढ़ि आयल छल। सरकार 'अधिक अन्न उपजाओ' (Grow More Food) योजनाक तहत लघु सिंचाई, कुआँ, आ खाद-बीजक वितरण पर जोर दऽ रहल छल। खाद्यान्न संचय क लेल सरकार गल्ला व्यापारी आ पैघ किसान सभ सँ अनाजक वसूली (Procurement) क लेल कड़ाई कयने छल।

कोसी समस्या आ निर्मली सम्मेलन: १९४७ क अप्रैलमे निर्मली (सुपौल) मे एकटा पैघ 'कोसी बाढ़ि सम्मेलन' भेल छल, जाहिमे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आ अन्य विशेषज्ञ शामिल भेलाह। एतय कोसी नदी पर बराहक्षेत्र (नेपाल) मे ८०० फीट ऊँच छहर बनाबय क प्रस्ताव कयल गेल छल ताकि बाढ़ि सँ सुरक्षा आ बिजलीक उत्पादन भऽ सकय।

लोकक वेदना: अध्यायमे लोकक ई सोच देखायल गेल अछि जे भले हमर घर बाढ़ि नै आयल, मुदा अहाँक घर आयल तऽ परेशानी तऽ भेलहि न। ई अध्याय आजादीक शुरुआती सालमे बिहारक बाढ़ि, सुखाड़ आ अनाजक कमी सँ लड़ैत शासन आ समाजक वास्तविक चित्र प्रस्तुत करैत अछि।

"1948: कटते-कटते 1976 में मेरा गाँव खत्म हो गया": पृष्ठभूमि आ कोसीक चर्चा: *१९४७ मे कोसी, कमला, आ गंडक नदीक चर्चा भेल छल, मुदा मुख्य स्थान कोसीकेँ भेटल। कोसी क समस्या आ निर्मली सम्मेलन (१९४७) क बाद लोकमे एकटा आशा जगल छल जे नेपाल क बराहक्षेत्रमे ८०० फीट ऊँच छहर बनला सँ समस्या क समाधान भऽ जायत ।*

सिंचाई आ बिजली क कल्पना: *तत्कालीन सिंचाई मंत्री रामचरित्र सिंह रेडियो वार्ता क माध्यम सँ कोसी परियोजना सँ १८०० मेगावाट बिजली क उत्पादन आ ट्यूबवेल सँ सिंचाई क कल्पना कयने छलाह । राज्यपाल माधव श्रीहरि अणे सेहो विधानसभामे कोसी आ गंडक परियोजना पर काम शुरू होयबाक बात कहलनि ।*

१९४८ क भीषण बाढ़ि: *आजाद भारतमे बिहारक ई पहिल पैंघ बाढ़ि छल, जाहिसँ सहरसा, सारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, पटना आ शाहाबाद जिला सभ सँ बेसी प्रभावित भेल छल ।*

सहरसा क स्थिति: *सहरसा आ सुपौलमे जून क अन्तिम हप्तामे कोसी आ तिलावे नदीमे समय सँ पहिने बाढ़ि आबि गेल, जाहिसँ एक लाख सँ बेसी*

आबादी प्रभावित भेल । मधेपुरा आ सहरसा क रेल संपर्क टूटल रहल ।

दरभंगा क दृश्यः जुलाईमे कमला, बलान आ जीवछ नदीमे बाढ़ि सँ मधुबनी शहरमे ३ फीट धरि पानी भरि गेल छल । मधेपुर थानाक ५० हजार एकड़ धानक फसल पूर्णतः नष्ट भऽ गेल आ लोककेँ चूड़ा-गुड़ खा कऽ दिन काटय पड़ल ।

सारण क तबाहीः सारण जिलामे गंगा आ घाघरा (सरयू) क बाढ़ि अभूतपूर्व छल । १००० सँ बेसी गाम प्रभावित भेल आ २५ हजार सँ बेसी घर खसि गेल । सिताबदियारा गाम (लोकनायक जयप्रकाश नारायण क गाम) क स्थिति बहुत नाजुक भऽ गेल छल ।

प्रशासनिक विफलता आ राहतः विधानसभामे सरकारक बहुत आलोचना भेल। लोकक कहनाइ छल जे राहतक वितरणमे देरी भेल आ नाव क कमी छल । ई अध्यायमे उदित राय आ प्रो. योगेन्द्र चौधरी सन बुजुर्गक साक्षात्कार सेहो शामिल अछि, जे ओहि समयक भयावह स्थिति क वर्णन करैत छथि ।

ई अध्याय आजादीक बाद बिहारक लोकक ओहि संघर्ष कऽ देखबैत अछि, जाहिमे एक तरफ नव

सरकार सँ बड्ड आशा छल तऽ दोसर तरफ प्रकृति कऽ प्रकोप आ प्रशासनिक सुस्ती लोकक दुःख बढा़ देलक ।

"१९५१: रिलीफ नहीं, जीविका का साधन चाहिए": कोसी परियोजना आ निर्मली सम्मेलन क प्रभाव: १९४७ क निर्मली सम्मेलन क बाद लोकमे कोसी परियोजना (बराहक्षेत्रमे ८०० फीट ऊँच छहर) क प्रति बहुत आशा छल । मुदा १९४९ धरि धरातल पर कोनो पैघ काज नैं भेला सँ लोकमे निराशा आ व्यग्रता बढ़ि रहल छल ।

असमय बाढ़ि आ तबाही: १९४९ मे कोसीमे अचानक बाढ़ि २१ मई कऽ ही आबि गेल, जाहिसँ दौरम मधेपुरा आ बैजनाथपुरक बीच रेल संपर्क टूटि गेल । जूनक दोसर हप्ता सँ उत्तर बिहारमे वर्षा शुरू भेल आ कोसी-तिलावेक कारण मधेपुरा सब-डिवीजन (धरहरा, बनगाँव, सोनबरसा) मे भीषण तबाही भेल ।

"जीविकाक साधन" क माँग: अध्याय क शीर्षकक अनुसार, कोसी क्षेत्रक लोकक माननाय छल जे सालों भरि जल-जमाव आ बाढ़ि सँ लड़ैत लोक कऽ मात्र 'राहत' (रिलीफ) कें जरूरत नैं अछि, वरन् ओकरा 'जीविकाक स्थायी साधन' चाही ।

किउल पुल कऽ दुर्घटना: जुलाई १९४९ मे भीषण वर्षा कऽ कारण जमुई मे किउल नदी कऽ पुल बह गेल। ई जमुई कऽ इतिहासक एकटा पैघ त्रासदी छल।

सिंचाई आ खाद्यान्नक स्थिति: विकास मंत्री डॉ. सैयद महमूद असेम्बली मे कहलनि जे बिहार खाद्यान्न उत्पादन मे आत्मनिर्भर भऽ रहल अछि आ १९४६ कऽ तुलना मे १९४८ मे अनाजक आयात कम भऽ गेल अछि। मुदा चम्पारण कऽ तिउर नहर कऽ अचानक सूखि जायब किसानक लेल एकटा नव संकट बनि कऽ आयल।

प्रशासनिक सुस्ती आ भ्रष्टाचार: विधानसभा मे सदस्य सभ (पंडित बुद्धिनाथ झा, देव नारायण सिंह आदि) सिंचाई विभागक सुस्ती आ ओवरसियर सभक भ्रष्टाचार कऽ कड़ा आलोचना कयलनि। लोकक कहनाइ छल जे सरकार मात्र कागजी योजना बनाबैत अछि मुदा जमीन पर काज नै भऽ रहल अछि।

नारायणी स्टीमर दुर्घटना: १८ नवम्बर १९४९ कऽ पटना कऽ रानीघाट लग ७०० यात्री सँ भरल 'नारायणी' स्टीमर दुर्घटनाग्रस्त भऽ गेल, जाहिमे लगभग ३०० लोकक मृत्यु भऽ गेल।

ई अध्याय देखबैत अछि जे आजादी कऽ दू साल बादो बिहारक लोक बाढ़ि सँ सुरक्षा आ जीविकाक लेल सरकार कऽ मुँह ताकि रहल छल, मुदा सरकारी तंत्रक सुस्ती ओकर दुःख कऽ कम नै भऽ देलक।

"1950: राहत बाँटना असल समस्या को छू भी नहीं पाता": कोसी परियोजना आ कुतुबमीनार क चर्चा: १९५० क शुरुआतमे कोसी परियोजनाक भावी स्वरूप पर बड्ड चर्चा भेल । पूनाक इंजीनियर प्राणरंजन गुहा पटनामे कहलनि जे कोसी पर दिल्लीक कुतुबमीनार सँ तीन गुणा ऊँच छहर बनत, जाहि सँ कोसी क्षेत्रक बाढ़ि समस्याक स्थायी समाधान भऽ जायत ।

गंडक परियोजनाक माँग: कोसी परियोजनाक देखैत गंडक क्षेत्रक लोक सेहो सरकार पर दबाव बनेबाक शुरू कएलनि । १६ जनवरी १९५० कऽ बिहार विधानसभामे गंडक परियोजना कऽ सेहो मंजूरी देल गेल, मुदा संसाधनक कमी सँ ई काज अटकि रहल ।

राज्यपालक चिन्ता आ 'विलाप देश': तत्कालीन राज्यपाल माधव श्रीहरि अणे २९ जनवरी १९५० कऽ पटनामे भेल इंजीनियर सभक सम्मेलनमे कहलनि जे उत्तर बिहार बाढ़िक कारण 'आँसूक

धरती' आ 'विलाप देश' बनि गेल अछि । ओ कहलनि जे कोसी, कमला आ बागमतीक बाढ़ि सँ बड़का इलाका रेगिस्तान सन भऽ गेल अछि ।

केन्द्र सँ आर्थिक मदद मे कमी: १६ फरवरी १९५० कऽ राज्यपाल विधानमंडलमे कहलनि जे केन्द्र सरकार अपन हाथ तंग होयबाक कारणेँ राज्यक देल जाय बला आर्थिक सहायता सँ अपन आश्वासन वापस लऽ लेलक अछि । ई बिहारक विकास योजना सभ लेल एकटा पैघ झटका छल।

खाद्यान्न आत्मनिर्भरता क लक्ष्य: सरकारक लक्ष्य छल जे १९५१ कऽ अन्त धरि खाद्यान्नक कमी कऽ पूरा कऽ लेल जाय । गानब वाली क्षेत्र (गन्ना क्षेत्र) मे नलकूप सँ सिंचाईक पैघ योजना पर विचार कएल जा रहल छल ।

राहत क असलियत: अध्याय क शीर्षकक अनुसार, लेखकक माननाय अछि जे बाढ़ि कऽ समय मात्र 'राहत' (रिलीफ) बाँटब समस्याक असली जड़ि कऽ नै छुबैत अछि । जँ एक दिस सूखा सँ लोक बेहाल छल तऽ दोसर दिस बाढ़ि कऽ कारण सुक्खा जमीन लेल लोक तरसि रहल छल ।

ई अध्याय देखबैत अछि जे १९५० मे सरकार पैघ-

पैंघ छहर आ बिजलीक सपना देखाय रहल छल, मुदा धरातल पर आर्थिक तंगी आ प्राकृतिक आपदाक बीच लोकक संघर्ष जारी छल।

"1951: हमदर्दी के सन्देश नहीं, अनाज दीजिए": भीषण सुखाड़ आ अनाजक कमी: १९५० क उत्तरार्द्ध सँ शुरू भेल सुखाड़ १९५१ मे विकराल रूप धऽ लेलक। बिहारक अधिकांश हिस्सा सुखाड़क चपेटमे छल, जाहिसँ अनाजक पैदावार बड्डु कम भऽ गेल। लोकक स्थिति एतेक खराब छल जे ओ 'हमदर्दी' (सहानुभूति) क बदलामे सीधा 'अनाज' क माँग कय रहल छलाह।

अनाजक लेल बाहरी निर्भरता: भारत ओहि समय खाद्यान्नक लेल बाहरी देशक मदद पर निर्भर छल। अमेरिका सँ अनाज मँगाबय क बात चलि रहल छल, मुदा ओकर शर्त सभ आ पहुँचबय मे देरी लोकक धैर्य तोडि रहल छल।

सिंचाई आ सरकारी योजनाक विफलता: सरकार 'अधिक अन्न उपजाओ' योजनाक तहत कुआँ, आहर, पइन आ लघु सिंचाई पर जोर दैत छल, मुदा भ्रष्टाचार आ प्रशासनिक सुस्तीक कारण ई सभ योजना जमीन पर विफल भऽ रहल छल। किसान सभक कहनाइ छल जे कागजी योजना सँ पेट नै भरत।

कोसी आ गंडक परियोजनाक सुस्त रफ्तारः *कोसी परियोजना कऽ लऽ कऽ लोकमे जे उत्साह छल, ओ धीरे-धीरे निराशा मे बदलि रहल छल। केन्द्र सरकारक आर्थिक तंगीक कारण बराहक्षेत्र छहरक काज आगाँ नै बढ़ि पाबि रहल छल। गंडक परियोजना सेहो मात्र सर्वेक्षण धरि सीमित छल।*

राहत कार्य आ भ्रष्टाचारः *सुखाड़ प्रभावित इलाका मे राहत कार्य तँ शुरू कयल गेल, मुदा ओ अपर्याप्त छल। अनाजक कालाबाजारी आ राशन कऽ वितरण मे अनियमितता सँ आम लोकक दुःख आर बढ़ि गेल छल।*

राजनीतिक आ सामाजिक परिदृश्यः *१९५१ मे भारतक पहिल आम चुनावक तैयारी सेहो चलि रहल छल। नेता सभ गाम-गाम जा कऽ आश्वासन दऽ रहल छलाह, मुदा भुखमरीक स्थिति देखि कऽ लोक मे आक्रोश छल।*

ई अध्याय १९५१ मे बिहारक ओहि कष्टदायक समयक चित्रण करैत अछि जाहिमे प्राकृतिक आपदा (सुखाड़) आ प्रशासनिक विफलता मिलि कऽ आम जनमानस कऽ जीवन कऽ दूभर कऽ देने छल। लोकक लेल 'अनाज' सबसँ पैघ प्राथमिकता बनि गेल छल।

"1952: राजधानी भी नहीं दे पा रही थी जरूरतमन्दों को काम": लगातार सुखाड़क प्रभाव: *१९५२ मे बिहार लगातार तेसर साल भीषण सुखाड़क सामना कऽ रहल छल। खाद्यान्नक कमी एतेक बेसी छल जे राजधानी पटना धरि जरूरतमन्द लोककेँ काज आ अनाज उपलब्ध नै करा पाबि रहल छल।*

अनाजक संकट आ विदेश पर निर्भरता: *भारत ओहि समय अपन खाद्यान्नक लेल बाहरी देशक मदद पर निर्भर छल। सरकारी स्तर पर अनाजक वसूली (Procurement) कऽ कड़ाई सँ लागू कयल गेल छल, मुदा ओ पर्याप्त नै छल।*

प्रशासनिक सुस्ती आ बेरोजगारी: *अध्यायमे देखायल गेल अछि जे सुखाड़क कारण खेती ठप छल आ लोकक लग रोजगारक कोनो साधन नै छल। सरकार द्वारा शुरू कयल गेल राहत कार्य (Relief Works) लोकक संख्याक तुलनामे बहुत कम छल।*

कोसी आ गंडक परियोजनाक स्थिति: *कोसी आ गंडक सन पैंघ परियोजना सभ पर गम्भीरता सँ चर्चा तऽ भऽ रहल छल, मुदा धरातल पर कोनो*

पैंघ प्रगति नैं भेल छल। कोसी क्षेत्रक लोकमे असुरक्षा आ निस्सहाय होमय कऽ भावना बढ़ि रहल छल।

राजनैतिक परिदृश्यः १९५२ मे भेल पहिल आम चुनावक बाद नव सरकारक गठन भेल छल। लोककेँ आशा छल जे अपन चुनल भेल सरकार ओकर दुःख दूर करत, मुदा आर्थिक तंगी आ प्राकृतिक आपदाक कारण स्थिति बेकाबू छल।

विस्थापितक पीड़ाः बाढ़ि आ सुखाड़क कारण जे लोक विस्थापित भेलाह, हुनका लेल सुरक्षित स्थान पर बसब आ जीविका खोजब एकटा पैंघ चुनौती छल।

ई अध्याय १९५२ मे बिहारक ओहि सामाजिक आ आर्थिक संकट कऽ चित्रण करैत अछि जाहिमे प्रशासन आम लोकक बुनियादी जरूरत (काज आ अनाज) पूरा करय मे विफ़ल भऽ रहल छल।

स्वतंत्रताक बादक बिहारक जल संकटः दिनेश कुमार मिश्रक 'पानी का शाप' (१९४७–१९५२)

दिनेश कुमार मिश्र द्वारा 'पानी का शाप' मे कयल गेल ऐतिहासिक दस्तावेज १९४७ सँ १९५२ धरि गंगाक मैदानक सामाजिक-तकनीकी आ राजनीतिक जटिलताक एकटा महत्वपूर्ण भंडार

अछि। १९४७ सँ १९५२ क वर्ष एकटा परिवर्तनकारी युगक प्रतिनिधित्व करैत अछि जइमे नवजात भारतीय राज्य पारंपरिक कृषि भेद्यता आ आधुनिक इंजीनियरिंग महाकांक्षाक बीच सामंजस्य बिठाएबाक प्रयास कयलक। बिहार विधान सभाक बहस, तत्कालीन समाचार पत्रक विवरण आ मौखिक इतिहासक गहन परीक्षणक माध्यम सँ बिहारक बाढ़ि आ सुखाड़क कथा कोनो अलग-अलग प्राकृतिक आपदाक रूप मे नहि, वरन् एकटा बदलैत परिदृश्य आ औपनिवेशिक परंपरा सँ विरासत मे भेटल शासन व्यवस्थाक बीचक निरंतर संघर्षक रूप मे उभरैत अछि।

ऐतिहासिक आधार आ १९४६ क पूर्वगामी

१९४७–१९५२ धरि क निष्कर्ष कें बुझबाक लेल, मिश्रा द्वारा आपदाक ऐतिहासिक आवृत्ति कें बुझब आवश्यक अछि। बिहारक भूगोल कें गंगा नदी दू भाग मे बाँटैत अछि—उत्तर आ दक्षिण। उत्तर बिहार कोशी, गंडक आ बागमती सन अस्थिर आ गाद सँ भरल हिमालयी नदी सँ परिभाषित अछि, तहिना दक्षिण बिहार फल्गु आ पुनपुन सन वर्षा आधारित प्रणाली सँ, जतय अचानक बाढ़ि आ दीर्घकालिक सुखाड़क खतरा रहैत अछि।

ऐतिहासिक रिकॉर्ड सँ पता चलैत अछि जे १७७० सँ १९४६ क बीच पूर्णिया, गया आ भागलपुर सन प्रमुख जिला मे अकाल वा बाढ़िक निरंतर चक्र छल। अकेले गया मे १८६६, १८७४, १८९६ आ १९३०-४० क दशक मे समय-समय पर भीषण सुखाड़ पड़ल छल। ओहिना, दरभंगा मे १९२६ सँ १९४३ धरि प्रतिवर्ष बाढ़ि दर्ज कयल गेल, जे ओहि व्यवस्थागत अस्थिरता कें उजागर करैत अछि जकरा स्वतंत्रताक बादक सरकार कें ठीक करबाक जिम्मेदारी देल गेल छल।

१९४६ क गया बाढ़ि आ पितृपक्ष त्रासदी

१९४७ क स्वतंत्रता युगक लेल तात्कालिक मनोवैज्ञानिक आ प्रशासनिक पृष्ठभूमि १७ सितम्बर, १९४६ क विनाशकारी बाढ़ि छल। मिश्रा गयाक निवासीक लेल ओहि घटना कें "ब्रिटिश शासनक अंतिम स्मृति" क रूप मे चिन्हित करैत छथि। फल्गु नदी आधी राति मे तट कें तोड़ि कऽ शहर मे पसि गेल छल, जतय पितृपक्ष मेलाक लेल १,००,००० सँ बेसी तीर्थयात्री जुटल छलाह। कलेक्ट्रेट मे २ सँ ३ फीट पानि पसि गेल छल आ मानपुर आ बुनियादगंज सहित कतेको मोहल्ला कें तबाह कऽ देलक।

ओहि कालक मौखिक गवाही, जेना जे ९२ वर्षीय पुरोहित कृतिनाथ गर्डाक अछि, बतावैत अछि जे घरक छप्पड़ पर चारि-पाँच तीर्थयात्री कें लऽ कऽ नदीक धार बहैत जा रहल छल। स्थानीय पंडा आ निवासी रस्सी आ बाँसक प्रयोग कऽ कऽ लगभग ९०० लोक कें बचौलनि, मुदा आधिकारिक आ अनौपचारिक अनुमानक अनुसार सौ सँ बेसी लोकक ज्यान गेल छल। ऐ घटना सँ नदी नियंत्रणक क्षेत्र मे ओहि तात्कालिकता कें जन्म देलक जे अगिला एक दशक धरि बिहारक राजनीति पर हावी रहल।

१९४७: आजादी, साम्प्रदायिक संघर्ष, आ अन्नक कमी

१९४७ मे जखन सत्ता हस्तांतरण भेल, त आजादीक उत्साह खंडित कृषि अर्थव्यवस्थाक कड़ुआ वास्तविकता सँ दब गेल छल। मिश्रा नोट करैत छथि जे यद्यपि कांग्रेस पार्टी अप्रैल १९४६ मे प्रशासनिक नियंत्रण लऽ लेलक, मुदा शासनक पूर्ण भार अगस्त १९४७ मे साम्प्रदायिक दंगा आ अन्नक संकट क बीच पड़ल। चावलक थोक मूल्य, जे १९४१ मे ५ सँ ९ रुपया प्रति मन छल, अगस्त १९४७ धरि २३ रुपया प्रति मन धरि पहुँच गेल छल।

"अधिक अन्न उपजाओ" अभियान आ आर्थिक दबाव

१९४७ मे बिहार एकटा खाद्य-कमी वाला प्रांत छल, जे प्रतिवर्ष लगभग ३,५०,००० टन चावल आ गहुमक आयात करैत छल। "अधिक अन्न उपजाओ" (Grow More Food) अभियान, जे मूल रूप सँ १९४२ मे युद्धक लेल शुरू भेल छल, आजादीक बाद तेज कऽ देल गेल। राज्य सरकार १९५२ धरि अतिरिक्त ३.७ लाख टन अनाज पैदा करबाक लक्ष्य रखलक। ऐ योजनाक बावजूद, दूरदराजक इलाका मे भोजन वितरण एकटा बड़का समस्या छल। गंगा पर पुल नहि होयबाक कारणे उत्तर बिहार मे रेल आ स्टीमर सँ आपूर्ति करय पड़ैत छल, जइमे हड़ताल आ १९४६ क बाढ़ि सँ मोकामा घाट कें भेल क्षति सँ अक्सर बाधा पड़ैत छल।

निर्मली सम्मेलन आ कोशी ऊँच छहर क सपना

अप्रैल १९४७ बिहारक नदी प्रबंधनक इतिहास मे एकटा महत्वपूर्ण क्षण छल। निर्मली (सुपौल) मे ६०,००० बाढ़ि पीड़ित, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आ बिहारक मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंहक उपस्थिति मे एकटा पैघ समाधान प्रस्तावित कयल गेल: नेपालक बराहक्षेत्र मे ८०० फीट ऊँच छहर। ऐ

छहर सँ ३० लाख एकड़ जमीनक सिंचाई आ ३,३०० मेगावाट बिजली पैदा करबाक कल्पना कयल गेल छल, जाहि सँ "कोशीक अभिशाप" समाप्त भऽ जायत। मुदा, एकर लागत—बाद मे १.७७ अरब रुपया अनुमानित—आ भूकंपीय क्षेत्र मे निर्माणक तकनीकी जटिलताक कारणे देरी आ जांचक एकटा लंबा दौर शुरू भऽ गेल।

१९४७ क बाढ़ि: सहरसा आ दरभंगा

जखन कि उच्च-स्तरीय इंजीनियरिंग चर्चा चलि रहल छल, १९४७ क मानसून कोशीक अस्थिरताक याद दिया देलक। जुलाई मे, बाढ़ि सँ मधुबनी आ सहरसाक अनुमंडल डूबि गेल। निर्मली, डगमारा आ सुपौल सन इलाका मे १० लाख सँ बेसी लोक पानि सँ घेरायल छलाह। स्थानीय विधायक राजेन्द्र मिश्र सरकारक आलोचना कयलनि जे पर्याप्त नाव आ दवाई क व्यवस्था नहि कयल गेल अछि, आ लोक साँप आ घड़ियाल क बीच "मचान" पर रहय लेल मजबूर छथि।

१९४८: स्वतंत्र भारतक पहिल प्रान्तीय जलप्रलय

वर्ष १९४८ मिश्रा द्वारा स्वतंत्र भारतक आपदा प्रबंधन बुनियादी ढांचक पहिल बड़का परीक्षाक रूप मे प्रलेखित अछि। अगस्त आ सितम्बर मे

लगातार भारी वर्षा सँ पूरा प्रांत मे आपदा आबि गेल, जाहि सँ घाघरा, गंडक, गंगा आ कोशी सहित प्रायः सभ प्रमुख नदी बेसिन प्रभावित भेल।

सारण आ छपरा मे तबाही

अगस्त १९४८ मे सारण जिला अभूतपूर्व विनाशक सामना कयलक। घाघरा आ गंगाक ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र मे भारी वर्षा सँ नदीक स्तर अचानक बढ़ि गेल। छपरा शहर कें बचेबाक लेल बनायल गेल नैनी बान्ह कतेको जगह सँ टूटि गेल। जिला कलेक्टकरक रिपोर्टक अनुसार, १,००० सँ बेसी गाम पानि मे डूबि गेल आ ७०० गाम सम्पूर्ण रूपेँ सँ बर्बाद भऽ गेल।

मिश्राक शोध मे शामिल व्यक्तिगत विवरण संकटक एकटा स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करैत अछि। सीतादियरा (जयप्रकाश नारायणक गाम) क निवासी उदित राय याद करैत छथि जे गामक सभटा २७ टोला डूबि गेल छल, जइ सँ हुनक परिवार कें नाव सँ छपरा भागय पड़ल। सोनपुर मे रेलवे स्टेशन शरणार्थी शिविर बनि गेल छल। आर्थिक प्रभाव बड़का छल: ५०,००० एकड़ मे लागल भदई फसल बर्बाद भऽ गेल आ २५,००० घर ध्वस्त भऽ गेल।

१९४८ क सारण बाढ़िक आंकड़ा	सांख्यिकीय मूल्य
प्रभावित गाम	१,००० +
क्षतिग्रस्त / ध्वस्त घर	२५,०००
फसलक नुकसान (भदई)	५०,००० एकड़
टूटल बान्ह	नैनी, मेहरा, बरुआ, कौड़ीमल

तालिका : सारण जिलाक लेल १९४८ क बाढ़ि क आंकड़ा

हाजीपुर आ मुजफ्फरपुरक संवेदनशीलता

मुजफ्फरपुर जिला मे गंडक आ बागमती नदी हाजीपुर अनुमंडल मे व्यापक क्षति पहुँचलक। सितम्बर १९४८ मे सुकुमारपुर मे एकटा नाव दुर्घटना मे ५४ लोक आ ६ टा जानवरक मृत्यु भऽ गेल। गंगा १३ दिन धरि अपन उच्चतम स्तर पर रहल, जाहि सँ ३२५ गाम डूबि गेल आ १७,००० घर बर्बाद भऽ गेल। सरकारी राहत प्रयास प्रशासनिक घर्षणक कारणे अक्सर बाधित भेल; मिश्रा करनौती गामक एकटा घटनाक उल्लेख

करैत छथि जतय एकटा मजिस्ट्रेट पर गामक लोक हमला कऽ देलनि, कियाक त गामक लोकक डर छल जे जल निकासीक लेल बान्ह काटला सँ हुनकर खेत डूबि जायत।

सहरसा उप-जिला आ तिलावे नदी

सहरसा मे १९४८ क बाढ़ि जून मे कोशी आ ओकर छोडल धारा तिलावे क कारणे जल्दी आबि गेल। जखन नदी अचानक पूर्व दिशामे मुड़ि गेल त सहरसा शहरक रक्षा कयल जाय वाला बान्ह टूटि गेल। सहरसा आ मधेपुराक बीच रेल सेवा बंद भेला सँ शहर अलग-थलग पड़ि गेल छल। मिश्रा १९४८ क "नाव संकट" कें उजागर करैत छथि, जतय सरकार कें फँसल लोक कें निकालय लेल निजी नाव आ आई.जी.एन. कंपनीक स्टीमर कें भाड़ा पर लेबय पड़ल।

१९४८ क विधायी बहस: बान्हक नीति

१९४८ क बाढ़ि क बाद, बिहार विधान सभा मे नदी नीतिकें लऽ कऽ गरमागरम बहस भेल। दीप नारायण सिंह सन सदस्य तर्क देलनि जे बाढ़ि कें सम्पूर्ण रूपेँ सँ नहि रोकल जा सकैत अछि आ प्रतिवर्ष आपदाक प्रतीक्षा करबाक बदला राहतक

लेल एकटा स्थायी "असालतन सिरिश्ता" (संस्थागत तंत्र) क आवश्यकता अछि।

सिंचाई मंत्री रामचरित्र सिंह एकटा सूक्ष्म प्रतिक्रिया देलनि जे मिश्राक अनुसार राज्यक आंतरिक संघर्षक प्रमाण अछि। सिंह स्वीकार कयलनि जे उत्तर बिहारक नदी सभ भौगोलिक रूप सँ युवा अछि आ बान्ह बना कऽ ओहि मे "हस्तक्षेप" कयला सँ गाद जमा होयबाक कारणे नदीक सतह ऊपर उठि जायत अछि। ओ कहलनि जे हुनकर नीति बान्ह कें सीमित रखबाक छल, मुदा राजनीतिक दबाव एतेक छल जे ओ अकेले सारण मे १४ टा नव बान्हक मंजूरी दऽ चुकल छलाह।

१९४९: विधायी निराशा आ छोटका योजनाक विफलता

वर्ष १९४९ मे ई एहसास भेल जे सिंचाई आ बाढ़ि नियंत्रणक छोटका योजना सभ अपेक्षाक अनुरूप काम नहि कऽ रहल अछि। १९४९-५० क बजट बहस सँ पता चलैत अछि जे निर्वाचित प्रतिनिधि सिंचाई आ कृषि विभागक कार्यक्षमता सँ बहुत असंतुष्ट छलाह।

बाया नदी योजनाक बहस

१९४९ क बहसक एकटा बड़का हिस्सा बाया नदी पर केंद्रित छल, जे गंडकक एकटा धारा अछि। चम्पारण, मुजफ्फरपुर आ मुंगेरक किसान १८९४ सँ बायाक जल निकासी क्षमता कें पुनः बहाल करबाक मांग कऽ रहल छलाह। नदी गाद आ अवैध मछली पकड़य वाला जाल सँ भरि गेल छल, जाहि सँ १३४ 'चौर' मे जलजमावक समस्या भऽ गेल छल।

विधान सभा मे जय नारायण प्रसाद दुःख व्यक्त कयलनि जे "इंजीनियर सभ अयलाह आ गेलाह, मुद्दा बाया योजना फाइल मे बंद अछि"। ई मिश्राक काम मे एकटा बार-बार आबय वाला विषय अछिः तकनीकी सर्वेक्षण आ धरातलीय कार्यान्वयनक बीचक दूरी।

किउल पुलक पतन आ पूर्वी बिहार

जुलाई १९४९ मे, दक्षिणक जलग्रहण क्षेत्र मे भारी वर्षा सँ जमुई मे किउल नदी उमड़ि गेल, जाहि सँ सड़क पुलक एकटा बड़का हिस्सा बह गेल। ऐ घटना सँ जमुई अनुमंडल अलग-थलग पड़ि गेल आ अचानक बाढ़िक लेल राज्यक बुनियादी ढांचक भेद्यता उजागर भऽ गेल। ओहिना, पटना जिला मे शहरक दक्षिण भाग मे जल निकासी क

व्यवस्था नहि भेला सँ ३०,००० बीघा जमीन डूबि गेल।

कोशी ऊँच बाँध परियोजनाक ठहराव

जखन कि स्थानीय बाढ़ि जारी छल, कोशी ऊँच बाँध परियोजना १९४९ मे तकनीकी गतिरोध मे फँसि गेल। अमेरिकी विशेषज्ञ डॉ. सैवेज बराहक्षेत्र क दौरा कयलनि आ भूकंपक अत्यधिक खतरा पर जोर देलनि। जांच सँ पता चलल जे ऐ स्थान पर दुनियाक सभ सँ ऊँच छहर बनायबाक लेल दशक धरि प्रारंभिक अध्ययनक आवश्यकता पड़त। ऐ तकनीकी सावधानी सँ बिहारक राजनीतिक नेता निराश भेलाह, कियाक त हुनका पर बाढ़ि सँ प्रभावित लोक कें प्रगति देखयबाक भारी दबाव छल।

१९५०: भीषण सुखाड़क शुरुआत आ "हथिया" क विफलता

१९५० क निष्कर्ष बिहारक जल कथामे एकटा नाटकीय बदलाव कें दर्शाबैत अछि। बेसी पानि कऽ बाद, अब राज्य "हथिया" (मानसून क अंतिम वर्षा) क पूर्ण विफलताक कारणे भीषण सुखाड़क शिकार भऽ गेल।

"अधिक अन्न उपजाओ" कथाक पतन

१९५० धरि, १९५२ धरि आत्मनिर्भरताक वादा टूटय लागल। सुखाड़ सँ दक्षिण बिहारक सभ जिला आ उत्तर बिहारक एकटा पँघ हिस्सा प्रभावित भेल। गया आ पलामू सन जिला मे आहर-पइन प्रणाली सूखि गेल छल कियाक त नदी मे पानि एतेक कम छल जे ओकरा मोड़ल नहि जा सकैत छल।

विकास मंत्री डॉ. सैयद महमूद विधान सभा मे सरकारक बचाव कयलनि आ दावा कयलनि जे आयात १९४६ क ३,५०,००० टन सँ घटि कऽ १९४८ मे मात्र ४०,००० टन रहि गेल छल। मुदा, १९५० क सुखाड़ ऐ सभ लाभ कें समाप्त कऽ देलक, जाहि सँ राज्य कें फेर सँ केंद्र सँ सहायता आ अंतर्राष्ट्रीय अनाज आयात करय लेल मजबूर होय पड़ल।

जलमग्नता बनाम सुखाड़: विरोधाभासक राज्य

एकटा अजीब विरोधाभास मे, जखन कि अधिकांश राज्य सुखाड़क सामना कऽ रहल छल, कतेको हिस्सा मे विनाशकारी बाढ़ि छल। अगस्त १९५० मे बिहारशरीफ आ अस्थावाँ अनुमंडल मे जिराइन आ बलवैन नदी सँ बाढ़ि आबि गेल। तीस गाम डूबि गेल आ स्थानीय सड़क नेटवर्क

चारि जगह सँ टूटि गेल। मिश्रा कहैत छथि जे ई "दोहरी आपदा" बिहारक परिदृश्य क एकटा पहचान बनि गेल: एकहि मौसम मे कतहु अकाल छल त कतहु लोक डूबि रहल छलाह।

१९५१: अकालक खतरा आ कोशीक नियन्त्रण

वर्ष १९५१ कें मिश्रा गम्भीर मानवीय चिंता आ इंजीनियरिंग नीति मे एकटा पैघ बदलाव क वर्ष क रूप मे प्रलेखित करैत छथि। १९५० मे शुरू भेल सुखाड़ तेज भऽ गेल, जइ सँ कतेको जिला मे अकाल सन स्थिति बनि गेल।

नेहरूक हवाई सर्वेक्षण आ बराज योजनाक जन्म

२० अगस्त, १९५१ कें प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू बाढ़ि सँ प्रभावित सहरसा क्षेत्रक हवाई सर्वेक्षण कयलनि। चहुँदिश पानि आ मचान पर रहैत लोकक दुर्दशा देखि कऽ नेहरू कथित तौर पर घोषणा कयलनि, "ऐ बौंनी नदी कोशीक दुर्व्यवहार अब बर्दाश्त नहि कयल जा सकैत अछि। हमरा ओकरा अब नियंत्रित आ वश मे करय पड़त"।

ऐ राजनीतिक हस्तक्षेप सँ तकनीकी गतिरोध टूटि गेल। पश्चिम बंगाल आ केंद्र सरकारक इंजीनियर

सभक एकटा समिति बराहक्षेत्र ऊँच बाँध कें तात्कालिक भविष्यक लेल आर्थिक आ तकनीकी रूप सँ "असंभव" घोषित कऽ देलक। ओकर बदला मे, ओ सभ "कोशी योजना" प्रस्तावित कयलनि, जे भीमनगर मे एकटा बराज आ नदीक दुनू कात १५० किलोमीटर बान्ह पर केंद्रित छल। मिश्रा नोट करैत छथि जे ई मतदाता कें राहत देबाक लेल एकटा "अति-तकनीकी" निर्णय छल, यद्यपि विदेशी विशेषज्ञ चेतावनी देने छलाह जे बान्ह सँ अंततः नदीक सतह ऊपर उठि जायत।

१९५१ क जनगणना आ कृषि संकट

१९५१ क जनगणनाक समय अनाजक भारी कमी छल। भागलपुर आ अमरपुर सन जिला मे किसान एतेक हताश छलाह जे ओ अगिला मौसमक बुआईक लेल राखल बीज खा गेल छलाह। राज्य सरकार कें भूख सँ होय वाला मृत्यु कें रोकय लेल पैंघ स्तर पर "उचित मूल्यक दुकान" खोलय पड़ल आ 'तकावी' (कृषि) ऋण बाँटय पड़ल।

१९५२: पहिल पंचवर्षीय योजना आ नीतिक स्थिरीकरण

वर्ष १९५२ मे भारत मे विधिवत पहिल पंचवर्षीय योजनाक शुरुआत भेल, जइ मे कृषि आ सिंचाई

कें राष्ट्रीय विकासक आधार मानल गेल। बिहार मे, ऐ काल मे नदी प्रबंधनक ओहि रणनीतिक स्थिरीकरण भेल जे अगिला ५० वर्ष धरि राज्य कें परिभाषित करय वाला छल।

बान्हक संस्थाकरण

१९५२ धरि, बान्ह बनायल जाय वा नहि, ऐ पर बहस काफी हद धरि निर्माणक पक्ष मे समाप्त भऽ गेल छल, यद्यपि १९४८ क विधान सभा बहस मे कतेको पर्यावरणीय चेतावनी देल गेल छल। गंडक परियोजना, जकर उद्देश्य सारण आ चम्पारणक एकटा पैंघ हिस्सा कें सिंचित करब छल, औपचारिक रूप सँ प्रस्तावित कयल गेल। कोशी बराज अब सपना नहि वरन् एकटा बजटीय प्राथमिकता छल।

निरंतर संवेदनशीलता

योजना बनबाक बावजूद, औसत किसानक लेल जमीनी वास्तविकता अंधकारमय रहल। मिश्राक निष्कर्ष बतावैत अछि जे १९५२ मे राज्यक राजधानी पटना सेहो सुखाड़ सँ प्रभावित मजदूर सभ कें काम देबा मे संघर्ष कऽ रहल छल। "राहत सिंड्रोम" (Relief Syndrome)—मिश्राक एकटा शब्द जे सामुदायिक आत्मनिर्भरता सँ

सरकारी सहायता पर पूर्ण निर्भरता मे बदलाव कें वर्णन करैत अछि—सम्पूर्ण रूपेँ सँ जड़ि जमा लेलक।

स्वदेशी ज्ञानक हाशियाकरण: "विशेषज्ञ" इंजीनियर आ बाढ़िक मैदान मे रहय वाला "सामान्य लोक" क बीच एकटा स्पष्ट विभाजन छल। सदियों सँ बिहारक समुदाय मचान, बाँसक कटाव नियंत्रण आ आहर-पइन प्रणालीक माध्यम सँ "बाढ़ि सहनशीलता" (Flood Tolerance) क अभ्यास करैत छलाह। आजादीक बाद, राज्य औपनिवेशिक हाइड्रोलिक परंपरा पर आधारित "बाढ़ि प्रतिरोध" (Flood Resistance) मॉडल अपना लेलक। नदी कें बान्हक बीच कैद कऽ कऽ राज्य समुदायक नदी पर "सांस्कृतिक स्वामित्व" कें खत्म कऽ देलक आ नदी कें उर्वरताक स्रोत सँ आतंकक स्रोत मे बदलि देलक।

राहतक राजनीतिक अर्थव्यवस्थाक उदय: मिश्रा १९४७-१९५२ क काल कें ओहि युग क रूप मे चिन्हित करैत छथि जखन "राहत" एकटा राजनीतिक उपकरण बनि गेल। बाढ़िक वार्षिक अनुष्ठान सँ एकटा "राहत सिंड्रोम" पैदा भेल जतय ध्यान भेघताक मूल कारण—जेना बाया आ तिलावे सन प्राकृतिक धाराक गाद जमा होयब—

कें दूर करबाक बदला अनाज आ कपड़ा वितरण पर रहल। बाया परियोजना सन योजनाक सुस्ती सँ पता चलैत अछि जे राहत अक्सर जटिल हाइड्रोलॉजिकल बहालीक तुलना मे एकटा सरल राजनीतिक रास्ता छल।

"तकनीकी समाधान" क मिथक: १९५१ मे ऊँच छहर सँ बराज योजना मे बदलाव एकटा मौलिक समझौता छल। ई टिकाऊ नदी प्रबंधनक बदला तात्कालिक बाढ़ि "नियंत्रण" कें प्राथमिकता देलक। मिश्राक विश्लेषण सुझाव दैत अछि जे ऐ निर्णय सँ कोशी एकटा "गाद सँ भरल टाइम बम" बनि गेल, कियाक त बान्ह नदी कें अपन गाद मैदान मे जमा करय सँ रोकलक, जइ सँ नदीक सतह आसपासक जमीन सँ ऊपर उठय लेल मजबूर भऽ गेल।

"शाप" क निर्माण: *दिनेश कुमार मिश्रक 'पानी का शाप' सँ १९४७ सँ १९५२ धरि क ऐतिहासिक निष्कर्ष एकटा लचकदार बिहार बनायबाक हाथ सँ निकलल अवसर कें रेखांकित करैत अछि। राज्य पारंपरिक आ विकेंद्रीकृत जल प्रबंधन प्रणालीसँ दूर भऽ गेल जे गंगाक मैदानक अस्थिर प्रकृतिक् अनुरूप छल। ओकर बदला मे, ई एकटा ऊपर सँ थोपल गेल आ बान्ह सँ भरल*

बुनियादी ढांचा तैयार कयलक जे "नियंत्रण" क वादा त कयलक मुदा अंततः विनाशकारी दरार आ जलजमावक एकटा अंतहीन चक्र दऽ देलक।

१९४७-१९५२ क वर्ष आधुनिक बिहार बाढ़ि संकट क लेल "गर्भाधान काल" (Gestation Period) छल। १९४० क दशकक अंत मे अनाजक कमी आ १९५० क दशकक शुरुआत मे अकालक खतरा ओहि इंजीनियरिंग हस्तक्षेप कें नैतिक आ राजनीतिक औचित्य देलक जे कतेको लोक कें अल्पकालिक सुरक्षा त देलक, मुदा लाखो अन्य लोकक लेल स्थायी हाइड्रोलॉजिकल जोखिम पैदा कऽ देलक। १९५२ क अंत धरि, "पानीक शाप" अब मात्र एकटा प्राकृतिक घटना नहि रहल; ई बिहार राज्यक एकटा ढांचागत विशेषता बनि गेल छल, जे माटिक दीवार आ अपन ताकतवर नदीक ऊपर उठैत सतह सँ परिदृश्य पर अंकित भऽ गेल छल।

"1953: इस साल बड़े हों या छोटे, सब रिलीफ लेने को तैयार थे": बाढ़ि क भीषणता आ बदलैत मानसिकता: १९५३ क वर्ष बिहारक लेल बड्ड कष्टदायक छल । पहिने जे मध्यम वर्ग वा स्वाभिमानी किसान रिलीफ (राहत) लेब अपमान मानैत छलाह, ऐ सालक भीषण बाढ़ि आ भूख ओकरा सभकेँ सेहो विवश कऽ देलक । छोट होथि

वा बड़, सब कियो सरकारी रिलीफ लेबय लेल तैयार देखल गेलाह ।

कोसी आ गंडक परियोजना पर जोरः कोसी नदीक तबाही सँ मुक्ति लेल कोसी परियोजनाक चर्चा ऐ साल अपन चरम पर छल । ५-६ अप्रैल १९४७ क निर्मली सम्मेलनक बाद सँ लोकमे आशा छल, मुदा धरातल पर काजक सुस्त रफ्तार सँ लोकमे व्यग्रता बढ़ि रहल छल । गंडक परियोजनाक लेल सेहो सर्वेक्षणक काज चलि रहल छल ।

प्राकृतिक आपदाक समानान्तर प्रहारः १९५३ मे स्थिति ई छल जे एक तरफ बाढ़ि क पानी तबाही मचा रहल छल तऽ दोसर तरफ सुखाड़क मारि सेहो जारी छल । उत्तर बिहारक नदियाँ (कोसी, कमला, बागमती, गंडक) अपन धारा बदलि कऽ नव-नव इलाका मे पानी भरि रहल छल ।

राहत कार्य आ प्रशासनिक चुनौतीः सरकारक राहत वितरण प्रणाली पर सवाल उठैत रहल । नाव क कमी आ अधिकारी सभक सुस्ती क कारण प्रभावित लोक धरि मदद समय पर नै पहुँचि पाबि रहल छल । सहरसा, दरभंगा, आ मुजफ्फरपुर जिलाक स्थिति सब सँ बेसी गम्भीर छल ।

लोकक मांग आ संघर्ष: *लोक मात्र 'रिलीफ' सँ संतुष्ट नैं छलाह, ओ स्थायी 'जीविकाक साधन' मांगि रहल छलाह । खेती क जमीन जलमग्न भेला सँ बेरोजगारी आ भुखमरीक स्थिति पैदा भऽ गेल छल ।*

लेखकक दृष्टिकोण: *दिनेश कुमार मिश्र स्पष्ट कयने छथि जे कोना आजादीक बादो बिहारक लोक बाढ़ि-सुखाड़क शाप सँ मुक्ति नैं पाबि सकलाह । ओ तत्कालीन समाचार पत्र आ विधानसभक बहसक माध्यम सँ देखौंने छथि जे शासन व्यवस्था आपदा कऽ मुकाबला करय मे कतेक पिछड़ल छल ।*

ई बिहारक ओहि सामाजिक आ आर्थिक वेदनाक दस्तावेज अछि जाहिमे प्रकृति आ प्रशासनक विफलताक बीच आम आदमीक स्वाभिमान सेहो डगमगा गेल छल।

"१९५५: विपत्तियों को झेलना बिहार की पहचान बन चुका है": बिहारक नियति आ १८५४ क बाढ़ि: *अध्याय क शीर्षक स्पष्ट करैत अछि जे १९५४ धरि आबि कऽ बाढ़ि आ सुखाड़ जकाँ प्राकृतिक आपदा सभ बिहारक जीवनक एकटा अभिन्न हिस्सा बनि गेल छल । बुजुर्ग लोक आ सरकार आइयो १९५४ क ओहि भीषण बाढ़ि कऽ*

याद करैत छथि ।

हथिया नक्षत्रक धोखा: १९५४ मे बाढ़ि तऽ भीषण आयल छल, मुदा एकटा विडंबना ई छल जे ओहि साल **हथिया नक्षत्र** मे वर्षा प्रायः नै भेल छल । ऐ कारणेँ रबीक फसल लगभग सम्पूर्ण रूपेँ सँ नष्ट भऽ गेल, जाहिसँ १९५५ क शुरुआती महिना सभ मे अनाजक भारी संकट पैदा भऽ गेल ।

कोसी परियोजनाक सुगबुगाहट: कोसी नदीक तबाही सँ मुक्ति लेल नेपालक बराहक्षेत्र मे ८०० फीट ऊँच छहर बनाबय क चर्चा तऽ बहुत भेल छल, मुदा धरातल पर काजक रफ्तार बड्ड सुस्त छल । १९५४ क बाढ़ि सँ भेल तबाही सँ सरकार पर कोसी नियंत्रण लेल दबाव आर बढ़ि गेल।

बाढ़ि आ सुखाड़क समानान्तर मारि: १९५३ आ १९५४ लगातार बाढ़िक वर्ष रहल छल । बिहारक भौगोलिक स्थिति एहन छल जे एक दिस उत्तर बिहारक नदियाँ तबाही मचा रहल छल तऽ दोसर दिस वर्षाक अनियमितता सँ फसल मारी जा रहल छल ।

प्रशासनिक विफलता आ लोकक संघर्ष: लेखक देखौने छथि जे कोना आपदा क समय मे सरकारी मशीनरी सुस्त पड़ि जाइत छल । राहत वितरण मे

देरी आ भ्रष्टाचार सँ लोकक दुःख कम होमय क बदला बढ़ि जाइत छल।

ऐतिहासिक दस्तावेजक महत्वः ई अध्याय १९५४ क ओहि समयक वास्तविक चित्र प्रस्तुत करैत अछि जाहि मे बिहारक लोक अपन पुरुषार्थ सँ बाढ़ि सँ लड़ि रहल छलाह मुदा शासन व्यवस्था हुनक जरूरत पूरा करय मे पिछड़ल छल ।

ई अध्याय १९५४ मे बिहारक ओहि कष्टदायक समयक गवाह अछि जाहि मे प्रकृति कऽ दोहरा मारि (बाढ़ि आ फेर सुखाड़) आ सरकारी उदासीनता सँ लोकक जीवन बेहाल भऽ गेल छल ।

"1955: बाढ़ि का पानी उन इलाकों में भी पहुँचा जहाँ वह पहले कभी नहीं गया": अभूतपूर्व बाढ़िः १९५५ क बाढ़ि बिहारक इतिहासक एकटा एहन त्रासदी छल जाहिमे पानी ओहि क्षेत्र सभमे सेहो पहुँचि गेल जतय पहिने कहियो बाढ़ि नैं आयल छल । ई बाढ़ि एतेक व्यापक छल जे ई प्रशासनक सभ अनुमान कऽ गलत साबित कऽ देलक।

कोसी परियोजनाक प्रगतिः १९५४ क भीषण बाढ़ि कऽ बाद, १९५५ मे कोसी परियोजना (बान्ह निर्माण) पर काज तेजी सँ शुरू भेल छल । मुदा,

ऐ बीच कोसी अपन धारा बदलि कऽ नव-नव इलाका सभमे तबाही मचौलक।

हथिया नक्षत्रक प्रभावः लेखक उल्लेख कयने छथि जे १९५४ मे हथिया नक्षत्रमे वर्षा नै भेला सँ रबीक फसल नष्ट भऽ गेल छल, जाहि कारणेँ १९५५ क शुरुआती महिना सभमे खाद्यान्नक भारी संकट (अकाल सन स्थिति) पैदा भऽ गेल छल ।

राहत आ प्रशासनिक चुनौतीः सरकारक लेल चुनौती ई छल जे एक दिस तऽ पिछला सालक सुखाड़क कारण अनाजक कमी छल आ दोसर दिस १९५५ क अप्रत्याशित बाढ़ि सँ लाखो लोक बेघर भऽ गेलाह । राहत वितरणक काज मे नाव कऽ कमी आ पहुँचक समस्या मुख्य बाधा छल।

नदियाँ कऽ व्यवहारः कोसीक अलावा कमला, बागमती, आ गंडक नदी सेहो अपन रौद्र रूप देखौलक। बाढ़िक पानी कऽ फैलाव मई सँ लऽ कऽ नवम्बर धरि देखल गेल, जाहिसँ रबीक बुआई मे सेहो देरी भेल ।

लोकक वेदना आ विस्थापनः ऐ अध्याय मे बुजुर्ग लोकक साक्षात्कारक माध्यम सँ ई देखायल गेल अछि जे कोना लोकक पैतृक गाम आ घर नदियाँक धार मे विलीन भऽ गेल । लोक मे

असुरक्षा आ निस्सहाय होमय कऽ भावना बहुत गहीर छल ।

ई अध्याय १९५५ मे बिहारक ओहि कष्टदायक स्थितिक ऐतिहासिक दस्तावेज अछि जतय प्रकृति कऽ अनिश्चितता आ प्रशासनिक तंत्रक संघर्ष कऽ स्पष्ट रूप सँ देखल जा सकैत अछि ।

बिहारक आधुनिक इतिहास मे १९५३ सँ १९५५ धरि क कालखंड जल-विभीषिका आ नीतिगत संक्रमणक एकटा एहन दस्तावेज अछि, जे राज्यक भौगोलिक स्वरूप आ सामाजिक-आर्थिक ढाँचा कए स्थायी रूप सँ प्रभावित कएलक । ई अवधि नहि केवल प्रलयकारी बाढ़िक साक्षी रहल, वरन् ऐ दौरान लेल गेल सरकारी निर्णय—विशेष रूप सँ कोसी आ गंडक नदी पर बान्हक निर्माण—बिहारक भविष्यक लेल वरदान आ अभिशाप दुनू सिद्ध भेल । दिनेश कुमार मिश्रक 'पानी का शाप' आ अन्य आधिकारिक दस्तावेजक गहन अध्ययन सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे ऐ तीन वर्षक दौरान बिहारक विधानमंडल मे भेल बहस, जनताक संघर्ष आ प्रशासनिक विफलताक कथा आजुओ राज्यक बाढ़ि प्रबंधन नीति मे प्रतिध्वनित होइत अछि ।

१९५३: विभीषिकाक पदचाप आ प्रशासनिक अकर्मण्यता

१९५३ क वर्ष बिहारक लेल एकटा दोहरी चुनौती लए कए आयल छल । राज्य पिछला दू वर्ष (१९५०-५१) क भयंकर सुखाड़ सँ उबरबाक प्रयास कए रहल छल, मुदा नियति कए किछु और मंजूर छल । ८ जनवरी १९५३ कए दिल्ली मे खाद्य मंत्री सभक सम्मेलन भेल, जाहि मे प्रधानमंत्री नेहरू खाद्यान्न मे आत्मनिर्भरताक आह्वान कएलनि, मुदा ओहि समय धरि कोनो विशेषज्ञ कए ई अन्दाज नहि छल जे किछुुए मासक बाद उत्तरी बिहारक नदि सभ अन्नक भंडार कए पानि मे डुबा देत ।

१९५३-५४ क बजट आ सिंचाइ योजना सभ

१६ फरवरी १९५३ कए वित्त मंत्री अनुग्रह नारायण सिंह विधानमंडल मे बजट प्रस्तुत कएलनि । ओहि समय सरकारी आँकड़ाक अनुसार, पिछला तीन वर्ष मे राहत कार्य पर १०५९.६० लाख रुपया खर्च भेल छल । सरकारक ध्यान 'अधिक अन्न उपजाओ' अभियान पर छल, जाहि लेल ट्यूबवेल आ लघु सिंचाइ योजना सभ पर जोर देल जा रहल छल । मुदा, विधानमंडल मे मुरली मनोहर प्रसाद जेहन सदस्य सभ चेतावनी दए रहल छलाह जे गंडक परियोजना मे देरी उत्तरी बिहार मे असंतोषक आगि प्रज्वलित कए सकैत अछि ।

राहत मद (१९५०-१९५३)	व्यय (लाख रुपय्या मे)
मुफ्त सहायता (Gratuitous Relief)	१०८.९०
कठिन श्रम योजना (Hard Manual Labor)	१९८.८०
हल्का श्रम योजना (Light Manual Labor)	४५.६०
कृषि ऋण (Taccavi Loans)	६८७.२०
कुल व्यय	**१०५९.६०**

ऐ तालिका सँ स्पष्ट अछि जे सरकारक पैंघ हिस्सा केवल सुखाड़ आ बाढ़िक तात्कालिक राहत मे खर्च भ रहल छल, जाहि सँ दीर्घकालिक ढाँचागत विकासक लेल धनक कमी भ रहल छल।

१९५३ क बाढ़िक क्षेत्रीय प्रभाव

जून १९५३ क अंतिम सप्ताह सँ वर्षाक जे सिलसिला शुरू भेल, ओ अगस्त धरि उत्तरी बिहार कए जलमग्न कए देलक । कोसी, बागमती, बुढ़ी

गंडक आ कमला नदि सभ अपन तट कए तोडि कए गाम-गाम मे पानि भरि देलक ।

सहरसा आ कोसी क्षेत्रः २१ जुलाई १९५३ धरि कोसी ६ लाख लोक कए घेरि लेने छल। सुपौल, निर्मली आ महिषी क्षेत्र बाँकी दुनिया सँ कटि गेल छलाह । लोक सभ मचान पर रहवाक लेल विवश छलाह आ पानि मे घड़ियालक आतंक सेहो छल, जेना कि सुपौलक मुन्नर यादवक गवाही सँ स्पष्ट अछि ।

मुजफ्फरपुर आ दरभंगाः बागमती नदीक बाढ़ि सँ सीतामढ़ी शहर टापू बनि गेल छल। शहरक सड़क पर नाव चलैत छल आ लखनदेई नदीक उफान सँ मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी सम्पर्क ठप्प भ गेल छल । पुपरीक रघुनाथ जीक अनुसार, ओहि समय पानि तँ जरूर अबैत छल, मुदा ओतय गाद (Silt) अबैत छल जाहि सँ फसल नीक होइत छल, मुदा पानि निकसवाक कोनो वैज्ञानिक व्यवस्था नहि छल ।

चम्पारण क त्रासदीः सिकरहना नदीक जलस्तर ३० जुलाई कए चनपटिया रेल पुल पर २४७.७५ फीट धरि पहुँचि गेल, जे पिछला सभ कीर्तिमान कए तोडि देलक । मोतिहारी शहरक निचले

हिस्सा मे पानि भरि गेल छल आ नगरपालिका कार्यालय धरि जलमग्न छल ।

सारण क विभीषिका: घाघरा नदीक कटाव सँ 'जान टोला' गाम पूर्णतः गंगा मे समा गेल । छपरा शहरक सुरक्षा लेल बनाओल गेल 'नैनी बाँध' क ऊपर सँ पानि बहवाक कारणेँ शहर मे तबाही मचलि छल ।

१९५३ क विधायी विमर्श: उत्तर बनाम दक्षिण बिहार

२८ आ २९ सितम्बर १९५३ कए बिहार विधानसभा मे बाढ़ि पर जे बहस भेल, ओ राज्यक क्षेत्रीय राजनीति कए उजागर कएलक । गिरिजानंदन सिंह सरकार पर उत्तरी बिहार कए 'सौतेला' मानवाक आरोप लगौलनि । कर्पूरी ठाकुर सरकारक सिंचाइ नीतिक कड़ा आलोचना कएलनि आ कहलनि जे सरकार केवल कागज पर घोड़ा दौड़ा रहल अछि, जबकि जनता भुखमरीक कगार पर अछि ।

विशेष रूप सँ सिंचाइ शुल्क (Water Rate) मे वृद्धिक मुद्दा पर विपक्षी सदस्य सभ सरकार कए घेरलनि । जखन पानि अछि तखने सरकार टैक्स वसूल करबाक चेष्टा कए रहल अछि, जबकि बाढ़ि

क समय प्रशासनक कोनो अता-पता नहि रहैत अछि । सिंचाइ मंत्री रामचरित्र सिंहक तर्क छल जे सिंचाइ विभागक संचालन लेल धनक आवश्यकता अछि, मुदा सदस्य सभक आरोप छल जे विभाग मे व्याप्त भ्रष्टाचारक कारणेँ पानि खेत धरि नहि पहुँचि पाबि रहल अछि ।

१९५४: प्रलयंकारी बाढ़ि आ कोसी समझौताक ऐतिहासिक मोड़

१९५४ क वर्ष बिहारक लेल एकटा एहन कालखंड छल जकर विभीषिका १९३४ क भूकम्प सँ सेहो पैंघ मानल गेल । ऐ वर्ष उत्तरी बिहारक सभ नदि मे एक साथ बाढ़ि आयल छल, जाहि सँ राज्यक अर्थतंत्र चरमरा गेल ।

कोसी समझौता (२५ अप्रैल १९५४)

१९५३ क बाढ़िक बाद प्रधानमंत्री नेहरू सहरसाक दौरा कएलनि आ कोसी कए 'बान्हवाक' संकल्प लेलनि । ऐ सँ पहिने बराहक्षेत्र मे ८०० फीट ऊँच बान्ह बनेबाक चर्चा छल, मुदा विशेषज्ञ समिति (KL राव आ कंवर सैन) क सलाह पर बान्हक निर्माणक विकल्प चुनल गेल । २५ अप्रैल १९५४ कए काठमांडू मे भारत आ नेपालक बीच कोसी

समझौता भेल, जाहि सँ कोसी बराज आ बान्हक निर्माणक रास्ता साफ भेल ।

कोसी परियोजनाक प्रमुख घटक	विवरण
बराजक स्थान	भीमनगर (नेपाल)
बान्हक लंबाई	लगभग १५० किमी (दुनू कात)
अनुमानित लागत	३७.५ करोड़ रुपया
मुख्य लाभ	२.१ लाख हेक्टेयर भूमि क सुरक्षा

मुदा, ऐ समझौताक बाद नेपाल मे राजनीतिक असंतोष सेहो देखल गेल, जतय विपक्ष सरकार पर कोसी कए बेचवाक आरोप लगौलक ।

१९५४ क बाढ़िक भयावहता

जुलाई १९५४ मे गंडक नदी मे ७ लाख क्यूसेक सँ बेसी पानि आयल, जे १८८३ क बादक सबसे पैघ प्रवाह छल । कोसी मे सेहो २१ जुलाई कए

पानि पिछला सभ रिकॉर्ड कए तोडि देलक । मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा आ पूर्णियाक ४,००० वर्ग मील क्षेत्र जलमग्न भ गेल छल ।

मुजफ्फरपुर क तबाही: १ अगस्त १९५४ कए बुढ़ी गंडकक पानि मुजफ्फरपुर शहर मे घुस गेल । चन्दवारा आ गोलाघाट क्षेत्र मे लोकक घर मे ६ फीट धरि पानि छल ।

सहरसा क मर्मान्तक स्थिति: लहटन चौधरी विधानसभा मे कहलनि जे सहरसाक १६ मे सँ १३ थाना पानि मे डूबि गेल अछि । निर्मली शहर मे ५ फीट पानि छल आ लोक सभ मवेशी क साथ रेलवे लाइन पर शरण लेने छलाह ।

पूर्णिया क विस्मृति: कमलदेव नारायण सिंह शिकायत कएलनि जे अखबार सभ पूर्णियाक बाढ़ि कए अनदेख कए रहल अछि, जबकि ओतय १५ लाख लोक प्रभावित छथि ।

विधायी विमर्श १९५४: अकाल आ सुखाड़क विडंबना

१ सितम्बर १९५४ कए विधानमंडल मे सरकार स्वीकार कएलक जे ५० करोड़ रुपया सँ बेसीक क्षति भेल अछि । मुद्दा, एकटा अजीब विडंबना

ई भेल जे उत्तरी बिहार जखन बाढ़ि मे डूबि रहल छल, तखने ७ सितम्बर कए दक्षिण बिहार (पटना, गया, शाहाबाद) सँ सुखाड़क खबरि एवाक लागल।

विधानसभा मे सरदार हरिहर सिंह सरकारी विशेषज्ञ सभक 'एक्सपर्ट फोबिया' पर व्यंग्य कएलनि । ओ कहलनि जे जखन खेत सूखि रहल अछि, तखन सरकारक विशेषज्ञ लोकनि कैँ रोपनी करबाक सलाह दए रहल छथि । सुखाड़क कारणेँ ७५ प्रतिशत अगहनी धान झुलसि गेल छल आ राज्य मे अकालक स्थिति बनि गेल छल ।

१९५५: बान्हक निर्माण आ श्रमदानक राजनीति

१९५५ क वर्ष बिहार मे बाढ़ि नियंत्रणक दिशा मे व्यावहारिक क्रियान्वयनक वर्ष छल । जनवरी १९५५ मे कोसी बान्हक निर्माण काज शुरू भेल।

भारत सेवक समाज आ श्रमदान

कोसी बान्हक निर्माण मे 'भारत सेवक समाज' (BSS) कए जोड़ल गेल छल, जाहि सँ लोकक भागीदारी सुनिश्चित कएल जा सके । मुदा, ऐ मे सेहो राजनीति आ भ्रष्टाचारक प्रवेश भ गेल । विपक्षी नेता सभक आरोप छल जे बी.एस.एस. क फंडक कोनो ऑडिट नहि भ रहल अछि आ ऐ मे

केवल सत्ता पक्षक लोक सभ कए ठेकेदारी देल जा रहल अछि । जखन कि बी.एस.एस. क तर्क छल जे ओ ग्राम पंचायतक माध्यम सँ कम दर पर काज कए रहल अछि ।

१९५५ क मौसमी अनिश्चितता

१९५५ क फरवरी मास मे असमय वर्षा भेल, जाहि सँ रबीक फसल कए भारी नुकसान पहुँचाओल । पिछला दू वर्षक बाढ़ि आ सुखाड़क बाद ई किसान सभक लेल तेसर मारि छल । विधानमंडल मे बहसक दौरान रमेश झा कहलनि जे निर्मली सँ महादेवमठ धरि भ रहल काज मे मजदूर सभ कए समय पर मजदूरी नहि मिलि रहल अछि आ इंजीनियर सभक रवैया तानाशाही अछि ।

गंडक परियोजनाक उपेक्षा

१९५५ क दौरान सेहो गंडक परियोजनाक माँग उत्तरी बिहारक विधायक सभ करैत रहलाह । सुखदेव नारायण सिंह महथा आरोप लगौलनि जे सरकार गंडक कए 'सौतेली माँ' मानि कए ओकर फंड कोसी मे लगा रहल अछि । जखन कि गंडक परियोजना कम लागत मे बेसी सिंचाई क्षमता रखैत छल ।

१९५३-५५ क बाढ़िक दीर्घकालिक प्रभाव आ नीतिगत विश्लेषण

ऐ तीन वर्षक कालखंड बिहारक बाढ़ि प्रबंधन नीति मे एकटा मौलिक बदलाव लए कए आयल छल । राज्य 'बान्ह निर्माण' क मॉडल कए अपना लेलक, जकर परिणाम आजुओ विवादक विषय अछि ।

बान्हक विफलता आ जल-जमाव

१९५४ मे बिहार मे मात्र १६० किमी बान्ह छल, मुदा २०२० धरि ई बढ़ि कए ३,७०० किमी सँ बेसी भ गेल अछि । विडंबना ई अछि जे जखन बान्ह कम छल तखन २५ लाख हेक्टेयर भूमि बाढ़ि प्रभावित छल, मुदा बान्ह बढ़ला क बाद ई क्षेत्र बढ़ि कए ७३ लाख हेक्टेयर भ गेल अछि । बान्हक कारणेँ नदि सभक सिल्ट (Silt) ओकर पेटी मे जमि रहल अछि, जाहि सँ नदि आसपास क जमीन सँ ऊँच भ गेलीह अछि आ बान्ह टूटने सँ आब बेसी तबाही होइत अछि ।

विस्थापन आ पुनर्वासिक समस्या

कोसी बान्हक निर्माण क समय ३०४ टा गाम बान्हक भितर फँसि गेल छलाह । १९५४ क बाढ़ि मे ऐ लोक सभक विस्थापन क मुद्दा उठल छल,

मुदा आजु धरि हुनका सभक पुनर्वास पूर्ण नहि भ सकल अछि । बान्हक भितर रहय वाला लोक सभक लेल हर साल बाढ़ि एकटा त्रासदी अछि, जकर शुरुआत १९५३-५५ क ऐ निर्णय सभ सँ भेल छल ।

शासनिक आ विधायी अंतर्विरोध

विधानसभाक बहस सँ ई स्पष्ट अछि जे जन-प्रतिनिधि सभ स्थानीय सिंचाइ व्यवस्था (आहर, पइन, पोखर) क जीर्णोद्धारक पक्ष मे छलाह, मुदा सरकार 'बड़ी इंजीनियरिंग' (Large Engineering Projects) क पीछे दौड़ि रहल छल । भ्रष्टाचार आ रिलीफ क राजनीति ओहि समय सँ आजु धरि बिहारक बाढ़िक एकटा अभिन्न अंग बनि गेल अछि ।

निष्कर्ष: इतिहासक सीख आ भविष्यक चुनौती

१९५३-५५ क बिहारक बाढ़ि केवल एकटा प्राकृतिक आपदा नहि छल, वरन् ई प्रशासनिक विफलता, राजनीतिक अवसरवादिता आ वैज्ञानिक दूरदर्शिताक कमीक एकटा दस्तावेज छल । प्रधानमंत्री नेहरूक दौरा सँ लए कए कोसी

समझौता धरि क यात्रा मे तात्कालिक राहत कए तँ प्राथमिकता देल गेल, मुदा दीर्घकालिक पारिस्थितिकीय संतुलन कए अनदेख कएल गेल ।बिहारक लेल आजुओ बाढ़ि एकटा नियति अछि, मुदा १९५३-५५ क ई इतिहास हमरा सभ कए चेतावनी दैत अछि जे नदि सभ कए केवल बान्ह मे 'कैद' कए कए ओकरा जीतल नहि जा सकैत अछि । नदि सभक साथ रहवाक (Living with the River) जे पारंपरिक ज्ञान छल, ओकरा आधुनिक इंजीनियरिंग क साथ समन्वय करब आवश्यक अछि । ऐ कालखंडक विधायी बहस सँ ई सीख भेटैत अछि जे जखन धरि स्थानीय आवाज कए नीति निर्माण मे स्थान नहि भेटत, तखन धरि बाढ़िक 'शाप' बिहार कए पीढ़ा दैत रहत ।

आजु जखन हम १९५३-५५ क आँकड़ा सभ कए देखैत छी, तखन ई स्पष्ट होइत अछि जे बिहारक जल-राजनीति ओहिना अछि, बस तबाहीक विस्तार बढ़ि गेल अछि । १९५४ क ५० करोड़ क नुकसान आजु अरबों मे पहुँचि गेल अछि । प्रस्तुत शोध प्रतिवेदन ऐ तथ्य कए पुष्ट करैत अछि जे बिहारक बाढ़िक समाधान केवल बान्ह मे नहि, वरन् समग्र नदी बेसिन प्रबंधन आ सामाजिक न्याय मे निहित अछि ।

बिहारक भौगोलिक आ सामाजिक इतिहासमे १९५० क दशक एकटा एहन कालखंडक रूपमे अंकित अछि जतय प्रकृति अपन सभसाँ रौद्र आ अनिश्चित रूपक प्रदर्शन कयने छल। ई प्रतिवेदन विशेष रूपसाँ १९५३ साँ १९५५ क बीच बिहार, विशेष कय उत्तर बिहारमे आएल प्रलयंकारी बाढ़ि, दक्षिण बिहारक सुखाड़, राजनीतिक विमर्श, आ जल-प्रबंधनक नीतिक बदलिते स्वरूपक एकटा गहन आ विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि। बिहारक ७३.०६ प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र बाढ़ि प्रभावित अछि, जाहिमे उत्तर बिहारक ७६ प्रतिशत जनसंख्या निरंतर बाढ़िक विभीषिकाक छायामे रहैत अछि । उत्तर बिहारक नदियाँ, जेना कोशी, गण्डक, बुढ़ी गण्डक, बागमती, कमला बलान, आ महानन्दा, नेपालक हिमालयी क्षेत्र साँ निकलैत अछि। ई नदियाँ अपन संग भारी मात्रामे गाद (सिल्ट) आ पानि लऽ कय आबैत अछि आ बिहारक समथर मैदानमे ओकरा छोड़ि दैत अछि, जाहिसँ भौगोलिक बनावटमे निरंतर परिवर्तन होइत रहैत अछि । १९५० क दशकक शुरुआत भीषण सुखाड़ साँ भेल छल, मुदा १९५३ साँ १९५५ क बीचक समय बाढ़िक प्रलय आ ओकर बादक सुखाड़क लेल इतिहासमे चिन्हित कयल गेल अछि ।

१९५३ क प्रलय: अनावृष्टि साँ जलप्लावन धरि

१९५० आ १९५१ क वर्ष बिहारक लेल अकाल आ सुखाड़क छल, जाहिमे अन्नक भीषण अभाव भेल छल। १९५२ मे किछु सुधारक संकेत भेटल छल, मुदा १९५३ मे स्थिति एकदम उलटि गेल । ८ जनवरी १९५३ कए दिल्लीमे देशक सभ २५ राज्यक खाद्य आ आपूर्ति मंत्रिक सम्मेलन भेल, जाहिमे जमाखोरी, अनाजक वसूली, आ विदेशी अनाज पर निर्भरता कम करबा पर चर्चा भेल। प्रधानमंत्री पंडित नेहरू खाद्य क्षेत्रमे आत्मनिर्भरताक आह्वान कयलनि, मुदा बिहारक नियतिमे किछु और लिखल छल ।

१९५३ क बाढ़ि कोनो सामान्य बाढ़ि नै छल; एकरा 'प्रलय' क संज्ञा देल गेल। ई बाढ़ि अधिकारि सभ कए ई स्पष्ट संदेश देलक जे मात्र तात्कालिक 'रिलीफ' बाँटला साँ काम नै चलत, वरन् एकटा दीर्घकालिक योजनाक आवश्यकता अछि । राज्य सरकारक बजट भाषण (१९५३-५४) मे वित्त मंत्री अनुग्रह नारायण सिंह अकाल आ बाढ़ि राहतक खर्चक विवरण प्रस्तुत कयलनि, जइसाँ राज्यक आर्थिक बोझक अन्दाज लगैत अछि।

विधायी विमर्श आ गण्डक-कोशी द्वन्द्व

बिहार विधानसभा मे १९५३ क सत्रमे बाढ़ि आ सिंचाई कए लय कय व्यापक बहस भेल। ऐ बहसाक केंद्रमे गण्डक आ कोशी परियोजनाक भविष्य छल। राज्यपाल आर. आर. दिवाकर २८ जनवरी १९५३ कए अपन संबोधनमे कहलनि जे राज्यमे धानक फसल निक भेल अछि, मुदा सिंचाईक अभाव अखनो एकटा पैघ चुनौती अछि ।

गण्डक परियोजनाक उपेक्षा आ विद्रोहक अंदेशा

महामाया प्रसाद सिंह गण्डक परियोजनाक प्रश्न उठौलनि आ कहलनि जे छपरा जकाँ जिलाक ३० लाखक आबादी अन्नक अभावमे भूखे मरि रहल अछि । गण्डक योजना मुजफ्फरपुर, मोतिहारी, छपरा आ दरभंगाक किछु भागमे सिंचाईक व्यवस्था कऽ सकैत छल, मुदा केंद्र सरकारक दबावमे एकरा टालल जा रहल छल। मुरलीमनोहर प्रसाद चेतावनी देलनि जे गण्डक परियोजना २७ करोड़क लागतमे २८ लाख एकड़ जमीन सींचि सकैत अछि, जखन कि भाखड़ा-नंगल जकाँ पैघ योजना सभ मिलि कय सेहो एतेक सिंचाई नै कऽ सकैत अछि । ओ सावधान कयलनि जे जँ ऐ योजनामे और देरी भेल तँ उत्तर बिहारमे राज्य

सरकार कए विद्रोहक सामना करय पड़ि सकैत अछि।

कर्पूरी ठाकुरक कृषक संवेदना

विधानसभा सदस्य कर्पूरी ठाकुर समस्तीपुर आ वारिसनगर क्षेत्रक किसानक व्यथा सोझाँ राखलनि। ओ कहलनि जे १९५२ मे दरधा बान्ध आ चमरबन्धा बान्ध टुटला साँ धानक फसल चौपट भऽ गेल छल । किसान रबीक आशामे छल, मुदा १९५३ क जनवरीमे भीषण ओला (Hails) गिरला साँ अरहर, तम्बाकू आ रबीक पौधा सभ नष्ट भऽ गेल । ओकर बाद अगस्त १९५४ क बाढ़िमे समस्तीपुर शहरक उत्तरी भागमे ६२ सेंटीमीटर पानि भरि गेल, जाहिमे सोरोपट्टी बान्धक टूटनाइ मुख्य कारण छल । कर्पूरी ठाकुरक तर्क छल जे सरकार व्यापारिक संस्थान नैं अछि, एकर उद्देश्य लोकक सेवा होबाक चाही, आ नहरक दर (Rate) मे वृद्धि कय कय किसान कए मारब उचित नैं अछि ।

'एक्सपर्ट फोबिया' आ प्रशासनिक जड़ता

चम्पारणक विधायक हरिवंश सहाय 'एक्सपर्ट फोबिया' (विशेषज्ञक डर) केर चर्चा कयलनि। ओकर तर्क छल जे इंजीनियर सभक तकनीकी

गलती साँ बहादुरपुर-केसरिया चौरक किसान सभ कए सिंचाईक बदला नुकसान भऽ रहल अछि । पानि निकालबाक लेल जतय रेगुलेटरक जरूरत अछि, ओतय कोनो व्यवस्था नै कयल जाइत अछि, आ जतय बान्ध नै चाही, ओतय बना देल जाइत अछि। राम सेवक शरण मुजफ्फरपुरक लखनदेई नदीमे भेल व्यर्थ खर्चक उदाहरण देलनि, जतय ९.५ लाख टका खर्च भेला क बादो किसान कए कोनो फायदा नै भेल ।

१९५३ क जिलावार बाढ़ि रिपोर्ट

१९५३ क मानसून जूनक अन्तिम सप्ताहमे सक्रिय भेल आ पूरा उत्तर बिहारक परिदृश्य बदलि देलक।

मुंगेर, बेगूसराय आ खगड़िया

मुंगेर गजेटियर (१९६०) क अनुसार, गंगा, कोशी, बुढ़ी गण्डक आ बागमती एक संग विनाश कयलनि। बेगूसराय सब-डिवीजनमे बुढ़ी गण्डक अपन उच्चतम स्तर साँ ३ फुट ऊपर पहुँचि गेल छल । सिकरौला-ठठई बान्ह टुटला साँ दर्जनों गाम डूबि गेल। खगड़ियाक परबत्ता, गोगरी आ चौथम थानाक ७० हजार आबादी कोशीक पानि साँ त्रस्त छल। पानि ३ साँ ७ फुट धरि फैलल

छल, जाहिसँ भदई आ अगहनी फसल मटियामेट भऽ गेल ।

पूर्णिया आ महानन्दा बेसिन

पूर्णिया गजेटियर (१९६३) क अनुसार, १९५३ मे उत्तर बिहारक सभ मुख्य नदियाँ उफान पर छल। गंगाक पानि काढ़ागोला आ भवानीपुरक बीचक बान्ह सभ कए तोडि देलक। कोशीक पुरानी धार 'कारी कोशी' सेहो सक्रिय भऽ गेल छल । महानन्दा, डौंक आ परमान नदियाँ अपन किनाराक भीतर रहल, मुदा कोशी आ गंगाक संग मिलि कय स्थिति और गंभीर भऽ सकैत छल ।

चम्पारण आ गण्डकक रौद्र रूप

चम्पारणमे २४ साँ २७ जुलाई १९५३ क बीच नेपाल साँ आबय वाली सभ छोट-पैघ नदीमे एक संग बाढ़ि आबि गेल। सिकरहना नदी अपन उच्चतम स्तर साँ १.७५ फुट ऊपर बहैत छल । मोतिहारी शहरक नीचाँक हिस्सा जलमग्न भऽ गेल आ नगरपालिका धरि पानि पहुँचि गेल। चम्पारण बान्हक ५२अम आ ५३अम मील पर बरहरवा गामक पास दरार पड़ि गेल, जाहिसँ गण्डकक पानि कंट्री साइड (बाहरी क्षेत्र) मे प्रवेश कऽ गेल ।

मुजफ्फरपुर आ बागमतीक प्रकोप

बागमती नदीमे नेपालक जलग्रहण क्षेत्रमे भारी वर्षा भेला साँ मुजफ्फरपुरक शिवहर आ बेलसंड क्षेत्र तबाह भऽ गेल। सुगिया-परदेसिया जकाँ छोट धारा सभ सेहो सक्रिय भऽ गेल, जाहिसँ मीनापुर थानामे भीषण तबाही भेल । १९३४ क भूकम्पक कारण नदीक पेटी (Riverbed) क ऊबड़-खाबड़ होयब सेहो जल निकासीमे बाधक बनल। सीतामढ़ी-मुजफ्फरपुर सड़क कई स्थान पर क्षतिग्रस्त भऽ गेल ।

सहरसा आ कोशीक विस्थापन

कोशी नदी जून १९५३ क अंतमे सहरसा आ दरभंगाक पूर्वी भागमे अपन उपस्थिति दर्ज कयलक। सुपौल, महिषी आ निर्मली जकाँ क्षेत्र पहिल प्रहार सहलनि। एक सप्ताहक भीतर १० लाख लोक त्राहि-त्राहि करय लागल छलाह । ऐ बाढ़िक भीषणता देखि प्रधानमंत्री नेहरू कए सहरसा आबय पड़ल, जाहि सँ कोशी परियोजनाक नींव पड़ी ।

१९५४ क महाप्रलयः विनाशक नवीन कीर्तिमान

१९५४ क वर्ष बिहारक लेल एकटा अभूतपूर्व विपदा लय कय आएल। ऐ वर्षक बाढ़ि कए १९३४ क भूकम्प साँ बेसी प्रलयंकारी मानल गेल । उत्तर बिहारक ९,६०८ वर्ग मील क्षेत्र (कुल क्षेत्रफलक ४४.५%) पानिमे डूबि गेल छल ।

कोशी उच्च बान्ध साँ बान्ह धरि नीतिक यात्रा

कोशीक बाढ़ि साँ बचाव लेल पहिने नेपालक बराहक्षेत्रमे ७०० फुट ऊँच कंक्रीट बान्ध बनबाक प्रस्ताव छल। मुदा १९५१ मे मजूमदार कमिटी एकरा आर्थिक आ तकनीकी दृष्टि साँ अव्यावहारिक मानलक कारण एकर लागत १.७७ अरब टका छल । १९५३ क प्रलयक बाद, भारत सरकार 'अस्थायी आ शीघ्र समाधान' क रूपमे १५० किलोमीटर लंबा बान्ह बनबाक फैसला कयलक, जइपर मात्र ३७.५ करोड़ टका खर्च होबाक अनुमान छल । दिसंबर १९५३ मे लोकसभा ऐ योजना कए मंजूरी देलक आ १४ जनवरी १९५५ कए निर्मली (सहरसा) मे मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह एकर शिलान्यास कयलनि ।

१९५४ क बाढ़िक सांख्यिकीय प्रभाव

अगस्त १९५४ मे उत्तर बिहारक सभ नदियाँ—गण्डक, कोशी, बागमती, कमला—एक संग अपन

उच्चतम स्तर पर छल। गण्डकमे ७ लाख क्यूसेक आ कोशीमे ८.५ लाख क्यूसेक साँ बेसी पानि बहल ।

तालिका: १ सितंबर १९५४ धरि बाढ़ि साँ क्षति (उत्तर बिहार)

विवरण	सांख्यिकीय आँकड़ा
कुल भौगोलिक क्षेत्र	२१,४४५ वर्ग मील
बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र	९,६०८ वर्ग मील (४४.५%)
कुल प्रभावित आबादी	७०.६५ लाख (३८.४%)
प्रभावित गामक संख्या	८,११९
नष्ट भेल फसल	४६.७६ लाख एकड़
नष्ट भेल मकान	७४,९१७
मृत लोकक संख्या	६३
मृत मवेशी	१,१७३

(स्रोत: चीफ इंजीनियर एम.पी. मथरानीक रिपोर्ट, १९५५)

सुखाड़क दंश आ 'हथिया' नक्षत्रक विफलता

एकटा विस्मयकारी विडंबना ई छल जे जखन उत्तर बिहार पानि साँ संघर्ष कऽ रहल छल, तखन दक्षिण बिहार आ छोटानागपुर सुखाड़क मारि सहि रहल छल । सितंबर १९५४ मे विधानसभा मे अनावृष्टि पर बहस भेल।

दक्षिण बिहारमे अकालक स्थिति

राजस्व मंत्री कृष्ण बल्लभ सहाय स्वीकार कयलनि जे गया, शाहाबाद आ पटना जिलामे वर्षा बहुत कम भेल अछि । हथिया नक्षत्रमे वर्षा नै भेला साँ अगहनी धानक ७५ साँ ८० प्रतिशत फसल बर्बाद भऽ गेल । सरदार हरिहर सिंह कहलनि जे 'उतरा (हथिया) मे मत रोपिंह भैया, तीन धान मे तेरह पइया'—अर्थात समय बीति गेला क बाद खेती निरर्थक अछि । सुकरा उराँव कहलनि जे भूख मेटाबक लेल लोक बंगाल आ असम क चाय बागान पलायन कऽ रहल छथि ।

'हथिया' क विफलता आ रबीक संकट

अक्टूबर १९५४ मे सर्चलाइट लिखलक जे 'हथिया' क विफलता साँ रबीक फसलक लेल सेहो जमीनमे नमी नै बचल । गयाक हिसुआ आ फतेहपुर थानामे त्राहि-त्राहि मचि गेल छल।

सरकार राहत कार्य लेल ११ लाख टका आवंटित कयलक, मुदा ई आवश्यकताक तुलनामे नगण्य छल ।

सामाजिक आ आर्थिक प्रभाव: मौखिक इतिहासक स्वर

बाढ़ि आ सुखाड़क प्रभाव मात्र सरकारी फाइल धरि सीमित नै छल, एकर गहरा सामाजिक असर भेल जकरा मौखिक इतिहासक माध्यम साँ बुझल जा सकैत अछि।

मुन्नर यादवक संस्मरण (सहरसा)

सुपौल निवासी ८४ वर्षीय मुन्नर यादव कहैत छथि जे बान्ह बनबा साँ पहिने कोशी अपन मूल स्वरूपमे छल । ओ समय जंगलमे बाघ रहैत छल आ नदीमे घड़ियाल। बान्ह बनला क बाद नदी छिछली भऽ गेल अछि आ बालू जमा भेला साँ स्थानीय धानक प्रजाति (सतराजा, मटिया, गोला, तंजाली) लुप्त भऽ गेल अछि। किसान आब मकई करबा लेल मजबूर अछि, जकरा सूअर नष्ट कऽ दैत अछि ।

रघुनाथ जी आ पुपरीक याद (सीतामढ़ी)

पुपरी निवासी ७९ वर्षीय रघुनाथ जी १९५३ क बाढ़ि कए याद करैत कहैत छथि जे पुपरीक आजाद चौक पर नाव चलल छल । ओइ समय लोक बाढ़िक पानि कए वरदान मानैत छलाह कारण गाद (सिल्ट) एला साँ खेतक उर्वरता बढ़ि जाइत छल। बान्हक अभावमे पानि छितरला साँ लेवल कम रहैत छल आ पानि २-३ दिनमे उतरि जाइत छल। आब बान्हक कारण पानि क ठहराव बढ़ि गेल अछि ।

पलायन आ सामाजिक विघटन

१९५४ क बाढ़ि आ सुखाड़क बाद बिहार साँ मजदूरोंक पलायन 'बंगाला' (पूर्व) दिस एकटा सामूहिक विस्थापनक रूप लय लेलक। लोक ट्रेनक छत आ पायदान पर लटकि कय रोजी-रोटीक खोजमे जाइत छलाह । सियाराम यादव (भूतपूर्व विधायक) कहैत छथि जे लोक कलकत्ता पलायन कऽ जाइत छलाह आ कतेको साल धरि वापस नैं आबैत छलाह, जाहिसँ पारिवारिक क्लेश आ सामाजिक संबंधक टूटनाइ सामान्य भऽ गेल छल ।

प्रशासनिक भ्रष्टाचार आ राहतक विरोधाभास

राहत कार्यमे भ्रष्टाचार आ प्रशासनिक अकर्मण्यता एकटा पैघ मुद्दा छल। विधानसभा मे सदस्य सभ आरोप लगौलनि जे ठेकेदार सभ सीमेंट आ लोहा बेचि दैत छथि ।

चमरबन्धा बान्ध घोटाला: ऐ बान्धक मरम्मत पर ४१ हजार टका खर्च भेल, मुदा ठेकेदार पुरान गड्ढा साँ माटि लऽ कय बान्ध पर राखि देलक आ सभ टका हज़म कऽ लेलक। फलस्वरूप बान्ध पर बनल पुल टुटि गेल ।

राहत वितरणमे पक्षपात: सहरसाक विधायक रमेश झा कहलनि जे जतय ८० हजार लोक प्रभावित छथि, ओतय मात्र २८ हजार गज कपड़ा देल जाइत अछि । राहतमे सडल-गलल अनाज बाँटल जा रहल छल।

मुफ्तखोरी बनाम स्वाभिमान: राम बिनोद सिंह कहलनि जे रिलीफ बाँटलासँ लोक डिमोरलाइज भऽ रहल छथि। बड़का साँ छोटका सभ रिलीफ लेबाक लेल कतारमे छथि, जाहिसँ समाजक नैतिक स्तर खसि रहल अछि ।

राष्ट्रिय नेतृत्वक भूमिका आ 'चीनी पद्धति'

बाढ़िक विभीषिका देखि राष्ट्रिय नेतृत्व बिहारक दौरा कयलनि।

जवाहरलाल नेहरू

पंडित नेहरू १९५३ आ १९५४ मे बिहारक हवाई सर्वेक्षण कयलनि । ३० अक्टूबर १९५३ कए ओ गंगा, गण्डक आ कोशी क्षेत्रक उड़ान भरलनि। नेहरूक विचार छल जे बाढ़ि नियंत्रण लेल 'चीनी पद्धति' (Chinese Way) अपनाओल जाय, जाहिमे जन-सहयोग (Labour mobilization) मुख्य छल । ओ कहलनि जे 'आगि लगला पर कुआँ खानब' निक नैं अछि, तैयारी पहिने सँ होबाक चाही ।

राजेन्द्र प्रसाद आ जगजीवन राम

राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद अक्टूबर १९५४ मे बिहार एलाह। ओ जनता साँ संयम रखबाक अपील कयलनि आ बाढ़ि सुरक्षाक काममे हाथ बँटबाक लेल प्रेरित कयलनि । जगजीवन राम ११ अगस्त १९५४ कए पटनामे कहलनि जे १९५४ क क्षति १९३४ क भूकम्प साँ सेहो बेसी अछि ।

गण्डक आ बुढ़ी गण्डकः एकटा दुखद अध्याय

गण्डक नदी चम्पारण आ सारणक सीमा बनबैत अछि। १९५३ मे गण्डकक चम्पारण बान्हमे कतेको जगह गैप छल, जाहि साँ पानि बाहर आबि गामक गाम सफा कऽ देलक । तिरहुत बान्हक कतेको किलोमीटर धरि कटाव भेल छल। बुढ़ी गण्डक समस्तीपुर शहरमे पानि भरि देलक, जतय पछिला ५० वर्षमे एहन बाढ़ि नैं आएल छल ।

निष्कर्ष: नीतिक विफलता आ भविष्यक चुनौती

१९५३-१९५५ क कालखंड बिहारक जल-इतिहासक लेल एकटा कठोर पाठ अछि। ऐ कालखंडक विश्लेषण साँ किछु महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकलैत अछि:

बान्हक विडंबना: मात्र बान्ह निर्माण साँ बाढ़ि नैं रुकल, वरन् बाढ़ि प्रभावित क्षेत्रक विस्तार भऽ गेल । १९५४ मे जखन बान्ह १६० किमी छल, तखन बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र २५ लाख हेक्टेयर छल। आजु ई ३,७०० किमी साँ बेसी बान्ह भेला क बाद ७० लाख हेक्टेयर साँ बेसी भऽ गेल अछि । बान्ह नदी कए 'स्ट्रेटजैकेट' (Straitjacket) कऽ दैत अछि, जाहिसँ सिल्ट जमा भऽ नदीक पेटी ऊँच भऽ जाइत अछि ।

पारिस्थितिक आ सामाजिक न्यायः बान्हक कारण पानि क स्वाभाविक निकास रुकि गेल, जाहि साँ 'चौर' क्षेत्रमे जल-जमाव (Waterlogging) क स्थाई समस्या पैदा भऽ गेल अछि । मुसहर आ मल्लाह जकाँ हाशिया पर रहल समुदाय ऐ सँ सभसाँ बेसी प्रभावित छथि ।

राजनीतिक-प्रशासनिक गठजोड़ः बाढ़ि आ सुखाड़ बिहार मे एकटा 'उद्योग' बनि गेल अछि, जाहिमे नेता, इंजीनियर आ ठेकेदारक गठजोड़ जनताक टकाक दुरुपयोग करैत अछि ।

स्थानीय ज्ञानक उपेक्षाः मुन्नर यादव आ रघुनाथ जी जकाँ अनुभवी लोकक कुरा ई स्पष्ट करैत अछि जे पहिने बाढ़ि 'आशीर्वाद' छल, आब ई 'शाप' बनि गेल अछि कारण आधुनिक इंजीनियरिंग स्थानीय भूगोल कए बुझबामे विफल रहल अछि ।

बिहारक लेल मात्र पानि बान्हब पर्याप्त नै अछि, वरन् पानि क संग जीबक कला (Living with floods) आ न्यायसंगत जल-वितरणक नीतिक आवश्यकता अछि। १९५० क दशकक ओ प्रलय आजुओ बिहारक किसानक आँखिमे डेरा जमा

कय बैसल अछि, जकरा बुझब आ जकरा साँ सीखब भविष्यक लेल अनिवार्य अछि ।

"1956: रबी की फसल चैत बैशाख के पहले तो होगी ही नहीं तब तक क्या?": बाढ़ि आ सुखाड़क समानान्तर मारि: १९५६ एकटा एहन साल छल जतय बिहारमे बाढ़ि आ सुखाड़ दूनू समानान्तर चलि रहल छल । राज्यक कतेको हिस्सा जतय बाढ़ि सँ तबाही छल, ओतय दोसर हिस्सा सुखाड़क कारण बेहाल छल ।

फसलक अनिश्चितता आ भुखमरीक डर: अध्याय क शीर्षकक अनुसार, बाढ़िक कारण खरीफक फसल नष्ट भऽ गेल छल आ लोकक चिन्ता छल जे रबीक फसल तऽ चैत-बैशाख सँ पहिने नै होयत, तखन धरि लोकक जीवन कोना चल्त? । खाद्यान्नक उपलब्धताक दृष्टि सँ ई समय बड्ड नाजुक छल ।

कोसी बान्ह क प्रभाव: १९५६ धरि कोसी परियोजना (बान्ह निर्माण) क काज बहुत हद धरि आगाँ बढ़ि गेल छल । मुदा, बान्हक भीतर फँसल लोकक लेल ई एकटा नव तरहक त्रासदी बनि कऽ आयल। जतय बान्ह सँ बाहरक लोक सुरक्षित महसूस कऽ रहल छलाह, ओतय भीतरक लोकक

घर आ खेत नदियाँक धार मे विलीन भऽ रहल छल ।

जल-जमावक समस्याः कोसी आ अन्य नदियाँक बान्ह बनला क बाद, ओहि क्षेत्र सभ मे जल-जमाव (Waterlogging) क एकटा पैंघ समस्या पैदा भऽ गेल जतय पहिने कहियो एहन नै होइत छल । जल संसाधन विभाग सेहो स्वीकार कयलक जे आजादी क बाद बाढ़ि-प्रवण क्षेत्र मे ढाई सँ तीन गुन्ना वृद्धि भेल अछि ।

राहत आ प्रशासनिक विफलताः सरकार राहतक लेल दाबा तऽ कय रहल छल, मुदा धरातल पर लोकक स्थिति बड्ड खराब छल । लोकक शिकायत छल जे प्रशासनिक मदद समय पर नै पहुँचि रहल अछि आ भ्रष्टाचार सेहो एकटा पैंघ बाधा अछि ।

लोकक वेदना आ संघर्षः लेखक ऐ अध्याय मे बुजुर्ग लोकक साक्षात्कारक माध्यम सँ देखौने छथि जे कोना लोक अपन विरासत आ जीविकाक साधन सँ बेदखल भऽ रहल छलाह । लोक लेल 'रिलीफ' सँ बेसी 'काम आ अनाज' क जरूरत छल ।

ई अध्याय १९५६ मे बिहारक ओहि संक्रमणकाल कऽ देखबैत अछि जतय पैंघ इंजीनियरिंग

परियोजना सभ (बान्ह) तऽ बनल, मुदा ओ आम लोकक बाढ़ि-सुखाड़क शाप सँ मुक्ति नैं दिया सकलक, वरन् कतेको नया समस्या पैदा कऽ देलक ।

बिहारक भौगोलिक आ जलवैज्ञानिक मानचित्रमे १९५६ क वर्ष एकटा एहन संधिकालक रूपमे अंकित अछि, जतय औपनिवेशिक कालक अभियांत्रिकी विरासत आ स्वतंत्र भारतक नव-निर्माणक आकांक्षाक बीच एकटा भीषण द्वंद्व देखल जा सकैत अछि। ई प्रतिवेदन बिहारक उत्तरी आ दक्षिणी क्षेत्रमे व्याप्त बाढ़ि आ सुखाड़क विभीषिका, कोसी परियोजनाक तकनीकी प्रबन्धन, आ तत्कालीन विधायी विमर्शक एकटा विस्तृत आ गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि। १९५६ मे बिहार मात्र प्राकृतिक आपदाक शिकार नहि छल, वरन् ई वर्ष गल्त तकनीकी निर्णय, प्रशासनिक शिथिलता आ जनसाधारणक अदम्य साहसक गवाह सेहो रहल।

१९५६ क ऐतिहासिक आ विधायी पृष्ठभूमि

बिहारक जल-राजनीतिक इतिहासमे १९५६ क शुरुआत एकटा वैचारिक उथल-पुथल सँ भेल। १९५५ क बाढ़िक विभीषिकाक बाद, १९५६ मे विधान सभाक सत्र समय सँ पहिने ३१ जनवरी कें

शुरू भेल छल। तत्कालीन राज्यपाल आर.आर. दिवाकर अपन अभिभाषणमे राज्यक कृषिमय प्रगतिकें पूर्णतः सिंचाईक विकास पर निर्भर मानलनि। राज्यपालक भाषणमे कोसी आ त्रिवेणी नहर योजनाक प्रगति, आ ९५० नलकूपक स्थापनाक चर्चा कयल गेल छल, मुदा धरातल पर स्थिति एकरा सँ भिन्न छल। १९५५ मे हथिया नक्षत्रमे वर्षा नहि भेला सँ दक्षिण बिहारक भागलपुर, मुंगेर, गया आ शाहाबाद जिलामे सुखाड़क स्थिति उत्पन्न भ गेल छल, जाहि सँ १९५६ क रबी फसल पर संकट मँडराय लागल छल।

विधायी स्तर पर एकटा पेंघ विवाद सिंचाई विभागक मुख्य अभियंता देशराज मेहताक सेवा विस्तार नहि देबाक विषय पर भेल। ५५ वर्षीय मेहताकें अनुभव आ योग्यताक बावजूद सेवा विस्तार नहि देबय पर विपक्ष आ सत्ता पक्षक किछु सदस्य लोकनि सरकारक आलोचना कयलनि। सिंचाई मंत्री रामचरित्र सिंह एकरा मंत्रिमंडलक सामूहिक निर्णय कहि टालि देलनि, मुदा ऐ सँ तकनीकी विशेषज्ञता बनाम प्रशासनिक हठधर्मिताक विमर्श सोझाँ अयल। ऐ बीच, २६ फरवरी १९५६ कें मोकामा आ बरौनीक बीच गंगा पर पहिल पुलक शिलान्यास राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र

प्रसाद कयलनि, जे उत्तर आ दक्षिण बिहारक सम्पर्क लेल एकटा महत्वपूर्ण मीलक पत्थर छल।

कोसी परियोजना: अभियांत्रिकी महत्वाकांक्षा आ यथार्थ

कोसी परियोजना, जकरा 'बिहारक शोक' कहल जाइत अछि, ओकर प्रबन्धनक लेल १९५४ क समझौताक बाद १९५५-५६ मे बान्हक निर्माण तीव्र गति सँ शुरू भेल छल। १९५६ मे कोसी परियोजनाक प्रशासनिक ढाँचा सिंचाई विभागक एकटा अलग इकाई 'नदी घाटी योजना' (River Valley Project) कें सँप देल गेल छल।

बान्हक निर्माण आ जन-सहयोग

कोसी बान्हक निर्माणमे 'भारत सेवक समाज' (भा.से.स.) क माध्यम सँ 'जन-सहयोग' क एकटा नव प्रयोग कयल गेल। राज्यपालक भाषणमे एकर बहुत प्रशंसा कयल गेल छल, मुदा वास्तविक कार्यस्थल पर मजदूरक कमी आ भुगतानक समस्या लगातार बनल रहल। जून १९५६ धरि नेपालमे कोसीक दाहिन बान्हक १६ मील आ बाम बान्हक १४ मील लम्बाईमे काम पूरा करबाक लक्ष्य राखल गेल छल। ऐ अभियांत्रिकी प्रयासक मुख्य उद्देश्य नदीक मार्ग

कें स्थिर करब छल, मुदा तकनीकी विशेषज्ञ लोकनि सिल्ट (गाद) जमा होमय सँ नदीक पेट ऊपर उठबाक चेतावनी सेहो द रहल छलाह।

तकनीकी द्वंद्व: उच्च छहर बनाम बान्ह

कोसीक समस्याक समाधान लेल पहिने नेपालक 'बराहक्षेत्र' मे एकटा विशाल उच्च छहर (High Dam) बनाबय पर विचार भेल छल, जे कुतुबमीनार सँ तीन गुना ऊँच होयत। मुदा, भारी लागत, भूकंपीय खतरा, आ तकनीकी ज्ञानक अभावक कारणेँ ओहि योजनाकें टालि कय बान्हक निर्माणक सस्ता विकल्प चुनल गेल। दिनेश कुमार मिश्रक विश्लेषणक अनुसार, ई निर्णय 'अतिरिक्त-तकनीकी' (extra-technical) विचार सँ प्रेरित छल, जाहिमे दीर्घकालिक जलवैज्ञानिक परिणामक बदला तात्कालिक राजनीतिक लाभ कें प्राथमिकता देल गेल।

क्षेत्रवार बाढ़ि आ सुखाड़क विभीषिका (१९५६)

१९५६ क वर्ष बिहारक लेल एकटा विचित्र वर्ष छल, जतय मई-जूनमे असमय बाढ़ि अयल आ अगस्तमे भीषण सुखाड़। एकर बाद सितम्बरमे पुनः प्रलयंकारी बाढ़ि सँ राज्य त्रस्त भ गेल।

दरभंगा जिला: बाह आ सुखाड़क चक्कीमे

दरभंगा जिलामे कोसी, कमला, भुतही बलान आ बागमतीक पानि जूनक शुरुआत सँ ही तबाही मचाय लागल छल। पानि एतेक तीव्र गति सँ बढ़ल जे फुलपरास, बिरौल, मधेपुर आ सिंघिया थानाक अनेक गाँव टापू बनि गेल। पानि स्तर कतेको ठाम ५ फुट धरि देखल गेल। भुतही बलानक पानि निर्मली रेल पुलक २ फुट ऊपर सँ बहय लागल, जाहि सँ रेल सेवा बाधित भ गेल।

जुलाइमे बाढ़िक पानि घटल, मुदा अगस्त अबैत-अबैत जिला सुखाड़क चपेटमे आबि गेल। वर्षा नहि भेला सँ मकई आ धानक रोपनी सूखय लागल। सांसद ललित नारायण मिश्र जखन ऐ क्षेत्रक दौरा कयलनि, तँ ओ बतौलनि जे दरभंगाक लोक जेकर दुआरि पर ८-१० अनाजक कोठी (बखारि) रहैत छल, ओ आइ खैरात (डोल) लेल तरसि रहल छथि।

सहरसा: बान्हक बीचक 'कैदी'

सहरसा जिला कोसीक मुख्य केन्द्र छल। १९५६ मे कोसीक पानि अचानक बढ़ला सँ सुपौल सब-डिवीजनमे निर्माणाधीन पूर्वी बान्हक 'फुलकाहा गैप' मे नदीक पानि पसि गेल। ऐ घटनाक वर्णन १०२ वर्षीय गुलट प्रसाद यादव अपन गवाहीमे कयलनि। ओ बतौलनि जे नदीक पानि रातक १२-

१ बजेक बीच गैप सँ बाहर अयल आ भगदड़ मच गेल। लोक अपन जान बचेबाक लेल बान्ह पर ही ६ महीना धरि शरण लेलक। ओहि समय ओढ़बा-बिछाबा लेल किछु नहि छल, तँ लोक 'पटेर' क चटाई बना कय ओकरा ओढ़ैत आ बिछाबैत छल।

मुंगेर आ बेगूसराय: गंगाक कटाव आ मिर्जापुरक घटना

मुंगेर जिलाक बेगूसराय सब-डिवीजनमे गंगा नदीक कटाव १९५६ मे बहुत भीषण छल। मधुरापुर गाँव, जे अपन पक्का घर आ बगैचा लेल प्रसिद्ध छल, ओकर ३०० बीघा जमीन आ १५० घर नदीमे समा गेल। सितम्बरमे बूढ़ी गंडकक जलस्तर बढ़ला सँ मिर्जापुर गाँवक पास बान्ह २३ सितम्बरक रातमे टूटि गेल।

९४ वर्षीय राजेन्द्र राय मिर्जापुरक ऐ घटनाकें याद करैत कहैत छथि जे बान्ह नया छल आ ओकर सघनता (compaction) नहि भ सकल छल। बान्ह टूटला सँ पानी 'काबर झील' कें ओतय चल गेल आ चेरिया बरियारपुर, खोदावंदपुर प्रखंडक अनेक गाँव डूबि गेल। मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंह जखन ओतय अयलनि, तँ ओ अभियंता सँ पुछलनि जे जँ भगवान राम समुद्र पर पुल बना

सकैत छथि, तँ अहाँ ऐ दरार कें कियाक नहि भरि सकैत छी?

भागलपुर: चान्दन आ गेरुवाक ताण्डव

भागलपुर जिलामे कोसी आ गंगाक संग-संग चान्दन आ गेरुवा नदी सेहो तबाही मचौलक। जूनमे सोन्हौला थानाक २० गाँवक ३,००० एकड़ जमीन पानिमे डूबि गेल। चान्दन नदीक बान्ह सदर सब-डिवीजनमे कतेको बेर टूटल, जाहि सँ फसल नष्ट भेल आ पशु-चारेक भीषण अभाव उत्पन्न भ गेल।

सुखाड़क भयावहता: अगस्त १९५६

बाढ़िक भीषण प्रलयक बाद अगस्त १९५६ मे बिहारक १७ मे सँ १३ जिला सुखाड़क चपेटमे आबि गेल। राजस्व मंत्री कृष्ण बल्लभ सहाय स्वीकार कयलनि जे मुजफ्फरपुर, दरभंगा, पटना, गया आ शाहाबादमे स्थिति सर्वाधिक गंभीर अछि।

पटना आ गया: नालंदा-राजगीर क्षेत्रमे पिछले ३ महीना सँ सुखाड़ छल। गया जिलामे आहर-पइन सूखि गेल छल, जाहि सँ धानक रोपनी नहि भ सकल।

मजदूरक पलायन: सुखाड़क कारणेँ भूमिहीन मजदूरक रोजगार छिनि गेल छल। मजदूर जत्था बना कय बंगाल आ असम दिस पलायन करय लेल विवश छलाह।

जल-संघर्ष: दानापुर सब-डिवीजनमे सिंचाईक पानि लेल दू गुटमे झगड़ाक खबरि सेहो विधानसभा मे उठल।

विधायी बहस: सितम्बर १९५६ क महासंग्राम

५ सितम्बर १९५६ कें राजस्व मंत्री कृष्ण बल्लभ सहाय विधानसभामे बाढ़ि आ सुखाड़ पर सरकारी बयान देलनि। ओ दाबा कयलनि जे सरकार पर्याप्त राहत द रहल अछि, मुदा विपक्षी सदस्य लोकनि सरकारकें घेरलनि।

विपक्षी सदस्यक कड़ा प्रहार

चन्द्रशेखर सिंह (बेगूसराय): ओ सरकारक रिपोर्ट कें 'हवाई सर्वेक्षणक हवाई रिपोर्ट' कहलनि। ओ नलकूपक निर्माणमे भ रहल भ्रष्टाचार पर प्रहार करैत कहलनि जे अभियंता लोकनि सीमेंट चोरी कय कय बालूक नाली बना देलनि, जे पानि अबैत ही टूटि गेल।

नरेन्द्र नाथ दास (दरभंगा): *ओ सिंचाई विभागक 'लखनदेई' आ 'चनौर' ड्रेनेज स्कीम कें 'पूर्ण विफलता' (Total Failure) कहलनि। ओ कहलनि जे स्लुइस गेट पानि स्तर सँ ऊपर बना देल गेल अछि, जाहि सँ पानि निकलि नहि पाबैत अछि।*

गुप्तनाथ सिंह (शाहाबाद): *ओ कहलनि जे बाह रोकबाक लेल कोनो स्थायी प्रयास नहि भ रहल अछि। ओ सुझाव देलनि जे सरकार कें पशु-चारेक संचय करबाक चाही।*

राम बिनोद सिंह (सारण): *ओ शिकायत कयलनि जे सारण जिला गंगा, गंडक आ सरयू सँ घिरेल अछि, मुदा सरकारक रिपोर्ट मे सारणक नाम धरि नहि अछि।*

सिंचाई मंत्री रामचरित्र सिंहक दलील

सिंचाई मंत्री रामचरित्र सिंह बान्ह टूटनाइ कें 'ईश्वरक मर्जी' कहि कय अपन विभागक बचाव करबाक प्रयास कयलनि। जखन परबत्ता बान्ह टूटनाइ पर त्रिवेणी कुमार सवाल कयलनि, तँ मंत्री जीक जवाब छल जे 'बाढ़ि अबै सँ कीड़ा मरि जाइत अछि आ फसल नीक होइत अछि, अहाँक प्रार्थना गंगा जी सुनि लेलनि।' ई गैर-जिम्मेदाराना

बयान तत्कालीन प्रशासनक संवेदनहीनता कें दर्शाबैत अछि।

तकनीकी विफलता आ भविष्यक सबक

१९५६ क डेटा आ घटनाक्रम सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे बिहारमे बाढ़ि नियंत्रणक अभियांत्रिकी मॉडल मे गंभीर खामी छल।

स्लुइस गेटक नाकामी

बान्हमे लगाओल गेल स्लुइस गेट (Sluice Gates) अपन उद्देश्यमे विफल रहल। विधायक नवल किशोर सिंह कहलनि जे ई गेट न तँ पानि निकलबैत अछि आ न सिंचाई लेल पानि खेत धरि दैत अछि। एकर मुख्य कारण डिजाइनक दोष आ रखरखावक अभाव छल।

सिल्टेशन (गाद) आ बेड राइजिंग

कोसी जकाँ नदी, जे हिमालय सँ विशाल मात्रा मे सिल्ट ल कय अबैत अछि, ओकरा बान्ह मे बांधला सँ ओकर पेट ऊपर उठै लागल। १९५६ मे ही देखल गेल जे कोसीक पानि निर्माणाधीन बान्ह सँ सट कय बहय लागल छल। सिल्ट जमा होमय सँ नदीक गहराई कम भ गेल आ ओकर बाढ़ि लबाबैक क्षमता घटि गेल।

आर्थिक आ सामाजिक विस्थापन

१९५६ क बाढ़ि आ सुखाड़ सँ बिहारक ग्रामीण क्रय-शक्ति समाप्त भ गेल छल। सरकार जखन राहत दैत छल, तँ ओकरा 'मालगुजारी' क रूपमे पुनः वसूल करबाक प्रयास भ रहल छल, जाहि सँ किसान मे भारी असन्तोष छल।

निष्कर्ष

१९५६ क बिहारक जल-विभीषिका मात्र एकटा प्राकृतिक घटना नहि छल, वरन् ई मानव-निर्मित अभियांत्रिकी संरचना आ प्रशासनिक संवेदनहीनताक एकटा जटिल मिश्रण छल। जतय एक दिस कोसी बान्हक निर्माण सँ लाखों लोककें सुरक्षित करबाक दाबा कयल गेल, ओतय दूसरी दिस दू लाख लोककें नदीक धारक बीच 'कैदी' बना देल गेल। विधायी बहस मे उठल भ्रष्टाचार, तकनीकी विफलता आ राहत वितरण मे भेदभावक मुद्दा आइओ बिहारक जल-राजनीति मे ओतबे प्रासंगिक अछि।

दिनेश कुमार मिश्रक 'पानी का शाप' आ अन्य शोध सामग्री ई सिद्ध करैत अछि जे जँ हम नदीक प्राकृतिक स्वभाव कें बुझि कय, स्थानीय ज्ञान (आहर, पइन, चौर) कें प्राथमिकता नहि देब, तँ

अभियांत्रिकी संरचना मात्र 'सिल्ट-लादेन टाइम बम' (silt-laden time bombs) बनि कय रहि जयत। १९५६ क सबक ई अछि जे बाढ़िक प्रबन्धन केवल कंक्रीट आ माटिक संरचना सँ नहि, वरन् लोकक भागीदारी आ पारिस्थिकीय संतुलन सँ ही संभव अछि।

बिहारक भौगोलिक आ सामाजिक इतिहासमे जलक भूमिका द्वन्द्वात्मक रहल अछि। एक दिस जतय ऐ ठामक नदियाँ सभ्यताक जननी रहलीह अछि, तहिना दोसर दिस ई विभीषिकाक पर्याय सेहो बनि गेलीह अछि। दिनेश कुमार मिश्रक कालजयी कृति 'पानी का शाप: बिहार में बाढ़ि-सुखाड़' मात्र एकटा पुस्तक नहि, वरन् सन् १९४७ सँ १९५६ धरि बिहारक प्राकृतिक आपदा, समाज आ शासन व्यवस्थाक अन्तरसम्बन्धक एकटा प्रामाणिक आ ऐतिहासिक दस्तावेज अछि । ई प्रतिवेदन उक्त कृतिक आधार पर बिहारक जल-प्रबन्धनक समस्या, बाढ़ि आ सुखाड़क ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, आ तकनीकी हस्तक्षेप सँ उत्पन्न नवीन संकट सभक एकटा विस्तृत आ गम्भीर विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि।

आजादी सँ पूर्व बिहारक अकाल आ बाढ़िक विभीषिका

लेखक पुस्तकक आरम्भिक अध्याय सभमे बिहारक अकाल आ बाढ़िक एकटा विस्तृत कालक्रम प्रस्तुत करैत छथि। १९वीं शताब्दीमे बिहार तीनटा भीषण अकालक साक्षी बनल छल: १८६५-६६, १८७३-७४, आ १८९६-९७ मे । ऐ अकाल सभक पाछाँ वर्षाक अनिश्चितता आ 'हथिया' नक्षत्रक जल नहि बरसनाय मुख्य कारण छल।

आजादी सँ पहिने बिहारक प्रमुख अकाल वर्ष	प्रभावित क्षेत्र
१८६५-६६	चम्पारण, तिरहुत, भागलपुर, सारण, शाहाबाद, गया, मुंगेर
१८७३-७४	शाहाबाद, सारण, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, चम्पारण, गया
१८९६-९७	सारण, चम्पारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, भागलपुर

आजादी सँ पहिने २०वीं शताब्दीमे सेहो खाद्यान्नक स्थिति असामान्य छल। द्वितीय विश्वयुद्ध (१९३९-१९४५) क समयमे बिहार सँ पैघ मात्रामे अनाज इंग्लैंड आ मित्र राष्ट्र सभ कऽ पठाओल गेल, जकर परिणाम १९४३ क बंगालक अकालमे देखल

गेल, जकर छाया बिहार पर सेहो पड़ल ।

बाढ़िक सन्दर्भमे सेहो बिहारक स्थिति सदिखन भयावह रहल अछि। कोसी, कमला, गंडक, गंगा, बागमती आ महानन्दा जेहन नदियाँ अपन रस्ता बदलैत रहलीह अछि। विशेष रूप सँ कोसी नदी अपन प्रलयकारी प्रकृतिक लेल 'बिहारक शोक' कहल जाइत अछि।

प्रमुख नदी सभक ऐतिहासिक बाढ़ि वर्ष	वर्ष
कोसी	१८९३, १९०२, १९०६, १९२६-४३ (हर साल)
बागमती	१७८५, १८६७, १८९३, १९०२, १९१०, १९१६-१९
गंगा	१९०१, १९०२, १९१३, १९१७, १९२३, १९३४

१९४६: ब्रिटिश शासनक अन्तिम पैघ बाढ़ि आ गयाक प्रलय

१९४७ क आजादी सँ ठीक एक साल पहिने, १९४६ मे बिहारक गया जिलामे एकटा अभूतपूर्व बाढ़ि आयल छल। ई बाढ़ि फल्गु नदीक उफानक कारणेँ

आयल छल, जतय शहरक कलक्ट्रेट आ ट्रेजरी धरि पानी घुस गेल छल । ऐ बाढ़िक विभीषिकाक वर्णन ९२ वर्षीय पुरोहित कृतीनाथ गर्दा क शब्दमे ऐना अछि: "पितृपक्ष केर मेला चलि रहल छल आ लगभग एक लाख तीर्थयात्री गयामे छलाह। रात मे फल्गु नदी अपन किनारा तोड़ि कऽ बहय लागल। लोक छप्पर पर चढ़ि कऽ अपन जान बचेबाक कोशिश कएलनि, मुदा कतेको छप्पर बहल जाइत छल" ।

ऐ बाढ़िमे लगभग १०० सँ बेसी लोक बहला सँ मरि गेलाह आ हजारो मवेशीक मृत्यु भेल। ई घटना ब्रिटिश शासनक विफलताक प्रतीक छल, जतय बाढ़िक चेतावनीक कोनो व्यवस्था नहि छल।

१९४७: आजादीक उल्लास आ अकालक आशंका

१५ अगस्त १९४७ कऽ भारत आजाद भेल, मुदा बिहारक लेल ई समय उल्लास सँ बेसी चुनौतीक छल। राज्यक अर्थव्यवस्था स्थिर छल, आबादी बढ़ि कऽ ३ करोड़ ८० लाख भऽ गेल छल आ खाद्यान्नक भीषण कमी छल । १९४३ सँ १९४७ धरि हैजा प्रायः हर साल अपन दस्तक दैत रहल। चावलक भाव जखन कि १९४१ मे ५ सँ ९ रुपया मन छल,

१९४७ मे २३ रुपया मन धरि पहुँचि गेल छल ।

'अधिक अन्न उपजाओ' आ अन्न वसूली

सरकार अन्न संकट सँ निपटबाक लेल 'अधिक अन्न उपजाओ' (Grow More Food) अभियान तेज केलक। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जे तखन अन्तरिम सरकारमे खाद्य मंत्री छलाह, बिहारक दौरा केलनि आ किसान सभ सँ अपन 'फाजिल' अनाज सरकार कऽ देबाक अपील केलनि । सरकार डेढ़ करोड़ मन धान वसूलीक लक्ष्य रखलक ताकि कालाबाजारी कऽ रोकल जा सकय।

निर्मली कोसी सम्मेलन (१९४७)

कोसी नदीक विनाशलीला सँ मुक्ति पाबय लेल ५-६ अप्रैल १९४७ मे निर्मली (सुपौल) मे एकटा पैंघ सम्मेलन भेल। एतय नेपालक बराहक्षेत्रमे ८०० फीट ऊँच कंक्रीट कऽ छहर बनेबाक प्रस्ताव कएल गेल । ऐ सम्मेलनमे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, प्रधानमंत्री श्रीकृष्ण सिंह आ अमेरिकी विशेषज्ञ डॉ. जे.एल. सैवेज सेहो शामिल छलाह। घोषणा भेल जे ऐ सँ ३३०० मेगावाट बिजली भेटत आ ५.२८ लाख एकड़ जमीन सुरक्षित भऽ जायत। मुदा ई योजना कतेक दशक धरि केवल फाइलमे सिमटल रहल, ई एकटा बड़का विडम्बना अछि ।

१९४८: स्वतंत्र भारतक प्रथम पैघ बाढ़ि आ सारणक विनाश

१९४८ केर बाढ़ि स्वतंत्र भारतमे बिहारक लेल पहिल पैघ अग्निपरीक्षा छल। ई बाढ़ि मुख्यतः सारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा आ शाहाबाद जिलामे अपन ताण्डव देखौलक ।

सारण जिलाक तबाही

सारणमे गंगा, घाघरा आ गंडकक संगम अछि। अगस्त १९४८ मे नैनी बाँध आ कौड़ीमल बाँध टूटल, जकरा सँ १००० सँ बेसी गाम जलमग्न भऽ गेल । छपरा शहरक उत्तरी भाग आ रेलवे लाइनक दक्षिणक क्षेत्र सम्पूर्ण रूपेँ सँ डूबल छल। सिताबदियारा गामक ८९ वर्षीय उदित राय कहैत छथि, "गाम कटते-कटते १९७६ मे खत्म भऽ गेल, मुदा १९४८ क बाढ़ि एहेन छल जे पूरा गाम नाव सँ रिविलगंज विस्थापित भऽ गेल छल" ।

१९४८ क बाढ़िक नुकसान (सारण सदर)	विवरण
प्रभावित गाम	१००० सँ बेसी
सम्पूर्ण रूपेँ डूबल गाम	७००

नष्ट भेल घर	२६,०००
नष्ट भेल भदई फसल	६०,००० एकड़

सहरसा आ कोसी-तिलावेक प्रभाव

सहरसा आ सुपौलमे जूनक अन्तमे बाढ़ि आबि गेल छल। तिलावे नदी आ कोसीक सम्मिलित प्रलय सँ मधेपुरा आ सहरसाक सम्पर्क टूटि गेल। लोक बाँसक मचान बना कऽ ओहि पर अपन परिवार आ माल-मवेशी कऽ रखैत छलाह ।

१९४९: राहत सँ जीविकाक रस्ता

१९४९ मे बाढ़ि समय सँ पहिने जूनक दोसर सप्ताहमे आबि गेल। दिनेश कुमार मिश्र ऐ वर्षक अध्यायमे एकटा गम्भीर सवाल उठबैत छथि: "कोसी क्षेत्रमे बहुत-सी जगहें ऐसी हैं जो पूरे साल पानी में डूबी रहती हैं... ऐसे इलाकों में रहने वालों के लिए रिलीफ नहीं, जीविका का साधन चाहिए" ।

ऐ वर्ष विधान सभा मे कोसी विभागक गठनक माँग भेल। हरिनाथ मिश्र प्रस्ताव देलनि जे कोसी-पीडित क्षेत्रक मालगुजारी माफ कएल जाय आ ओतय स्वास्थ्य केन्द्र खोलल जाय। मुदा सिंचाई

मंत्री रामचरित्र सिंहक कहनाइ छल जे बाढ़ि रोकनाय मनुष्यक वश मे नहि अछि आ सरकार केवल यथाशक्ति मदद कऽ सकैत अछि ।

मधेपुराक रानीपट्टी निवासी कुणाल कृष्ण मंडलक संस्मरणानुसार, १९४९ मे तिलावे नदी हुनकर महल जेहेन घर कऽ बहा कऽ लऽ गेल छल, जकरा बाद ओ सभ गामक ऊँच जमीन पर झोपड़ी बना कऽ रहय लागल ।

१९५०-१९५२: सुखाड़क चक्र आ मिथिलाक अन्न संकट

जखन कि उत्तर बिहार बाढ़ि सँ जुझि रहल छल, १९५० सँ १९५२ धरि बिहारक एकटा पैंघ हिस्सा भीषण सुखाड़क चपेटमे आबि गेल। विशेष रूप सँ गया, शाहाबाद आ मिथिला क्षेत्र (दरभंगा, मुजफ्फरपुर) मे हथिया नक्षत्रक वर्षा नहि भेला सँ धानक फसल चौपट भऽ गेल ।

१९५१ मे स्थिति एतेक खराब भऽ गेल जे बिहार कऽ अमेरिका सँ अनाज मँगाबय पड़ल। लोकक कहनाइ छल जे "हमदर्दीक सन्देश नइ, अनाज दिअ" । सरकार स्वीकार केलक जे केन्द्र सँ आर्थिक मदद कम भेट रहल अछि, जकरा कारणेँ गंडक आ कोसी परियोजनाक जाँच-पड़ताल सुस्त

भऽ गेल अछि ।

१९५३-१९५४: बाढ़िक पुनरावृत्ति आ बान्हक 'तकनीकी झाड़-फूंक'

१९५४ क बाढ़ि बिहारक इतिहासमे एकटा कालजयी विभीषिका अछि। ऐ साल कोसी अपन रस्ता एहेन बदललक जे ओहि इलाका सभमे सेहो पानी घुस गेल जतय पहिल कखनो नहि गेल छल।

बान्ह बनाम प्राकृतिक प्रवाह

लेखक दिनेश कुमार मिश्र बान्हक माध्यम सँ बाढ़ि नियंत्रणक नीतिक आलोचना करैत छथि। ओ एकरा 'तकनीकी झाड़-फूंक' (Technical Exorcism) कहैत छथि । मिश्रजीक तर्क अछि जे:

गाद (Silt) क समस्या: नदी जखन बान्हक भीतर सिमट जाइत अछि, तखन ओकर गाद ओहि पेटिए मे जमा होइत अछि। ऐ सँ नदीक सतह ऊँच भऽ जाइत अछि ।

जल-निकासी मे अवरोध: बान्हक कारणेँ सहायक नदी सभक मुँह बन्द भऽ जाइत अछि, जकरा सँ छहरक बाहर 'जल-जमाव' (Water-logging) क समस्या उत्पन्न होइत अछि ।

झूठक सुरक्षा भाव: बान्ह लोकक बीच एकटा झूठक सुरक्षाक भाव पैदा करैत अछि, मुदा जखन ई टूटैत अछि तखन तबाही कतेको गुणा बेसी होइत अछि ।

१९५५-१९५६: नया क्षेत्रमे बाढ़ि आ रबी फसलक संकट

१९५५ मे बाढ़िक पानी ओहि क्षेत्र सभमे पहुँचि गेल जतय पहिले कखनो बाढ़ि नहि आयल छल । १९५६ केर साल एहेन छल जतय बाढ़ि आ सुखाड़ समानान्तर चलि रहल छल । हथिया नक्षत्रक वर्षा नहि भेला सँ रबीक फसल (गेहूँ, दलहन) सेहो संकट मे आबि गेल। १९५७ कऽ आरम्भ धरि बिहारक खाद्यान्न स्थिति अत्यंत चिन्ताजनक भऽ गेल छल ।

नदी सभक तकनीकी आ व्यवहारगत अवलोकन

पुस्तक मे बिहारक प्रमुख नदी सभक व्यवहारक विस्तृत विश्लेषण कएल गेल अछि:

कोसी (नदीक रस्ता परिवर्तन आ गाद)

कोसी दुनियाक सबसँ बेसी गाद (Silt) ढोनिहार नदी सभ मे सँ एक अछि। हिमालय सँ निकलला

कऽ बाद ई मैदान मे भारी मात्र मे बालू आ मिट्टी छोड़ैत अछि । बान्ह बनेला कऽ बाद कोसीक भीतरक जमीन ऊँच भऽ गेल अछि, जकरा सँ आसपासक गामक जमीन नीच भऽ गेल अछि आ ओतय सदिखन जल-जमाव रहैत अछि ।

कमला आ जीवछ (मिथिलाक उर्वरता)

कमला नदी अपन उर्वर गाद लेल जानल जाइत छल। मुदा जयनगर कऽ उत्तर मे छहर बनेबा सँ ओकर स्वाभाविक प्रवाह बाधित भेल अछि। मधुबनी शहरक सुरक्षा लेल बनाओल गेल छहर कतेको बेर विफलताक कारण बनल अछि ।

बागमती (घुमावदार प्रवाह)

बागमतीक धारा अत्यंत 'मेण्डरिंग' (घुमावदार) अछि। ऐ मे जखन बाढ़ि अबैत अछि तखन पानी कतेको दिन धरि 'चौर' मे जमा रहैत अछि ।

गंडक (तिरहुत आ सारण बान्ह)

गंडकक बायाँ बान्ह (तिरहुत) आ दाहिना बान्ह (सारण) ब्रिटिश काल सँ ही विवादित रहल अछि। १९४९ मे मटियारी मे भेल भंग ई प्रमाणित केलक जे बान्ह कखनो 'अभेद्य' नहि भऽ सकैत अछि ।

शासन व्यवस्था आ भ्रष्टाचारक विडम्बना

दिनेश कुमार मिश्र बान्ह निर्माण मे व्याप्त 'राजनीति-इंजीनियर-ठेकेदार' क गठजोड़ पर कड़ा प्रहार करैत छथि। १९९० क दशकक एकटा आँकड़ा मिश्रजीक शोधक गम्भीरता कऽ दर्शबैत अछि:

सिंचाई विभागक वित्तीय विसंगति (१९९१-९६)	राशि (करोड़ रुपया मे)
राजस्व संग्रह	३९
विभागक अपन रखरखाव पर खर्च	७७.२१
नहरक रखरखाव पर खर्च	०
इंजीनियर लोकनिक वेतन/भत्ता पर खर्च	४,२९७.९५

ई आँकड़ा प्रमाणित करैत अछि जे व्यवस्था जनता कऽ आपदा सँ बचेबा सँ बेसी स्वयं कऽ पोषय मे लागल अछि । विभागक पुस्तकालय १९७५ क बाढ़िमे डूबी गेल, जकरा कारणेँ पुरान दस्तावेज़ सभ सेहो नष्ट भऽ गेल ।

निष्कर्ष आ भविष्यक रस्ता: 'पानी का शाप' सँ

मुक्ति

दिनेश कुमार मिश्रक ई शोध आख्यान ई निष्कर्ष दैत अछि जे बाढ़ि 'नियंत्रण' क सोच ही त्रुटिपूर्ण अछि। बाढ़िक संग 'जीवन' (Living with Floods) क पद्धति कऽ पुनर्जीवित करय पड़त ।

स्वाभाविक रस्ताक बहाली: नदी सभक स्वाभाविक रस्ता मे जे अवरोध (सड़क, रेलवे छहर) अछि, ओतय पुलक संख्या बढाबय पड़त ताकि पानी सुगमता सँ निकल सके । २. **स्थानीय ज्ञानक सम्मान:** गामक लोक अपन भूगोल कऽ नीक जकाँ जानैत छथि। बाढ़ि नियंत्रणक योजना सभमे स्थानीय समुदायक भागीदारी अनिवार्य होबय चाही । ३. **बान्हक विकल्प:** नदी कऽ बेसी क्षेत्र देबाक चाही ताकि ओ गाद कऽ पूरा मैदान मे फैला सकय, जकरा सँ जमीनक उर्वरता बढ़य आ भू-जल स्तर सेहो बनल रहय ।

'पानी का शाप' मात्र एकटा पुस्तक नहि, वरन् बिहारक लोकक सहिष्णुता, संघर्ष आ विवशताक गाथा अछि। ई हमरा सभ कऽ चेताबैत अछि जे प्रकृति कऽ 'जीतबाक' कोशिश अंततः विनाशक रस्ता होइत अछि। वास्तविक विकास ओहि मे अछि जतय हम नदी कऽ ओकर गरिमा आ लोक कऽ ओकर जीविका वापस दऽ सकी ।

नित नवल दिनेश कुमार मिश्रः पोथी निष्कर्ष

मिथिलाक नदी आ बाढ़िक मर्मांतक कथाः डॉ. दिनेश कुमार मिश्रक ऐतिहासिक आ वैचारिक प्रदेयः बाढ़ि मुक्ति अभियानः मिथिलाक जल-पारिस्थितिकी, अभियान्त्रिकी आ सांस्कृतिक चेतना

उत्तर बिहारक भौगोलिक आ सांस्कृतिक परिदृश्यमे नदी आ बाढ़िक भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रहल अछि। मिथिलाक ई क्षेत्र, जे अपन उर्वर भूमि आ समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा लेल जानल जाइत अछि, ओतहि ई क्षेत्र "बाढ़िक विभीषिका" सँ सेहो निरन्तर संत्रस्त रहल अछि। ई शोध प्रतिवेदन डा. दिनेश कुमार मिश्रक व्यक्तित्व, हुनक द्वारा संचालित "बाढ़ि मुक्ति अभियान" (BMA) क दार्शनिक आ अभियान्त्रिक आधार, आ हुनक विशिष्ट योगदानक गहन विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि। डा. मिश्र केवल एकटा सिविल इंजीनियर मात्र नहि छथि, वरन् ओ मिथिलाक नदी सभक "जीवनीकार" आ ओहि समाजक स्वर छथि जे बान्हक भीतर आ बाहर अपन अस्तित्वक लड़ाई लड़ि रहल अछि ।

डा. दिनेश कुमार मिश्र: अभियान्त्रिकी सँ लोक-इतिहास धरि

डा. दिनेश कुमार मिश्रक जन्म १९४८ मे उत्तर प्रदेशक आजमगढ़मे भेल छल, मुदा हुनक कर्मभूमि उत्तर बिहारक मिथिला क्षेत्र बनल। हुनक शैक्षणिक पृष्ठभूमि अत्यन्त सुदृढ़ अछि, जे हुनका सरकारी अभियान्त्रिकीक प्रतिमान सभकेँ चुनौती देबाक लेल तकनीकी अधिकार प्रदान करैत अछि।

डा. मिश्रक शोधक यात्रा १९८४ मे सहरसा जिलाक नवहट्टामे कोसी बान्हक दरार सँ शुरू भेल छल। ओतय पुनर्वास कार्यक दौरान हुनका ई अनुभव भेल जे बाढ़ि नियंत्रणक लेल बनाओल गेल बान्ह वास्तवमे बाढ़िक तीव्रता आ अवधिकेँ आओर विकराल बना रहल अछि। ई अनुभव हुनक विचारमे एकटा "पैराडाइम शिफ्ट" (Paradigm Shift) लैलक, जतय ओ पारम्परिक "बान्ह-आधारित" समाधानक बदला "लोक-ज्ञान" (Local Knowledge) क वकालत करय लगलाह।

बाढ़ि मुक्ति अभियान (BMA): एकटा जन-आन्दोलनक विचारधारा

बाढ़ि मुक्ति अभियान (BMA) कोनो औपचारिक एनजीओ (NGO) नहि, वरन् ग्रामीण समूहक, कार्यकर्ताक आ "बाढ़ि इतिहासकार सभक" एकटा अनौपचारिक नेटवर्क अछि । डा. मिश्रक नेतृत्वमे ई अभियान ई मानैत अछि जे नदी पर नियंत्रणक अधिकार फेर सँ समाजकेँ देल जाय, जे बाढ़ि सँ लड़बाक आ ओकर संग रहबाक पारम्परिक विधा जनैत अछि ।

बी.एम.ए. क मूल सिद्धान्त आ दर्शन

बाढ़ि मुक्ति अभियानक मुख्य तर्क ई अछि जे उत्तर बिहारक बाढ़ि कोनो प्राकृतिक आपदा मात्र नहि, वरन् ई "गलत अभियान्त्रिकी" (Engineering Witchcraft) क परिणाम अछि । १९५४ सँ पहिले, उत्तर बिहारमे बाढ़िक स्वरूप बहुत भिन्न छल। नदी सभ अपन संग उर्वर गाद (Silt) ल' क' अबैत छलीह आ ओ पूरै क्षेत्रमे पसरि जाइत छल, जकरा सँ खेतक उर्वरता बढ़ैत छल । मुदा बान्हक निर्माणक बाद, नदी सभकेँ "कैद" क' देल गेल, जकरा सँ गाद नदीक पेटमे जमा होय लागल आ नदीक तल ऊपर उठि गेल ।

ई अभियानक किछु महत्वपूर्ण द्वितीय-क्रमक अन्तर्दृष्टि (Second-order insights) निम्न अछि:

बाढ़ि बनाम बाढ़ि-नियंत्रणक प्रभाव: डा. मिश्रक अनुसार, लोक बाढ़ि सँ कम आ "बाढ़ि-नियंत्रणक उपाय" सँ बेसी प्रभावित छथि । १९५२ मे बिहारमे बाढ़ि प्रवण क्षेत्र २५ लाख हेक्टेयर छल, जे १९९९ धरि बढ़ि क' ६८.८ लाख हेक्टेयर भ' गेल, जबकि ई अवधिमे ३,४६५ किलोमीटर बान्ह बनाओल गेल छल । ई स्पष्ट करैत अछि जे बान्ह बाढ़िकेँ रोकबाक बदला ओकरा नव क्षेत्र धरि पहुँचा देलक अछि।

भ्रष्टाचारक अर्थव्यवस्था: बान्हक निर्माण आ ओकर "रखरखाव" (Maintenance) एकटा एहन व्यवस्था बनि गेल अछि जतय करोड़ों रुपया खर्च होइत अछि, मुदा ओकर लाभ केवल ठेकेदार, नेता आ नौकरशाहकेँ भेटैत अछि । १९९०-९१ सँ १९९८-९९ क बीच केवल ११ किलोमीटर नव बान्ह बनल, मुदा ओकर रखरखाव पर २७० करोड़ रुपया खर्च भ' गेल ।

सामाजिक विभाजन: बान्ह समाजकेँ "भीतर" आ "बाहर" दुई भागमे बाँटि देलक अछि । बान्हक भीतर रहय वाला लोक चाहैत छथि जे बान्ह टूटे ताकि जलस्तर कम होय, जबकि बाहरक लोक अपन सुरक्षा लेल ओकरा बचेबाक चेष्टा करैत

छथि। ई द्वन्द्व अक्सर हिंसक संघर्षक रूप लय लैत अछि ।

कोसी नदी, जकरा "बिहारक शोक" कहल जाइत अछि, डा. मिश्रक अध्ययनक केन्द्रमे रहल अछि। कोसीक प्रकृति अछि अपन धार बदलबाक। पिछला २५० वर्षमे ई नदी ११५ किलोमीटर पश्चिमक तरफ खिसकल अछि ।

२००८ क कुशाहा त्रासदी ई सिद्ध क' देलक जे बान्ह कोनो सुरक्षित उपाय नहि अछि। ओहि समय नदीमे मात्र १.६६ लाख क्यूसेक पानी छल, जबकि बान्ह ९.५ लाख क्यूसेक लेल डिजाइन क' गेल छल । ई असफलता ई दर्शाबैत अछि जे गादक जमाव आ रखरखावमे लापरवाही कोना एकटा "टाइम बम" बना दैत अछि ।

डा. दिनेश कुमार मिश्रक विशिष्टता ई अछि जे ओ कोनो बाहरी विशेषज्ञक जकाँ नहि, वरन् मैथिली समाजक अभिन्न अंग बनि क' लिखैत छथि।, जे मिथिलाक जल-संस्कृति आ सामाजिक समस्याकेँ उजागर करैत अछि ।

"दुई पाटन के बीच में": कोसीक जीवनी

हुनक पुस्तक "दुई पाटन के बीच में" (२००६) कोसी नदीक ऐतिहासिक जीवनी अछि । ऐ पोथीमे

ओ कोसीक भौगोलिक स्थिति सँ लय क' पौराणिक कथा धरि सबहक विस्तार सँ वर्णन केने छथि। ओ लिखैत छथि जे १२म शताब्दीमे राजा लक्ष्मण द्वितीय एकटा छहर बनौने छलाह, जकरा लोक "बीर बाँध" कहैत छलाह । ओ फिरोज शाह तुगलकक १३५० क बंगाल अभियानक सेहो उल्लेख करैत छथि, जतय सेनाकेँ कोसी पार करबाक लेल हाथीक सहारा लय पड़ल छल ।

साहित्यिक चोरीक विवाद आ अनैतिकताक विरोध

विदेह आन्दोलन साहित्यमे "शुचिता" (Authenticity) आ "सामानान्तर धारा" (Parallel Stream) क वकालत करैत अछि, जे सरकारी संस्था सभक (जेना साहित्य अकादमी) कथित जातिवादी एजेंडा सँ अलग अछि ।

विदेह आन्दोलन डा. मिश्रक शोधक रक्षा लेल सेहो जानल जाइत अछि। एहन आरोप अछि जे साहित्य अकादमीक सदस्य, पंकज झा "पराशर", डा. मिश्रक पुस्तक "दुई पाटन के बीच में" सँ पैराग्राफक पैराग्राफ चोरी क' क' अपन मैथिली उपन्यास "जलप्रांतर" (२०१७) प्रकाशित क' देलनि । विदेह आन्दोलन ऐ साहित्यिक चोरीक कड़ा विरोध केलक अछि आ डा. मिश्रक मौलिक

कार्यक महत्ताकेँ प्रतिपादित केलक अछि। डा. मिश्र अपन सब पोथी "विदेह आर्काइव" मे निःशुल्क उपलब्ध करबाक अनुमति देलनि अछि, ताकि ज्ञानक लोकतान्त्रिकरण भ' सकय।

'जलप्रांतर' विवादः साहित्यिक चोरी आओर बौद्धिक नैतिकताक संकट

दिनेश कुमार मिश्रक शोध कार्यक प्रभाव गहीर रहल अछि। मैथिली साहित्यक इतिहास मे 'जलप्रांतर' (2017) नामक उपन्यास आओर ओकर लेखक पंकज झा 'पाराशर' सँ जुड़ल विवाद एकर सभ सँ ज्वलंत उदाहरण अछि। 'विदेह' जेहेन मैथिली पत्रिका ई गंभीर आरोप लगौलक जे पंकज झा 'पाराशर' दिनेश कुमार मिश्रक वर्षक शोधकेँ, विशेष क' हुनकर पोथी 'दुइ पाटन के बीच में' (2006) आओर महानन्दा संबंधी लेख सभ सँ, बिना कोनो श्रेय क' अपन उपन्यास मे शामिल क' लेलनि।

साहित्यिक चोरीक विशिष्ट उदाहरण आओर साक्ष्य

आलोचक सभ द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यक अनुसार, 'जलप्रांतर' क कतेको पृष्ठ दिनेश कुमार मिश्रक मूल शोधक शब्दशः अनुवाद वा प्रतिलिपि बुझाय

दैत अछि। उदाहरणक लेल, कोसी क्षेत्र मे 1923 सँ 1946 क बीच मलेरिया, कालाजार आओर हैजा सँ भेल मृत्यु क आँकड़ा (7,83,000) मिश्रक पोथी मे जाहि क्रम मे देल गेल छल, ओही 'जलप्रांतर' क पृष्ठ 103 पर भेटल । ऐना, 12वीं शताब्दीक 'बीर बांध' क विवरण आओर फिरोज शाह तुगलकक सेना द्वारा हाथी आओर रस्सीक मदति सँ कोसी पार करय क ऐतिहासिक वृत्तांत मिश्रक लेख सभ सँ सीधे तौर पर उठाओल गेल प्रतीत होइत अछि ।

'समानान्तर धारा' आओर संस्थानिक भ्रष्टाचार पर प्रहार

ई विवाद केवल साहित्यिक चोरी तक सीमित नहि रहल, वरन् एकरा सँ मैथिलीक संस्थानिक ढाँचा (साहित्य अकादमी, दिल्ली आओर मैथिली अकादमी, पटना) क भीतर व्याप्त जातिगत आओर वैचारिक ध्रुवीकरण सेहो उजागर भेल । आलोचक सभक तर्क अछि जे पंकज झा 'पाराशर' जेहेन लेखक सभ कैं संस्थानिक संरक्षण प्राप्त अछि, जबकि दिनेश कुमार मिश्र जेहेन शोधकर्ता, जे वास्तव मे ज़मीनी सच्चाई उजागर क' रहल छथि, हुनकर काम कैं कात-करोट पर धकेलल जाइत अछि ।

पूर्वपीठिका:

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच में' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति!, दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूंक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan-Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा पराशर द्वारा हिनकर पोथी सभसँ पैराक पैरा मैथिली अनुवाद कऽ अपना नामे उपन्यास छपबाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक कमलानन्द झा ऐ चोर लेखकक रिसर्च कहैं छथि! एतऽ स्पष्ट कऽ दी जे ई चोर लेखक आ छद्म समीक्षक दुनू अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालयक हिन्दी विभागमे छथि। ई रिसर्च दिनेश कुमार मिश्रक थीक, जे आइ.आइ.टी. खड़गपुरसँ सिविल इन्जीनियरिङ मे बी. टेक. १९६८मे आ स्ट्रक्चरल इन्जीनियरिङमे एम.टेक. १९७०मे केने छथि, आ ओइ रिसर्च लेल क्वालिफाइड छथि। जखन कोनो विषयमे नामांकन

नै होइ छै तखन लोक हारि-थाकि हिन्दीमे नामांकन लइए, नै तँ कमलानन्द झा कैँ बुझऽ मे आबि जइतन्हि जे ई रिसर्च कोनो सिविल इन्जीनियरेक भऽ सकैत अछि, भऽ सकैए बुझलो होइन्ह। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आँगा संलग्न अछि।

दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सभ धारक कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर ऋणसँ मिथिलावासी कहियो उऋण नै भऽ सकता, मुदा मूलधाराक पुरस्कार आ पाइ लोलुप लोकसँ कृतघ्नते भेटत से फेर सिद्ध भेल। ऐ लेखककेँ दस बारह बर्ख पहिने सेहो तारानन्द वियोगी उद्धारक भेटल छलखिन्ह जे लिखने रहथिन्ह जे ओ कवितामे प्रभावित भऽ अनायासे अपन रचनामे दोसरक सामिग्री चोरि कऽ लइ छथि, एहने सन। आब ऐ कमलानन्द झा क आश्रय तकलन्हि मुदा दुर्भाग्य! जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोडर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीन-जत्थाबला लोक कम्यूनिस्ट बनला आ आब ब्राह्मणवाद बचेबालेल वामपंथक शरण, एहेन लोक सभसँ कम्यूनिज्मकेँ बहुत

नुकसान भेल छैं।

दिनेश कुमार मिश्रक सभटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमेः
http://videha.co.in/pothi.htm
एतऽ एकटा गप मोन पाड़ि दी जे जखन बिल गेट्सकेँ पूछल गेलन्हि जे की ओ एक्स बॉक्स भारतमे पाइरेशीक डरसँ देरीसँ आनि रहल छथि? तँ हुनकर उत्तर रहन्हि जे माइक्रोसॉफ्ट पाइरेशीक डरे कोनो उत्पाद देरीसँ नैं उतारने अछि। से विदेह पेटारमे हम सभ ऐ तरहक रिस्क रहितो एकरा आर समृद्ध करैत रहब, कारण समानान्तर धारामे सड़ल माँछ द्वारे पोखरिक सभ माँछ नैं सड़ैए, एतुक्का मलाह गोट-गोट कऽ सड़ल माँछ निकालैत रहल छथि, निकालैत रहता।

सिण्डीकेटेड समीक्षापर अन्तिम प्रहार।

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): यह ध्यान देने की बात है कि 1923 से 1946 के बीच कोसी क्षेत्र में मलेरिया से 5,10,000, कालाजार से 2,10,000, हैजे से 60,000 तथा चेचक से 3,000 मौतें (कुल 7,83,000) हुईं।

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक

मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. १०३)]:

ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): *भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही*

चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा चोर उपन्यासकारक पीठ ठोकब, देखू छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उद्धृत चोर पंकज झा पराशर (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २५७-२५८):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़ैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. ३१)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप कँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक कँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): *कोसी के प्रवाह कि भयावहता की एक झलकफिरोजशाह तुगलक की फौज के सन् 1354 में बंगाल से दिल्ली लौटने के समय मिलती है। बताया जाता है कि जब सुल्तान की फौजें कोसी के किनारे पहुँचीं तो देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर हाजी शम्सुद्दीन इलियास की फौजें*

मुकाबले के लिए तैयार खड़ी हैं। यह वही हाजी शम्सुद्दीन थे जिन्होंने हाजीपुर तथा समस्तीपुर शहर बसाये थे। फिरोज की फौजें शायद कुरसेला के आस-पास किसी जगह पर कोसी के किनारे सोच में पड़ गईं। नदी की रफ्तार उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी। आखिरकार फैसला हुआ कि नदी के साथ-साथ उत्तर की ओर बढ़ा जाय और जहाँ नदी पार करने लायक हो जाय वहाँ पानी की थाह ली जाये। सुल्तान की फौजें प्रायः सौ कोस ऊपर गईं और जियारन के पास, जो कि उसी स्थान पर अवस्थित था जहाँ नदी पहाड़ों से मैदानों में उतरती थी, नदी को पार किया। नदी की धारा तो यहाँ पतली जरूर थी पर प्रवाह इतना तेज था कि पाँच-पाँच सौ मन के भारी पत्थर नदी में तिनकों की तरह बह रहे थे। जहाँ नदी को पार करना मुमकिन लगा उसके दोनों ओर सुल्तान ने हाथियों की कतार खड़ी कर दी और नीचे वाली कतार में रस्से लटकाये गये जिससे कि यदि कोई आदमी बहता हुआ हो तो इस रस्सों की मदद से उसे बचाया जा सके। शम्सुद्दीन ने कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी को पार कर लेंगी और जब उस को इस बात का पता लगा कि सुलतान की फौजों ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. १०५)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र–शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनँ रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कूरसेला के आस–पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना केँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे–किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनँ कम बूझि पड़य, ओतय पानिक धाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनँ शिकस्त बुझैलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच–पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति केँ जतय नदी पार करब कनँ आसान बुझैलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी केँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का–बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनँ छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

दिनेश कुमार मिश्रः एकटा बहुआयामी व्यक्तित्वक विकास आओर वैचारिक प्रस्थान

दिनेश कुमार मिश्रक जन्म 1946 (किछु स्रोत क अनुसार 1948) मे उत्तर प्रदेशक आजमगढ़ जिला मे भेल छल । हुनकर शैक्षणिक पृष्ठभूमि भारतक शीर्ष तकनीकी संस्थान सभ सँ जुड़ल रहल अछि। ओ 1968 मे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), खड़गपुर सँ सिविल इंजीनियरिंग मे स्नातक (B.Tech) क उपाधि प्राप्त कयलनि आओर ओकर बाद 1970 मे ओतय सँ संरचनात्मक इंजीनियरिंग (Structural Engineering) मे स्नातकोत्तर (M.Tech) पूर्ण कयलनि । हुनकर जीवनक वैचारिक मोड़ 1984 मे आयल, जखन सहरसा मे कोसी बान्ह टुटला सँ भेल तबाही देखि

ओ ई सोचय लेल मजबूर भ' गेलाह जे की आधुनिक इंजीनियरिंग वास्तव मे समाधान द' रहल अछि वा समस्याकेँ आओर जटिल बना रहल अछि । 2006 मे वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय सँ डॉक्टरेट क उपाधि प्राप्त करय तक, मिश्र स्वयंकेँ एकटा सक्रिय पर्यावरणविद आओर नदी-इतिहासकारक रूप मे स्थापित क' लेने छलाह ।

मिश्रक कार्यप्रणाली मे एकटा विशिष्ट द्वैत देखाय दैत अछि; एक दिस जतय हुनका लग आईआईटी क तकनीकी दृष्टि छन्हि, ओतय दोसर दिस ओ लोक-कथा, मिथक, गीत आओर शायरीक माध्यम सँ नदि सभक सांस्कृतिक अस्तित्वकेँ बुझय क प्रयास करैत छथि । हुनका 'अशोका फेलो' क रूप मे चुनल जानाय आओर 'भगीरथ प्रयास सम्मान' (2016) सँ नवाजल जानाय ऐ बातक प्रमाण थिक जे हुनकर शोध एकटा व्यापक सामाजिक आन्दोलनक रूप ल' लेने अछि ।

बन्दिनी महानन्दा: नदीक मुक्ति आओर बान्हक जाल

'बन्दिनी महानन्दा' क शीर्षकहि मिश्रक ओहि मूलभूत सिद्धांतकेँ व्यक्त करैत अछि जाहिमे ओ बान्हकेँ नदीक लेल 'जेल' क संज्ञा दैत छथि।

महानन्दा, जे बिहार आओर बंगालक बीच एकटा सीमावर्ती नदीक रूप मे बहैत अछि, दशक सभ सँ ओहि तकनीकी हस्तक्षेप सभक शिकार रहल अछि जाहि सँ एकर स्वाभाविक गतिशीलता बाधित भेल अछि । मिश्रक तर्क अछि जे महानन्दा जेहेन नदि सभकेँ बान्ह मे बान्हबाक नीति न केवल बाढ़िक विभीषिकाकेँ बढ़ेलक अछि, वरन् नदी आओर तटीय समुदायक बीचक ओहि सदियोँ पुरान सांस्कृतिक आओर पारिस्थितिक संबंधकेँ सेहो तोड़ि देलक अछि जकरा ओ 'सांस्कृतिक स्वामित्व' कहैत छथि ।

बान्हक अर्थशास्त्र आओर विफलताक तकनीकी विश्लेषण

मिश्र अत्यंत विस्तार सँ ई बुझेलनि अछि जे कोना बान्हक भीतर गाद (silt) जमा भेला सँ नदीक तल (riverbed) आसपासक भूमि सँ ऊँच भ' जाइत अछि, जाहि सँ बान्ह एकटा 'टाइम बम' मे तब्दील भ' जाइत अछि । महानन्दा बेसिन मे कयल गेल हुनकर अध्ययन बतबैत अछि जे सरकारी आँकड़ा मे बाढ़ि-नियंत्रण पर भारी निवेश क बावजूद, बाढ़ि-प्रवण क्षेत्र (flood-prone area) मे निरंतर वृद्धि भेल अछि । ओ एकरा 'इंजीनियरिंगक जादू-टोना' (Engineering Witchcraft) कहैत छथि, जतय तकनीकी

समाधान स्थानीय स्थलाकृति आओर जल विज्ञानक अनदेखी करैत अछि ।

पारिस्थितिक प्रभाव आओर 'वाटर-लॉगिंग' क समस्या

महानन्दाक संदर्भ मे एकटा पैघ समस्या जल-जमाव (water-logging) क अछि। बान्ह न केवल नदीक पानि कैं बाहर जयबा सँ रोकैत अछि, वरन् बाहरी क्षेत्रक वर्षा जलकैं नदी मे समाहित भेला सँ सेहो बाधित करैत अछि । एकर परिणामस्वरूप कृषि योग्य भूमि कतेको मास तक जलमग्न रहैत अछि, जाहि सँ रबीक फसल आओर स्थानीय आजीविका पर विनाशकारी प्रभाव पड़ैत अछि । मिश्रक शोध ऐ दिस संकेत करैत अछि जे परंपरागत रूप सँ एतय क लोक 'बाढ़िक संग जीनाय' जनैत छलाह, जतय बाढ़िक पानि माटिक उर्वरता बढ़बैत छल, विनाश नहि अनैत छल ।

मिथिलाक जल-इतिहास आओर 1948 क विधायी बहस

नदि सभक प्रति नीतिगत बदलाव कैं बुझय लेल दिनेश कुमार मिश्र स्वतंत्रताक तुरंत बादक

राजनीतिक बहस सभक सेहो गहीर विश्लेषण कयलनि अछि। 18 सितंबर, 1948 कैं बिहार विधान सभा मे भेल बहस ऐ दृष्टि सँ अत्यंत महत्वपूर्ण अछि । ऐ बहस मे दीप नारायण सिंह, प्रभुनाथ सिंह आओर मुरली मनोहर प्रसाद जेहेन नेता सभ बाढ़ि आओर बान्ह पर अपन विचार रखने छलाह।

मुरली मनोहर प्रसाद ओहि समयक प्रचलित सिंचाई प्रणालीक विनाश पर दुख व्यक्त कयलनि आओर ई बुझेलनि जे कोना नील क कोठीवाल सभ (Indigo Planters) पुरानी नहर आओर जल-द्वार (sluice gates) क रखरखाव सँ मना क' देने छलाह, जाहि सँ पूरा तंत्र ध्वस्त भ' गेल । ऐ बहस सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे बान्ह बनेबाक माँग अक्सर तात्कालिक राहत लेल कयल जाइत छल, जबकि दीर्घकालिक प्रभावक वैज्ञानिक समझ ओहि समय मे सेहो विवादित छल ।

बागमती आओर कोसी: बान्हक भीतर कैद समुदायक त्रासदी

दिनेश कुमार मिश्रक शोधक एकटा पैंघ हिस्सा बागमती आओर कोसी नदिक बान्हक बीच फँसल समुदायक मानवीय संकट पर केंद्रित अछि। बागमती परियोजनाक संदर्भ मे, ओ सीतामढ़ी

जिलाक 'मसाहा आलम' जेहेन गामक अध्ययन कयलनि अछि, जतय 420 परिवार मे सँ केवल 104 कैँ चालीस वर्षक बाद पुनर्वास भेटि सकल । ई परिवार आईयो बान्ह वा रेलवे लाइनक कात मे नारकीय स्थिति मे रहय लेल मजबूर छथि ।

मिश्र बतबैत छथि जे ऐ परियोजना सभ मे भ्रष्टाचारक आलम ई छल जे विस्थापित सभ कैँ भेटय वाला छोट भूखंड लेल सेहो अधिकारी सभ कैँ 'नजराना' वा 10% कमीशन दय पड़ैत छल । मसाहा आलम क ग्रामीण सभ जखन ई रिश्वत दय सँ मना क' देलनि, तँ हुनका दशकों तक पुनर्वास सँ वंचित राखल गेल ।

बाढ़ि मुक्ति अभियानः समुदायक सशक्तिकरण

दिनेश कुमार मिश्र केवल एकटा लेखक नहि छथि, वरन् ओ 'बाढ़ि मुक्ति अभियान' (Barh Mukti Abhiyan) क माध्यम सँ एकटा सक्रिय जन-आन्दोलनक नेतृत्व सेहो करैत छथि । ई अभियान उत्तर बिहारक बाढ़ि-प्रवण क्षेत्र सभ मे समुदायकैँ संगठित करैत अछि ताकि ओ बाढ़ि प्रबंधनक विकेंद्रीकृत आओर पारंपरिक तरीकाकैँ पुनः अपना सकथि ।

मिश्रक मानजाय अछि जे बाढ़ि सँ निपटय क सभ सँ प्रभावी तरीका 'चौर' (स्थानीय जल-निकाय) क जल निकासी व्यवस्थाकेँ पुनर्जीवित करब अछि । ओ कतेको समूहकेँ तकनीकी सहायता प्रदान कयलनि अछि ताकि ओ स्वयं जल निकासी कार्य क' सकथि आओर ओहि जमीन पर फेर सँ कृषि शुरू क' सकथि जे जल-जमाव क कारण बेकार भ' गेल छल ।

मैथिली साहित्य मे नदीक चित्रण आओर वैचारिक संघर्ष

मैथिली साहित्य मे नदीक चित्रण केवल प्राकृतिक दृश्य क रूप मे नहि, वरन् मानवीय संघर्ष क रूप मे सेहो भेल अछि। दिनेश कुमार मिश्रक कार्य सभ लेखक सभ केँ एकटा तथ्यात्मक आधार प्रदान कयलक अछि।

हालाँकि, मैथिली बौद्धिक जगत मे एकटा 'समानान्तर धारा' (Parallel Stream) क उदय भेल अछि जे सरकारी अकादमी आओर स्थापित आलोचक सभक विरुद्ध एकटा मोर्चा खोलने अछि ।

ऐ संघर्ष मे दिनेश कुमार मिश्रक नदि सभक 'जीवनवृत्त' एकटा वैचारिक हथियारक जेहेन उपयोग कयल जा रहल अछि ।

तकनीकी शब्दावली आओर विमर्श: 'इंजीनियरिंग विचक्राफ्ट' सँ 'सांस्कृतिक स्वामित्व' तक

दिनेश कुमार मिश्रक शोध मे प्रयुक्त शब्दावली हुनकर वैचारिक विमर्शक गहिराईकेँ दर्शबैत अछि। 'इंजीनियरिंग विचक्राफ्ट' (Engineering Witchcraft) क माध्यम सँ ओ ओहि आधुनिक अंधविश्वास पर चोट करैत छथि जे ई मानैत अछि जे कंक्रीट क संरचना सँ प्रकृति केँ सम्पूर्ण रूपेँ नियंत्रित कयल जा सकैत अछि । एकर विपरीत, 'सांस्कृतिक स्वामित्व' (Cultural Ownership) क हुनकर अवधारणा ई सुझाव दैत अछि जे नदि सभक प्रबंधनक अधिकार ओहि स्थानीय समुदायकेँ भेटय चाही जे सदियौ सँ हुनकर संग रहि रहल छथि ।

मिश्रक तर्क अछि जे आधुनिक बाढ़ि नियंत्रण नीति 'पारस्परिक दुर्गमता' (reciprocal inaccessibility) पैदा करैत अछि—बाढ़िक समय प्रभावित क्षेत्र तक पहुँजब असंभव भ' जाइत अछि,

आओर शांतिकाल मे जल-जमाव क कारण ओ क्षेत्र विकासक मुख्यधारा सँ कटल रहैत अछि ।

भविष्यक चुनौती आओर शोधक प्रासंगिकता

आई जखन जलवायु परिवर्तन क कारण वर्षा क पैटर्न मे बदलाव आबि रहल अछि, तब दिनेश कुमार मिश्रक शोधक प्रासंगिकता आओर बढ़ि गेल अछि । हुनकर भविष्यवाणी, जे ओ कोसी आओर महानन्दाक संदर्भ मे दशकौं पहिने कयलनि छल, आई सच साबित भ' रहल अछि। ओ वर्तमान मे गंडक आओर घाघरा नदि पर कार्य क' रहल छथि ताकि उत्तर बिहारक नदि सभक एकटा संपूर्ण 'पारिस्थितिक मानचित्र' तैयार कयल जा सकय ।

मिश्रक कार्य केवल नीति-निर्माता सभ लेल नहि, वरन् समाजशास्त्री आओर साहित्यकार सभ लेल सेहो एकटा मार्गदर्शिका थिक। ओ हमरा सभकेँ याद दियाबैत छथि जे नदि केवल जलक मात्रा (cubic seconds) नहि थिक, वरन् ओ "वन, पर्वत आओर ऋषिक आशीर्वाद" क वाहिका थिक, जकर पवित्रता आओर स्वतंत्रता केँ बचा क' राखब हमर सामूहिक जिम्मेदारी थिक ।

डा. मिश्रक कार्य केवल कोसी धरि सीमित नहि अछि, ओ मिथिलाक लगभग सब प्रमुख नदीक "जीवनी" लिखलनि अछि।

महानन्दा: हुनक पुस्तक "बन्दिनी महानन्दा" (१९९४) बिहार आ बंगालक बीचक सीमावर्ती नदीक समस्या सभकेँ उजागर करैत अछि ।
बागमती: "बागमती की सद्गति!" (२०१२) मे ओ ई देखौलनि अछि जे कोना एकटा वरदान रूपी नदी बान्हक कारण "अभिशाप" बनि गेल अछि ।

कमला: कमला नदी आ ओकर संग रहय वाला लोकक संघर्ष पर हुनक शोध "कमला नदी आ लोक" (Kamla River and People on Collision Course) अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि ।

भुतही बलान: "भुतही नदी आ तकनीकी झाड़-फूँक" मे ओ ई देखौलनि अछि जे कोना अभियान्त्रिक घमण्ड एकटा अस्थिर नदीकेँ नियंत्रित करबाक प्रयासमे विफल रहल ।

गण्डक: हालमे ओ गण्डक आ घाघरा नदीक इतिहास पर कार्य क' रहल छथि, जकरा सँ उत्तर बिहारक नदी-परिदृश्य पूर्ण भ' जायत ।

डा. मिश्र आ बी.एम.ए. क मूल आग्रह अछि "बाढ़िक संग जियबाक" कला। मिथिलाक लोक पहिलुक्का समयमे "चौर" (Chaur), "धाप" आ "धार" क माध्यम सँ जलक प्रबन्धन करैत छलाह। गादयुक्त पानी खेतमे जाइत छल जकरा सँ मखाना, माछ आ धानक बम्पर पैदावार होइत छल।

मुदा वर्तमान सरकारी नीति "नदी जोड़ो" आ "राष्ट्रीय जलमार्ग" (National Waterways Act, 2016) जेकाँ पैघ परियोजना सभ पर ध्यान केन्द्रित क' रहल अछि। गण्डक (NW-37) आ कोसी (NW-58) कैं जलमार्ग बनेबाक योजना अछि, जकरा सँ नेपालकैं समुद्र सँ जोड़ल जायत। डा. मिश्र चेतावनी दैत छथि जे ई परियोजना सभ गादक गम्भीर समस्याकैं नजरअन्दाज क' रहल अछि आ ऐ सँ पारिस्थितिकीक आओर बेसी नुकसान भ' सकैत अछि।

डा. दिनेश कुमार मिश्रक यात्रा आई.आई.टी. क "कठोर अभियान्त्रिकी" सँ मिथिलाक "कोमल लोक-संस्कृति" धरि पहुँचैत अछि। हुनक कार्य ई सिद्ध करैत अछि जे नदी केवल जल-धारा नहि, वरन् समाजक धमनी अछि। बाढ़ि मुक्ति अभियान कोनो सरकारी नीति सँ विरोध मात्र नहि अछि,

वरन् ई समाजकेँ अपन जड़क तरफ मुड़बाक आह्वान अछि ।

जँ हमरा सभकेँ उत्तर बिहारकेँ विनाश सँ बचेबाक अछि, तँ डा. मिश्रक "बाढ़ि इतिहास" सँ सीख लय पड़त आ अभियान्त्रिकीकेँ मानवीय चेहरा द' क' प्रकृतिक अनुकूल बनाबय पड़त ।

मिथिलाक भौगोलिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक चेतना मे नदीक स्थान मात्र एकटा जलवाहक स्रोत धरि सीमित नहि अछि, वरन् ई एतय के सभ्यताक मूल आधार अछि। जखन हम मिथिलाक नदीक बात करैत छी, तखन हमरा सोझाँ बाढ़ि, विस्थापन आ संघर्षक एकटा एहन चित्र उभरैत अछि जकरा बुझबाक लेल मात्र इन्जीनियरिङक डिग्री पर्याप्त नहि अछि। ऐ गम्भीर विषय केँ अपन जीवनक ध्येय बना कऽ, डॉ. दिनेश कुमार मिश्र एकटा एहन विमर्श खड़ा कयलनि अछि जे आधुनिक जल प्रबंधन नीतिक विफलता केँ लोक-स्मृति आ ऐतिहासिक साक्ष्यक आधार पर चुनौती दैत अछि।

डॉ. दिनेश कुमार मिश्रक परिचय मात्र एकटा नदी विशेषज्ञक रूप मे देब हुनकर व्यापक शोध आ

संघर्षक संग अन्याय होयत। ओ एकटा एहन 'नदी-इतिहासकार' छथि जे अपन तकनीकी शिक्षाक उपयोग नदी कैं 'नियंत्रित' करबाक लेल नहि, वरन् नदीक 'व्यथा' कैं जन-मानस धरि पहुँचाबय लेल कयलनि। हुनकर लेखन, जकरा 'बन्दिनी महानन्दा', 'दुइ पाटन के बीच में', 'बागमती की सद्गति' आ 'बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी' जेहन कालजयी रचनाक रूप मे जानल जाइत अछि, मिथिलाक जल-संस्कृति आ बाढ़िक राजनीति कैं बुझबाक लेल अनिवार्य दस्तावेज अछि।

व्यक्तिगत आ शैक्षणिक पृष्ठभूमिः एकटा इन्जीनियरक परिवर्तन

दिनेश कुमार मिश्रक जन्म १९४८ मे भेल छलनी । हुनकर शैक्षणिक यात्रा अत्यन्त प्रभावशाली अछि, जे हुनकर शोधक वैज्ञानिक आधार कैं सुदृढ़ करैत अछि। १९६८ मे ओ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), खड़गपुर सँ सिविल इंजीनियरिंग मे स्नातक (B. Tech Hons.) कयलनि । एकर बाद १९७० मे ओ ओतय सँ स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग मे एम. टेक (M. Tech) कयलनि। हुनकर ई इन्जीनियरिङक पृष्ठभूमि हुनका ओहि समयक प्रचलित 'तकनीकी वर्चस्ववाद' कैं बुझबा मे सहायक भेलनी, जे मानैत छल जे नदी कैं

सीमेंट आ पाथरक दीवार सँ बान्हि कऽ नियंत्रित कयल जा सकैत अछि।

१९७० सँ १९८४ धरि डॉ. मिश्र एकटा स्वतंत्र संरचनात्मक परामर्शदाता (Structural Consultant) क रूप मे कार्यरत रहलाह। ऐ अवधि मे ओ विश्वविद्यालयक भवन, टाउनशिप, सिनेमा हॉल आ अस्पताल जेहन पैघ संरचनाक डिजाइन आ पर्यवेक्षण कयलनि । मुदा १९८४ मे सहरसा जिलाक नवहट्टा मे कोसीक बान्ह टूटबाक जे दृश्य ओ देखलनि, ओ हुनकर जीवनक दिशा बदलि देलनी। ५ सितम्बर १९८४ कैं हेमपुर गामक लग कोसीक बान्ह टूटल छल आ लगभग ५ लाख लोक विस्थापित भऽ गेल छलाह । ऐ त्रासदी कैं देखला क बाद मिश्र अपन व्यावसायिक करियर कैं छोडि नदीक व्यवहार आ बाढ़ि पीड़ितक समस्याक गम्भीर अध्ययन मे लागि गेलाह।

बाढ़ि मुक्ति अभियान: लोक-विज्ञान आ सरकारी नीति मे द्वंद्व

१९९२ मे डॉ. दिनेश कुमार मिश्र 'बाढ़ि मुक्ति अभियान' (BMA) क नींव रखलनि। ई कोनो पारंपरिक एनजीओ नहि, वरन् एकटा जन-आंदोलन आ वैचारिक मंच अछि, जे बाढ़ि नियंत्रणक नाम पर चलि रहल 'तटबंधीय

राजनीति' क विरोध करैत अछि । मिश्रक मुख्य तर्क अछि जे बाढ़ि कोनो प्राकृतिक आपदा मात्र नहि अछि, वरन् ई सरकारी कुप्रबंधन आ गलत इन्जीनियरिङक परिणाम अछि।

मिश्रक अनुसार, बाढ़ि मुक्ति अभियानक उद्देश्य लोक कैँ अपन 'बाढ़ि स्मृति' (Flood Memory) कैँ पुनः जागृत करबाक लेल प्रेरित करब अछि। ओ गाम-गाम जा कऽ 'बाढ़ि इतिहासकार' तैयार कयलनि, जे ई अभिलेखित (record) करैत छथि जे बान्ह बनबा सँ पहिने गाम मे बाढ़ि कोना अबैत छल आ लोक ओकर स्वागत कोना करैत छलाह। बाढ़ि मुक्ति अभियानक वैचारिक ढाँचा निम्नलिखित बिन्दु सभ पर आधारित अछि:

बाढ़िक संग जीयब (Living with Floods): मिश्रक माननाय अछि जे बाढ़ि कैँ रोकब असंभव अछि, ओकरा संग सामंजस्य बना कऽ रहब ही एकमात्र विकल्प अछि।

बान्हक विफलता: बान्ह नदीक गाद (silt) कैँ बान्हि लैत अछि, जाहि सँ नदीक सतह ऊपर उठि जाइत अछि आ बाढ़ि और भयानक भऽ जाइत अछि ।

विकेन्द्रीकृत समाधान: *पैंघ छहर आ बान्हक बदला मे छोट-छोट जल निकासी (drainage) आ पारंपरिक आहर-पैन प्रणाली कैँ पुनर्जीवित करब।*

कोसीक गाथा: 'दुइ पाटन के बीच मेँ आ विस्थापनक त्रासदी

डॉ. मिश्रक सब सँ चर्चित आ गम्भीर शोध 'दुइ पाटन के बीच में - कोसी नदी की कहानी' (२००६) अछि। ऐ पोथी मे ओ कोसी नदीक पौराणिक संदर्भ सँ लय कऽ आधुनिक बान्हक इतिहास धरि एकटा व्यापक फलक प्रस्तुत कयलनि अछि । कोसी जेकरा 'बिहारक शोक' कहल जाइत अछि, मिश्रक नजरि मे ओ 'इन्जीनियरक शोक' और 'राजनेताक वरदान' अछि।

ऐ पोथी मे ओ १२म शताब्दीक राजा लक्ष्मण द्वितीय द्वारा बनाओल गेल 'बीर बाँध' क चर्चा करैत छथि, जकर अवशेष एखनहु सुपौल जिलाक भीम नगर मे देखल जा सकैत अछि । मिश्र ई सिद्ध करैत छथि जे प्राचीन समय मे सेहो बान्हक निर्माण भेल छल, मुदा ओ नदीक प्रवाह कैँ रोकबाक लेल नहि, वरन् रक्षात्मक कार्य लेल छल। आधुनिक समय मे १९५० क दशक मे जखन

कोसी परियोजना शुरू भेल, तखन ई दावा कयल गेल छल जे बान्ह सँ बाढ़ि खत्म भऽ जयत। मुदा मिश्र आँकड़ाक संग देखौंने छथि जे १९५४ मे बिहार मे बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र २५ लाख हेक्टेयर छल, जे २००८ धरि बढ़ि कऽ ६८.८ लाख हेक्टेयर भऽ गेल ।

हुनकर एकटा और महत्वपूर्ण पोथी 'Trapped! Between the Devil and Deep Waters' (२००८) कोसीक कुसहा त्रासदी (Kusaha Breach) सँ ठीक पहिने प्रकाशित भेल छल, जेना कि कोनो भविष्यवाणी होय । ऐ पोथी मे ओ स्पष्ट कयलनि जे जखन नदीक सतह बान्हक भीतर बढ़ि जाइत अछि, तखन ओ कोनो समय अपन रास्ता बदलि सकैत अछि। २००८ मे ठीक ओही भेल, जखन कोसी अपन पुराना धारा कैँ पकडबाक लेल बान्ह तोडि कऽ पूब सँ बहय लागल।

कोसी क्षेत्र मे मृत्यु आ बीमारीक ऐतिहासिक आँकड़ा

मिश्र अपन शोध मे १९२३ सँ १९४६ क बीचक एकटा भयानक आँकड़ा देने छथि, जे ई दर्शबैत अछि जे कोना ब्रिटिश काल मे रेलवे आ सड़क

निर्माणक कारण भेल जल-जमाव लोकक जान लेलक ।

बीमारी	मृत्यु क संख्या (१९२३-१९४६)
मलेरिया	५,१०,०००
कालाजार	२,१०,०००
हैजा	६०,०००
चेचक	३,०००
कुल मृत्यु	**७,८३,०००**

मिश्रक तर्क अछि जे बाढ़ि अपन संग जखन पानि लय कऽ अबैत अछि, तखन ओ पानि बहैत रहबाक कारण बीमारी नहि फैलैत अछि। मुदा जखन बान्हक कारण पानि थमि जाइत अछि (Waterlogging), तखन मच्छर पनपैत अछि आ महामारी फैलैत अछि।

बागमतीक दुर्गतिः 'बागमती की सद्गति!' आ तकनीकी हस्तक्षेप

बागमती नदी मिथिलाक लेल अत्यन्त पवित्र मानल जाइत अछि, मुदा डॉ. मिश्र अपन पुस्तक 'बागमती की सद्गति!' मे ऐ पवित्रता कैँ नष्ट करबाक सरकारी प्रयासक पर्दाफाश कयलनि अछि । बागमती जे अपन मार्ग बदलबाक लेल जानल जाइत अछि, ओकरा बान्ह मे बान्हबाक प्रयास एकटा पैंघ विफलता साबित भेल अछि।

मिश्र ऐ मे 'Riga Sugar Mill' सँ निकलनिहार गंदा पानिक उल्लेख कयलनि अछि, जे बागमती कैँ प्रदूषित कऽ रहल अछि । ओ 'इंजीनियरिंग विचक्राफ्ट' (तकनीकी झाड़-फूंक) शब्दक प्रयोग करैत छथि, जकर अर्थ अछि जे बिना नदीक व्यवहार बुझने मात्र कंक्रीट सँ ओकरा नियंत्रित करबाक कोशिश करब। बागमतीक बाढ़ि पहिने चौर मे पानि दैत छल, जाहि सँ 'गरमा' फसल निक होइत छल आ माछक उत्पादन बढ़ैत छल। बान्ह बनबा सँ पानि खेत मे नहि जा सकल आ गाम सभ जल-जमावक शिकार भऽ गेलाह ।

कमला नदी आ लोक विद्रोह: 'बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी'

कमला नदी कैँ मिथिला मे 'माय' क दर्जा देल गेल अछि। डॉ. मिश्रक पोथी 'बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी' (The Kamla River

and People On Collision Course) मे कमला क भौगोलिक आ सिंचाई इतिहासक वर्णन अछि । १९५० क दशक मे जखन कमला पर सिंचाई योजना शुरू भेल, तखन सँ लय कऽ १९६४ मे वीयर (Weir) बनबा धरि, मिश्र प्रत्येक तकनीकी विफलता कैँ रेखांकित कयलनि अछि।

कमला नदीक संदर्भ मे मिश्रक मुख्य निष्कर्ष अछि जे एतय के लोक पहिने 'कमला' क पानिक उपयोग अपन पारंपरिक 'आहर-पैंन' सँ करैत छलाह । जखन सरकार बान्ह बना देलक, तखन लोकक खेत मे पानि जयब बन्द भऽ गेल। एकर परिणामस्वरूप, लोक कतेको बेर अपन हाथ सँ बान्ह कैँ 'पब्लिक कट' (Public Cut) कऽ दैत छथि ताकि अपन खेत कैँ बचा सकथि। मिश्रक अनुसार, ई 'बगावत' नदीक विरुद्ध नहि, वरन् गलत इन्जीनियरिङक विरुद्ध अछि ।

महानन्दाक विवशताः 'बन्दिनी महानन्दा' आ राजनीति

१९९४ मे प्रकाशित 'बन्दिनी महानन्दा' मिश्रक प्रारम्भिक शोध मे सँ एक छल। ऐ मे ओ बिहार आ पश्चिम बंगालक सीमा पर बहनिहार महानन्दा नदीक समस्या कैँ उठौलनि अछि । महानन्दाक बान्ह कतेको ठाम पर सीमा विवादक सेहो कारण

बनल अछि। मिश्र अपन शोध मे १९३७ क पटना बाढ़ि सम्मेलनलक संदर्भ दैत छथि, जतय मुख्य अभियंता कैप्टन हॉल स्पष्ट कयलनि छल जे उत्तर बिहार मे बान्ह बनानाय एकटा 'इन्जीनियरिङ पाप' अछि। मुदा राजनेता सभ अपन वोट बैंक आ ठेकेदारी प्रथा कैं बढ़ावा देबा लेल ऐ चेतावनी कैं अनसुना कऽ देलनि ।

मिश्रक विश्लेषण दर्शाबैत अछि जे महानन्दाक बान्हक कारण ओहि क्षेत्रक कृषि चक्र सम्पूर्ण रूपैं सँ ध्वस्त भऽ गेल अछि। जे पानि पहिने उर्वरता लय कऽ अबैत छल, ओ एखन महीनों धरि जल-जमावक कारण फसल कैं सड़ा दैत अछि।

तकनीकी विमर्श: बान्ह आ गाद (Silt) क समस्या

एकटा सिविल इंजीनियर होबाक नाते डॉ. मिश्र बान्हक विफलता कैं वैज्ञानिक आधार पर समझाबैत छथि। हिमालय सँ अबैत नदी सभ भारी मात्रा मे गाद (Silt) लय कऽ अबैत अछि ।

नदीक सतहक उत्थान: जखन नदी बान्हक भीतर कैद रहैत अछि, तखन गाद बाहर नहि जा सकैत अछि आ नदीक पेट मे जमा होबय लागैत अछि।

जाहि सँ नदीक सतह प्रति वर्ष औसतन १० सेंटीमीटर ऊपर उठि जाइत अछि।

बान्हक ऊँचाई: नदीक सतह बढ़ला सँ सरकार बान्ह कैं और ऊँच करैत जाइत अछि, मुदा ऊँचाईक एकटा सीमा होइत अछि। जखन बान्ह टूटैत अछि, तखन पानीक वेग और प्रलयंकारी भऽ जाइत अछि।

बेनिफिट-कॉस्ट रेशियो (BC Ratio): मिश्रक अनुसार, इन्जीनियर सभ मात्र निर्माणक लाभ देखैत छथि। ओ विस्थापन, बीमारी, आ जमीनक बर्बादी सँ होमय वाला 'सामाजिक लागत' (Social Cost) क गणना नहि करैत छथि।

साहित्यिक प्रदेय आ 'विदेह' क आन्दोलन: दिनेश कुमार मिश्र मूल रूप सँ मिथिलाक नहि छथि (हुनकर जन्म उत्तर प्रदेश मे भेल छल), मुदा मिथिलाक नदी पर हुनकर काज एतेक गम्भीर अछि जे मैथिली साहित्य आ पत्रकारिता मे हुनका 'मिथिलाक पुत्र' क रूप मे सम्मान भेटल अछि।

हुनकर काजक महत्ता एतेक अछि जे ओ साहित्यिक चोरीक शिकार सेहो भेल छथि। 'विदेह' (मैथिली पत्रिका) क संपादक गजेन्द्र ठाकुर ऐ मामला कैं उठौलनि जे साहित्य अकादमीक

मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा 'पाराशर' मिश्रक पोथी 'दुइ पाटन के बीच में' क अनेक पैराग्राफ चोरी कऽ अपन उपन्यास 'जलप्रांतर' मे अपन नाम सँ छपबा देलनि। ऐ विवाद सँ ई सिद्ध भेल जे मिश्रक शोधक एकटा 'साहित्यिक मूल्य' सेहो अछि, जकरा कोनो सामान्य साहित्यकार बिना गम्भीर अध्ययनक आत्मसात नहि कऽ सकैत अछि।

मिश्रक समस्त पोथी एखन 'विदेह आर्काइव' (Videha Archive) मे निःशुल्क उपलब्ध अछि, जकरा ओ स्वयं मैथिली भाषी पाठक लेल अनुमति देने छथि ।

पुरस्कार, सम्मान आ अन्तर्राष्ट्रीय उपस्थिति

डॉ. दिनेश कुमार मिश्रक काज कैं राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कतेको प्रतिष्ठित पुरस्कार सँ सम्मानित कयल गेल अछि। ओ संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) क 'डैम्स एंड डेवलपमेंट फोरम' (2003-07) क सदस्य रहलाह, जतय ओ छहर सँ प्रभावित लोकक पक्ष रखलनि । एकर अतिरिक्त, ओ भारत सरकारक ११म आ १२म पंचवर्षीय योजनाक 'बाढ़ि नियंत्रण' कार्यकारी समूहक सदस्य सेहो रहलाह, जतय ओ नीतिगत स्तर पर परिवर्तनक वकालत कयलनि ।

निष्कर्षः नदीक मुक्ति आ भविष्यक राह

दिनेश कुमार मिश्रक पूरा जीवन मिथिलाक नदी आ ओतय के लोकक संघर्ष कैँ समर्पित अछि। हुनकर विचार 'बाढ़ि नियंत्रण' सँ हटि कऽ 'बाढ़ि प्रबंधन' आ 'नदीक संग सामंजस्य' पर जोर दैत अछि। जखन आजुक समय मे जलवायु परिवर्तनक कारण बाढ़िक विभीषिका बढ़ि रहल अछि, तखन मिश्रक 'Living with Floods' क दर्शन और बेसी प्रासंगिक भऽ गेल अछि।

हुनकर लेखन हमरा ई चेतावनी दैत अछि जे जँ हम नदीक प्राकृतिक प्रवाह मे बाधा डालब, तऽ प्रकृति अपन हिसाब चुकता करैत अछि। मिथिलाक महानंदा, कोसी, बागमती आ कमला मात्र पानि बहनिहार धारा नहि अछि, वरन् ई लोकक जीवन, संस्कृति आ अस्मिता अछि। डॉ. मिश्र ऐ अस्मिता कैँ बचबाक लेल जे वैचारिक आधार देने छथि, ओ आने वाला कतेको पीढ़ी धरि पथ-प्रदर्शकक काज करत।

मिथिलाक समाज डॉ. दिनेश कुमार मिश्रक ऐ भागीरथ प्रयासक लेल सदैव ऋणी रहत। हुनकर काज हमरा ई सिखाबैत अछि जे एकटा इन्जीनियर जखन अपन हृदय सँ विचार करैत

अछि, तखन ओ मात्र छहर धरि सीमित नहि रहैत अछि वरन् लोकक 'स्मृति' कँ सेहो बचा लैत अछि।

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

दिनेश कुमार मिश्र, आइ.आइ.टी. खड़गपुरसँ सिविल इन्जीनियरिङ मे बी. टेक. १९६८मे आ स्ट्रक्चरल इन्जीनियरिङमे एम.टेक. १९७०मे। मिथिलाक बाढ़िक एक्स्पर्ट। मिथिलाक मोटा-मोटी सभ धारपर किताब प्रकाशित जेना उत्तर बिहार की व्यथा कथा (१९९०), कोसी- उम्र कैद से सजा-ए-मौत तक (१९९२) बंदिनी महानंदा (१९९४), बोया पेड़ बबूल का- बाढ़ नियंत्रण का रहस्य (२०००), बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी (२००४), भुतही नदी और तकनीकी झाड़- फूक (२००५), दुई पाटन के बीच में- कोसी नदी की कहानी (२००६) तथा बागमती की सद्गति (२०१०)।

सन्दर्भ सूची

1. Publics@IIHS - Indian Institute for Human Settlements, accessed February 11, 2026, https://iihs.co.in/iihs-events/publics/

2. Dinesh Kumar Mishra Books - Rajkamal Prakashan, accessed February 11, 2026, https://rajkamalprakashan.com/author/dinesh-kumar-mishra

3. 3 International Conference on Public Policy (ICPP3) June 28-30, 2017 – Singapore Panel T16 P11 Session 11 P11 Sustainable Dev, accessed February 11, 2026, https://www.ippapublicpolicy.org/file/paper/593badf05daf1.pdf

4. Dinesh Kumar Mishra – SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/tag/dinesh-kumar-mishra/

5. Dinesh Kumar Mishra - Wikipedia, accessed February 11, 2026, https://en.wikipedia.org/wiki/Dinesh_Kumar_Mishra

6. Dr. Dinesh Kumar Mishra - Soanas, accessed February 11, 2026, https://soanas.org/aurthor/dr-dinesh-kumar-mishra/

7. Tag: Embankments - SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/tag/embankments/

8. Dinesh Kumar Mishra | Ashoka, accessed February 11, 2026, https://www.ashoka.org/en/fellow/dinesh-kumar-mishra

9. Embankments – SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/category/embankments/

10. JAGDISH PRASAD MANDAL: MAITHILI WRITER Era Before and After, accessed February 11, 2026, https://archive.org/download/maithili_202209/JPM_MW_Gajendra_Thakur.pdf

11. Bhagirath Prayas Samman for Dineshkumar Mishraji: Helping us understand Rivers and Floods - SANDRP, accessed

February 11, 2026, https://sandrp.in/2016/12/02/bhagirath-prayas-samman-for-dineshkumar-mishraji-helping-us-understand-rivers-and-floods/

12. वि दे ह - विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, accessed February 11, 2026, https://www.videha.co.in/new_page_4.htm

13. Videhajournal's Blog, accessed February 11, 2026, https://videhajournal.wordpress.com/

14. ४. अनुलग्नक (पृ. १-४२८), accessed February 11, 2026, https://gajendrathakur123.files.wordpress.com/2023/06/videha_archive_july_2023_version.pdf

15. Bagmati - SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/tag/bagmati/

16. एक इंजीनियर, जो नदियों का होकर रह गया : दिनेश कुमार मिश्रा - India Water Portal, accessed February 11, 2026, https://hindi.indiawaterportal.org/river-and-pond/eka-injainaiyara-jao-nadaiyaon-kaa-haokara-raha-gayaa-dainaesa-kaumaara-maisaraa

17. विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, accessed February 11, 2026, https://www.videha.co.in/new_page_4.htm

18. Kamala River - Wikipedia, accessed February 11, 2026, https://en.wikipedia.org/wiki/Kamala_River

19. Knowing Kamla's sorrow could control Bihar floods - India Water Portal, accessed February 11, 2026, https://www.indiawaterportal.org/agriculture/livelihoods/knowing-kamlas-sorrow-could-control-bihar-floods

20. History of flood in Bihar - FMISC WRD Bihar, accessed February 11, 2026, https://fmiscwrdbihar.gov.in/fmis/historyFlood.aspx

21. Dinesh Kumar Mishra – SANDRP - South Asia Network on Dams, Rivers and People, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/tag/dinesh-kumar-mishra/

22. Embankments – SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/category/embankments/

23. Refugees of the Kosi embankments – A booklet by Dinesh Kumar Mishra - India Water Portal, accessed February 11, 2026, https://www.indiawaterportal.org/governance-and-policy/governance/refugees-kosi-embankments-booklet-dinesh-kumar-mishra

24. Floods in Bihar - Wikipedia, accessed February 11, 2026, https://en.wikipedia.org/wiki/Floods_in_Bihar

25. Refugees of the Kosi - AWS, accessed February 11, 2026, https://prod-qt-images.s3.amazonaws.com/indiawaterportal/import/sites/default/files/iwp2/refugees_of_kosi_embankments_dinesh_kumar_mishra.pdf

26. Flood frequency and flood intensity changes in the post embankment period in the Kosi sub-basin India: Impact of location, caste, and class on the flood vulnerability of the marginal communities - ResearchGate, accessed February 11, 2026, https://www.researchgate.net/publication/367436924_Flood_frequency_and_flood_intensity_changes_in_the_post_embankment_period_in_the_Kosi_sub-basin_India_Impact_of_location_caste_and_class_on_the_flood_vulnerability_of_the_marginal_communities

27. महानंदा नदी अपडेट - बिहार,बाढ़ि और महानंदा, accessed February 11, 2026, https://mahanandariver.org/research/Mahananda-River-Update---Bihar-Flood-and-Mahananda/465/

28. The Kosi and the Embankment Story - ResearchGate, accessed February 11, 2026, https://www.researchgate.net/publication/238683688_The_Kosi_and_the_Embankment_Story

29. EA16240Rural0Livelihoods0repl... - World Bank Documents, accessed February 11, 2026, https://documents1.worldbank.org/curated/en/499261468751537678/txt/EA16240Rural0Livelihoods0replacement.txt

30. bihar @ 2047 - vision document, accessed February 11, 2026, https://letsinspirebihar.org/LIB_2047.pdf

31. Geo-Textile in Riverbank-Embankment Protection Fro | PDF | Levee - Scribd, accessed February 11, 2026, https://www.scribd.com/document/921224983/Geo-textile-in-Riverbank-Embankment-Protection-Fro

32. बगावती के हिंदी अर्थ | bagaavatii meaning in Hindi | हिन्दवी - Hindwi, accessed February 11, 2026, https://www.hindwi.org/hindi-dictionary/meaning-of-bagaavatii

33. विद्रोह ,बगावत और आन्दोलन में क्या अंतर है ? - Quora, accessed February 11, 2026, https://hi.quora.com/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%8B%E0%A4%B9-%E0%A4%AC%E0%A4%97%E0%A4%BE%E0%A4%B5%E0%A4%A4-%E0%A4%94%E0%A4%B0-%E0%A4%86%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%8B%E0%A4%B2%E0%A4%A8

34. Dr Dinesh kumar Mishra | "भारत में नदियों को माँ का दर्जा प्राप्त है और माँ केवल माँ है, वह संसाधन या शोक कभी नहीं हो सकती. नदियां प्रकृतिदत्त उपहार है एवं धरती पर साक्षात् ईश्वर स्वरुप है." (डॉ दिनेश कुमार मिश्र) बेहद सरल, सजीव और भावपूर्ण शब्दों में नदियों की भारतीय - BallotBoxIndia, accessed February 11, 2026, https://ballotboxindia.com/up/Dr-Dinesh-kumar-

Mishra/5181183080549/

35. Situation Report - 3 Flood Situation in Bihar Date: 30th September 2024 (Wednesday) Time: 11:00 AM (IST) - India | ReliefWeb, accessed February 11, 2026, https://reliefweb.int/report/india/situation-report-3-flood-situation-bihar-date-30th-september-2024-wednesday-time-1100-am-ist

36. Flood-like situation in Kamala river in Jhjharpur. Old rail bridge submerged in water., accessed February 11, 2026, https://www.youtube.com/watch?v=9RGMuiSnR9A&vl=en-US

37. Dinesh Kumar Mishra | Ashoka, accessed February 11, 2026, https://www.ashoka.org/en/fellow/dinesh-kumar-mishra

38. Engineering witchcraft in Bihar - India Water Portal, accessed February 11, 2026, https://www.indiawaterportal.org/agriculture/farm/engineering-witchcraft-bihar

39. Dinesh Kumar Mishra – SANDRP - South Asia Network on Dams, Rivers and People, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/tag/dinesh-kumar-mishra/

40. Planners and engineers have contempt for commoners: Dinesh Mishra - D-Sector, accessed February 11, 2026, https://d-sector.org/article-det.asp?id=1312&idFor=1312

41. Dinesh Kumar Mishra | Ashoka, accessed February 11, 2026, https://www.ashoka.org/en/fellow/dinesh-kumar-mishra

42. Copy of FLOOD RELATED CONFLICTS1-12 PDF TRIAL mudra.pmd, accessed February 11, 2026, https://meghpyneabhiyan.files.wordpress.com/2013/10/about-contributors.pdf

43. वि दे ह - विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, accessed

February 11, 2026, https://www.videha.co.in/new_page_4.htm

44. JAGDISH PRASAD MANDAL: MAITHILI WRITER Era Before and After, accessed February 11, 2026, https://archive.org/download/maithili_202209/JPM_MW_Gajendra_Thakur.pdf

45. Story of a ghost river and engineering witchcraft - India Water Portal, accessed February 11, 2026, https://hindi.indiawaterportal.org/books/story-ghost-river-and-engineering-witchcraft

46. ACKNOWLEDGEMENT - XIMB, accessed February 11, 2026, http://www1.ximb.ac.in/users/fac/shambu/sprasad.nsf/23e5e395994c064ee852564ae004fa010/1ee28838646f61d3652570ce0031cddd/$FILE/04_flood%20management%20in%20Bihar_03_21_50.doc

47. Between Devil Deep Waters | PDF - Scribd, accessed February 11, 2026, https://www.scribd.com/document/938307771/Between-Devil-Deep-Waters-2

48. Flood frequency and flood intensity changes in the post embankment period in the Kosi sub-basin India: Impact of location, caste, and class on the flood vulnerability of the marginal communities - ResearchGate, accessed February 11, 2026, https://www.researchgate.net/publication/367436924_Flood_frequency_and_flood_intensity_changes_in_the_post_embankment_period_in_the_Kosi_sub-basin_India_Impact_of_location_caste_and_class_on_the_flood_vulnerability_of_the_marginal_communities

49. accessed February 11, 2026, https://hindi.indiawaterportal.org/books/story-ghost-river-and-

engineering-witchcraft#:~:text=Besides%2C%20the%20land%20of%20the,embankment%20of%20the%20Bhutahi%20Balan.

50. Embankments – SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/category/embankments/

51. Sri. Dinesh Kumar Mishra on the flooding of Kosi basin,2008 - India Water Portal, accessed February 11, 2026, https://www.indiawaterportal.org/governance-and-policy/governance/sri-dinesh-kumar-mishra-flooding-kosi-basin2008

52. Bihar's indigenous languages hold the key to water resilience - Down To Earth, accessed February 11, 2026, https://www.downtoearth.org.in/water/bihars-indigenous-languages-hold-the-key-to-water-resilience

53. CATALYZING CHANGE FOR RESILIENCE ACROSS BOUNDARIES - DPNet Nepal, accessed February 11, 2026, https://dpnet.org.np/uploads/files/Challenges%20in%20Nepal's%20Small%20Transboundary%20Rivers_compressed%202023-06-13%2008-54-14.pdf

54. An ontology of water and land in North Bihar, India - PURE.EUR.NL., accessed February 11, 2026, https://pure.eur.nl/files/42907398/1467_9655.13611.pdf

55. 'Everybody loves a good flood': the political and social transformation of the eastern Tarai (Nepal) through flood control infrastructures - OpenEdition Journals, accessed February 11, 2026, https://journals.openedition.org/ebhr/1555

56. Bihar Floods of 1987-1 - SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/2016/03/26/bihar-floods-of-1987-i/

57. Mapping long-term Transformation of Wetlands and Annual Rainfall Variability in Madhubani District (1975-2022)

- Current World Environment, accessed February 11, 2026, https://www.cwejournal.org/vol1no1/pmapping-long-term-transformation-of-wetlands-and-annual-rainfall-variability-in-madhubani-district-1975-2022p

58. Mapping long-term Transformation of Wetlands and Annual Rainfall Variability in Madhubani District (1975-2022) - ResearchGate, accessed February 11, 2026, https://www.researchgate.net/publication/381044655_Mapping_long-term_Transformation_of_Wetlands_and_Annual_Rainfall_Variability_in_Madhubani_District_1975-2022

59. Uncategorized | Madhesi - United We Stand | Page 30, accessed February 11, 2026, https://madhesi.wordpress.com/category/uncategorized/page/30/

60. Rivers and Drainage System - BPSC Preparation: All subjects - BPSC (Bihar) PDF Download - EduRev, accessed February 11, 2026, https://edurev.in/t/380361/Rivers-and-Drainage-System

61. BIHAR RIVER ATLAS - cGanga, accessed February 11, 2026, https://cganga.org/wp-content/uploads/2025/05/10_Bihar-River-Atlas-2023.pdf

62. Dui Patan - People's Science Institute, accessed February 11, 2026, http://www.peoplesscienceinstitute.org/resource/techs/Dui%20Patan.html

63. As Kosi river keeps changing, ownership of land on its embankments under question - Mongabay-India, accessed February 11, 2026, https://india.mongabay.com/2022/05/as-kosi-river-keep-changing-ownership-of-land-on-its-embankments-under-question/

64. Dinesh Kumar Mishra – SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/tag/dinesh-kumar-mishra/

65. Dinesh Kumar Mishra | Ashoka, accessed February 11, 2026, https://www.ashoka.org/en/fellow/dinesh-kumar-mishra

66. 3 International Conference on Public Policy (ICPP3) June 28-30, 2017 – Singapore Panel T16 P11 Session 11 P11 Sustainable Dev, accessed February 11, 2026, https://www.ippapublicpolicy.org/file/paper/593badf05daf1.pdf

67. Kosi River Flood Control Analysis | PDF | Levee | Flood - Scribd, accessed February 11, 2026, https://www.scribd.com/document/489389398/Between-Kosi-and-Bihar-Trapped-Between-t-pdf

68. Bihar: Kosi Project's Promise of Flood-Free Prosperity Remains a Distant Dream - The Wire, accessed February 11, 2026, https://m.thewire.in/article/science/bihar-kosi-project-flood

69. The Kosi and the Embankment Story - ResearchGate, accessed February 11, 2026, https://www.researchgate.net/publication/238683688_The_Kosi_and_the_Embankment_Story

70. Dinesh Kumar Mishra – SANDRP - South Asia Network on Dams, Rivers and People, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/tag/dinesh-kumar-mishra/

71. ISSN 2229-547X VIDEHA विदेह ३६३ म अंक ०१ फरबरी २०२३ (वर्ष १६ मास, accessed February 11, 2026, https://dn720002.ca.archive.org/0/items/videha-262/VIDEHA_363_Kaithi.pdf

72. Dinesh Kumar Mishra - Wikipedia, accessed February 11, 2026, https://en.wikipedia.org/wiki/Dinesh_Kumar_Mishra

73. Dr. Dinesh Kumar Mishra - Soanas, accessed February 11, 2026, https://soanas.org/aurthor/dr-dinesh-kumar-mishra/

74. Bagmati – SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/tag/bagmati/

75. Reviewed Work(s): – (i) Living with Floods: People's Perspective (ii) The Bihar Flood Story, accessed February 11, 2026, https://www.academia.edu/37270080/Reviewed_Work_s_i_Living_with_Floods_Peoples_Perspective_ii_The_Bihar_Flood_Story

76. Dinesh Kumar Mishra | Ashoka, accessed February 11, 2026, https://www.ashoka.org/en/fellow/dinesh-kumar-mishra

77. Embankments – SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/category/embankments/

78. (PDF) EXTREME FLOODS IN BAGMATI RIVER BASIN - ResearchGate, accessed February 11, 2026, https://www.researchgate.net/publication/264421419_EXTREME_FLOODS_IN_BAGMATI_RIVER_BASIN

79. Bihar farmers protest flood embankments to protect livelihoods | - Dialogue Earth, accessed February 11, 2026, https://dialogue.earth/en/water/bihar-farmers-protest-bagmati-river-embankments/

80. Bihar's indigenous languages hold the key to water resilience - Down To Earth, accessed February 11, 2026, https://www.downtoearth.org.in/water/bihars-indigenous-languages-hold-the-key-to-water-resilience

81. Understanding the floods of Bihar - Book review of "Bagmati Ki ..., accessed February 11, 2026, https://www.indiawaterportal.org/agriculture/farm/understanding-floods-bihar-book-review-bagmati-ki-sadgati

82. Flood frequency and flood intensity changes in the post embankment period in the Kosi sub-basin India: Impact of location, caste, and class on the flood vulnerability of the marginal communities - ResearchGate, accessed February 11, 2026, https://www.researchgate.net/publication/367436924_Flood_frequency_and_flood_intensity_changes_in_the_post_embankment_period_in_the_Kosi_sub-basin_India_Impact_of_location_caste_and_class_on_the_flood_vulnerability_of_the_marginal_communities

83. Dr Dinesh kumar Mishra | "भारत में नदियों को माँ का दर्जा प्राप्त है और माँ केवल माँ है, वह संसाधन या शोक कभी नहीं हो सकती. नदियां प्रकृतिदत्त उपहार हैं एवं धरती पर साक्षात् ईश्वर स्वरुप हैं." (डॉ दिनेश कुमार मिश्र) बेहद सरल, सजीव और भावपूर्ण शब्दों में नदियों की भारतीय - BallotBoxIndia, accessed February 11, 2026, https://ballotboxindia.com/up/Dr-Dinesh-kumar-Mishra/5181183080549/

84. Between Devil Deep Waters | PDF - Scribd, accessed February 11, 2026, https://www.scribd.com/document/938307771/Between-Devil-Deep-Waters-2

85. The Kosi and the Embankment Story - ResearchGate, accessed February 11, 2026, https://www.researchgate.net/publication/238683688_The_Kosi_and_the_Embankment_Story

86. Tag: Embankments - SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/tag/embankments/

87. India Rivers Week – Page 2 - SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/category/india-rivers-week/page/2/

88. Dinesh Kr Mishra Pani ka Shap, Rajkamal Prakashan, 2026

89. Tag: Dinesh Kumar Mishra - SANDRP, accessed on February 13, 2026, https://sandrp.in/tag/dinesh-kumar-mishra/

90. Kosi River - Wikipedia, accessed on February 13, 2026, https://en.wikipedia.org/wiki/Kosi_River

91. India (Food Situation) - Hansard - UK Parliament, accessed on February 13, 2026, https://hansard.parliament.uk/commons/1943-10-12/debates/5e0b77aa-377a-467c-8188-b2ba6e0e5958/India(FoodSituation)

92. Grow More Food Campaign - GKToday, accessed on February 13, 2026, https://www.gktoday.in/grow-more-food-campaign/

93. The Essence of Kosi Treaty and Kosi High Dam, accessed on February 13, 2026, https://www.urjakhabar.com/en/news/0205719479

94. Sandeep Bhardwaj - Centre for Policy Research, accessed on February 13, 2026, https://cprindia.org/wp-content/uploads/2021/12/Institutional-Determinants-of-Indo-Nepal-Hydro-Cooperation_Abridged-Report_Sandeep-Bhardwaj.pdf

95. A dammed history of the Koshi | Dialogue Earth, accessed on February 13, 2026, https://dialogue.earth/en/water/koshi-river-bihar/

96. The Essence of Kosi Treaty and Kosi High Dam, accessed on February 13, 2026, https://urjakhabar.com/en/news/0205719479

97. Planners and engineers have contempt for commoners: Dinesh Mishra - D-Sector, accessed on February 13, 2026, https://d-sector.org/article-

det.asp?id=1312&idFor=1312

98. Reflections on the Origin of the Kosi Project - SANDRP, accessed on February 13, 2026, https://sandrp.in/2015/04/04/reflections-on-the-origin-of-the-kosi-project/

99. Fighting Flood and Drought, Millions in Bihar Lose Livelihoods - The Wire Science, accessed on February 13, 2026, https://science.thewire.in/politics/government/bihar-flood-drought-crop-loss/

100. Drought - BIHAR STATE DISASTER MANAGEMENT AUTHORITY, accessed on February 13, 2026, http://bsdma.org/Know-Your-Risk.aspx?id=4

101. From 'Grow More Food' to 'Miss a Meal': Hunger, Development and the Limits of Post-Colonial Nationalism in India, 1947–1957 - ResearchGate, accessed on February 13, 2026, https://www.researchgate.net/publication/271667090_From_'Grow_More_Food'_to_'Miss_a_Meal'_Hunger_Development_and_the_Limits_of_Post-Colonial_Nationalism_in_India_1947-1957

102. Food Crisis, Inflation and Political Control in Punjab (1940-47), accessed on February 13, 2026, https://punjab.global.ucsb.edu/sites/default/files/sitefiles/journals/volume20/11-Sukhdev%20Sohal%2020.pdf

103. A Tale of Two Countries – Kosi - Surakshit Sansar - IISSM, accessed on February 13, 2026, https://surakshitsansar.iissm.in/a-tale-of-two-countries-kosi/

104. Indias Food Problem And Policy Since Independence, accessed on February 13, 2026, https://ia601507.us.archive.org/23/items/in.ernet.dli.2015.133139/2015.133139.Indias-Food-Problem-And-Policy-Since-Independence_text.pdf

105. Reviewed Work(s): – (i) Living with Floods: People's Perspective (ii) The Bihar Flood Story, accessed on February 13, 2026, https://www.academia.edu/37270080/Reviewed_Work_s_i_Living_with_Floods_Peoples_Perspective_ii_The_Bihar_Flood_Story

106. Dinesh Kumar Mishra | Ashoka, accessed on February 13, 2026, https://www.ashoka.org/en/fellow/dinesh-kumar-mishra

107. Dr. Dinesh Kumar Mishra - Soanas, accessed on February 13, 2026, https://soanas.org/aurthor/dr-dinesh-kumar-mishra/

108. Dinesh Kr Mishra Pani ka Shap, Rajkamal Prakashan, 2026

109. FMISC WRD Bihar, accessed on February 13, 2026, https://fmiscwrdbihar.gov.in/fmis/history.html

110. Floods in Bihar - Wikipedia, accessed on February 13, 2026, https://en.wikipedia.org/wiki/Floods_in_Bihar

111. भारत में बाढ़ि प्रबंधन- एक सांख्यिकीि ररपोर्ट-२०२३ - Flood Management in India - A Statistical Report-2023 - Central Water Commission, accessed on February 13, 2026, https://cwc.gov.in/sites/default/files/flood-management-india-statistical-report-2023.pdf

112. 3,800 kilometres of embankments worsen floods in Bihar | Dialogue Earth, accessed on February 13, 2026, https://dialogue.earth/en/water/3800-kilometres-of-embankments-worsen-floods-in-bihar-2/

113. A tribute to Bharat Ratna Karpoori Thakur in Bihar - YouTube, accessed on February 13, 2026, https://www.youtube.com/shorts/D_y0Wpt8cjI

114. The Hydro-political History of the first Indo-Nepal Koshi River Agreement (1954) Souvik Dasgupta, accessed on February 13, 2026, https://www.epitomejournals.com/VolumeArticles/FullTextPDF/S38_Research_Paper.pdf

115. The Essence of Kosi Treaty and Kosi High Dam, accessed on February 13, 2026, https://urjakhabar.com/en/news/0205719479

116. The shifting sands - Down To Earth, accessed on February 13, 2026, https://www.downtoearth.org.in/environment/the-shifting-sands-20767

117. BIHAR's FLOOD SURVIVAL MECHANISM - AWS, accessed on February 13, 2026, https://prod-qt-images.s3.amazonaws.com/indiawaterportal/import/sites/default/files/iwp2/floodissuecore11_30.pdf

118. Agreement Between the Government of India and the Government of Nepal on the Kosi Project - International Water Law Project, accessed on February 13, 2026, https://www.internationalwaterlaw.org/documents/regionaldocs/kosi-river1.html

119. The Essence of Kosi Treaty and Kosi High Dam, accessed on February 13, 2026, https://www.urjakhabar.com/en/news/0205719479

120. Chapter 3 The Kosi River 1. Introduction and History of the Kosi Project - Brill, accessed on February 13, 2026, https://brill.com/display/book/9789004480216/B9789004480216_s010.pdf

121. A dammed history of the Koshi | Dialogue Earth, accessed on February 13, 2026, https://dialogue.earth/en/water/koshi-river-bihar/

122. Refugees of the Kosi embankments – A booklet by Dinesh Kumar Mishra - India Water Portal, accessed on February 13, 2026, https://www.indiawaterportal.org/governance-and-policy/governance/refugees-kosi-embankments-booklet-dinesh-kumar-mishra

123. Refugees of the Kosi - Himal Southasian, accessed on February 13, 2026, https://www.himalmag.com/essay/refugees-of-the-kosi

124. 13405 Calling Attentioyi 13 SEPTEMBER 1955 to Matter of Urgent Public Importance 1 Pandit Thakur Das Bhargava] Twenty-fifth Rep, accessed on February 13, 2026, https://eparlib.sansad.in/bitstream/123456789/894711/1/01_X_13-09-1955_p24_p25_P11.pdf

125. Embankments in Bihar: The inapt and futile defence against floods - India Water Portal, accessed on February 13, 2026, https://www.indiawaterportal.org/faqs/embankments-bihar-inapt-and-futile-defence-against-floods

126. Stagnating pools and the gandak command - India Water Portal, accessed on February 13, 2026, https://hindi.indiawaterportal.org/books/stagnating-pools-and-gandak-command

127. HISTORY OF INUNDATION IN NORTHERN BIHAR - Update Publishing House, accessed on February 13, 2026, https://updatepublishing.com/journal/index.php/rrst/article/download/508/493

128. History of flood in Bihar, accessed February 14, 2026, https://fmiscwrdbihar.gov.in/fmis/historyFlood.aspx

129. Floods in Bihar - Wikipedia, accessed February 14, 2026, https://en.wikipedia.org/wiki/Floods_in_Bihar

130. The Hydro-political History of the first Indo-Nepal Koshi River Agreement (1954) Souvik Dasgupta, accessed February 14, 2026, https://www.epitomejournals.com/VolumeArticles/FullTextPDF/538_Research_Paper.pdf

131. Dinesh Kr Mishra Pani ka Shap Part 2.pdf

132. A dammed history of the Koshi | Dialogue Earth, accessed February 14, 2026, https://dialogue.earth/en/water/koshi-river-bihar/

133. The Essence of Kosi Treaty and Kosi High Dam, accessed February 14, 2026, https://www.urjakhabar.com/en/news/0205719479

134. Chapter 3 The Kosi River 1. Introduction and History of the Kosi Project - Brill, accessed February 14, 2026, https://brill.com/display/book/9789004480216/B9789004480216_s010.pdf

135. The shifting sands - Down To Earth, accessed February 14, 2026, https://www.downtoearth.org.in/environment/the-shifting-sands-20767

136. Weather in relation to the floods in Bihar, Bengal and Assam during July and August 1954 - MAUSAM Journal, accessed February 14, 2026, https://mausamjournal.imd.gov.in/index.php/MAUSAM/article/download/4893/4622/19246

137. Breach of trust - Down To Earth, accessed February 14, 2026, https://www.downtoearth.org.in/environment/breach--of--trust-20764

138. The hungry river: Looking through floods and silt in North Bihar | Oxford Policy Management, accessed February 14,

2026, https://www.opml.co.uk/insights/hungry-river-looking-through-floods-and-silt-north-bihar

139. (PDF) Floods and Environmental Justice in North Bihar: Contextual Vulnerabilities of Historically Marginalised Communities in the Kosi Sub-basin - ResearchGate, accessed February 14, 2026, https://www.researchgate.net/publication/373143825_Floods_and_Environmental_Justice_in_North_Bihar_Contextual_Vulnerabilities_of_Historically_Marginalised_Communities_in_the_Kosi_Sub-basin

140. HISTORY OF INUNDATION IN NORTHERN BIHAR - Update Publishing House, accessed February 14, 2026, https://updatepublishing.com/journal/index.php/rrst/article/download/508/493

141. ISSN 2229-547X VIDEHA विदेह ३६६ म अंक १५ मार्च २०२३ (वर्ष १६ मास, accessed February 14, 2026, https://archive.org/download/videha-262/VIDEHA_366_Kaithi.pdf

142. Dinesh Kr Mishra Pani ka Shap, Rajkamal Prakashan, 2026

143. A dammed history of the Koshi | Dialogue Earth, accessed February 14, 2026, https://dialogue.earth/en/water/koshi-river-bihar/

144. (PDF) Reinterpreting Flood: Studying the Historical Implication of Koshi Flood in Northern Bihar - ResearchGate, accessed February 14, 2026, https://www.researchgate.net/publication/368364859_Reinterpreting_Flood_Studying_the_Historical_Implication_of_Koshi_Flood_in_Northern_Bihar

145. A tragedy foretold - Asia Pacific Greens Federation

(APGF), accessed February 14, 2026, https://asiapacificgreens.org/fre/news_statement/a-tragedy-foretold/

146. The Essence of Kosi Treaty and Kosi High Dam - ऊर्जा खबर, accessed February 14, 2026, https://www.urjakhabar.com/news/0205719479

147. The Essence of Kosi Treaty and Kosi High Dam, accessed February 14, 2026, https://urjakhabar.com/en/news/0205719479

148. Dinesh Kumar Mishra | Ashoka, accessed February 14, 2026, https://www.ashoka.org/en/fellow/dinesh-kumar-mishra

149. Breach of trust - Down To Earth, accessed February 14, 2026, https://www.downtoearth.org.in/environment/breach--of--trust-20764

150. Dinesh Kr Mishra Pani ka Shap, Rajkamal Prakashan, 2026

151. Dinesh Kumar Mishra - Wikipedia, accessed February 14, 2026, https://en.wikipedia.org/wiki/Dinesh_Kumar_Mishra

152. Principal's Message (Dr. Dinesh Kumar Mishra) - Maryland Institute of Technology & Management, accessed February 14, 2026, http://www.mditm.com/principal-message.php

153. Tag: Dinesh Kumar Mishra - SANDRP, accessed February 14, 2026, https://sandrp.in/tag/dinesh-kumar-mishra/

154. Averse engineering - Down To Earth, accessed February 14, 2026, https://www.downtoearth.org.in/environment/averse-engineering-2856

155. Dinesh Kumar Mishra | Ashoka, accessed February 14, 2026, https://www.ashoka.org/en/fellow/dinesh-kumar-mishra

156. Kosi River Flood Control Analysis | PDF | Levee - Scribd, accessed February 14, 2026, https://www.scribd.com/document/489389398/Between-Kosi-and-Bihar-Trapped-Between-t-pdf

157. Engineering witchcraft in Bihar - India Water Portal, accessed February 14, 2026, https://www.indiawaterportal.org/agriculture/farm/engineering-witchcraft-bihar

158. Understanding the floods of Bihar - Book review of "Bagmati Ki Sadgati !" - India Water Portal, accessed February 14, 2026, https://www.indiawaterportal.org/agriculture/farm/understanding-floods-bihar-book-review-bagmati-ki-sadgati

159. Copy of FLOOD RELATED CONFLICTS1-12 PDF TRIAL mudra.pmd, accessed February 14, 2026, https://meghpyneabhiyan.files.wordpress.com/2013/10/about-contributors.pdf

160. Dr. Dinesh Kumar Mishra – Soanas, accessed February 11, 2026, https://soanas.org/aurthor/dr-dinesh-kumar-mishra/

161. Dinesh Kumar Mishra – SANDRP - South Asia Network on Dams, Rivers and People, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/tag/dinesh-kumar-mishra/

162. विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, accessed February 11, 2026, https://www.videha.co.in/new_page_4.htm

163. विदेह पोथी - प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, accessed February 11, 2026, https://www.videha.co.in/pothi.htm

164. Dinesh Kumar Mishra - Wikipedia, accessed February 11, 2026, https://en.wikipedia.org/wiki/Dinesh_Kumar_Mishra

165. Principal's Message (Dr. Dinesh Kumar Mishra) - Maryland Institute of Technology & Management, accessed February 11, 2026, http://www.mditm.com/principal-message.php

166. एक इंजीनियर, जो नदियों का होकर रह गया : दिनेश कुमार मिश्रा - India Water Portal, accessed February 11, 2026, https://hindi.indiawaterportal.org/river-and-pond/eka-injainaiyara-jao-nadaiyaon-kaa-haokara-raha-gayaa-dainaesa-kaumaara-maisaraa

167. Dinesh Kumar Mishra | Ashoka, accessed February 11, 2026, https://www.ashoka.org/en/fellow/dinesh-kumar-mishra

168. A sustainable engineering disaster - Down To Earth, accessed February 11, 2026, https://www.downtoearth.org.in/environment/a-sustainable-engineering-disaster-3670

169. Flood frequency and flood intensity changes in the post embankment period in the Kosi sub-basin India: Impact of location, caste, and class on the flood vulnerability of the marginal communities - ResearchGate, accessed February 11, 2026, https://www.researchgate.net/publication/367436924_Flood_frequency_and_flood_intensity_changes_in_the_post_embankment_period_in_the_Kosi_sub-basin_India_Impact_of_location_caste_and_class_on_the_flood_vulnerability_of_the_marginal_communities

170. Bagmati - SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/tag/bagmati/

171. Full text of "Videha Issues 251 TO 371 & Links to Devanagari, Tirhuta and Maithili-Braille issues 001 to 149" -

Internet Archive, accessed February 11, 2026, https://archive.org/stream/videha-262/VIDEHA_363_djvu.txt

172. Between Devil Deep Waters | PDF - Scribd, accessed February 11, 2026, https://www.scribd.com/document/938307771/Between-Devil-Deep-Waters-2

173. Videhajournal's Blog, accessed February 11, 2026, https://videhajournal.wordpress.com/

174. A brief Review-Mathematical Modeling on Water Pollution and Its Effects on Aquatic Species, resembling Bagmati River - Research India Publications, accessed February 11, 2026, https://www.ripublication.com/ijaes22/ijaesv17n1_06.pdf

175. Embankments – SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/category/embankments/

176. बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी (The Kamla River and People ..., accessed February 11, 2026, https://hindi.indiawaterportal.org/books/bagaavata-para-majabauura-maithailaa-kai-kamalaa-nadai-kamla-river-and-people-collision

177. Reviewed Work(s): – (i) Living with Floods: People's ... - Academia.edu, accessed February 11, 2026, https://www.academia.edu/37270080/Reviewed_Work_s_i_Living_with_Floods_Peoples_Perspective_ii_The_Bihar_Flood_Story

178. Tag: Embankments - SANDRP, accessed February 11, 2026, https://sandrp.in/tag/embankments/

179. (PDF) Special Section State, Floods and Politics of Knowledge: A Case of the Mahananda Basin of Bihar * - ResearchGate, accessed February 11, 2026,

https://www.researchgate.net/publication/383304730_Special_Section_State_Floods_and_Politics_of_Knowledge_A_Case_of_the_Mahananda_Basin_of_Bihar

180. Sri. Dinesh Kumar Mishra on the flooding of Kosi basin,2008 - India Water Portal, accessed February 11, 2026, https://www.indiawaterportal.org/governance-and-policy/governance/sri-dinesh-kumar-mishra-flooding-kosi-basin2008

181. विदेह ३७१ म अंक ०१ जून २०२३ (वर्ष१६ मास १८६ अंक ३७१ - Internet Archive, accessed February 11, 2026, https://archive.org/download/maithili_202209/VIDEHA_ARCHIVE_MAY_2023_VERSION_Kaithi.pdf

নিত নবল দিনেশ কুমার মিশ্র

নিত নৱল দিনেশ কুমাৰ মিশ্ৰ

গজেন্দ্র ঠাকুর

গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ

নিত নবল দিনেশ কুমার মিশ্র নিত নৱল দিনেশ কুমাৰ মিশ্ৰ

গজেন্দ্র ঠাকুর গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ

Pothi.com